इंगलैण्ड का इतिहास

लि॰ ...रप्रसाद

गौतम ब्रदर्स एण्ड कम्पनी लिमिटेड,
कानपुर।

२॥ॾ)

इंगलैंड का इतिहास

(हाई स्कूल श्रेणी के लिए)

A History of England

[For High School Classes]

(REVISED AND ENLARGED)

लेखक

डा० विश्वेश्वर प्रसाद एम० ए०, डी० लिट्

इतिहास विभाग

प्रयाग-विश्वविद्यालय

प्रकाशक

गौतम ब्रदर्स एण्ड कम्पनी, लिमिटेड, कानपुर

१९४९

दसवाँ संस्करण }

प्रकाशक
गौतम ब्रदर्स एण्ड कम्पनी
कानपुर

मुद्रक
क़ानून प्रेस
कानपुर

प्रस्तावना



कुछ वर्ष पूर्व यूनीवर्सिटी में बी० ए० के विद्यार्थियों को यूरोप तथा इंगलैंड का इतिहास पढ़ाते समय मुझे पता लगा कि, यद्यपि उनको घटनाओं का ज्ञान होता है और कालक्रम से घटनावली भी वे निश्चित कर सकते हैं, किन्तु वे इतिहास के तारतम्य को समझाने में असमर्थ, आलोचनात्मक दृष्टिकोण से शून्य तथा कार्य-कारण सम्बन्ध जानने में अशक्त रहते हैं. उस समय मेरी इच्छा हुई कि स्कूल के लिए एक ऐसा इंगलैंड का इतिहास लिखा जाए जिससे इन त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न हो और जिससे स्कूल में ही इतिहास को इस दृष्टि से अध्ययन करने की ओर विद्यार्थियों को अभिरुचि हो जाए। इस पुस्तक के तैयार करने में उपर्युक्त नवीनताओं का समावेश करने के साथ साथ इस बात का भी ध्यान रक्खा गया है कि इगलैंड के इतिहास की मुख्य विशेषताओं का पूर्ण दिग्दर्शन हो जाए और प्रधान घटनाएं सहज ही में विद्यार्थी के ध्यान में अंकित हो जाएं।

इङ्गलैंड का इतिहास विशेषतः उसकी राजनैतिक प्रथा और ब्रिटिश साम्राज्य का इतिहास है। अंग्रेजी पार्लियामेंट संसार की प्रतिनिधि सभाओं के लिए आदर्श रूप है और आधुनिक काल में प्रजा तन्त्र के विकास में अंग्रेजी-पद्धति का बहुत प्रभाव पड़ा है। अतः इतिहास के विद्यार्थी के लिए इस पार्लियामेंट के विकास का समझना बहुत आवश्यक है। पार्लियामेंट की उन्नति तत्कालीन राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति पर निर्भर रही है। इसलिए इस पुस्तक में इस बात का विशेष प्रयत्न किया गया है कि प्रारंभिक काल से अब तक पार्लियामेंट के इतिहास का विवेचनात्मक निरूपण हो और उन सब

शक्तियों की भी विवेचना हो जिनके कारण पार्लियामेंट का वर्तमान रूप संभव हो सका है। इस सम्बन्ध में पार्लियामेंट के जन्म, ट्यूडर काल में उसकी अवस्था, स्टुअर्ट राजाओं से झगड़ा और पिछली दो शताब्दियों में कैबिनेट का उत्थान तथा शासन पर उसके प्रभाव का वर्णन विस्तार-पूर्वक किया गया है। पुस्तक का मुख्य आधार राजनैतिक विकास की विवेचना है और प्रत्येक शताब्दी में इस विषय को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त ट्यूडर काल के उपरान्त ब्रिटिश के बढ़ते हुए साम्राज्य का इतिहास विस्तार-पूर्वक लिखा गया है और साम्राज्य की वर्तमान स्थिति का भी चित्रण किया गया है। पूर्व पद्धति के अनुसार इङ्गलैंड का यह इतिहास भी चार मुख्य कालों में विभक्त है—प्राचीन तथा मध्यकाल, ट्यूडरकाल, स्टुअर्टकाल और हैनोवेरियन अथवा आधुनिक काल। इन चारों कालों में देश की सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक दशा पर भी प्रकाश डाला गया है, जिससे यह पता लग जाए कि वर्तमान अंग्रेजी समाज और उसकी सभ्यता का विकास कैसे हुआ। इतिहास का मुख्य अभिप्राय मनुष्य की सभ्यता के विकास का अध्ययन है; इसलिए इस पुस्तक में इस ओर विशेष ध्यान दिया गया है।

मेरी दृढ़ धारणा है कि इतिहास को रुचिकर तथा उपादेय बनाने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि घटनावली को संवत्वार देने का ध्यान छोड़कर उसका विषयानुसार अध्ययन किया जाए क्योंकि इसी विधि से कार्य-कारण सम्बन्ध और युगों के प्रधान लक्षणों का उचित ज्ञान हो सकता है इस पुस्तक के विषय प्रबन्ध में इसी शैली का आश्रय लिया गया है, परन्तु विषयों की विवेचना में यह ध्यान रक्खा गया है कि घटनाक्रम टूटने न पाए। साथ ही युद्ध, परराष्ट्रनीति आदि विषयों के वर्णन में घटनाओं के उल्लेख करने का इतना प्रयत्न नहीं किया गया है जितना कि नीति निर्धारित करने का और घटनाओं के कारण बताने का। इस ढंग से विषय का आलोचनात्मक अध्ययन कराने

से विद्यार्थी की स्मरण शक्ति पर बहुत बोझ नहीं पड़ेगा बल्कि विषय को समझने का प्रयत्न करेगा और उसकी बुद्धि तीव्र होगी। जब इस प्रकार इतिहास का पठन-पाठन होगा तभी बाजारू 'कुञ्जियों' का योग कम हो सकेगा और इस विषय के प्रति सच्ची रुचि उत्पन्न हो सकेगी। इस पुस्तक में मैंने अधिक ऐतिहासिक घटनाओं के देने का भी प्रयत्न किया है, क्योंकि मेरा विश्वास है कि हिन्दी या उर्दू में इतिहास पढ़ने से विद्यार्थी सरलता से अधिक ज्ञान पा सकता है। परन्तु फिर भी यह ध्यान रक्खा गया है कि पुस्तक बहुत बड़ी न होने पाए।

व्यक्ति तथा स्थान आदि के नाम हिन्दी में अंग्रेजी रूपों सहित दिए गए हैं। कई स्थानों पर विशेष नामों, जैसे नियमों आदि के नाम, का हिन्दी अनुवाद भी किया गया है, परन्तु जहाँ अनुवाद उचित न था, या इस आशय से कि विद्यार्थियों को ठीक अंग्रेजी रूप मालूम हो सके, मैंने उसको उसी प्रकार हिन्दी में लिख दिया है या कहीं कहीं अंग्रेजी में लिखा है। इस कारण पुस्तक में कहीं कहीं अंग्रेजी का सम्मिश्रण दिखलाई पड़ता है। पुस्तक के अन्त में आवश्यक वंशावलियाँ, शासकों तथा हैनोवेरियन काल के प्रधान मन्त्रियों की सूची और सम्वतवार घटनावली भी दे दी गई है, जिससे विद्यार्थियों को सुविधा हो सके। पुस्तक में मुख्य पात्रों तथा इमारतों के चित्र हैं और अन्त में आवश्यक नक्शे भी दिए गए हैं।

इसके पूर्व हाई स्कूल परीक्षा के लिए केवल आधुनिक इङ्गलैंड का इतिहास ही रक्खा गया था, परन्तु पिछले नवम्बर में यह निश्चित हुआ कि १६३४ ई० की परीक्षा के लिए इंगलैंड का पूरा इतिहास रक्खा जाए। समय पर सूचना मिल जाने से मैंने पुराने प्रबन्ध को अलग करके नई व्यवस्था के अनुसार प्राचीन काल से ट्यूडर काल तक का इतिहास भी लिखकर पुस्तक में सम्मिलित कर दिया है जिससे यह इतिहास प्राचीन समय से महायुद्ध तक आ जाता है, किन्तु साथ ही विशेष ध्यान रक्खा गया है कि इतिहास की एकता नष्ट न होने पाए

और संस्थाओं तथा समाज का विकास आरम्भ के वर्तमान समय तक पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाए।

अन्त में मैं अपने मित्र डा० वेनीप्रसाद, डी० एस-सी० प्रोफ़ेसर, राजनीति विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, का विशेष कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने छपने के पूर्व इस पुस्तक का अधिक भाग पढ़ने तथा सम्मति देने की कृपा की। मुझे विश्वास है कि तीन वर्ष के परिश्रम से लिखी गई प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी तथा इतिहास-प्रेमी जनता भी इससे लाभ उठा सकेगी।

प्रयाग
३० जनवरी, १६३२ ई०

—विश्वेश्वर प्रसाद

द्वितीय आवृत्ति

मुझे हर्ष है कि पुस्तक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी प्रतीत हुई और उसकी दूसरी आवृत्ति की आवश्यकता पड़ी। कुछ मित्रों का विचार था कि स्टुअर्ट काल में भी आयरलैंड का इतिहास अलग एक अध्याय में दे दिया जाए। मैंने इस बार सत्रहवीं शताब्दी में आयरलैंड के इतिहास की विवेचना की है। इसके अतिरिक्त हैनोवेरियन काल के आरम्भ में 'दलबंदी शासन तथा कैबिनेट प्रथा' शीर्षक एक अध्याय जोड़ दिया गया है। आशा है कि इस अध्याय की सहायता से विद्यार्थियों को अठारहवीं शताब्दी के राजनैतिक विकास को समझने में सुगमता होगी। जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय के समय की आन्तरिक तथा वाह्यनीति का इतिहास भी स्पष्ट कर दिया गया है अन्य अध्यायों में भी आवश्यक परिवर्तन हुए हैं जिससे विषय के समझने में सुभीता है। नक़्शे उपयुक्त स्थानों पर पुस्तक के बीच में लगा दिए गए हैं, और वंशावलियाँ प्रत्येक काल के इतिहास के साथ हैं। अंग्रेज़ी में कुछ प्रश्न भी प्रत्येक काल के इतिहास के अन्त में दे दिए गए हैं। इन परिवर्तनों से आशा है पुस्तक अधिक लाभदायक हो जाएगी।

विषयानुसार अध्ययन ही एक पुस्तक की विशेषता है, अतः उन्नीसवीं शताब्दी के प्रबन्धक्रम में कोई संशोधन नहीं किया गया है। मुझे विश्वास है कि पाठकगण इस शैली के प्रयोग से सहज ही कार्य-कारण प्रबंध युगों के प्रधान लक्षण और सभ्यता तथा संस्थाओं के विकास समझ सकेंगे। इतिहास का पठन-पाठन इसी हेतु होता है। यदि यह पुस्तक इसमें सहायक हो सकी तो मैं अपने को धन्य समझूंगा।

प्रयाग
२० अप्रैल, १९३४ ई०

—विश्वेश्वर प्रसाद

तृतीय आवृत्ति

हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन होने से प्रचीन काल का इतिहास निकल गया है और मध्य काल में केवल कुछ संस्थाओं का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त १६ वीं शताब्दी के इतिहास वर्णन में एक नया अध्याय जार्ज चतुर्थ और विलियम चतुर्थ पर लिखा गया है। अन्यथा प्रबन्ध में कोई विशेष अन्तर नहीं हुआ है। मैंने पुस्तक को सरल करने का प्रयत्न किया हैं और आशा है कि यह अब विद्यार्थियों की आवश्यकता को पूरी कर सकेगी।

प्रयाग
१६ अगस्त, १६३६ ०

—विश्वेश्वर प्रसाद

वर्तमान संस्करण

हाई स्कूल के नए पाठ्यक्रय के अनुसार इस आवृति में यह परिवर्तन दिया गया है। कि मध्यकालीन इङ्गलैंड सम्बन्धी अध्याय पुस्तक से निकाल दिया गया हैं। पुस्तक को अधिक उपयोगी और सरल बनाने का भी प्रयत्न किया गया है।

प्रयाग
१५ जून, १६४६ ई०

—विश्वेश्वर प्रसाद

विषय-सूची

पृष्ठ

पृष्ठ

पृष्ठ

स्टुअर्ट काल

पृष्ठ

पृष्ठ

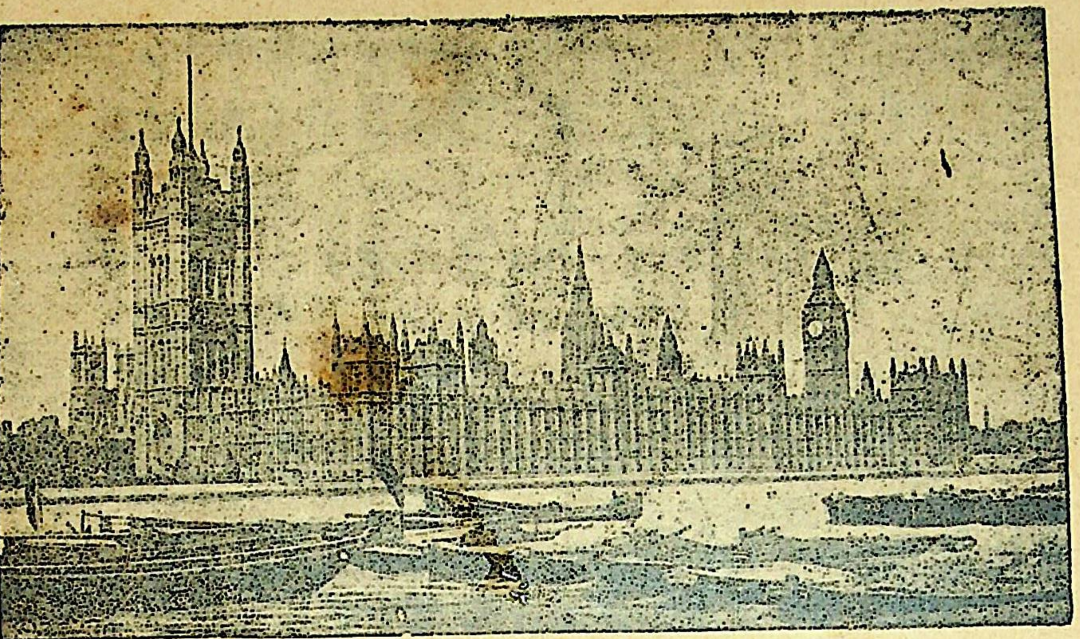
पृष्ठ

पृष्ठ

८

चित्र सूची

मानचित्र



पार्लियामेंट भवन

इंगलैंड का इतिहास

इंगलैंड के इतिहास पर भूगोल का प्रभाव

भूगोल के ज्ञान के बिना किसी देश के इतिहास को अच्छी तरह समझना कठिन है। वास्तव में पृथ्वी का इतिहास मनुष्य के इतिहास से अधिक प्राचीन है। अतः किसी देश के इतिहास के पहले उसके भूगोल का ज्ञान आवश्यक है। राष्ट्रों की सीमा, युद्धक्षेत्र तथा उपनिवेशों की स्थिति, ये सब किसी देश के इतिहास पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। इसलिए यह कहना अनुचित न होगा कि इतिहास और भूगोल का घनिष्ट सम्बन्ध है। ऐतिहासिक घटनाओं, राष्ट्रों के विकास, जातियों की सभ्यता और उनके संगठन पर भौगोलिक परिस्थिति का बहुत प्रभाव पड़ता है। भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक आकार के अनुसार ही प्रत्येक देश में मनुष्यों के रहन सहन, सामाजिक जीवन उद्यम, व्यवसाय आदि का प्रबन्ध होता है। गर्म देश के मनुष्यों का साधारण जीवन ठण्डे देश के मनुष्यों से भिन्न होता है, और पहाड़ी प्रान्तों का राजनैतिक संगठन सदा ही उपजाऊ बड़े समतल देशों से भिन्न होगा। सब देशों के इतिहास पर भूगोल का बहुत प्रभाव पड़ता है इङ्गलैंड के इतिहास पर भी, इसी प्रकार, उसकी भौगोलिक स्थिति का विशेष प्रभाव पड़ा।

भूगोल और इतिहास का सम्बन्ध

ब्रिटेन के इतिहास पर भूगोल का प्रभाव तीन प्रकार से पड़ा है—

ब्रिटेन की स्थिति भूमण्डल पर स्थिति, प्राकृतिक आकार और खनिज पदार्थों की उत्पत्ति द्वारा। नक़्शे पर देखने से मालूम पड़ता है कि ब्रिटेन गोलार्द्ध का केन्द्र है। इससे संसार के दूर देशों को पहुंचना सहज है। दूसरे, यह द्वीप है और चारों ओर समुद्र से घिरा है। समुद्र ही इसका रक्षक है और समुद्र ही अन्य देशों में पहुंचने का मार्ग है। इसके पश्चिम में अटलांटिक महासागर है, जिसके पार अमेरिका का विस्तृत महाद्वीप है। पूर्व में यूरोप है जो डोवर के जलडमरूमध्य (Strait of Dover) द्वारा अलग होते हुए भी बहुत निकट है। उत्तर में उत्तरी सागर (North Sea) है जिसके द्वारा यहाँ के लोग सहज ही यूरोप के उत्तरी पश्चिमी देशों में पहुँच सकते हैं, और दक्षिण में बिस्के की खाड़ी है जिसमें होकर और इंगलिश चैनल तथा जिब्राल्टर के फाटक को पार करके भूमध्यसागर (Mediterranean Sea) तथा पूर्वी देशों को जा सकते हैं। अतः इसकी विशेषताएं हैं, द्वीपदेश होना, यूरोप का पड़ोस और भूमण्डल के मध्य में स्थिति। इन तीनों का इसके इतिहास पर बहुत प्रभाव पड़ा है।

द्वीपदेश द्वीपदेश समुद्र से घिरे होने के कारण बहुत सुरक्षित होते हैं और उन पर हमला करना सहज नहीं होता है और यदि उसने अपनी जल-सेना को काफी मजबूत कर लिया है तो आक्रमण का कोई भय नहीं रह जाता है। दूसरे द्वीपदेश को सरहद के लिये पड़ोसियों से झगड़े का डर नहीं रहता है क्योंकि न पड़ोसी ही सीमा का उल्लंघन कर सकता है न देशवासियों ही को अधिक भूमि दबाने का लालच होता है। ब्रिटेन को फ्रांस तथा जर्मनी के समान सरहद के लिये अपने पड़ोसियों से झगड़ा नहीं करना पड़ा है। उस पर नार्मन आक्रमण के बाद अन्य कोई हमला सफल भी नहीं हुआ है आधुनिक काल में उसकी जल-सेना बहुत मजबूत रही है इससे यूरोप के किसी भी राष्ट्र

की उस पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं पड़ी। लुई चौदहवें और नैपोलियन बोनापार्ट ने आक्रमण का विचार किया था परन्तु जल-युद्ध में हारकर वे निराश हो गए ब्रिटेन सुरक्षित रहा।

व्यवसाय और व्यापार की उन्नति के इस युग में समुद्रतट पर अधिकार होना बहुत लाभदायक है; क्योंकि बिना समुद्रतट हुए दूर देशों से व्यापार करना यदि सम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। द्वीपदेश को यह कठिनाई नहीं होती है। ब्रिटेन के सब भागों से समुद्रतट बहुत निकट है, इससे व्यापार में सुविधा हुई, और दूर देशों में व्यापारिक तथा राजनैतिक साम्राज्य स्थापित हो सका।

द्वीपदेश होते हुए भी ब्रिटेन अन्य देशों से बिलकुल अलग नहीं रह सका क्योंकि यूरोप महाद्वीप इसके बहुत निकट है। इस कारण यूरोप की सभ्यता और जाग्रति का प्रभाव इस देश पर भली प्रकार पड़ा है। वहाँ के राजनैतिक, व्यवसायिक, धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलनों का भी इस पर असर होता है। १७वीं शताब्दी में यूरोप में नई विद्या-प्रचार की लहर और धर्म-सुधार आन्दोलन, दोनों ने इंगलैंड में भारी परिवर्तन किया था। निकट होने के कारण इसको बेल्जियम की रक्षा का सदा ध्यान रहा है और लुई चौदहवें, नैपोलियन तथा जर्मनी से इसी कारण युद्ध हुए हैं। दूसरे, इसको यूरोप में शक्ति-सामंजस्य (Balance of Powers) को स्थिर रखने का सदा प्रयत्न करना पड़ा है जिसके कारण सोलहवीं तथा अठारवीं सदियों में युद्ध हुए हैं।

यूरोप का पड़ोस

जब तक अमेरिका का पता न लगता था, इंगलैंड संसार के स्थल भाग के एक कोने में समझा जाता था, जिसके कारण इसके व्यापार में कोई उन्नति न हो सकी थी। परन्तु जब कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की तो इंगलैंड को अपनी स्थिति से बहुत लाभ हुआ। नकशा देखने से जान पड़ता है कि लन्दन स्थल-गोलार्द्ध के मध्य में स्थित है और वहाँ से संसार

भूमंडल पर स्थिति

के सभी भागों में पहुँचने का सहज रास्ता है। इस स्थिति से आधुनिक काल में व्यापार को बहुत लाभ पहुंचा है। दूसरे इनको उपनिवेशों की स्थापना करने और उन पर उचित शासन रखने में बहुत सुगमता हुई। अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा एशिया, इन सब महाद्वीपों में इनका साम्राज्य फैल सका और अब तक वर्तमान है।

नकशा देखने से जान पड़ता है कि इंगलैंड के किनारे बहुत कटे हुए हैं, इसकी बाह्यरेखा (Outline) बहुत टेढ़ी है और कहीं-कहीं समुद्र दूर तक देश के अन्दर घुस गया है। इस बनावट से यह लाभ हुआ कि देश में अच्छे बन्दरगाह अधिक संख्या में हैं। भारतवर्ष का किनारा सपाट और सीधा है जिससे अच्छे बन्दरगाहों की कमी है और जहाजों को तूफान या वैरी से बचने के लिये सुरक्षित स्थान नहीं मिल सकते हैं। इसके विपरीत इंगलैंड में अच्छे बन्दरगाहों की संख्या अधिक है, जिससे प्रजा में समुद्र यात्रा का अभ्यास बढ़ा और देश की नाविक शक्ति प्रबल हो सकी। व्यापार के लिए तो अच्छे सुरक्षित बन्दरगाह बहुत ही उपयोगी होते हैं। इसके अतिरिक्त, दूसरी विशेषता यह है कि इंगलैंड पहाड़ों के कारण स्काटलैंड से भिन्न है। देश में भी यदि बीच से लकीर खींची जाय तो दो मुख्य भाग हो जाते हैं, पश्चिम में वेल्स की पहाड़ी जमीन और पूर्व में समतल उपजाऊ भाग। इसका असर यह हुआ कि देश में एक ही जाति रह सकी और जातीयता के भावों का विकास बहुत शीघ्र हुआ। स्काटलैंड से विभिन्नता होने के कारण आपस में बराबर झगड़ा रहा और रानी ऐन के समय के पूर्व कभी शान्ति न हो सकी।

आकार का प्रभाव

आयरलैंड और इंगलैंड के बीच में समुद्र है, जो न तो बहुत गहरा है और न बहुत चौड़ा ही। अलग होने के कारण वह सभ्यता और जातीयता में इंगलैंड से बहुत भिन्न है। परन्तु आयरलैंड इतना छोटा और इतना ग़रीब है कि वह स्वतन्त्र शक्तिशाली देश नहीं रह सका।

अतः पड़ोस के कारण वह इङ्गलैंड के शासन में आ गया। आयरिश जनता इस पराधीनता के कारण बराबर असन्तुष्ट रही और अंग्रेजों को वैरी समझती रही। आधुनिक काल में आयरलैंड के विद्रोह ने इंगलैंड के इतिहास पर बहुत प्रभाव डाला है।

व्यापार की उन्नति में इंगलैंड के खनिज पदार्थों ने बहुत सहायता की है। लोहे और कोयले की खानें तो अन्य देशों में भी हैं, परन्तु इस देश में दोनों पदार्थ बहुतायत से मिलते हैं और दोनों की खानें पास पास हैं। व्यवसायिक क्रांति के कारण जब इन वस्तुओं का अधिक प्रयोग हुआ तो इस सुगमता के कारण व्यवसाय ने बहुत उन्नति की। दूसरा फल यह हुआ कि खनिज पदार्थों के उपयोग के कारण जन संख्या के वितरण में भी आधुनिक काल में बहुत परिवर्तन हुआ है। प्राचीन तथा मध्य काल में इङ्गलैंड कृषि-प्रधान देश था, इससे अधिक जन-संख्या दक्षिण तथा पूर्व के समतल भागों में बसी हुई थी, परन्तु अठारहवीं शताब्दी से उत्तर तथा पश्चिम में खानों के निकट पहाड़ी प्रान्तों में लोगों ने बसना आरम्भ किया, जिससे वहाँ की जन-संख्या बढ़ गई। इन नए स्थानों के निवासियों को राजनैतिक अधिकार प्राप्त न थे, इसलिए शीघ्र ही उन मजदूरों को राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने की इच्छा हुई जिससे उन्नीसवीं शताब्दी में सुधार आन्दोलन हुए और देश में पूर्णतया प्रजातन्त्र स्थापित हो सका। उत्तर पश्चिम में बड़े-बड़े नगर बस गए हैं, पुतली घर बन गए हैं, जिसमें हजारों मजदूर काम करते हैं। वहाँ आजकल मजदूरों तथा पूंजी पतियों में झगड़े चल रहे हैं।

खनिज पदार्थ और कृषि

अन्तिम बात इङ्गलैंड की आबहवा है। भौगोलिक तथा प्राकृतिक सुभीतों के कारण अंग्रेज जाति ने अपना इतिहास गौरवपूर्ण बनाया है; परन्तु वे शारीरिक तथा मानसिक गुण जिनके द्वारा अंग्रेज जाति यह सब कर सकी है, केवल उस देश की आबहवा पर निर्भर है। इङ्गलैंड न

जलवायु

तो इतना ठण्ढा है कि रूस के समान वर्ष के अधिक भाग में वर्फ़ से ढका रहे और न इतना गर्म कि लू चले। उत्तर में होने के कारण सर्दी है परन्तु गल्फ स्ट्रीम (Gulf-stream) से गर्मी मिल जाती है और जलवायु उपयुक्त हो जाता है। इससे वहाँ के लोग जाड़े और गर्मी में बराबर काम कर सकते हैं। ठंढा देश होने से उनको गर्म देश वालों की अपेक्षा खाने पीने का सामान इकट्ठा करने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है। इससे उनको परिश्रम करने का अभ्यास रहता है और वे आलसी नहीं होते। अपनी मेहनत के कारण ही वे इतनी शक्तिशाली और एक बड़े साम्राज्य के स्वामी बन सके हैं।

ट्यूडर-काल

१४८५—१६०५ ई०

२—आधुनिक काल का आरम्भ

वार आफ रोज़ेज़ के साथ मध्यकाल का अन्त हुआ और इङ्गलैंड के इतिहास में एक नये युग का आरम्भ हुआ, जिसका नाम आधुनिक काल है। सुविधा के लिए प्रत्येक देश का इतिहास साधारणतः तीन युगों में बाँटा जाता है, प्राचीन काल, मध्य काल तथा आधुनिक काल। यूरोप तथा इङ्गलैंड के इतिहास में भी ये तीन युग माने गए हैं। परन्तु इन युगों के आरम्भ और अन्त के लिये निश्चित तिथि बताना कठिन है। इतिहासकारों ने कुछ विशेषताओं के अनुसार ही जिनसे एक युग की सभ्यता दूसरे युग की सभ्यता से अलग की जा सकती है, एक मनमानी तिथि मान ली है। इसी प्रकार यूरोप के इतिहास में आधुनिक काल के आरम्भ के लिए तीन तारीखें, भिन्न-भिन्न इतिहासकारों ने मानी हैं। कुछ लोग १४५३ ई० मानते हैं, जब कि तुर्कों ने कांस्टेंटीनोपुल पर अधिकार किया था; दूसरे लोग १४९२ ई० जब कोलम्बस ने अमेरिका को खोज पाया था; और तीसरे लूथर के धर्म-सुधार विद्रोह के समय (१५१७ ई०) से ही आधुनिक काल का आरम्भ मानते हैं। परन्तु इङ्गलैंड के इतिहास में एक सुविधाजनक तारीख निश्चित की जा सकती है, जब से आधुनिक संस्थाओं और आधुनिक सभ्यता का आरम्भ होता है। यह तिथि १४८५ ई० है जब हेनरी सप्तम राजसिंहासन पर बैठा तब से आधुनिक काल के लक्षण पूर्ण तथा स्पष्ट रूप से पाए जाते हैं। इसी के अनुसार ट्यूडर राजवंश से ही आधुनिक इङ्गलैंड का इतिहास आरम्भ होता है।

आधुनिक काल का आरम्भ

मध्यकालीन सभ्यता के लक्षणों से यह प्रकट होता है कि समाज बन्धनों से जकड़ा हुआ था और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए कोई स्थान न

न था। फ्यूडल अवस्था होने के कारण राज्य में दृढ़ता न थी और प्रजा और राजा के बीच में कोई सीधा सम्बन्ध न था। शासक और शासित ही आपस का समझौता था, जो कि भूमि के अधिकार पर निर्भर था। राष्ट्रीयता के कोई चिन्ह न थे। पादरियों का प्रभाव अधिक था और धर्म में अन्धविश्वास फैला हुआ था, परन्तु नवीन युग में ये सब बातें बदल गईं और उस सभ्यता का विकास हुआ जो कि आजकल संसार में फैली हुई है।

आधुनिक काल के लक्षण

इस युग की प्रथम विशेषता व्यक्तित्व (Individualism) का विकास है। इसके पूर्व व्यक्ति कोई चीज़ न था, जो कुछ था वह था समाज अथवा पंचायत। अब से सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक या आर्थिक मामलों में व्यक्तित्व का प्रभाव फैला। मनुष्य की क़दर मनुष्य होने के कारण होने लगी, न कि वह किसी पंचायत का अङ्ग है। इसके होने से फ्यूडलिज्म और गिल्ड्स आदि का टूटना आरम्भ हो गया और थोड़े दिनों में आधुनिक आर्थिक स्वतन्त्रता क़ायम हो गई।

व्यक्तित्व

दूसरी विशेषता थी राष्ट्रीय राज्यों का जन्म। मध्यकाल में सब से महान राजनैतिक संस्था होली रोमन साम्राज्य (Holy Roman Empire) था, जिसका आदर्श था सम्पूर्ण ईसाई संसार पर शासन करना। परन्तु ११ वीं शताब्दी से छोटे-छोटे राज्य क़ायम होने लगे थे जिनमें एक जाति, एक भाषा और एक एक भाव थे। फ्रांस, इङ्गलैंड तथा स्पेन ऐसे ही राज्य थे। इनमें राजा के अधिकार बढ़े और अमीरों की शक्ति क्षीण होने लगी। पोप तथा चर्च की भी शक्ति इन देशों में कम हो गई। राजा और प्रजा में सीधा घनिष्ट सम्बन्ध पैदा हो गया। शासन पद्धति दृढ़ हुई और अराजकता के चिन्ह लोप होने लगे। धीरे

राष्ट्रीयता

धीरे वे राज्य बढ़ते गए और १६ वीं शताब्दी में यूरोप के सभी देश इसी प्रकार के बन गए।

बुद्धि विकास

तीसरी बात है नए भावों का जन्म। पहले अन्ध-विश्वास के कारण मनुष्यों को किसी प्रकार की स्वतंत्रता न थी। उनको पुराने दृढ़ नियमों के अनुसार ही काम करना पड़ता था। नए विचारों तक की स्वतन्त्रता न थी, क्योंकि चर्च का दण्ड कठोर था। परन्तु अब नए युग में रोम और ग्रीस के पुरान साहित्य के पढ़ने से मस्तिष्क का विकाश हुआ और मनुष्यों में तर्क-भाव पैदा हुए। इसका फल यह हुआ कि अन्धविश्वास दूर होने लगा। धर्म में स्वतन्त्रता हुई और विद्या की तरफ मनुष्यों की रुचि हुई; जिससे नए-नए आविष्कार हुए और आजकल की वैज्ञानिक उन्नति सम्भव हो सकी। नवीन युग की सबसे बड़ी विशेषता यह तर्क-भाव ही है। इसके अतिरिक्त तिजारत में उन्नति हुई। समुद्र-यात्रा बढ़ी। नए-नए देश खोजे गए, यूरोप के भिन्न-भिन्न राष्ट्रों की दृष्टि अपने देश से हटकर उपनिवेशों की स्थापना करने और समुद्र पार साम्राज्य बनाने में लगी।

जातीयता

आधुनिक-युग की चौथी विशेषता राष्ट्रीय भावों की जाग्रति थी। लैटिन के स्थान पर मातृभाषा के प्रयोग होने से प्रत्येक देश के लोगों में जातीयता के भावों की वृद्धि हुई। वे अपने को और दूसरे देश के लोगों से अलग समझने लगे। फिर यह भाव उत्पन्न हुआ कि उनका देश शक्तिशाली हो और दूसरे देश का आधिपत्य न माने। इसलिए आपस में मित्राएं और वैमनस्य होने लगे और अन्तर्राष्ट्र सम्बन्ध (International relations) की नींव पड़ी। सब से बड़ी बात जो नवीन युग के प्रथम भाग में पाई जाती है वह राष्ट्रीय शक्ति-सामंजस्य है (Balance of Power) जिसके अर्थ यह हैं कि कोई राष्ट्र इतना शक्तिशाली न हो जाय कि दूसरों पर अधिकार कर ले। इसके लिए

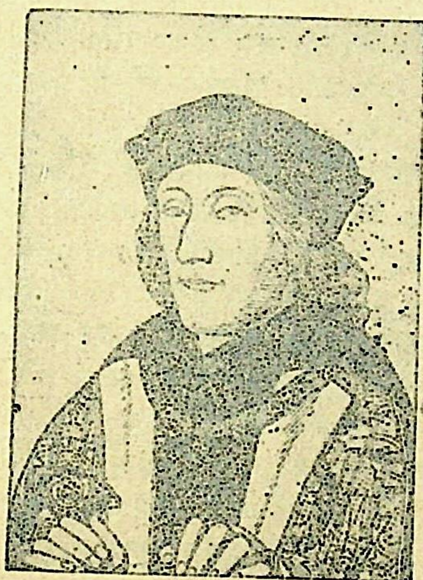
भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में समझौता रहता था और सन्धि इत्यादि हुआ करती थी। इस अवस्था के होने से यूरोप के सभी देश एक दूसरे से राजनैतिक सम्बन्ध रखने लगे और धीरे-धीरे एक पंचायत क़ायम हो गई।

अन्तिम बात है समाज की आर्थिक अवस्था में परिवर्तन। मध्यकाल में समाज का आधार कृषि ही था। व्यापार शुरू हुआ था, परन्तु इससे सामाजिक जीवन पर कोई विशेष प्रभाव न पड़ा। व्यवसायिक संगठन था। परन्तु नवीन युग में कृषि की तरफ़ से लोग हटने लगे। सम्पूर्ण शक्ति व्यवसाय में लगाई गई यहाँ तक कि खाने के लिये भी सामान उपनिवेशों और समुद्र पार राज्यों से आने लगा। आजकल यूरोप में मशीन द्वारा चीजें बनाई जाती हैं और दूसरे देशों में बेची जाती हैं। ऐसा होने से आर्थिक दशा में परिवर्तन हुआ। धन होने से (Mony economy) फ्यूडलिज्म का अन्त हुआ और पूंजीपतित्व (Capitalism) का आधिपत्य हुआ मालिक और मजदूरों में कलह होने लगी। आधुनिक युग का सब से भारी लक्षण यह आर्थिक परिवर्तन ही है। हेनरी सप्तम के समय में यह लक्षण इङ्गलैंड में प्रकट हो जाते हैं और उस समय से धीरे-धीरे इनका प्रभाव पड़ता जाता है इसी कारण उसके शासन काल से ही इंगलैंड के इतिहास के आधुनिक युग का आरम्भ माना गया है।

३—ट्यूडर वंश का आरम्भ

हेनरी सप्तम का राज्यकाल १४८५–१५०९ ई०

आधुनिक काल का प्रारम्भ ट्यूडर राजवंश से होता है। इस वंश के राजा और रानी अपने आचार और विचार में बिलकुल आधुनिक



हेनरी सप्तम

हैं। इस वंश का पहिला राजा हेनरी सप्तम हुआ जो वार आफ़ रोजेज में विजयी हुआ था। वह स्वयं लैंकेस्ट्रियन दल का नेता था और उसने एडवर्ड चौथे की लड़की एलिजबेथ के साथ विवाह का वचन देकर

ट्यूडर वंश का आरम्भ

यार्क दल के कुछ लोगों को अपनी ओर मिला लिया। जिससे वह विना रोक-टोक राजा हो गया। उसके पश्चात् कभी सिंहासन के लिए कोई युद्ध न हुआ और इंगलैंड ऐसे कलहों से वचा रहा। हेनरी सप्तम के समय से उसकी पौत्री एलीजवेथ की मृत्यु तक ट्यूडर वंश का शासन रहा; यही समय ट्यूडर काल कहलाता है।

ट्यूडर काल की विशेषताएं

१—ट्यूडर काल में फ्यूडालिज्म का अन्त हो गया, क्योंकि युद्ध में वड़े-वड़े अमीर और बैरन जो राजा की शक्ति का मुक़ाविला कर सकते थे, वंश सहित मारे गये थे। दूसरे राजा की शक्ति तोप और बारूद के प्रयोग तथा व्यापारी लोगों की सहायता के कारण बढ़ गई और फिर कभी अमीर लोग प्रबल न हो सके। राजा की शक्ति बढ़ती गई यहाँ तक कि एलीजवेथ के समय में निरंकुश (Despotic) शासन होने लगा। साथ ही साथ पार्लियामेंट की भी उन्नति हुई और इससे भी नई राज्यशक्ति को बहुत सहायता मिली। अराजकता और अत्याचार के भय से प्रजा राजा की सहायता करती थी। इसके सिवाय इस काल के सभी शासक प्रजा के हित का ध्यान रखते थे। अतएव राजा की शक्ति की उन्नति हुई और वैरनों की राजनैतिक शक्ति क्षीण हो गई जिससे देश में सुदृढ़ शासन संभव हो सका।

विद्या-प्रचार

२—इसकाल में नई जाग्रति की लहर जो यूरोप में फैली हुई थी, इंगलैंड में भी आई और साधारण लोगों को भी पढ़ने लिखने की इच्छा हुई। इस देश में भी यूनानी तथा रोमन साहित्य और दर्शन-शास्त्र का पठन-पाठन आरम्भ हुआ। आक्सफोर्ड और केम्ब्रिज के विश्वविद्यालयों में इन विषयों पर अच्छे अच्छे अध्यापक आये और उन्होंने अपनी शिक्षा से एक नए युग का प्रचार किया जिसके कारण धर्म सुधार (Reformation) संभव हो सका।

३—तीसरी विशेषता धर्म सुधार है जिससे इङ्गलैंड से रोमन धर्म उठ

गया। इस कार्य में हेनरी अष्टम तथा एलीजबेथ ने बहुत सहायता दी।

धर्मसुधार

चौथी विशेषता यह है कि इसी काल में समुद्र-यात्रा आरम्भ हुई, सामुद्रिक शक्ति का संचार हुआ और समुद्र पर देशों से व्यापार होने लगा। इस समय से इङ्गलैंड की नीति सदा अपनी जहाजी शक्ति को बढ़ाने की रही, जिससे कि आज कल वह सर्वोच्च पद पर पहुँच गया है। पाँचवें, इङ्गलैंड के शासक यूरोप के अन्य राजवंशों से राजनैतिक सम्बन्ध रखने के लिए आपस में विवाह-सम्बन्ध करने लगे। इस सम्पूर्ण काल में राजनैतिक विवाह-सम्बन्ध होते रहे जिनके कारण इङ्गलैंड का उचित मान बाहरी देशों में होने लगा। ट्यूडर काल में इङ्गलैंड एक महान् शक्तिशाली देश हो गया और यही कारण है कि यह काल इङ्गलैंड के इतिहास में सुनहला काल गिना जाता है। इस उन्नत में हेनरी सप्तम ने बहुत काम किया और उसकी नीति का अनुकरण उसके वंशज करते रहे।

ट्यूडर वंश का प्रथम शासक हेनरी सप्तम बड़ा ही दूरदर्शी था। वह अपने देश का सम्मान बढ़ाना चाहता था। अतः तत्कालीन परिस्थितियों को भलीभाँति समझते हुए, उसने अपने शासन में तीन बातों का विशेष ध्यान रखा। वह नवीन राज्य की आवश्यकताओं को भलीभाँति समझता था।

हेनरी की नीति

प्रथम, यह कि जितने दूसरे हक़दार संभव हो सकें उनको अलग करके अपना तथा अपने वंश का अधिकार मजबूर करना; दूसरे, अमीरों की शक्ति को कम करके राजा की शक्ति को बढ़ाना; और तीसरे, यूरोप की राजनीति में ऐसा भाग लेना जिससे देश का नाम उज्ज्वल रहे। इस समय देश में राजा की शक्ति बहुत कम थी, उसको पुष्ट करने से ही प्रजा को शांति और सुख मिल सकता था। इन तीनों उपायों से शक्तिशाली होकर राजा अपने राज्य को लाभ पहुँचा सकता था और व्यापारी लोगों की सहानुभूति तथा सहायता से स्वयं लाभ उठा सकता था।

हेनरी की प्रारम्भिक कठिनाइयाँ

(१) लेम्बर्ट सिमनल का विद्रोह

परन्तु आरम्भ में हेनरी को शांति न मिल सकी। उसके वैरियों ने आयरलैंड में एक लड़के को खड़ा किया और यह बात फैला दी कि वह एडवर्ड, वारविक का अर्ल है, जिसको हेनरी ने कारागार में डाल रक्खा था और जो अब बाहर आकर सिंहासनपर अधिकार करना चाहता है। इस लड़के का नाम सिमनल (Lambert Simnal) था और इसका पिता आक्सफ़ोर्ड एक व्यापारी था। इङ्गलैंडमें तो ऐसा धोखा चलना कठिनथा इसलिए



एलीज़बेथ, हेनरी सप्तम की रानी

विद्रोहियों ने आयरलैंड ही उचित स्थान समझा। वहाँ उसने जर्मन सेना की सहायता से इंगलैंड पर आक्रमण किया। उसको दबाने में हेनरी को कोई विशेष कठिनाई न हुई, क्योंकि इंगलैंड में किसी ने भी विद्रोहियों का साथ न दिया। नाटिंघम (Nottingham) के निकट

स्टोक (Stoke) के युद्ध-क्षेत्र में हेनरी ने उसको सहज ही में हरा दिया (१४८७ ई०)। सब विद्रोही मारे गए या नष्ट हुए, केवल सिमनल को क्षमा कर दिया गया और उसको रसोईघर में एक नीच कार्य पर नियुक्त किया गया। इस भाँति प्रथम विद्रोह का शीघ्रता से दमन हुआ।

कुछ दिन के बाद १४९२ ई० में एक और छली जिसका नाम पर्किन वारबेक (Perkin Warbeck) था, हेनरी के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। उसने अपने आपको रिचर्ड (Richard, Duke of York) मशहूर किया, जिसके लिये यह बात कही जाती थी कि वह कुछ समय पहले ही मार डाला गया है। हेनरी की इस बात के विरुद्ध कोई विशेष प्रमाण न मिल सके और यह धोखा बढ़ता ही गया। आयरलैंड में उसका स्वागत हुआ। उसने इङ्गलैंड के उत्तरी भाग पर आक्रमण किया परन्तु सफलता न मिलने पर वह आयरलैंड भाग गया और वहाँ से १४९६ ई० में जब कार्नवाल में कृषक-विद्रोह हुआ तब एक सेना लेकर इंगलैंड आया। हेनरी को बहुत कष्ट न हुआ, क्योंकि वारबेक शाही सेना को देख कर भागा। वह पकड़ा गया और टावर (Tower) में क़ैद कर दिया गया। वहाँ से भी वह एडवर्ड (Edward Plantagenet) को साथ लेकर भागा। १४९९ में फिर पकड़ा गया, और फाँसी पर चढ़ा दिया गया। इस प्रकार से दोनों विद्रोह आसानी से दबा दिये गये। इन विद्रोहों के पश्चात् हेनरी के विरुद्ध कोई विद्रोह न हुआ उसे अपनी शक्ति बढ़ाने का बहाना मिल गया। अब उसने अमीरों की शक्ति को तोड़ने का विचार किया क्योंकि राजशक्ति बढ़ाने के लिये अमीरों को शक्तिहीन करना परमावश्यक था।

हेनरी की आरंभिक कठिनाइयाँ (२) पर्किन वारबेक का विद्रोह

इसके लिए हेनरी को अनेक उपाय करने पड़े। सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की थी कि राजा की आज्ञा का पालन हो और क़ानूनों को तोड़ा न जाए। दूसरी बात यह थी कि अमीरों की सेना शक्ति कम

अमीरों के साथ व्यहार

कर दी जाय, जिससे वे राजा के विरुद्ध कोई विद्रोह न कर सकें। अतः उसने पार्लियामेन्ट से एक क़ानून बनवाया, जिसके अनुसार बैरन अपनी सेना नहीं रख सकते थे और न अपने नौकरों को ही सिपाही की तरह रख सकते थे। जो बैरन इस नियम के विरुद्ध काम करता था उसको हेनरी अपने नए विचारालय में बुलाकर दण्ड देता था। एक समय की बात है कि हेनरी लार्ड आक्सफोर्ड के घर गया था। लार्ड ने बहुत श्रद्धा से खातिरदारी की और राजा के सम्मान के लिए अपने सब सैनिकों (Retainers) को पंक्ति में खड़ा किया। हेनरी ने पूछा—"क्या ये आपके नौकर हैं?" लार्ड ने उत्तर दिया—"श्रीमान्, ये मेरे सैनिक हैं।" राजा ने कहा—"महोदय! आपके आतिथ्य के लिए धन्यवाद है—परन्तु मैं अपने सामने ही अपने क़ानूनों का उल्लंघन नहीं देख सकता हूं।" लार्ड पर १०,००० पौंड जुर्माना हुआ। इसी प्रकार जो बेरन राजाज्ञा को तोड़ता था या तनिक भी विद्रोह के लक्षण दिखाता था, दण्ड पाता था। इन सब अपराधों के लिए हेनरी ने एक नया न्यायालय बनाया था जिसका नाम कोर्ट आफ़ स्टार चेम्बर (Court of Star Chamber) रक्खा गया। इनमें उन्हीं लोगों का न्याय होता था, जिनको मामूली न्यायालय दण्ड न दे सकते थे, जैसे कि बैरन, शेरिफ आदि या जिनका अपराध राजनैतिक ढंग का होता था, जैसे कि विद्रोह आदि। बहुधा जुरमाना का दण्ड दिया जाता था। इस कचहरी का यह नाम इस कारण पड़ा कि जिस कमरे में इसका अधिवेशन होता था उसमें पूर्व समय में यहूदी लोगों के दस्तावेज (Stars) रक्खे रहते थे।

हेनरी पार्लियामेन्ट से स्वतन्त्र होकर निरंकुश शासन स्थापित करना चाहता था। इसके लिए उसके पास धन का होना आवश्यक था। किन्तु राजा को धन पार्लियामेन्ट की स्वीकृति से ही मिलता था। पार्लियामेन्ट आवश्यकता होने पर राजा को कर वसूल करने की आज्ञा देती थी और

धन-वृद्धि के उपाय (Henry's Finances) इसी धन से राज्य कार्य चलता था। परन्तु जनता ऐसे कर पसन्द न करती थी और हेनरी की पार्लियामेंट से स्वतंत्र होना चाहता था। इसलिए हेनरी ने केवल पांच वार ही पार्लियामेंट को बुलाया; पहली बार पार्लियामेंट द्वारा जिन करों को वसूल करने की आज्ञा मिली थी उन्हीं के द्वारा यह काम चलता रहा; और दूसरे तरीक़ों से धन कमाता रहा। हेनरी ने अपने समय में बहुत ही कम युद्ध लड़े, इससे उसे बहुत व्यय न करना पड़ा। यहाँ तक कि जो रुपया पार्लियामेंट से युद्धों के लिए मिला था वह भी उसने बचा लिया। फिर हेनरी को जुर्माना से बहुत प्रेम था। वह प्राण-दण्ड न देकर जुर्माना करके अपना कोष बढ़ाता था। इसके अतिरिक्त उसके दो मंत्रियों ने बैरनों आदि से "भूखे भेड़ियों" की तरह जबरदस्ती बहुत धन वसूल करके कोष बढ़ाया। व्यापारियों से और अन्य धनी लोगों से जबरदस्ती क़र्ज़ा लिया गया जिसका नाम बेनीवोलेंसेज (Benevolences) पड़ा एक नया ढंग धन लेने का यह भी था कि लोगों से उनकी आर्थिक दशा और रहन-सहन का ढंग पूछा जाता था। यदि जान पड़ता था कि वे अच्छी तरह रहते हैं तो कहा जाता था कि वे अपने असीम धन में से राजा को भी कुछ दे सकते हैं। यदि वे कृपणता से रहते थे तो कहा जाता था कि वे अपने बचाए हुए धन से तो अवश्य ही कुछ देंगे। इस दलील को मार्टन्स फ़ोर्क (Morton's Fork) का नाम इतिहास में मिला है। हेनरी सरकारी तथा धार्मिक ओहदे बेच कर भी धन पाता था। इन्हीं सब उपायों से मरते समय उसने अपने पुत्र के लिए १८,००,००० पौंड कोष में छोड़ा, स्वयं भी स्वतंत्र रह सका और अपने पुत्र को भी पार्लियामेंट से स्वतंत्र कर गया। इसी धन के कारण उसका शासन इतना दृढ़ हो सका था।

पार्लियामेंट ने इस समय से राजा की शक्ति का तनिक भी विरोध न किया, वरंच सदा उसको सहायता देती रही, और उसकी अन्तर्राष्ट्र

हेनरीकी पार्लियामेंट

तथा बैरनों की दमन की नीति में पूर्ण सहयोग किया। हेनरी ने जब कभी रुपया मांगा उसको मिला और उसके मनमाने क़ानून भी पास हुए। इस सहयोग का मुख्य कारण यह था कि देश में शांति की आवश्यकता थी और मामूली प्रजा शांति स्थापना में पूरी सहायता देने को तैयार थी ट्यूडर शासकों का सौभाग्य था कि पार्लियामेंट सदा ही उनकी चेरी रही और उनका निरंकुश शासन सम्भव हो सका।

परराष्ट्रनीति

हेनरी ने अपने घरेलू शासन में उपरोक्त नीति से काम लिया। विद्रोहों को दमन करके, बैरनों को शक्तिहीन करके, तथा धन एकत्रित करके उसने अपने वंश का शासन इङ्गलैंड में दृढ़ कर लिया। अब वह अपनी वाह्यनीति द्वारा इङ्गलैंड का सम्मान यूरोपीय देशों में बढ़ाना चाहता था वार आफ़ रोज़ेज के कारण इगलैंड का प्रभाव यूरोप की राजनीति से बिलकुल उठ गया था। हेनरी का कर्त्तव्य था कि उसको पुनः स्थापित करे। उसकी परराष्ट्र नीति का केवल यही उद्देश्य था और इसमें वह सफल हुआ। इस समय यूरोप में दो शक्तिशाली देश थे, फ्रांस और स्पेन। इनमें आपस में झगड़ा रहता था इधर इङ्गलैंड और फ्रांस में बैर था। हेनरी ने सदा ही स्पेन से सन्धि रखकर फ्रांस का विरोध किया परन्तु स्वयं युद्ध से अलग रहा। उसने दोनों देशों की मित्रता को विवाह–सम्बन्ध से दृढ़ किया। स्पेन के राजा फ़ार्डिनंड (Ferdinand) की पुत्री कैथरीन का विवाह हेनरी की पुत्र आर्थर के साथ १५०१ ई० में हुआ, और जब आर्थर की मृत्यु हो गई तो पोप के विशेष आज्ञा से पुनः उसका विवाह हेनरी (दूसरे पुत्र) के साथ हुआ। स्काटलैंड में भी विवाह सम्बन्ध किया गया। हेनरी की पुत्री मारगरेट का विवाह वहाँ के राजा जेम्स चतुर्थ के साथ हुआ और दोनों देशों में क्षणिक सन्धि हो गई। इस समय की परराष्ट्रनीति का यह एक विशेष गुण था कि राजा लोग राजनैतिक सम्बन्ध को विवाह सम्बन्ध से दृढ़ कर लेते

थे। हेनरी ने भी इससे उचित लाभ उठाया और फ्रांस के विरोध से अपने देश को बचाए रक्खा। हेनरी ने फ्लैंडर्स से एक व्यवसायिक सन्धि (Intercursus Magnus) की जिससे कि इङ्गलैंड का ऊन वहाँ जाने लगा। वह युद्ध से बचा रहा, स्पेन तथा फ्लैंडर्स से विशेष मित्रता रही और फ्रांस और स्कटलैंड भी विरोध न कर सके। इङ्गलैंड का सम्मान बाहरी देशों में होने लगा और धीरे धीरे इङ्गलैंड यूरोप की महान् शक्तियों में गिना जाने लगा।

इस समय यूरोप में एक जागृति हुई, और स्पेन तथा पुर्तगाल में हिन्दुस्थान के लिये समुद्री रास्ता ढूंढ निकालने का प्रयत्न किया गया। इसमें पुर्तगाल सफल हुआ। हेनरी ने भी अपनी ओर से जानकैबट (John Cabot) को १४९७ ई० में भेजा और वह अमेरिका पहुँचा। इसका तत्काल फल तो विशेष न हुआ परन्तु धीरे धीरे व्यापार और समुद्र-शक्ति में उन्नति होती रही। इसी समय में इङ्गलैंड में नए विद्या-प्रचार की भी लहर फैली और आक्सफोर्ड आदि स्थानों में यूनानी तथा रोमन भाषाओं का पठन-पाठन शुरू हुआ, जिससे कि मनुष्यों के मस्तिष्क का विकास हुआ और अन्धविश्वास में कमी हुई। छापे की कल भी स्थापित हुई और पुस्तकें भी छपने लगीं। इन सब कारणों से इङ्गलैंड में भी जागृति हुई और आगे उन्नति हो सकी।

समुद्र यात्रा और विद्या प्रचार

अपने शासन काल में हेनरी ने देश को बहुत लाभ पहुंचाया। इंगलैंड का सम्मान उसने दूसरे देशों में बढ़ाया और अपने उत्तराधिकारियों के लिये यूरोपीय राजनीति में भाग लेना सहज कर दिया। उसने युद्धों से बचकर देश को शांति दी और बैरनों के दुःसाहस को सदा के लिए धक्का पहुँचाया, सुदृढ़ शासन की नींव डाली और पार्लियामेन्ट को राजा का सहायक बना कर भी उसकी मर्यादा में कोई कमी न होने दी। उसने देश में अच्छे क़ानून चलाये और न्याय के शासन में कोई ढील न होने

हेनरी का चरित्र

दी : फिर अपनी आर्थिक सन्धियों के कारण व्यापार को लाभ पहुंचाया तथा धन की वृद्धि की और समुद्र-यात्रा तथा विद्या-प्रचार में सहायता। इन सब बातों से प्रजा को उसने अपने साथ रक्खा और ट्यूडर निरंकुशता की नींव डाली।

हेनरी बुद्धिमान था और अपने भले बुरे को बहुत जल्दी समझ लेता था और उसी के अनुसार कार्य करता था। वह विद्या-प्रेमी था और विद्वानों का संरक्षक था। उसे धन से बहुत प्रेम था और उसने जमा भी खूब किया, परन्तु फिर भी यह प्रेम कृपणों का सा न था। वह धन की महत्ता को जानता था, और इसको केवल एक राजनैतिक शक्ति का अस्त्र समझता था, जिसके द्वारा उसके मनोरथ सिद्ध होते थे। जब कभी आवश्यकता हुई व्यय भी जी खोलकर किया। वह क्रूर न था और उसने कोई भारी अन्याय भी नहीं किया। हेनरी एक महान् शासक था, जिसने कि आधुनिक इङ्गलेंड की महत्ता की नींव डाली और इसी कारण उसकी गणना उस देश के मुख्य शासकों में की जाती है।

४—हेनरी अष्टम

१५०६—१५४७ ई०

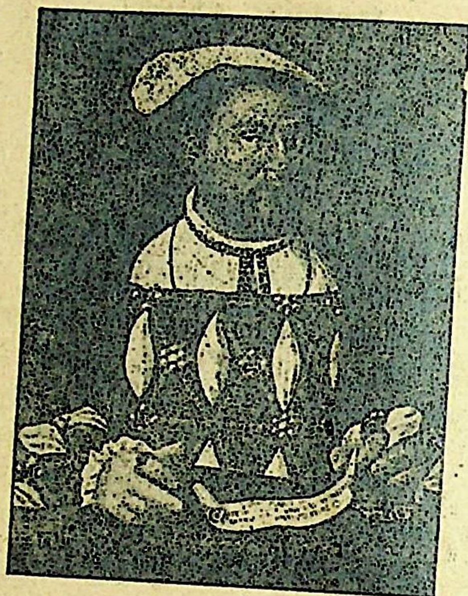
युद्धकाल

हेनरी अष्टम १५०६ ई० में गद्दी पर बैठा। वह अपने पिता से विपरीत स्वभाव का पुरुष था। उसकी अवस्था केवल १८ वर्ष की थी और उसको सब प्रकार के आमोद-प्रमोद से बहुत रुचि थी। इन्हीं कारणों से जब वह सिंहासन पर आया तो प्रजा को बहुत खुशी हुई कि देश के अच्छे दिन आ गये हैं। हेनरी ने आरम्भ से ही यह बात प्रकट कर दी कि वह अपने पिता की तरह कंजूस नहीं है, वरन् धन का उपयोग जानता है। उसने आदि से ही प्रजा को सन्तुष्ट रखने का प्रयत्न किया और अपने पिता के समय के दो राजमन्त्रियों (एम्पसन व डडले) को, जिनसे प्रजा नाराज़ थी, प्राणदण्ड दिया। परन्तु साथ ही साथ उसने यह भी खुले तौर से बता दिया कि राजा का वैरी कठिन दण्ड पाएगा।

हेनरी अष्टम का राज्यकाल

हेनरी का राज्यकाल दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है, पहला वह समय जब कि हेनरी अन्य देशों की राजनीति में उलझा हुआ था और अपने युद्ध तथा सन्धियों द्वारा देश का मान बढ़ा रहा था। इस काल में हेनरी के ऊपर वूल्ज़े (Wolsey) का प्रभाव था और दोनों की सलाह से देश की परराष्ट्रनीति निश्चित की जाती थी। इस काल में वूल्ज़े की विशेष उन्नति हुई। दूसरा काल है धर्मसुधार-काल, जिसमें हेनरी ने सदा के लिए अपने देश की धर्मनीति को पोप से अलग कर लिया और स्वयं ही देश का धार्मिक प्रधान बन बैठा। इस समय में

धर्म में सुधार हुआ जिसका प्रभाव भविष्य पर पड़ा। इस काल में विशेषतया राजमन्त्री क्रामवेल (Cromwell) का ज़ोर रहा।

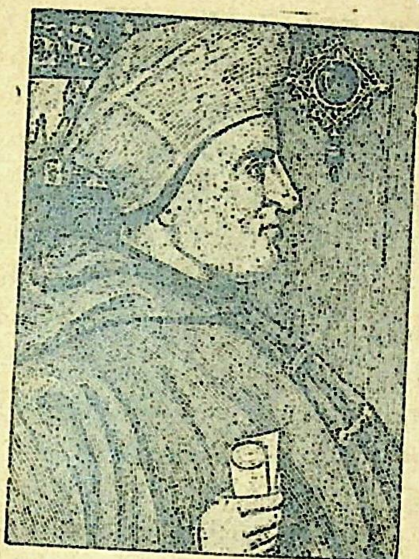


हेनरी अष्टम

वूल्जे का जीवन चरित्र

सन् १४७१ ई में वूल्जे का जन्म ईप्सविच (Ipswich) नगर में एक मामूली आदमी के घर में हुआ था। कुछ लोग तो उसको कसाई का पुत्र कहते हैं। उसने आक्सफोर्ड के मैगडालेन कालेज (Magdallen College) में उच्च शिक्षा पाई थी और चौदह वर्ष की अवस्था में बी० ए० करके कालेज में शिक्षक हो गया था। परन्तु उसकी अभिलाषाओं का अन्त यहीं न हुआ। वह राजनैतिक काम करना चाहता था। लार्ड डारसेट (Marquis of Dorset) उसको राजदरबार में लाए जहाँ वह अपने परिश्रम तथा बुद्धि के कारण राजा का मन्त्री हो गया। १५१५ ई० में वह प्रधान मन्त्री (Chancellor)

हुआ और उसी साल वह चर्च का कार्डिनल (Cardinal) भी नियुक्त हुआ तथा १५१७ ई० में पोप ने उसको लिगेट (Legate) भी



वूल्ज़े

बनाया। परराष्ट्रनीति में वूल्ज़े ही राजा का सलाहकार था। वूल्ज़े की इच्छा थी कि वह स्वयं पोप बने। इसके लिए उसने बहुत प्रयत्न किया परन्तु असफल हुआ।

सिंहासन पर आने के बाद कुछ दिन तक तो हेनरी अपने पिता की नीति पर चलता रहा। उसने स्पेन से मित्रता रक्खी और किसी भी

हेनरी की परराष्ट्रनीति वूल्ज़े के पूर्व

युद्ध में सम्मिलित न हुआ। परन्तु दो वर्ष बाद उसको स्पेन के पक्ष में फ्रांस से लड़ना पड़ा। इसका कारण यह था कि फ्रांस तथा स्पेन दोनों इटली पर अधिकार करने के लिए लड़ रहे थे और फ्रांस के राजा लुई बारहवें (Louis XII) की शक्ति इटली में बहुत बढ़ गई थी इसको कम करने के लिए स्पेन के

राजा फ़ार्डिनंड, जर्मनी के साम्राट मैक्सीमिलन और पोप जूलियस Julius II) ने होली लीग (Holy League) नामक एक संगठन बनाया। इसमें हेनरी भी शामिल हुआ। १५१३ ई० में उसने फ्रांस जाकर वहां की सेनाओं को ग्वीनगेट (Guinegatte) के युद्ध में हराया। यह जीत इतनी सहज थी कि इस युद्ध का नाम (Battle of Spurs) पड़ गया है, जिसके अर्थ यह है कि फ्रैंच लोग युद्ध होने के पूर्व ही अपने घोड़ों को एड़ लगा कर भागे। इङ्गलैंड पर भी इसका प्रभाव पड़ा। फ्रांस के मित्र स्काटलैंड के राजा जेम्स (James IV) ने आक्रमण किया, परन्तु हेनरी की अनुपस्थित ही में फ़लाडन फ़ील्ड (Flodden Field) के युद्ध में हार कर वह लौट गया। इसके पश्चात् निम्न कारणों से हेनरी को फ्रांस से मित्रता करनी पड़ी।

हेनरी को अब जान पड़ा कि उसके मित्र स्वार्थी हैं और उसके हित का तनिक भी विचार नहीं करते हैं। उसे यह भी जान पड़ा कि फ्रांस की इटली में कोई पक्की स्थित नहीं हो सकती है। फिर उसको यह भी पता लग गया कि फ्रांस पर अधिकार जमा लेना उसकी शक्ति के बाहर है, अतः वूल्जें की सलाह से उसने लुई से सन्धि कर लेने का निश्चय किया। लुई के साथ हेनरी की बहिन मेरी का विवाह ठीक हो गया—एक बुड्ढे के साथ १५ वर्ष की कन्या का विवाह—और फ्रांस के साथ क्षणिक सन्धि हो गई। इस सन्धि में वूल्जे का विशेष हाथ था और इसके बाद ही वह सब राज-काज का मालिक हो गया।

वूल्जे को युद्ध से कोई प्रेम न था। वह कूटनीति द्वारा ही सब काम पूरा करना चाहता था। उसके लिए सबसे बड़ी बात थी इंगलैंड की स्वार्थसिद्धि और इस हित के लिए वह किसी भी देश से सन्धि करने को तैयार था, फ्रांस तक से भी इंगलैंड का मान बढ़ाना ही उसकी उद्देश्य था और इसके लिए वह चाहता था कि स्वयं अन्य राष्ट्रों के कलह में सन्धिकारक (mediator) बन जाए। वूल्जे ने सब

वूल्जे का राज नीति पर प्रभाव

ही इंगलैंड को ऐसी स्थिति में रक्खा कि युद्ध करने वाले राष्ट्र सहायता के लिए उससे प्रार्थना करें और यूरोप में शक्ति सामञ्जस्य (Balance of power) बना रहे। वह सदा इस बात का प्रयत्न करता था कि किसी एक राष्ट्र या एक राष्ट्र-समूह की शक्ति इतनी न बढ़ जाए कि वह सम्पूर्ण यूरोप पर शासन कर सके। वह चाहता था कि दो समशक्ति के राष्ट्र-समूह हों और इंगलैंड उन दोनों के बीच में बिना युद्ध किये हुये समझौता करता रहे। बस उसने इसी नीति का पालन किया जिससे इंगलैंड का सम्मान बढ़ा और वह एक शक्तिशाली देश गिना जाने लगा। परन्तु कभी-कभी वूल्जे को देश तथा राजा की सम्मति के सामने झुक कर फ्रांस से विरोध करना पड़ा। जब-जब उसका बस चला और देश का लाभ जान पड़ा, उसने फ्रांस से सन्धि रक्खी, परन्तु बहुधा युद्ध की ही नौबत रही। वूल्जे ने पहले फ्रांस से सन्धि की परन्तु यह अवस्था बहुत दिनों तक न रह सकी। लुई के मरने के बाद फ्रांसिस (Francic I) गद्दी पर बैठा और उसने पुनः इटली पर अधिकार जमाने की चेष्टा की और उत्तरी इटली का स्वामी बन बैठा। वूल्जे ने स्पेन तथा जर्मनी के राजाओं को भड़का कर फ्रांस के विरुद्ध खड़ा किया। परन्तु वे बिना इंगलैंड की आर्थिक सहायता के आगे न बढ़ सके और फ्रांसिस से सन्धि कर ली। फ्रांस के राजा को भी वूल्जे की शक्ति का पता लग गया और उसने इंगलैंड से मित्रता करने की इच्छा की। १५१८ ई० में एक सन्धि हुई जिसमें सब राष्ट्रों ने भाग लिया, इससे यह सन्धि (League of Universal Peace) के नाम से प्रसिद्ध है।

१५१९ ई० में इंगलैंड की अवस्था बहुत ही अच्छी थी। फ्रांस उसका मित्र था, स्पेन का शासक चार्ल्स जो फार्डिनंड का दौहित्र था और जर्मनी का सम्राट् मैक्सीमिलन, दोनों उसकी सहायता पर निर्भर थे और पोप भी बहुत प्रसन्न था। पूरी आशा थी कि यूरोप में शान्ति रहेगी परन्तु उसी समय जर्मन सम्राट् मैक्सीमिलन की मृत्यु हो जाने से

सम्राट् (Emperor) पद खाली हुआ और मैक्सीमिलन का पौत्र चार्ल्स तथा फ्रांस का राजा फ्रांसिस दोनों उसको पाने का प्रयत्न करने लगे। हेनरी की भी यही अभिलाषा थी परन्तु कोई विशेष आशा न होने से वह चुप रहा। वूल्जे की नीति यह थी कि दोनों, फ्रांसिस तथा स्पेन का सम्राट् चार्ल्स, उसकी सहायता के भिक्षुक रहें। इसमें उसकी जीत रही। दोनों ही हेनरी से मिलना चाहते थे। दरबार में स्पेन के पक्ष में बहुत लोग थे परन्तु वूल्जे ने ऐसी चाल चली कि दोनों ही से अपने देश को अलग रक्खा। पहले चार्ल्स मिलने आया और मई १५२० ई० में तीन दिन रहकर लौट गया। इसके बाद हेनरी फ्रांसिस से मिलने कैले गया। इस स्थान पर वूल्जे ने बहुत आमोद-प्रमोद का प्रबन्ध किया था और इतनी तड़क-भड़क दिखाई कि इस स्थान का नाम फ़ील्ड आफ़ दी क्लाथ आफ़ गोल्ड (Field of the Cloth of Gold) पड़ गया। इन उपायों से इंगलैंड का केवल इतना ही लाभ हुआ कि दोनों ही ने उसकी सहायता की आशा की और वूल्जे की कूटनीति न समझ सके। परन्तु यदि वूल्जे तीनों देशों को मिला रखना चाहता था तो इसमें वह असफल हुआ।

सन्धि बहुत दिन तक न रह सकी। चार्ल्स स्पेन तथा जर्मन का शासक था और जर्मन सम्राट् की हैसियत से इटली का भी स्वामी माना जाता था। उसके इस बड़े साम्राज्य को देखकर फ्रांसिस को भय हुआ कि वह फ्रांस पर भी अधिकार कर लेगा। अतः उसने इटली में चार्ल्स की शक्ति को तोड़ना चाहा और मीलान प्रान्त पर अपना अधिकार घोषित किया। इस कारण दोनों के बीच में युद्ध छिड़ गया। वूल्जे की अनिच्छा होते हुए भी हेनरी की जिद के कारण इंगलैंड को फ्रांस से लड़ना पड़ा। अंग्रेज़ सैनिक सफ़ोक ने (Suffolk) फ्रांस पर आक्रमण किया परन्तु उसका कोई फल न हुआ। १५२५ ई० में फ्रांसिस की पाविया (Pavia) के युद्ध में हार हुई और वह बन्दी

फ्रांस से युद्ध १५२२–१५२६

कर लिया गया। अब हेनरी को पुनः फ्रांस पर अधिकार करने की इच्छा हुई। वूल्जे ने धन एकत्रित करने के लिए पार्लियामेंट से सहायता माँगी, (Amicable Loan) नामी कर्जा भी उठाया, पर कोई विशेष लाभ न हुआ। बिना धन के युद्ध करना असम्भव था। इस समय चार्ल्स की बढ़ती शक्ति को देखकर वूल्जे ने १५२६ ई० में फ्रांस से सन्धि की जिसके द्वारा इंगलैंड को बहुत रुपया मिला। इस सन्धि से यह सम्भव था कि चार्ल्स की बढ़ती हुई शक्ति को धक्का लगता और इंगलैंड को विशेष लाभ होता, परन्तु इसी समय हेनरी अपनी रानी कैथरीन से अलग होना चाहता था। उसका मंत्री वूल्जे जो परराष्ट्रनीति में उसका सलाहकार था, कैथरीन के त्याग में हेनरी की सहायता करने में असमर्थ था। अतः दोनों में अनबन हो गई। वूल्जे का तो पतन हुआ और हेनरी घरेलू झगड़ों में इतना फंस गया कि उसने परराष्ट्रनीति में भाग लेना बिल्कुल बंद कर दिया।

५—हेनरी अष्टम

धर्म-सुधारकाल १५२७—४७ ई०

१—यूरोप में धर्म सुधार

ईसाई धर्म की तत्कालीन अवस्था

पोप रोमन चर्च का मुख्याधीश था और सभी देशों के ईसाई उसको अपना नेता मानते थे। परन्तु इस समय के पोप केवल धार्मिक शासन ही नहीं चाहते थे, वे इटली में अपना एक राज्य बनाना चाहते थे, और इसके लिए वे युद्ध और राजनैतिक सन्धियों में भाग लेते थे। इस कारण उसका ध्यान धार्मिक बातों की ओर बहुत कम रहने लगा। कुछ पोप तो आमोद-प्रमोद तथा भोग-विलास में ही अपना जीवन व्यतीत करते थे। उनका उद्देश्य केवल धन पाना और राज्य बढ़ाना ही रह गया था। कुछ पोप बड़े दुष्ट चरित्र थे जिससे उनका प्रभाव बहुत ही बुरा पड़ता था। उनकी देखा-देखी उनके आधीन पादरी लोग भी सांसारिक और व्यवहारी हो गये थे। किसी का भी चरित्र ठीक न था। यहां तक कि मठों में रहने वाले साधु और साधुनी (Monks and Nuns) भी इस कुप्रथा से न बच सके। उनकी दुश्चरित्रता तो किंवदन्ती हो गई है।

पोप अन्य देशों तथा अपने आधीन पादरियों से बहुत धन माँगते थे। धन एकत्रित करने के भी विचित्र उपाय रचे गये थे। पोप को स्वर्ग में जगह दिलाने का अधिकार था, इसलिए वे धन लेकर अपना हस्ताक्षर देते थे, जिससे वह पुरुष या स्त्री स्वर्ग का अधिकारी हो जाता था। पादरी लोग राज-नियम और राजा की अदालतों के बाहर थे। और उनकी अपीलें केवल पोप के पास जाती थीं। पोप तथा पादरी

लोग विवाह अथवा क़र्ज़ सम्बन्धी जितने मुक़द्दमें होते थे उनका फ़ैसला करते थे। इन सब कारणों से कुछ राष्ट्रों में पोप के विरुद्ध एक आन्दोलन उठा था। सब ओर से सुधार की पुकार आने लगी थी और राजा तथा प्रजा सभी यह चाहते थे कि ऊपर से नीचे तक पूरे कैथोलिक धर्म में परिवर्तन किया जाय। इधर १५वीं तथा १६वीं शताब्दियों में नवीन विद्या-प्रचार के कारण शिक्षित समुदाय में एक नई जाग्रति हो गई थी। वे लोग समझने लगे थे कि कैथोलिक मत अन्धविश्वास में फंसा हुआ है। वे लोग बुरी रीतियों और कुप्रथाओं का विरोध करने लगे थे। यह स्पष्ट था कि नए युग में कैथोलिक मत को बिना सुधारे हुए चलाना असम्भव है। परन्तु पोप स्वयं अपने स्वार्थ के कारण न करते थे और बिना उनकी अनुमति के सुधार होना कठिन था। एक ओर चर्च में बुराइयाँ दूसरी ओर लोगों में जाग्रति, बस एक उपाय यही था कि विद्रोह किया जाय।

लूथर का नया धर्म

लूथर ने जर्मनी में टेट्ज़ेल (Tetxel) नामी पोप के हस्तपत्र* बेचने वाले पादरी के एक लज्जाहीन व्यवहार से पीड़ित हो कर विरोध का झण्डा उठाया। पहले तो उसने केवल इंडलजेंसेज़ (Indulgences) (पोप के हस्तपत्र) का ही विरोध किया, परन्तु जब उसको समझ पड़ा कि चर्च और पोप सभी ऐसी कुप्रथाओं को छोड़ नहीं सकते हैं तब उसने पोप का भी विरोध किया और कुछ धर्म-सिद्धान्तों का भी खण्डन किया। उसके विरुद्ध पोप ने दण्ड की आज्ञा दी, जर्मनी के महाराजाधिराज ने देश से निकालने की आज्ञा की परन्तु जर्मनी की जनता उसकी अनुयायी थी इससे उसका मत वहाँ फैल गया। उसने बाइबिल का देश की भाषा में अनुवाद किया और इस कारण विशुद्ध ईसाई धर्म सब की समझ में

*हस्तपत्र (Indulgences)—पोप ने घोषित किया कि इन हस्तपत्रों के खरीदने वाले अपने पूर्वजों सहित स्वर्ग जायेंगे।

आया। उसकी शिक्षा का सार यह था कि मनुष्य को ईश्वर में श्रद्धा और भक्ति रखनी चाहिए और अपना अन्तः करण शुद्ध करना चाहिए। इसी से वह स्वर्ग का भागी हो सकता है, न कि पूजा-पाठ और पादरियों को दान देने से। वह पोप तथा सम्पूर्ण चर्च-संगठन का विरोधी था। लूथर के उपदेशों से बहुत जल्दी उसका मत जर्मनी में फैला, कुछ राजा भी उसके अनुयायी हुए। जर्मन-सम्राट चार्ल्स ने इसको दबाना चाहा परन्तु ये राजा आपस में मिल गए और अपने धर्म का नाव प्रोटेस्टेंट (Protestant) मत रखा। यही मत यूरोप के अन्य देशों में फैला। लूथर का देहान्त १५४७ ई० में हुआ। वह एक गरीब किसान का लड़का था परन्तु अपनी शिक्षा और स्वतन्त्र विचारों के कारण वह संसार में एक नया मत फैलाने में समर्थ हुआ।

इसी काल में या इसके कुछ अनन्तर दूसरे देशों में भी अन्य धर्म-सुधारक हुआ जिन्होंने कैथोलिया मत तथा पोप के अधिपत्य का विरोध किया। स्विटजरलैंड (Switzerland) में पहले ज़्विंग्लो (Zvingli) ने ज्यूरिच (Zurich) में अपने नए मत का उपदेश किया परन्तु; विशेष प्रभाव न हुआ। इसके बाद उसी देश में फ्रांस निवासी काल्विन (Calvin) ने जेनेवा (Geneva) नगर में अपने मत का उपदेश किया। उसके अनुयायी बहुत कट्टर हुए। स्काटलैंड में इसी मत का प्रचार जान नाक्स (John Knox) ने किया। इंगलैंड में भी इसका प्रभाव पड़ा और एलीजबेथ के समद में प्यूरिटन (Puritan) दल बना जिसने देश में एक नई लहर बहा दी। इस प्रकार सोलहवीं शताब्दी में सभी देशों में धर्म-सुधार हुआ और नए-नए मत स्थापित हुए। पोप का शासन कमजोर हो गया, और कैथोलिक मत से बहुत सी कुरीतियाँ दूर हुईं। इसी काल में इंगलैंड में भी इन विचारों का प्रभाव पड़ा जिससे सम्भव था कि वहाँ भी लूथर आदि किसी का मत फैलता परन्तु। इङ्गलैंड में परिस्थिति भिन्न थी। हेनरी ने अपने स्वार्थ के

अन्य सुधारक

लिये पोप से झगड़ा किया फलतः इंगलैंड में धर्मसुधार राजा की ओर से प्रारम्भ हुआ।

२—इङ्गलैण्ड में धर्म-परिवर्तन

इंगलैंड में भी पोप के लगाए हुए कर तथा अनुचित अधिकारों का विरोध था। राजा बहुत पहले से ही विरोध कर रहे थे; प्रजा में विकलिफ़ के उपदेशों के उपरान्त पोप के प्रति कोई श्रद्धा न रह गई थी। फिर पादरियों और मठ वालों के दुराचरण से तो सबको घृणा हो गई थी। हेनरी भी अपने अधिकार की रक्षा करने के लिए पोप का विरोध करने को तैयार रहता था। १५१५ ई० में जब वूल्ज़े ने पादरियों की ओर से यह कहा था कि इस प्रश्न को पोप के ऊपर छोड़ दिया जाय तो हेनरी ने उत्तर दिया था कि "हम ईश्वर की कृपा से इङ्गलैंड के राजा हैं और ईश्वर के अतिरिक्त हमसे बड़ा कोई नहीं है; हम राजा के अधिकार को अपने पूर्वजों की तरह सुरक्षित रक्खेंगे" वह पादरियों पर पूर्ण शासन करता था। साथ ही साथ हेनरी को सुधार की भी चिन्ता थी, परन्तु वूल्ज़े की तरह वह अन्दर से सुधार चाहता था, विद्रोह नहीं। वूल्ज़े स्वयं कुप्रथाओं को मिटाना चाहता था और उसने मठों और पादरियों के जीवन में कुछ सुधार भी किए थे। इधर नई शिक्षा के प्रभाव से और विशेषकर कोलेट (Colet) तथा इरैस्मस (Erasmus) के व्याख्यानों से प्राचीन शुद्ध ईसाई मत की ओर सब की दृष्टि गई। लूथर के मत-प्रचार के साथ ही साथ इङ्गलैण्ड में भी कुछ लोग नए धर्म की तरफ़ झुके, परन्तु हेनरी ने पोप को प्रसन्न करने के लिए लूथर के उपदेशों के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी और पोप से प्रशंसा पाई। उसको 'धर्म रक्षक' (Defender of the faith) की उपाधि भी मिली। १५२७ ई० के पूर्व देश में सुधार की आवश्यकता सब को प्रतीत हुई थी। यह होते हुये भी इङ्गलैण्ड में पोप के विरुद्ध किसी नए मत के खड़े होने की आशंका न थी, क्योंकि हेनरी पोप का मित्र था।

देश में धर्म सुधार की इच्छा

यदि हेनरी के विवाह-विच्छेद की समस्या उठ खड़ी होती तो इङ्गलैण्ड में धर्मसुधार का और ही रंग हुआ होता।

धर्म-परिवर्तन का आरम्भ हेनरी को अपनी रानी कैथरीन का परित्याग करने* से होता है। इसलिए यह बात विशेष उल्लेखनीय होगई है। हेनरी के बड़े भाई आर्थर की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी कैथरीन का विवाह, जो स्पेन की राजपुत्री थी, हेनरी के साथ हुआ था।

कैथरीन का परित्याग और वूल्जे का पतन

यह विवाह धर्मविरुद्ध था अतः इसे नियमानुकूल बनाने के लिए पोप की विशेष आज्ञा प्राप्त की गई। कैथरीन अपने पति से पांच वर्ष बड़ी थी



कैथरीन

*नोट—हमने 'तलाक" शब्द इस कारण नहीं लिखा कि हेनरी 'तलाक" नहीं चाहता था, वह केवल यह चाहता था कि उसका विवाह असंगत ठहराया जाय और उसका विवाह न होना ही सिद्ध रहे।

और न तो सुन्दर थी और न अन्य रीति से ही अपने पति को प्रसन्न रख सकती थी। उसके कोई पुत्र न हुआ था, केवल एक पुत्री मेरी ही का जन्म हुआ था। हेनरी की पुत्रकी बहुत इच्छा थी, क्योंकि बिना पुत्र के यह भय था कि इङ्गलैंड में पुनः सिंहासन के लिए लड़ाई होने लगेगी और विदेशियों का राज्य हो जाएगा। कुछ दिन से वह इस समस्या को हल करना चाहता था। उसी समय दरबार में एक सुन्दरी युवती एनी बोलीन (Anne Boleyn) का प्रवेश हुआ। उस पर राजा मोहित हो गया, और उसने विवाह करना चाहा; इसलिए अब उसको कैथरीन के छोड़ने की आवश्यकता हुई। उसने वूल्जे के द्वारा पोप से यह प्रार्थना की कि वह पुरानी आज्ञा को शास्त्र-विरुद्ध बता दे, जिससे कि उसका विवाह असंगत समझा जाए। इस समय का पोप क्लीमेंट (Clement VII) स्पेन के राजा चार्ल्स के वश में था। रोम में चार्ल्स की सेना का अधिकार था इसलिए पोप चार्ल्स को मौसी के विरुद्ध ऐसी आज्ञा न दे सकता था। परन्तु पोप हेनरी से भी अलग नहीं होना चाहता था, इससे उसने वूल्जे के कहने से इङ्गलैंड ही में अपने दो अधिकारियों द्वारा इसका निर्णय कराना चाहा। उसने वूल्जे तथा कैम्पेज्जियो (Campeggio) को Legatine Court का न्यायाधीश बनाया और इन्हीं पर यह भार छोड़ा। उन्होंने कैथरी तथा हेनरी में समझौता के लिए प्रयत्न किया, परन्तु दोनों हठी थे। कैथरीन इस बात को मानने के लिए कदापि तैयार न थी कि वह हेनरी की धर्म-विरुद्ध पत्नी थी। कैथरीन ने अपने पति के पैरों पर सिर रख कर अपनी सच्चरित्रता का प्रमाण दिया और अपने प्रेम तथा भक्ति की दुहाई दी परन्तु हेनरी का हृदय न पसीजा और वह परित्याग पर तुला रहा। उसको विश्वास था कि वूल्जे उसके विरुद्ध कुछ न करेगा। परन्तु पहिले तो वहाँ देर लगी और पोप ने यह आज्ञा भेजी कि वह स्वयं ही उसका निर्णय करेगा। फिर पोप ने बहुत विलम्ब किया। देर होने से हेनरी अप्रसन्न हुआ। और उसने सब दोष वूल्जे पर रखा,

उसको पदच्युत किया, उसका धन ले लिया और उसे अपने पुराने पद (Archbishopric) पर यार्क भेजा। यहाँ भी वूल्जे को शाँति न मिली। फ्रांस के राजा के साथ पत्र-व्यवहार करने का अपराध उस पर लगाया गया और वह लन्दन बुलाया गया। वृद्धावस्था के कारण उसकी मृत्यु रास्ते में हो गई। मरते समय उसने कहा कि "जितनी श्रद्धा से मैंने राजा की सेवा की है, यदि ईश्वर को करता तो यह फल न होता।" वूल्जे के मरने के पूर्व ही हेनरी ने पोप से विरोध छोड़ दिया था और धर्म-परिवर्तन कार्य आरम्भ कर दिया था।



एनी बोलीन

जिस समय पोप ने तलाक का मुक़दमा अपने पास बुला लिया, हेनरी के Act of Praemunire को लागू किया और वूल्जे को इसी के अनुसार दण्ड दिया। इस क़ानून का यह मतलब

सुधार पार्लियामेंट था कि कोई इंगलैंड निवासी पोप से कोई सन्मान या पद न ले। इसके बाद हेनरी को प्रजा की सहायता की आवश्यकता हुई। उसने पार्लियामेंट को बुलाया और इसका ध्यान रक्खा कि उसके इच्छानुकूल ही सदस्य चुने जायं। यह पार्लियामेंट पुरानी सभाओं की तरह थोड़े दिन न रही, बल्कि सात वर्ष तक उसने राजा की आज्ञा का पालन किया और इतिहास में एक भारी क्रांति पैदा कर दी। इसी पार्लियामेंट का नाम "सुधार" या "सप्तवर्षीय पार्लियामेंट" (Reformation or Seven year's Parliament) था। इसकी तीन विशेषताएं थीं, पोप तथा पादरियों से विरोध और राजेच्छा पालन। परन्तु जब कभी धन का प्रश्न उठता था तो वह कोई भी दबाव न सह सकती थी। सात वर्ष के भीतर इसके द्वारा देश की धार्मिक अवस्था में जो कुरीतियाँ उठ खड़ी हुई थीं वे दूर हो गयीं, पोप का शासन तथा सम्बन्ध टूट गया और राजा का आधिपत्य धर्म पर पूर्णरूप से हो गया. राजा ने तो पोप के विरुद्ध क़ानून पास कराये, जिनमें पादरी भी राजी थे; परन्तु पार्लियामेंट ने धार्मिक कुरीतियों को भी साफ किया। सबसे पहले हेनरी ने देश के पादरियों को धमकाया कि वे सब Act of Praemunire के अनुसार दण्ड के भागी हैं, अतः उनको १००००० पौंड जुर्माना देना पड़ा और हेनरी को (१५३१ ई०) "Only Supreme Head of the Church and Clergy" (चर्च तथा पादरियों का अकेला और सर्वोत्तम नेता) मानना पड़ा। १५३२ ई० में Act of Annates पास हुआ जिसके द्वारा पोप जो धन नये विशपों से या उनके तबादले पर लेता था वह रोक दिया गया और विशपों के चुनाव तथा नियुक्त में उसका हाथ न रहा। फिर १५३३ ई० में Act in Restraint of Appeals भी पास हुआ और सदा के लिए देश में पोप के पास अपील जाना बन्द हुआ। परन्तु यह सब धमकियां इसलिए थीं कि पोप "तलाक" के बारे में अपनी अनुमति दे दें। १५३४ ई० में जब उसने हेनरी के विरुद्ध निर्णय दिया तब एक नया क़ानून

बना जिससे सदा के लिए पप से सम्बन्ध तोड़ा गया। इसका नाम Confirmatory Act था। इस समय "Peter Pence" नामी क़ानून के द्वारा शेष कर भी जो पोप को दिए जाते थे बन्द कर दिए गए। इसके साथ ही साथ पार्लियामेंट ने धर्म-सुधारक क़ानून भी बनाए। Pluralities Act से कोई पादरी एक से अधिक जगह में काम न कर सकता था और उसको अपने स्थान में रहना आवश्यक हो गया फिर १५३२ ई० में Mortmain Act के द्वारा पादरियों को भूमि-दान मिलना बन्द कर दिया गया और Benefit of Clergy के द्वारा उनके विशेष न्यायालय टूट गए और उन्हें भी सामान्य प्रजा की तरह राजा के न्यायालयों के सामने आना पड़ा। ये सब सुधार बहुत ही आवश्यक थे और विकलिफ़ के समय में जनता इनको चाहती थी। इन सब का प्रभाव यह हुआ कि पादरियों की विशेषता जाती रही और उनके ऊपर भी राजा का पूर्ण अधिकार हुआ, और हेनरी देश की धार्मिक संस्था का प्रधान बना। जब यह सब हो गया तो हेनरी ने अपना विवाह कैंटरबरी के आर्क बिशप क्रैनमर (Crarmer) की व्यवस्था के अनुसार एनी बोलीन से कर लिया और एक क़ानून (Act of succession) द्वारा अपने उत्तराधिकारी नियुक्त किए। इसके अनुसार बोलीन से यदि कोई पुत्र हो तो सिंहासन का भागी हो सकता था।

धर्ममठ भी जिनमें कि साधु और साधुनियाँ रहते थे, पुराने धर्म के विशेष स्तंभ थे। इसकी आय बहुत थी और देश का बहुत सा धन अपव्यय किया जा रहा था।

धर्ममठों का विनाश
Dissolution of Monasteries

हेनरी के नवीन मंत्री क्रामवेल ने या तो धार्मिक अत्याचारों को दूर करने के लिए या धन छीनने के लिए इनका विरोध किया। एक कमीशन इनकी अवस्था जाँचने के लिए भेजा गया। उसकी सम्मति थी कि वे मठ जिनकी आय २००पौंड से कम है तोड़ दिए जाएं। १५३६ ई० में पार्लियामेंट ने इसी आशय का न्याय बनाया और ३७३ मठ तोड़ दिए। इनके साधु

या तो दूसरे मठों में बाँट दिए गए या उनको कुछ धन देकर अलग कर दिया गया। यहीं पर इसका अन्त न हुआ। कमीशन की जाँच जारी रही और तीन वर्ष बाद सभी मठों की बारी आई। १५३६ ई० में दूसरा क़ानून बनाया गया और बड़े मठ भी तोड़ दिये गये। इनका धन भी राजा के हाथ लगा। यह सुधार हितकर था क्योंकि मठों की दशा शोचनीय थी; इनमें अत्याचार और अन्धविश्वास का राज्य था। यद्यपि इनके द्वारा गाँवों के किसानों को बहुत लाभ था, उनको शिक्षा मिलती थी और ग़रीबों को आश्रय और सहायता, परन्तु ये लोग दुराचारी थे। इसलिए इनमें टूटने से विशेष हानि न हुई वरन् इनकी भूमि औरों के काम आई।



सर टामस मोर

इन सब नए कामों में हेनरी को अपनी प्रजा से बहुत सहायता मिली फिर भी धर्म-परिवर्तन रक्तपात के बिना पूरा न हो सका। पोप से सम्बंध

पुराने धर्म पर बलिदान

तोड़ने के कारण कुछ लोग राजा के विरुद्ध हो ग थे परन्तु उनको स्पष्ट विरोध का साहस न था तब भी थोड़े लोगों ने अपने आदर्श और मन्तव्यों के लिये प्राण दिये। इनमें मुख्य सर टामस मो (Sir Thomas More) था। वूल्ज़े के बाद वह देश का चांसल (Chancellor) बनाया गया। वह बहुत ही विद्वान था और नवी विद्या का प्रेमी था। वह स्वतन्त्र विचार का पुरुष था जिसका उल्ले उसने अपनी पुस्तक यूटोपिया (Utopia) में किया है। परन्तु वह पो से सम्बन्ध-त्याग और कैथरीन के परित्याग से सहमत न था। 'मुख्यता का राजनियम (Act of Supremacy) तथा 'उत्तराधिका नियम' (Act of Succession) से विरोध होने के कारण औ तदनुसार क़सम न ले सकने के कारण उसको प्राणदण्ड दिया गया। महाबुद्धिमान बूढ़े पादरी फ़िशर (Fisher) को भी इसी कारण अप प्राण से हाथ धोने पड़े। १५३४ ई० में, उपरोक्त घटना से एक व पूर्व एक अधपगली लड़की एलीज़बेथ बार्टन को, जो बहुधा कैंट क साधुनी के नाम से प्रसिद्ध है, फांसी का दण्ड मिला, क्योंकि व "तलाक़" के विरुद्ध थी और कहती थी कि जो लोग इसके लि सलाह देंगे उनपर ईश्वर का कोप होगा।

ये सब तो व्यक्तिगत विरोध थे और उनको अपने विचारों के लि दण्ड मिले। परन्तु १५३६ ई० में जब कि छोटे धर्म मठ तोड़ दिये ग तो उत्तरी इंगलैंड में विप्लव हुआ जिसको पिल्ग्रिमे Pilgrimage of आफ ग्रेस कहते हैं। इसका मुख्य कारण था व grace की जनता का मठों के लिए प्रेम। इनके द्वा उसको दान और शिक्षा मिलती थी और मठाधीश इतने कठोर जमींदा न थे जितने कि वे लोग हुए जिनको उनकी भूमि दी गई। यह विप्ल आर्थिक कारणों से हुआ था और केवल धर्म का सहारा भर इस मिल गया था। इसका नेता राबर्ट आस्के (Robert Aske) नाम

एक वकील था। वह योग्य, बुद्धिमान और ईमानदार था। विद्रोही निम्नलिखित सुधार चाहते थे। (१) धर्म-मठ पुनः स्थापित किये जायें। (२) राजा के दुष्ट मन्त्री विशेषकर क्रामवेल हटा दिये जायें। (३) स्वतन्त्र विचार वाले पादरी अलग कर दिये जायें। (४) और वे नये कर जो अभी लगाये गये थे, बन्द कर थिये जायें। इसमें उत्तर के सभी नगर और गाँव सम्मिलित थे। विद्रोही सेना ३०००० के लगभग दक्षिण की ओर चली और रास्ते में ड्यूक आफ़ नारफ़क से मिली। उसने इसको समझा-बुझाकर वापिस किया, केवल थोड़े नेता लन्दन आये और वहाँ से राजा के आश्वासन देने पर प्रसन्नतापूर्वक लौट गये। परन्तु शीघ्र ही फिर विप्लव हुआ और इस बार राजा की सेना में उनको तितर-बितर कर दिया और बहुतों को प्राणदण्ड मिले। इस प्रकार एक घोर विद्रोह दबा दिया गया। इसके फलस्वरूप उत्तरी विद्रोह को शान्त करने के लिये और वहाँ के मुक़द्दमें तय करने के लिये कौंसिल आफ़ नार्थ (Council of the North) नामी अदालत स्थापित की गई। इससे प्रजा की स्वतन्त्रता को बहुत धक्का लगा।

जब देश में सुधार-दल ने जोर पकड़ा, तो कुछ ने यह चाहा कि लूथर के सम्प्रदाय को मानें, परन्तु हेनरी को यह बात पसन्द न थी।

हेनरी की धार्मिक नीति

उसकी इच्छा यह न थी कि धार्मिक सिद्धान्तों में कोई विशेष परिवर्तन किया जाय। उसको पोप से विरोध केवल निजी कारणों से था। उसका विरोध कैथोलिक धर्म से न था। यह केवल पुराने मत की बुराइयों को चर्च से दूर करना चाहता था। १५३९ ई० में उसने पार्लियामेंट से 'छः नियम' (Six Articles)× का क़ानून बनवाकर चलाया, जिसमें धार्मिक सिद्धान्तों को निश्चित किया गया। इसमें कैथोलिक मत से समता थी और प्रोटेस्टेन्ट लोगों के विरुद्ध क़ानून थे। कुछ

×Six Articles 1539 Trans-substantiation, celibasy, Communion in one kind only, etc.

लूथरन लोगों को कड़ी सजाएं भी मिली थीं। इस प्रकार सुधार का ढङ्ग राजनैतिक था, न कि धार्मिक। हेनरी को विरोध पोप से था वह इङ्गलैंड को पोप के शासन से मुक्त करना चाहता था। धार्मिक परिवर्तन न करके वह केवल गिर्जे की बुराइयों को मिटाना चाहता था। अतः हेनरी धर्म-परिवर्तन नहीं वरन् धर्म-सुधार चाहता था।

क्रामवेल

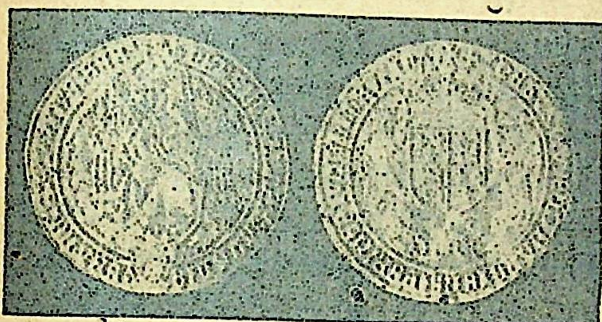
इस कार्य में राजा का विशेष सहायक क्रामवेल था। वह हेनरी की ही बदौलत उच्च पद पर पहुँचा था और उसने बहुत ही मन से राजा का काम किया। वह स्वयं नये विचारों का था और इसीलिये पोप से झगड़ा करने में राजा का सहायक हुआ। वह चाहता था कि हेनरी जर्मनी के प्रोटेस्टेन्ट लोगों से मेल रक्खे इसलिये उसने राजा का चौथा विवाह जर्मनी की ऐन आफ़ क्लीव्ज (Anne of Cleves) से कराया। राजा को वह पसंद न थी, इसके लिए क्रामवेल को दण्ड भोगना पड़ा। उसको १५४० ई० में मृत्युदण्ड मिला। क्रामवेल ने राजा की सेवा मन से की थी और देश को ऊंचा उठाने में सदा सहायक हुआ था, परन्तु फिर भी वूल्जे की तरह दण्ड दिया गया।

हेनरी के विवाह

हेनरी ने अपने ६ विवाह किये। पहले कैथरीन का परित्याग किया और एनी बोलीन से विवाह किया, परन्तु पीछे उस पर कपट का संदेह होने से उसको मरवा डाला। इससे एक कन्या एलीजबेथ उत्पन्न हुई थी। फिर जेन सीमूर (Jane Seymour) से विवाह हुआ, जिससे एक पुत्र एडवर्ड हुआ। वह शीघ्र ही मर गई। फिर ऐन से विवाह हुआ, परन्तु सुन्दर न होने के कारण वह छोड़ दी गई। फिर कैथरीन आफ़ हावर्ड (Katherine of Howard) से विवाह हुआ परन्तु उसको भी दुश्चरित्रता के कारण प्राण खोना पड़ा। अन्त में कैथरीन आफ़ पार (Kathcrine of Parr) से विवाह हुआ। और वह हेनरी के बाद भी जीवित रही।

अन्त तक हेनरी अपने शासन में कठोर रहा। जिसने उसका विरोध किया वह मृत्यु का भागी हुआ। उसे अपने अन्तिम काल में शान्ति न थी। गार्हस्थ्य जीवन सुखमय न था, और उसका स्वभाव चिड़चिड़ा और सन्देहमय हो गया था। शारीरिक बल भी कम था। १५४७ ई० में उसकी मृत्यु हुई। अपने मरने के पूर्व ही उसने अपना उत्तराधिकारी पार्लियामेंट की अनुमति से नियत कर दिया। पहले एडवर्ड को राज्य मिले, यदि वह बिना संतान मरे तो मेरी और फिर एलीजबेथ को राज्य मिल सके।

उसके अन्तिम दिवस और मृत्यु



१५०९ ई० का सिक्का

हेनरी की इच्छा थी कि वह सम्पूर्ण ब्रिटिश टापू का शासक हो, इसके लिए उसने बहुत प्रयत्न किया। वह स्काटलैंड से निकट सम्बन्ध रखना चाहता था और उसने प्रयत्न किया कि उसके पुत्र का विवाह वहां के राजा की अकेली पुत्री मेरी से हो जाये। परन्तु स्काट यह सम्बन्ध न चाहते थे और सदा ही इङ्गलैंड से लड़ते रहे। अन्तिम दिनों में भी साल्वे मास (१५४२) में युद्ध हुआ। स्काट लोग पोप तथा फ्रांस के मित्र थे। स्काटलैंड में हेनरी की दाल न

स्काटलैंड, आयरलैंड तथा वेल्स से सम्बन्ध

गली परन्तु आयरलैंड में उसका प्रयत्न बहुत कुछ सफल रहा। वह देश का भी राजा बन गया और फ़िज़जेरल्ड (Fitzgerald) कुल क़ाबू में रख सका; परन्तु यह सफलता थोड़े समय की थी, क्यों एलीज़बेथ के समय में फिर विद्रोह हुआ। वेल्स के साथ अच्छा बर्ता हुआ; उसको इङ्गलैंड से मिला दिया गया। (१५३६ में) और उसको अधिकार प्राप्त हो गये जो इंगलैंड को थे।

इङ्गलैंड के इतिहास में हेनरी बहुत ही अनोखा राजा हुआ है उसकी महानता, उसकी क्रूरता और उसका अनियंत्रित शासन सभी ढंग के निराले थे। उसने देश को जैसा चाहा बनाया, परन्तु प्रत्येक कार्य से उसका देश-प्रेम झलकता है। पार्लियामेंट पर उसका पूरा प्रभाव था, जैसा चाहा वैसा काम लिया और पार्लियामेंट ने सहर्ष उसकी आज्ञा का पालन किया। वह अपने मंत्रियों पर विश्वास करता था और जब तक उनसे कुछ काम निकलता था, उनको प्रसन्न रखता था, परन्तु जब उसका काम पूरा हो जाता था तो उनको कठिन दण्ड देता था। उसको कुछ लोग तो कुकर्मी, अधम, कठोर और दुष्ट कहते हैं, और कुछ ईमानदार और योग्य राजा बताते हैं, जिसने सब कुछ देश की भलाई के लिये किया। सत्य दोनों के बीच में है। कुछ कार्य तो उसने देशहित के लिए किए और कुछ निज इष्ट-सिद्ध के लिए। उसके ढंग में कठोरता और दृढ़ता थी और उसका शासन अनियंत्रित था। इङ्गलैंड को ऊँचा उठाने में उसने बहुत काम किया। पार्लियामेंट के स्वत्व को बढ़ाया, अमीरों को दबा कर राजा की शक्ति बढ़ाई। देश में उत्तम शान्ति स्थापित किया। अच्छी जल तथा थलसेना की नींव डाली, और देश की परराष्ट्रनीति को दृढ़ करके इङ्गलैंड को एक उच्च तथा महान् राष्ट्र बनाने का प्रथम प्रयत्न किया।

हेनरी का चरित्र

६—एडवर्ड छठा

१५४७—१५५३ ई०

नवीन धर्म-संचालन

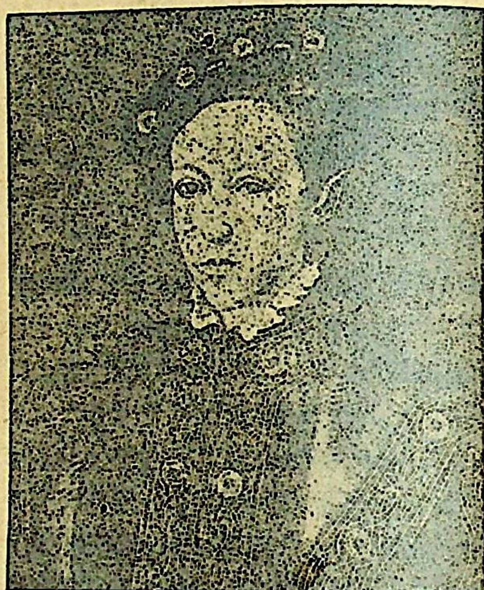
नवीन शासन विधान, सोमरसेट का संरक्षकत्व

हेनरी के मरने के समय उसके पुत्र एडवर्ड की अवस्था केवल दस वर्ष की थी। पहले ही हेनरी ने एडवर्ड के बालिग होने तक के लिए एक 'संरक्षक समिति' (Regency Council) बना दी थी जिसमें १६ सदस्य थे। परन्तु हेनरी के मरते ही एडवर्ड का मामा स्ट्रैफोर्ड अर्ल आफ़ सोमरसेट (Strafford, Earl of Somerest) समिति का प्रधान बन बैठा और "संरक्षक" कहलाया सोमरसेट एक मार्के का आदमी था; उसके उद्देश्य ऊंचे थे और भाव महान्; वह धैर्य, उदारता, वीरता आदि गुणों से पूर्ण था। परन्तु उसका शासन सफल न हो सका। इसका कारण यह था कि वह कार्य-कुशल न था, और सुधार के मामले में नम्रता से काम न लेता था। वह लालची था और चर्च की भूमि पर उसका दांत लगा हुआ था। उसको अपनी ख्याति की बहुत चाह थी; अतः धर्म-सुधार का काम, शासन या परराष्ट्र-नीति, किसी में भी वह अपनी तेजी के कारण सफल न हो सका।

सोमरसेट की परराष्ट्रनीति—स्काटलैंड से युद्ध

हेनरी की मृत्यु के समय सब देशों में सुलह थी। फ्रांस के साथ सन्धि हो चुकी थी और जर्मन सम्राट् चार्ल्स से भी सन्धि की बातचीत हो रही थी। धर्म-सुधार के लिए यह आवश्यक था कि इङ्गलैंड के दो मुख्य वैरी, फ्रांस और स्काटलैंड, इस समय उसके मित्र

रहें। सोमरसेट की भी यही इच्छा थी और स्काटलैंड से मित्रता करने के लिए उसका विचार था कि एडवर्ड का विवाह उस देश के राजा



एडवर्ड छठा

की पुत्री मेरी के साथ कर दिया जाए। स्काट लोग इससे सहमत थे परन्तु संरक्षक की विवेकहीनता के कारण बना बनाया खेल बिगड़ गया। इसी समय स्काटलैंड में भी धर्म-सुधार का आन्दोलन आरम्भ हुआ था। वहाँ का राजा जेम्स और कैथोलिक जनता इसका विरोध करते थे जिससे युद्ध की नौबत आई। धार्मिक जोश के आवेश में सोमरसेट ने स्काटलैंड के सुधार-दल की सहायता के लिए एक बड़ी सेना भेजी। स्काट और अंग्रेज सेनाओं में पिनकी (Pinkie) के स्थान पर १५४७ ई० में युद्ध हुआ, जिसमें सहस्रों स्काट मारे गए। इस अपमान के कारण उन्होंने मेरी को फ्रांस भेज दिया और उसका विवाह फ्रांस के युवराज फ्रांसिस के साथ हो गया। इस घटना से फ्रांस और स्काटलैंड दोनों

इङ्गलैंड के वैरी बने रहे। सोमरसेट को युद्ध-गौरव के सिवाय अन्य कोई लाभ न हुआ।

संरक्षक समिति के सदस्य धार्मिक मामलों में स्वतन्त्र विचार रखते थे और हेनरी के सुधारों से सतुष्ट न थे। वे इङ्गलिश चर्च को पूर्णतया प्रोटेस्टेंट मत के अनुसार बनाना चाहते थे, सनातन-धर्म से पूर्ण विच्छेद हो जाए।

धार्मिक सिद्धान्तों में परिवर्तन

सिद्धान्तों में परिवर्तन करने के लिए १५४७-४८ ई० में पालियामेंट ने नए नियम बनाए। गिरजों की मूर्तियां तोड़ डाली गई और रंगीन शीशों में जो महापुरुषों के चित्र थे वे भी मूर्तिपूजा कह कर नष्ट कर दिए गए। हेनरी का ६ धाराओं का नियम (Statute of Six Articles) हटा दिया गया ताकि प्रोटेस्टेंट लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता मिल सके। पादरियों को विवाह की भी आज्ञा मिल गई (हेनरी इसके विरुद्ध था) साथ ही साथ गिरजों और गिल्ड्स में जो धन दान-पुण्य के लिए था वह जब्त कर लिया गया। गिरजों में लेटिन भाषा में मास (Mass) या प्रार्थना बन्द कर दी गई और अंग्रेजी में होने लगी। इसके लिए १५३६ ई० में प्रथम प्रार्थना पुस्तक (First Prayer Book) रची गई और पादरियों को उसका व्यवहार करना पड़ा। इस पुस्तक को सब लोग समझ सकते थे। इन सब आज्ञाओं का राजकर्मचारियों ने पालन किया और प्रजा को नवीन सिद्धान्तों पर चलने के लिए वाध्य किया। इसके फल-स्वरूप देश में अशान्ति फैली और आन्दोलन हुए।

इस तरह हेनरी का काम उलट-पुलट गया और सुधारकों का जोश देख कर प्रजा को भय हुआ कि कहीं उनका सनातन-धर्म नष्ट न हो जाए।

प्रजा का विद्रोह १५४९ ई०

पोप से सम्बन्ध तोड़ने में तो वे सहमत थे, परन्तु धार्मिक सिद्धान्तों में ऐसे बड़े परिवर्तन के लिए वे तैयार न थे। विशेषकर सोमरसेट के गिरजाघरों को तुड़वा कर महल बनवाने और क़ब्रों को खुदवा कर

फेंकवा देने से तो उनको घृणा हो गई थी। दूसरे, इस समय देश की आर्थिक दशा भी बहुत शोचनीय थी। चीजों के दाम बहुत बढ़ गए थे, क्योंकि सिक्के खराब थे। किसानों के साथ जमींदारों का व्यवहार अच्छा न था। ऊन बेचने में लाभ होने के कारण जमींदारों ने खेतों को घिरा कर भेड़ों का रखना और घास लगवाना आरम्भ कर दिया था, जिससे किसानों का व्यवसाय चला गया और वे बे-रोजगार घूमने लगे। उनके विरुद्ध कड़े नियम भी बनवाए गए जिसके अनुसार बिना व्यवसाय के मनुष्य को पकड़े जाने पर दासता करनी पड़ती थी। तीसरे, मठों के टूट जाने और दान के धन के जब्त हो जाने से उन पर भारी संकट पड़ा। अतः १५४३ ई० में पच्छिम और उत्तर के प्रान्तों में प्रजा के विप्लव हुए।

पहला विद्रोह डेवनशायर, (Devonshire) और कर्नवाल में धार्मिक परिवर्तनों के कारण हुआ था, क्योंकि वे लोग नई प्रार्थना-पुस्तक न चाहते थे। विद्रोही एक्जीटर (Exeter) में घिर गए और अगस्त के महीने में विद्रोह दबा दिया गया।

इसी समय उत्तरी पूर्वी प्रान्त (Norfolk) में भी एक प्रबल विद्रोह उठा। यह आन्दोलन नवीन सिद्धान्तों के विरुद्ध न था बल्कि जमींदारों के विरुद्ध बेकाम मजदूर और किसानों का यह विद्रोह था। वे लोग राबर्ट केट (Robert Kete) नामी एक रंगसाज के नेतृत्व में उठ खड़े हुए और उन्होंने खेतों के घेरों को तोड़ डाला। बहुत कठिनता से वारविक (Dudley Earl of Warwick) ने विद्रोहियों का दमन किया और केट को प्राणदण्ड दिया। सोमरसेट को किसानों से सहानुभूति थी, इससे समिति के अन्य जमींदार सदस्यों का विचार

सोमरसेट का पतन हुआ कि यह सब उसी का काम है। अतः शीघ्र ही उसको संरक्षक पद से हटा कर कारागार में डालदिया गया और १५५२ ई० में राज-विद्रोह के अपराध में प्राणदण्ड मिला।

सोमरसेट के पतन में वारविक ने, जो १५५१ ई० में ड्यूक आफ नार्थम्बरलैंड (Duke of Northumberland) भी हो गया था,

विशेष भाग लिया था। वह अब समिति का मुख्य सदस्य हुआ। योग्यता के साथ साथ वह बड़ा स्वार्थी और लोभी था। उसका आदर्श केवल अपना और अपने कुटुम्ब का मान तथा धन बढ़ाना ही था। चर्च की भूमि पर उसने भी हाथ मारा और अपना तथा अपने साथियों का लाभ कराया। नार्थम्बरलैंड अपनी शक्ति दृढ़ करना चाहता था, इसके लिये केवल यही उपाय था कि वह गर्म विचार वाले सुधारकों का साथ दे, क्योंकि पुराने अमीर लोगों से किसी सहायता की आशा न थी। इसलिए उसके समय में भी धर्मसुधार होता रहा, अन्यथा वह स्वयं न धार्मिक था और न उसको धर्म के लिये विशेष प्रेम था। उसके समय में नये मत का झुकाव काल्विन के मत की ओर हुआ।

नार्थम्बरलैंड का संरक्षक काल

पार्लियामेंट ने १५२० ई० में दूसरी प्रार्थना-पुस्तक (Second Prayer Book) के लिये अनुमति दी, जिसमें नये मत के अनुसार बहुत से परिवर्तन किये गये थे। १५५३ ई० बयालीस धारा नियम (Forty Two Articles) द्वारा धार्मिक व्यवहार निश्चित किया गया। नये उपदेशकों को जर्मनी आदि देशों से बुलाया गया और नये बिशप नियुक्त किए गए, जिनमें रिडले (Ridley) विशेष उल्लेखनीय है। साथ ही साथ सरकार की तरफ़ से शिक्षा का अच्छा प्रवन्ध हुआ और पाठशालाएं खोली गईं। एक नियम यह भी बनाया गया कि दरिद्र भिक्षुकों की सहायता के लिये जनता से कर लेकर उसका पालन किया जाये। यह पहला प्रयत्न था जिसके आधार पर आगे एलीजबेथ ने अपने 'पुअर लाज' (Poor Laws) बनाये थे। इन सब बातों से चर्च पूरी तरह राजा के अधिकार में हो गया। परन्तु नार्थम्बरलैंड ने किसानों के कष्ट को दूर करने का कोई उपाय न किया जिसका परिणाम यह हुआ कि देश की आर्थिक दशा बिगड़ती गई।

एडवर्ड का स्वास्थ्य खराब था और उसके जीवन की कोई आशा न थी। उसकी और नार्थम्बरलैंड दोनों की इच्छा थी कि उसके बाद

कोई प्रोटेस्टेंट ही राज्य करे। अतः यह षड्यन्त्र रचा गया कि हेनरी की पुत्री मेरी को सिंहासन न मिले, क्योंकि यह कैथोलिक मत की थी और राजाज्ञा द्वारा हेनरी की बहिन मेरी की पौत्री जेन ग्रे (Lady Jane Grey) रानी बने। परन्तु एक गलती यह की गई कि पार्लियामेंट से अनुमति न ली गई। अतः यह आज्ञा न्यायसंगत न हो सकती थी। नार्थम्बरलैंड ने इसमें अपना स्वार्थ साधन भी चाहा था और अपने पुत्र डडले (Lord Guildford Dudley) का विवाह जेन ग्रे से पहले कर लिया था। इस तरह सिंहासन पर एक प्रोटेस्टेन्ट भी बैठता था और उसका आधिपत्य भी जम सकता था। एडवर्ड की मृत्यु १५५३ ई० के जुलाई मास में हुई। परन्तु प्रजा ने मेरी का साथ दिया इससे यह षड्यन्त्र व्यर्थ हो गया। एडवर्ड बड़ा परिश्रमी बालक था उसने धार्मिक प्रश्नों का अच्छा अध्ययन किया था और स्वयं बहुत गर्म विचार रखता था। उसके उद्देश्य बहुत ही ऊँचे थे और उसे देश-हित का बहुत ध्यान था; परन्तु अधिक परिश्रम के कारण उसकी मृत्यु थोड़ी ही अवस्था में हो गई।

उत्तराधिकार के लिए षड्यन्त्र

इस थोड़े से समय में देश की दशा शोचनीय हो गई थी। धन एकत्रित करने के अच्छे या बुरे बहुत से उपाय होते हुए भी राज-कोष खाली था। चीजों का मूल्य बहुत बढ़ गया था और आवश्यक वस्तुएं मुश्किल से मिलती थीं। किसानों की दशा खराब थी; वे जमींदारों के अत्याचारों से पीड़ित थे और व्यापारियों द्वारा ठगे जाते थे। धार्मिक सुधार के साथ साथ दुश्चरित्रता फैली हुई थी। इस सब का कारण समिति के सदस्यों का लोभ और स्वार्थ था, जिसके कारण वे शासन-कार्य ठीक न कर सकते थे।

एडवर्ड के काल में देश की दशा

७—मेरी ट्यूडर

१५५३–५८ ई०

'धर्म पर बलिदान'

एडवर्ड के मरते ही नार्थम्बरलैंड ने जेन ग्रे को रानी घोषित किया, परन्तु मेरी को कारागार में न डाला। वह नारफ़क भाग गई थी, वहाँ उसकी सहायता के लिए एक सेना एकत्रित हुई।

राजतिलक और चरित्र नार्थम्बरलैंड लन्दन से मेरी का दमन करने के लिए गया, परन्तु इस में देश में कोई भी प्रसन्न न था सब लोग उसके लालची स्वभाव से डरते थे, उसके धार्मिक परिवर्तनों से अप्रसन्न थे। उनकी दृष्टि मेरी पर लगी हुई थी। उसके सैनिक मेरी के विरुद्ध लड़ना नहीं चाहते थे अतः नार्थम्बरलैंड ने आत्मसमर्पण कर दिया। मेरी को राज्य मिला और नार्थम्बरलैंड तथा उसके मित्र मरवा डाले गए। जेन ग्रे और उसके पति को भी प्राण-दण्ड की आज्ञा हुई, परन्तु वह तत्काल ही मारे न गए।

मेरी को अपनी सफलता देख कर यह अनुमान हुआ कि लोग कैथोलिक धर्म को पुनः चाहते हैं। वह स्वयं कट्टर कैथोलिक थी और पोप के अधिकार को फिर से जमाना चाहती थी, ताकि उसकी माता के साथ जो अन्याय हुआ था उसका प्रतिहार हो जाए और स्वयं न्यायसंगत मानी जाय। धार्मिक जोश में वह देश के हानि-लाभ का विचार न रख सकी और उसने अपने मत के लिए वृथा रक्तपात किया और देश को भारी हानि पहुँचाई। उसके अभाग्य से उसे अच्छे सलाहकार भी न मिले। उसका सबसे योग्य मित्र गार्डिनर विंचस्टर का बिशप (Gardiner, Bishop of Winchester) था जो उसी के समान

धार्मिक विचार रखता था। दूसरा मित्र रेनार्ड (Renard) था
जर्मनी के सम्राट चार्ल्स का राजदूत था। उसकी इच्छा थी कि
चार्ल्स के पुत्र स्पेन के राजकुमार फ़िलिप से विवाह करे और



रानी मेरी ट्यूडर

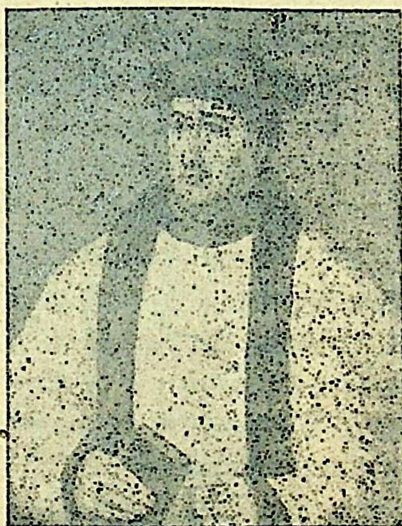
शत्रुओं का नाश करे। वह एलीज़बेथ की मृत्यु भी चाहता था।
सलाहों के कारण मेरी के समय में बहुत रक्तपात हुआ और देश
घोर अशांति फैली जिससे मेरी का उद्देश्य भी पूरा न हुआ।

विवाह प्रश्न और वायट का विद्रोह

मेरी स्वयं फ़िलिप से विवाह करना चाहती थी, परन्तु उसकी
इसका विरोध करती थीं। १५५३ ई० की पार्लियामेंट ने इसमें आप
की तो वह भंग कर दी गई। उसके उपरांत
विद्रोह हुआ जिसका मुखिया सर टामस वायट (Sir Thomas Wyatt) था और जिसमें
ग्रे का पिता भी सम्मिलित था। इसका उद्देश्य

कि एलीज़बेथ को सिंहासन देकर देश की पराधीनता तथा कैथोलिक मत से बचाएं। परन्तु विद्रोह असफल हुआ और वायट को दण्ड मिला। जेन ग्रे को फाँसी दे दी गई और एलीज़बेथ को टावर में बन्द कर दिया गया।

इसके पश्चात् दूसरी पार्लियामेंट बुलाई गई जिसमें अधिकांश सदस्य मेरी के चुने हुए थे। इससे उसने अपने विवाह की आज्ञा ले ली,



बिशप गार्डिनर

परन्तु पार्लियामेंट ने फिर भी एक शर्त लगा दी कि स्पेन तथा इंगलैंड दोनों का एक ही शासन न हो सके, मेरी अकेले शासन करे और स्पेन के युद्धों में इंगलैंड न फाँसा जाए।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, देश में अधिकांश लोग नए सुधारों से अप्रसन्न थे, और पोप से अलग होते हुए भी धार्मिक रीतियों में कोई परिवर्तन न चाहते थे। अतः मेरी की आज्ञा से पार्लियामेंट ने

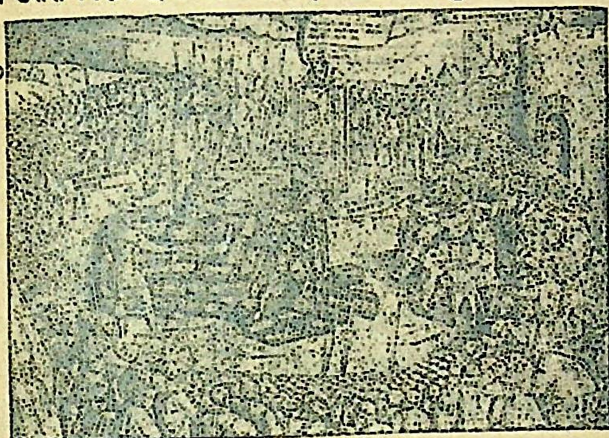
एडवर्ड के ४२ धाराओं के नियम (Forty Two Articles) को रद कर दिया और एडवर्ड के समय के तमाम नियम हटा दिए। १५५४ ई० में हेनरी के समय में बनाए गए हुए तमाम नियम भी रद कर दिए गए। १५५५ ई० में धर्म के विरोधियों को दण्ड देने वाले पुराने नियम फिर से लागू हुए। इधर मेरी ने पुनः मास (Mass) प्रचलित किया और पोप के प्रतिनिधि (Papal Legate) कार्डिनल पोप को देश में वापस बुला लिया। इसके आगे पुरानी प्रथा को लौटाने में मेरी भी असमर्थ थी क्योंकि मठों के धन और भूमि का वापस लेना सहज न थी। इन सब परिवर्तनों से देश में फिर कैथोलिक मत लौटा।

कैथोलिक मत का पुनः प्रचार

परन्तु फिर भी पार्लियामेंट प्रोटेस्टेंट लोगों के साथ कोई कठोरता का व्यवहार न चाहती थी। उसका विचार था कि थोड़े से नए विचार वाले पादरियों को ही दण्ड मिलेगा, परन्तु गार्डिनर, पोल और मेरी विधर्मियों का नाश चाहते थे। मेरी को अपनी बहिन से द्वेष था, और स्वास्थ्य खराब होने तथा पुत्र-जन्म से निराश होने के कारण उसकी धार्मिक प्रतिहिंसा जाग उठी। प्रोटेस्टेंट दल का नाश करके उसने अपना परलोक बनाना चाहा। अतः १५५५ ई० में क्रूरता का आरम्भ हुआ। पहले अंग्रेजी बाइबिल के लेखक राजर्स (Rogers) को दण्ड मिला, फिर हूपर (Hooper) जलाया गया और उसके पश्चात् रिडले (Ridley, Bishop of London) और लैटिमर (Latimer, Bishop of Winchester) को एक साथ ही आक्सफ़ोर्ड में वही दण्ड मिला। मृत्यु के समय लैटिमर ने जोर से कहा—"मास्टर रिडले, धैर्य रक्खो। आज हम लोग ऐसी आग जलाएंगे जिसको, ईश्वर की कृपा से इंगलैंड कभी न बुझा पायेगा।" ऐसी ही वीर मृत्यु रोलैंड टेलर (Rowland Taylor) की भी हुई थी। मृत्यु के समय में धर्मवीर

प्रोटेस्टेंट लोगों का दमन—धर्म पर बलिदान

तनिक भी विचलित न हुए और अपनी शक्ति का परिचय दिया। १५५६ ई० में क्रैनमर को भी प्राणदण्ड की आज्ञा हुई, क्योंकि उसी की सलाह से हेनरी तथा एडवर्ड के समय में धर्म-परिवर्तन हुए थे। क्रैनमर का हृदय बहुत दृढ़ न था और छः बार उसने क्षमा-प्रार्थना की, परन्तु मेरी को उससे विशेष द्वेष था और वह उसकी मृत्यु चाहती थी। वह



लैटिमर तथा रिडले की हत्या

जलाया गया, उस समय उसने बहुत वीरता से प्राण दिए। उसने कहा--"मैंने बहुत सी बातें असत्य लिखीं हैं, और क्योंकि मेरे हाथ ने मेरे मन के विरुद्ध ऐसा अत्याचार किया है अतः पहले मेरा हाथ जलाया जायगा।" जब आग जल गई तो उसने अपना दाहिना हाथ आग में बढ़ा दिया ताकि पहले वह जल जाए। इसी प्रकार १५५७-५८ में कोई २७७ मनुष्यों को धर्म के लिए प्राण खोने पड़े। इन बलिदानों का बहुत प्रभाव हुआ। देश में प्रोटेस्टेंट धर्म का प्रचार बढ़ गया और शहरों में इस धर्म ने जोर पकड़ा। देश में अशान्ति फैली और मेरी के प्रति लोगों को घृणा और क्रोध हुआ। एक लेखक ने लिखा है कि शहीदों के खून से ही धार्मिक या राजनैतिक पौदे सींचे जाते हैं; यह बात इस प्रसंग में भी सत्य हुई।

नैराश्य और मृत्यु

धार्मिक कार्य में सफल होने के अतिरिक्त मेरी को अन्य सुख भी न मिला। उसके कोई पुत्र न हुआ, इससे वह बहुत निराश हुई। फिर फ़िलिप को प्रसन्न करने के लिए १५५७ में उसने फ्रांस से युद्ध छेड़ा। देश तैयार न था; सेना और जहाज़ बुरी दशा में थे। १५५८ ई० में कैले पर फ्रांस में अधिकार जमा लिया। यह देश की भारी हानि थी, मेरी इस दुःख को न सह सकी। नैराश्य में १७ नवम्बर १५५८ ई० को उसकी मृत्यु हुई उसके मरने के एक दिन बाद पोल भी मर गया। गार्डिनर १५५५ ई० में ही मर गया था।

देश की दशा

इन पाँच वर्षों में देश की अवस्था बहुत ही शोचनीय हो गयी थी। नियमों का उल्लङ्घन करने में मेरी सबसे बढ़ी चढ़ी थी। जूरी के लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध राय देने पर उसने जेल में भेज दिया, पार्लियामेंट के सदस्यों को अपने विरुद्ध कहने के कारण उसने दण्ड दिया; विना पार्लियामेंट की अनुमति के कर लगाए और चुङ्गी (Custom Duty) वसूल की, जबरदस्ती कर्ज़ लिया, और राजकर्मचारी सब जगह न्याय-विरुद्ध मनमानी करते थे। इसके सिवा कोष में धन न था, फ़ौजी सामान की कमी थी, किले टूटे-फूटे पड़े थे, जहाज़ बेकाम थे, सेना की दशा बुरी थी और देश में किसानों को कठिन दुःख था। ऐसा दुःख देश में कभी न हुआ था यह सब मेरी की धार्मिक नीति का प्रभाव था।

८—एलीज़बेथ

१५५८–१६०३ ई०

राष्ट्रीय संगठन

राज्याभिषेक

एक सामयिक लेखक ने लिखा है कि "१७ नवम्बर १५५८ ई० को प्रातः मेरी की मृत्यु हुई और उसी दिन अपरान्ह में लन्दन के गिरजाघरों में घण्टे बजने लगे और लोग खुशियां मनाने लगे कि एलीज़बेथ नई रानी होगी।" खुशी करना उचित भी था, क्योंकि मेरी की समय में देश की दशा बहुत हीन हो गई थी, और धर्म के नाम पर किए गये अत्याचारों से प्रजा पीड़ित थी। एलीज़बेथ में सब को श्रद्धा थी और आशा थी कि देश में शांति और समृद्धि होगी। परन्तु नई रानी के लिये यह बहुत ही कठिन समय था, कई कठिन समस्याएं उपस्थिति थीं। कैथोलिक लोग उसका अधिकार अनुचित मानते थे और स्काटलैंड की रानी मेरी को सिंहासन पर बैठाने का प्रयत्न कर सकते थे। पर मेरी फ्रांस की भी रानी होने वाली थी, अतः स्पेन के राजा फ़िलिप आदि इस सम्बन्ध के खिलाफ़ थे, क्यों कि इससे फ्रांस, इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्ड एक शासन में हो जाते और स्पेन की हानि होती। अतः यह पहली कठिनाई कुछ दिन के लिए दूर हो गई और फ़िलिप ने उसको शुरू में सहायता दी। इसके अलावा कोष में धन नहीं था। सेना तो थी ही नहीं, जहाजी बेड़ा भी मेरी की कृपा से नष्ट हो चुका था, व्यापार कम हो गया था, कृषि का काम ठीक न होता था; और देश में सामाजिक तथा धार्मिक विप्लव मचा हुआ था। स्पेन, फ्रांस तथा स्काटलैण्ड से विशेष भय था और आयरलैंड में तो सदा ही विरोध रहता था।



एलीजबेथ

इस सबके साथ धार्मिक प्रश्न बड़ा ही जटिल था और सबसे पहले इसका सुलझाना आवश्यक था। एलीजबेथ ने अपने शासन में इन सब परउचित

ध्यान दिया और कठनाइयों से बचते हुए देश को उच्च तथा उन्नत स्थान पर पहुँचाया और प्रजा को सुख और शांति दी।

इस समय देश में तीन मुख्य धार्मिक दल थे। प्रथम, वे लोग जो रोमन धर्म के अनुयायी थे और चाहते थे कि पोप का आधिपत्य फिर स्वीकार कर लिया जाये। दूसरे, वे लोग जो काल्विन धार्मिक समझौता के अनुसार मेरी के समय में देश से निकाल दिए गए थे। तीसरे, वे लोग जिन्होंने हेनरी, द्वारा स्थापित चर्च को मान लिया था और जो पोप से तो अलग रहना चाहते थे, परन्तु धार्मिक व्यवहारों में कैथोलिक मत से बहुत भिन्न नहीं थे। अतः इस समय रानी के लिए प्रश्न था कि वह रोमन धर्म का पक्ष ले अथवा प्रोटेस्टेंट बनी रहे, और कौन सा प्रबन्ध करे कि तीनों दलों की सहानुभूति मिल जाए और देशों में वृथा रक्तपात न हो। उसके लिए यही उचित था कि वह मध्यम मार्ग निर्धारित करे जिसमें अधिकांश जनता उसके साथ रहे और साथ ही साथ उसको कट्टर लोगों का दमन भी न करना पड़े। रोमन कैथोलिक होना तो असम्भव था क्योंकि ऐसा करने से उसका राज्याधिकार सुरक्षित न था और फिर वह अधिकांश प्रजा का विरोध न चाहती थी। रहा कट्टर धर्म-सुधारक होना, वह उसकी प्रकृति के विरुद्ध था। उसको दिखाव का बड़ा शौक़ था, इससे वह प्रेस्बीटेरियन (Presbyterian) सादगी को पसन्द न करती थी। उसने अपने पिता का धर्म ही चलाना उचित समझा और ऐसे मध्यम मार्ग का अनुकरण किया जिसमें मनुष्यों के विचारों पर तो बहुत ध्यान न दिया जाए बल्कि ऊपरी एकता स्थापित की जाए। वह विरोधियों को कठिन दण्ड न देना चाहती थी, बल्कि हलकी सज़ा से उनको राज्य-निर्धारित धर्म का अनुयायी बनाना चाहती थी, इस कार्य में उसको धार्मिक उदासीनता ने बहुत सहायता दी। उसके विचार किसी भी मत में दृढ़ न थे, अतः वह सहज ही भिन्न मतों में समझौता कर सकी और स्वयं किसी भी दल विशेष का पक्षपात न किया। इससे थोड़े ही समय

में अधिक लोग आंग्ल चर्च अनुयायी हो गए और एलीजबेथ के पक्के सहायक बन गए।

हेनरी का चलाया हुआ आंग्ल चर्च ही राजधर्म घोषित किया गया और १५५६ ई० की पार्लियामेंट ने समुचित परिवर्तन किए। "मुख्यता के राजनियम" (Act ot Supremacy) द्वारा रानी आंग्ल चर्च की मुखिया और संरक्षक बनी।

चर्च प्रबन्ध

एडवर्ड षष्ठ की दूसरी प्रार्थना-पुस्तक कुछ परिवर्तन के बाद फिर से प्रचलित की गई और "एकरूपता के राजनियम" (Acts of Uniformity) से अन्य प्रकार से प्रार्थना करना मना हो गया। १५४६ ई० का ४२ धाराओं का नियम (Act of 42 Articles) तीन धाराओं को, जिन पर विरोध था, निकाल कर ३६ धाराओं के नियम (Act of 39 Articlcs) के नाम से प्रचलित किया गया। प्रत्येक पादरी को मुख्यता नियम (Act of Supremacy) के अनुसार शपथ लेना आवश्यक था; परन्तु शपथ न लेने वालों को प्राणदण्ड का भय न था; केवल उनको अपने पद से हटा दिया जाता था। हर एक आदमी को इतवार को गिरजाघर जाना जरूरी था; न जाने पर एक शिलिंग जुर० माना पड़ता था। साथ ही साथ मूर्तियां; आभूषण और आल्टर्स (Altars) तोड़ डाले गए, ताकि सुधारकों को प्रार्थना करने में विशेष आपत्ति न हो। पार्लियामेंट ने रानी को अधिकार दिया कि वह धर्म सम्बन्धी अपराधों के जांच के लिये अदालत बनाये, परन्तु चौबीस वर्ष तक एलीजबेथ ने इसको स्थापित न किया। इस बीच में उसने विशप लोगों को यह अधिकार दे रक्खा था—१५८३ ई० में कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) स्थापित किया गया।

इन नियमों से देश में कोई विशेष असुविधा न हुई। छोटे पदारियों में तो केवल २०० ने शपथ लेने से इनकार किया और वे अपने पद से हटाए गए, परन्तु एक को छोड़ कर मेरी के सब २२ विशपों ने त्याग-पत्र दे दिया और उनकी जगह पर नए विशप नियुक्त किए गए। मैथ्यू पार्कर

(Mathew parker) को कैंटरबरी के आर्क बिशप का पद मिला। यह रानी के विचारों से सहमत था और उसके समय में धर्म सुधार का कार्य ठीक होता रहा। जब तक अन्य धर्मावलम्बी शान्त रहे एलीज़बेथ अपने नियम पर दृढ़ रही, परन्तु जब राजनैतिक कारणों से कैथोलिक लोगों ने विरोध किया तो उसको भी आत्मरक्षा के लिए कठोर उपायों का आश्रय लेना पड़ा।



आर्क बिशप पार्कर

प्यूरिटन दल के प्रति व्यवहार

पहले लिखा जा चुका है कि जेनेवा में काल्विन ने एक नया धर्म प्रचलित किया था जिसमें कैथोलिक मत के बहुत से आचार तथा विचारों से भेद था। यह मत प्रेस्बीटेरियन मत (Presbyterianism) के नाम से पुकारा जाता है। इंगलैंड में इसके मानने वालों की संख्या एडवर्ड षष्ठ के समय में बहुत बढ़ गई थी, परन्तु मेरी के समय में उनको अपना देश छोड़ना पड़ा था। इनमें से बहुत से लोग जेनेवा-

में जाकर बसे। जब एलीजबेथ के राज्य पाने की खबर उनको मिली तो इस आशा से कि उनका धर्म फैलेगा और देश में उनका मान होगा, वे लोग इंगलैंड वापस आये। रानी तो यह चाहती ही थी कि देश में कोई विरोध न रहे, उसने उनकी पूरी आवभगत की और बहुतों को अच्छे-अच्छे पद पर नियुक्त किया। परन्तु शीघ्र ही विरोध के कारण उपस्थित हो गये। रानी तथा पार्कर दोनों चाहते थे कि प्रार्थना-विधि और बाहरी कर्मकाण्ड तथा पोशाक में देश भर में एकरूपता रहे। अतः १५६५ ई० में विशप ग्रिंडल (Bishop Grindall) ने दौरा किया और इसके बाद मार्च १५६६ में पादरी लोगों को लन्दन बुलाया गया। पार्कर ने उनसे प्रार्थना की कि कम से कम वे पोशाक में विरोध न करें, परन्तु ६० के सिवाय और सब ने निश्चित वस्त्र पहिनने से इनकार किया और अपने पद से अलग हो गये। ये लोग नानकनफ़र्मिस्ट+ (Nonconformists) कहलाये। इस समय से इन लोगों ने चर्च जाना छोड़ दिया और अपनी

+ उन सब लोगों को जिन्होंने कि आंग्ल चर्च में जाना छोड़ दिया था और अपनी उपासना अलग करने लगे थे, देश में डिसेंटर (Dissenters) अथवा "पृथक दल" नाम से पुकारा जाता था इसमें कई दल सम्मिलित थे और आपस में मतभेद था वे लोग जो बच्चों के (Baptism) के विरोधी थे Anabaptists कहलाते थे, और Brownists तो चाहते थे कि प्रत्येक उपासकदल अपने कार्य में स्वतन्त्र रहे और बिशप का अधिकार लागू न हो ये लोग राजनियम द्वारा स्थापित धर्मसंस्था के विरोधी थे अतः इनको 'स्वतंत्र दल' Independents भी कहते हैं। तीसरे वे लोग थे जो चर्च शासन का कार्य उपासक दल या Presbyter पर छोड़ना पसन्द करते थे, इनको प्रेस्बीटेरियन कहा गया है। परन्तु इन सबको इनकी सादगी, कट्टरपन और आचरण की श्रेष्ठता के कारण प्यूरिटन नाम से बहुधा भूषित किया जाता है।

डिसेंटर

उपासना अलग मकानों या खेतों में करने लगे। १५८३ ई० तक से इनका विशेष प्रतिरोध न हुआ, पर उस साल ह्विटगिफट (Whitgift Commission) नामी अदालत स्थापित करके धार्मिक नियमों के विपरीत आचरण करने वालों को दण्ड देना आरम्भ किया। बहुत से लोग पकड़े गए और दण्ड के भागी हुए। उन पर जुर्माना किया गया। इस नीति के कारण उन्होंने सरकार पर आक्षेप करना शुरू किया। एलीज़बेथ के अन्तिम दिनों में इस दल की वृद्धि हुई और वे लोग प्यूरिटन (Puritans) नाम से विख्यात हुए। परन्तु राज्य को इनसे विशेष भय न था, क्योंकि इनके विरोध से कोई राजनैतिक मतलब नहीं छिपा हुआ था और यही कारण है कि प्यूरिटन दल की उन्नति होती गई और सत्रहवीं शताब्दी में उन्होंने राजा से धार्मिक तथा राजनैतिक स्वतंत्रता का युद्ध किया।

केवल प्यूरिटन लोगों ही ने कष्ट नहीं दिया, बल्कि सबसे अधिक दुःख रानी को कैथोलिक धर्म से मिला। इस सम्बन्ध में केवल धार्मिक

रोमन कैथोलिकों के प्रति नीति

विरोध ही न था, वरन् राजनैतिक प्रश्नों का भी सम्मिलन था। कैथोलिक लोग देश में पुराना धर्म फैलाना चाहते थे और इस काम में उनको एलीज़बेथ से वैर रखनेवाली सब राजनैतिक शक्तियों से सहायता की आशा थी। स्काटलैंड की रानी मेरी और स्पेन के राजा फ़िलिप तो उनके मुख्य सहायक थे। साथ ही साथ इस समय योरप में कैथोलिक मत का पुनरुद्धार शुरू हो गया था। कैथोलिक मत के समर्थक जेसुइट लोग (Jesuits) अपने उपदेशों तथा अन्य उपायों द्वारा यूरोप में प्रोटेस्टेंट धर्म को हानि पहुँचा रहे थे। इंगलेंड में वे एलीज़बेथ को हटाकर मेरी को रानी बनाना चाहते थे। इस राजनैतिक मन्तव्य के कारण रोमन कैथोलिक धर्म के साथ प्यूरिटन मत के समान उदार व्यवहार करना असम्भव हो गया था। रोमन कैथोलिकों के प्रति

ऐलीज़बेथ की नीति दो विशेष समय-विभागों में बाँटी जा सकती है। प्रथम वह समय जब रोमन कैथोलिक लोग केवल धार्मिक स्वतंत्रता चाहते थे और उन पर बाहरी प्रभाव न पड़ा था; यह काल १५६८ ई० तक रहा। दूसरा, वह काल जब मेरी दशा में आई और इंगलैंड की स्वतंत्रता पर आघात होने लगे। १५८८ ई० तक यह काल रहा और इसमें धर्म की आड़ में राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के उपाय होते रहे। अन्त में स्पेन को पराजित करके ही देश को शांति मिल सकी।

प्रथम काल में एलीज़बेथ केवल यही चाहती थी कि सब लोग गिरजे में जाया करें और जो न जाते थे उन पर एक शिलिङ्ग जुर्माना होता था। कुछ लोगों को अन्य दण्ड भी मिले, परन्तु कोई सख्ती न की गई थी। कैथोलिक लोग मकानों या खेतों में उपासना करते थे। बहुधा ग्रामवासी जुर्माना से बचने के लिए चर्च जाते थे और फिर किसी अन्य स्थान पर जाकर 'मास' सुनते थे। इसी प्रकार कैथोलिक जनता १५६८ तक शान्त और राज-भक्त रही और रानी की ओर से भी कोई अत्याचार न हुआ।

परन्तु इसके विपरीत दूसरे काल में कैथोलिक लोगों ने निश्चित रूप से रानी का विरोध करना आरम्भ किया और तब एलीज़बेथ को भी अपनी तथा राष्ट्र की रक्षा के लिए कठोर उपायों की शरण लेनी पड़ी। जैसा कि आगे लिखा जाएगा, कैथोलिक लोग रानी मेरी को गद्दी पर बैठाना चाहते थे और देश में पोप का आधिपत्य क़ायम करना चाहते थे। इसका प्रथम प्रमाण १५६९ ई० में मिला जब मेरी के इङ्गलैंड में आने के कुछ दिन बाद देश के उत्तरी भाग में कैथोलिक विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इसके नेता नार्थम्बरलैंड और वेस्टमोरलैंड के अर्ल थे। विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया। कैथोलिकों का प्रयत्न असफल रहा परन्तु एलीज़बेथ को उस समय से यह प्रकट हो गया कि देश को कैथोलिक से प्रेम था।

केवल देश ही में नहीं बल्कि बाहर भी इंगलैंड के विरुद्ध षड्यंत्र

रचा जा रहा था। पादरी विलियम्स एलन ने एक कालेज नीदरलैंड में डुई (Douai) नामक स्थान पर १५६८ ई० में स्थापित किया था और वहाँ कैथोलिक मत के प्रचारक तैयार किये जाते थे जो इंगलैंड में इसका पुनरुद्धार करें। इनका पहला दल-१५७४ ई० में इंगलैंड में इसके पूर्व ही पोप (पायस पाँचवें) ने १५७० ई० में एलीज़बेथ को ईसाई धर्म से निकाल देने की घोषणा कर दी थी। इसका आशय यह था कि उसके विरुद्ध विद्रोह करना, उसकी हत्या करना या राज्य से हटाना उचित है। इससे स्पष्ट हो गया कि कैथोलिक लोग राजभक्त तथा पोप भक्त दोनों एक साथ नहीं रह सकते हैं। अपनी इच्छा के विरुद्ध अंग्रेज कैथोलिकों को रानी से विरोध करना पड़ा। और इसका यह प्रभाव पड़ा कि उनके विरुद्ध कठिन नियम बनाये गये। रानी भी उनसे चौकन्नी हो गई। पुनः १५८० में जेसूट दल के १४ पादरी भी देश में छिपकर घुस आये और उनके आने से कैथोलिकों की अवस्था अधिक शोचनीय हो गई। उनके मुख्य नेता कैम्पियन और पार्सन्स थे। मन्त्री वाल्सिंघम (Walsingham) ने अपने गुप्तचरों द्वारा उनका पूरा पता रक्खा जिससे पूर्ण प्रमाण मिल गया कि रानी की हत्या के लिये षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। इस पर पार्लियामेंट में १५८१ ई० में कैथोलिक के विरुद्ध बहुत सख़्त नियम बनाये। (१) चर्च में न जाने से २०० पौंड महीना जुर्माना (२) 'मास'× कहते हुये पकड़े जाने पर एक साल की सज़ा और जुर्माना निश्चित किया गया, (३) और किसी को अपने मत से भड़काने पर प्राणदण्ड का विधान हुआ। अन्त में पार्सन्स यूरोप भाग गया और कैम्पियन को प्राणदण्ड दिया। १५८८ ई० के पूर्व ही जेसूट दल के षड्यन्त्रों से कोई भय न रह गया था।

इन सब सख़्तियों के रहते हुए भी कैथोलिकों की ओर से रानी के विरुद्ध चार षड्यन्त्र हुए जिनका उल्लेख आगे किया जायगा। स्पेन के राजा फ़िलिप और पोप इन लोगों को सहायता देते थे। १५८४ में यह

× 'मास'

बात स्पष्ट हो गई कि देश की स्वतन्त्रता रानी के जीवन पर निर्भर और उसी वर्ष सेसिल (Cecil) तथा वाल्सिंघम ने एक असोसि ("Association") जारी किया जिसके सदस्यों ने प्रण किया रानी की रक्षा वे प्राणपण से करेंगे। विरोधियों की संख्या थोड़ी थी केवल बाहर की सहायता पर निर्भर थे। अधिकांश प्रजा राजभक्त अन्तिम दिनों में रानी को कैथोलिकों से कोई विशेष कष्ट न मिला प्रजा में आंग्ल धर्म का प्रचार बढ़ता गया।

एलीजवेथ ने अपने राज्यकाल में किसी को भी उसके धा विचारों के कारण दंड नहीं दिया। वह देश में एकता और राष्ट्र स्थापित करना चाहती थी। कैथोलिक लोग राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के वै और इसी कारण उनके साथ ऐसा कठोर व्यवहार भी हुआ। वे ब दिनों तक राजनैतिक अधिकारों से वंचित रहे। इंगलैंड में कैथोलि का विरोध यूरोपीय कैथोलिक पुनरुद्धार था केवल एक अंश था, जि कारण एलीजवेथ को अपने राज्यकाल में शांति न मिल सकी। एली वेथ का शासन-काल इस कैथोलिक मत के पुनरुद्धार (Count Reformation) से युद्ध करने ही में बीता और उसकी राज पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा।

६—एलीज़बेथ और स्काटलैंड की रानी मेरी

१५६०—१५८७ ई०

स्काटलैंड और इङ्गलैंड में पुरानी शत्रुता चली आती थी। स्काटलैंड और फ्रांस में मित्रता थी, जिसके प्रमाण स्वरूप मेरी का विवाह फ्रांस के युवराज फ्रांसिस के साथ हुआ था और वह स्काटलैंडकीअवस्था उसी देश में शिक्षा पा रही थी। मेरी की माता यह चाहती थी, क्योंकि फ्रांस की सहायता से ही स्काटलैंड में कैथोलिक मत दृढ़ रह सकता था। स्काटलैंड में भी इस समय जान नाक्स (John Knox) के द्वारा प्रेस्बीटेरियन मत का प्रचार हो रहा था और जनता की सहानुभूति भी उसी तरफ़ थी। कई लार्ड भी सुधारदल में सम्मिलित थे, और ये लोग (Lords of the Cengregation) के नाम से प्रसिद्ध थे। ये लोग देश को कैथोलिक मत और फ्रांस की प्रभुता से बचाना चाहते थे स्काटलैंड में नये धर्म का आरम्भ जनता द्वारा हुआ था; इसलिये सरकार इसका विरोध कर रही थी, और फ्रांस की सहायता से उसको दबाना चाहती थी। अतः प्रोटेस्टेन्ट दल के लिये अपनी रक्षा का प्रश्न देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न हो गया था। फ्रांस के आधिपत्य से बचने के लिये वे लोग अब इङ्गलैंड से सहायता लेने को तैयार थे क्योंकि दोनों देशों में धार्मिक सहानुभूति थी इस प्रकार इस समय पुरानी शत्रुता के कारण मिट गये और दोनों को अपने उद्धार के लिए पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता हुई।

जब १५५९ ई० में मेरी के पति राजा फ्रांसिस ने धर्म-सुधारकों का

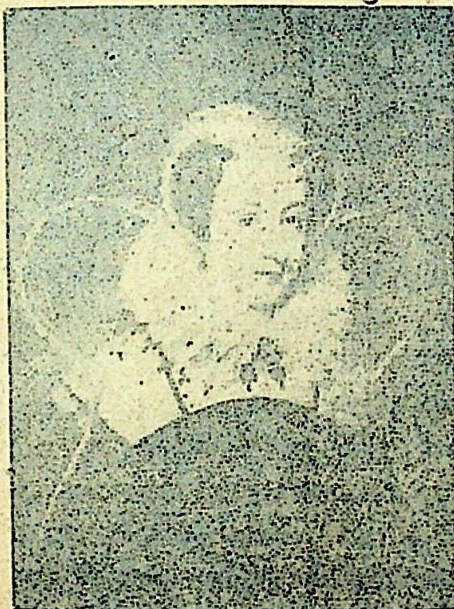
नाश करने के लिये एक फ्रेंच सेना स्काटलैंड भेजी, तब उन लोगों ने एलीजबेथ से सहायता के लिये प्रार्थना की। एलीजबेथ ने उनकी सहायता के लिये वींटर (Wynter) की अध्यक्षता में एक जल-सेना भेजी। फ्रेंच सेना लीथ (Leith) में हार गई और इडिनबर्ग में सन्धि हुई जिसके अनुसार फ्रेंच सेना अपने देश को लौट गई। इस घटना के बाद स्काटलैंड से एलीजबेथ को कोई भय न रहा, क्योंकि वहाँ उसके मित्र सुधारक लार्ड लोग शासन कर रहे थे।

स्काटलैंड में मेरी

पति की मृत्यु हो जाने पर मेरी अगस्त १५६१ ई० में स्काटलैंड वापस आई; परन्तु प्रजा की उससे सहानुभूति न थी, क्योंकि वह कैथोलिक थी और देश में प्रोटेस्टेन्ट मत का जोर था। मेरी केवल १६ वर्ष की थी, पर सुन्दर और चालाक थी। अपना प्रभाव बढ़ाने के लिये उसको दूसरे विवाह की आवश्यकता पड़ी। एलीजबेथ चाहती थी कि वह उसके मित्र डडले (Dudley Earl of Liecester) से विवाह करले। परन्तु मेरी ने अपने सम्बन्धी डार्नले (Darnley)+ से विवाह किया। डार्नले की आयु मेरी से कम थी और वह अल्प बुद्धि था। उसको मेरी के चरित्र पर संदेह था। १५६६ ई० में उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जो आगे चलकर जेम्स प्रथम नाम से इङ्गलेंड का राजा हुआ। इस समय डार्नले अपनी स्त्री के सिक्रेटरी डेविड रिज़ियो Private Secretary David Rizzio से अप्रसन्न था। अतः एक रात्रि को उसने कुछ अन्य सहायकों को साथ रिज़ियो को रानी के सामने ही कत्ल कर डाला। मेरी ने उसको इस अपराध के लिये कभी भी क्षमा न किया, यद्यपि कुछ दिन के बाद उनमें ऊपरी मेल हो गया था। थोड़े दिनों के बाद डार्नले बीमार पड़ा और कर्क ओ फ़ील्ड Kirk o' Field' नामी घर में रहने लगा। एक रात्रि को मेरी की अनुपस्थिति में घर बारूद से उड़ा दिया गया और डार्नले की लाश

+मारगरेट का पोता, द्वितीय पति से।

बाग में पड़ी मिली। सब का सन्देह मेरी तथा उसके प्रेमी बाथवेल (Earl of Bothwoll) पर हुआ। यह सन्देह और भी दृढ़ हो गया जब कि तीन मास के अन्दर ही मेरी ने छिप कर उससे अपना विवाह कर लिया। जब यह समाचार देश में फैला तो जनता बहुत क्रुद्ध हुई और मेरी के विरुद्ध उठ खड़ी हुई। कारबेली हिल (Carberry



मेरी क्वीन आफ़ स्काट्स

Hill) पर युद्ध हुआ जिसमें बाथवेल पहले ही भाग गया और मेरी पकड़ी गई उसने सिंहासन छोड़ दिया और उसके स्थान पर उसका लड़का जेम्स गद्दी पर बैठाया गया। परन्तु क्योंकि अभी वह केवल २ वर्ष का बच्चा था, इसलिए मरे (Earl of Murray) संरक्षक नियुक्त किया गया। मेरी लाकलेवन क़िले (Lochlev-en Castle) में बन्दी

हुई। १५६८ ई० में वह चालाकी से निकल भागी, और सेना जमा करके उसने राज पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया; परन्तु पुनः हार कर वह इङ्गलैंड भाग आई और वहाँ उसने एलीज़वेथ से सहायता मांगी।

इस समय इंगलैंड की अवस्था पहले की सी न थी। दस वर्ष में रानी का प्रभाव पुष्ट हो गया था, कोष में धन था, व्यापार में उन्नति थी और प्रजा को रानी से हार्दिक सहानुभूति थी। मेरी के प्रति एलीज़ कैथेलिक लोग भी अपनी दशा से सन्तुष्ट थे। बेथ का व्यवहार देश में कोई झगड़ा न था; बाहर से भी किसी आपत्ति का खटका न था फ्रांस में घरेलू धार्मिक युद्ध हो रहा था और एलीज़बेथ वहाँ के प्रोटेस्टेंट लोगों (Huguenots) को सहायता देती थी, जिससे कि कैथोलिक राजा उसको हानि न पहुँचा सकें। नीदरलैंड में स्पेन के विरुद्ध राज-विद्रोह शुरू हो गया था और विद्रोह लोग इंगलैंड से सहायता ले रहे थे। अतः फ्रांस और स्पेन दोनों हो मेरी को एलीज़वेथ के विरुद्ध सहायता देने में असमर्थ थे।

परन्तु मेरी के आगमन ने उसको कठिनाई में डाल दिया और जब तक वह जीवित रही कुछ न कुछ कष्ट अवश्य मिलता रहा। इस समय यह समस्या थी कि मेरी के साथ कैसा व्यवहार किया जाए वह उसको स्काटलैंड के सिंहासन पर बैठाए तो सुधारक लार्ड (Lord of Congregation) उससे नाराज़ हो जाएं और वह ऐसा न चाहती थी एलीज़वेथ के सामने दो मार्ग थे। (१) वह मेरी को उसके बैरी लार्ड्स को बन्दी करके सौंप दे (२) या उसको फ्रांस जाने दे। प्रथम में यह डर था कि लोग कहते कि वह विद्रोह का पक्ष ले रही है, और दूसरे में यह भय था कि यदि मेरी फ्रेंच सहायता से अपने देश में शक्तिशाली हो जाए तो वहाँ फ्रेंच प्रभाव बढ़ जायगा। वह दोनों बातें न चाहती थी। अतः यह उसने यही निश्चय किया कि उसको इङ्गलैंड में

बन्दी करके रक्खे; यद्यपि इसमें यह डर था कि मेरी के कारण बहुत से षड्यंत्र होने लगेंगे। अब यह आवश्यक हुआ कि मेरी का प्रभाव तथा उसकी षड्यंत्र-शक्ति कम कर दी जाए। एलीज़बेथ चाहती थी कि उसका चरित्र सदा के लिए कलुषित हो जाए और उसको बन्दी रखने का बहाना भी मिल जाए। बस उसने आज्ञा दी कि मेरी उस समय तक स्वतंत्र न हो सकेगी, जब तक कि उसके विरुद्ध डार्नले की मृत्यु का अभियोग झूठा न ठहर जाए। उसने यार्क में एक कमीशन बैठाया, जिसके सामने स्काटलैंड से लार्ड्स भी बुलाए गए। कुछ दिन के बाद कमीशन लन्दन बुला लिया गया और वहाँ अभियोग चलता रहा। परन्तु कुछ निश्चित न हो सका, और एलीज़बेथ मेरी को क़ैद रखने के लिए यही चाहती भी थी। कमीशन हटा दिया गया और मेरी बोल्टन में क़ैद रही।

इङ्गलैंड में मेरी के आने से एलीज़बेथ को बहुत सी कठनाइयों का सामना करना पड़ा। रोमन कैथोलिक जनता और रानी के बाहरी वैरियों को खड़ा करने के लिए अच्छा बहाना मिल गया। उसके वैरी मेरी को उचित उत्तराधिकारी मानते थे और उसकी गद्दी पर बैठाने का प्रयत्न कर रहे थे जब तक मेरी जीवित रही एलीज़बेथ के विरुद्ध कई षड्यंत्र रचे गए। इनका मुख्य अभिप्राय एलीज़बेथ को मार कर मेरी को सिंहासन पर बैठाना था इसमें देश के रोमन कैथोलिक तथा स्पेन के कर्मचारियों का हाथ था।

एलीज़बेथ के विरुद्ध षड्यंत्र और मेरी की मृत्यु १५८७ ई०

प्रथम १५६९ ई० में उत्तरी प्रांतों के निवासी कैथोलिक लोगों ने एक विद्रोह खड़ा किया जिसके नेता नार्थम्बरलैंड और वेस्टमोरलैंड के अर्ल थे। परन्तु वह असफल रहे; क्योंकि रानी की सेनाओं ने विद्रोहियों को तितर-बितर कर दिया और मेरी को एक मज़बूत स्थान में बन्द कर दिया। फिर १५७१ ई० में उत्तरी इटली-निवासी रिडल्फ़ी (Ridolfi) नामी एक पुरुष ने रानी के विरुद्ध षड्यंत्र रचा जिसमें नारफ़क के ड्यूक

का भी भाग था। परन्तु इसका पता लग गया और नारफ़क को प्रा
दण्ड दिया गया। बराबर प्रयत्न हो रहा था कि मेरी को सिंहासन मि
जाए। इस कार्य में फ्रांस का गाइज़ (Guise) वंश तथा स्पेन के रा
फ़िलिप भी शामिल थे। परन्तु सब प्रयत्न असफल हुए। इंग्लैंड के
मंत्री वाल्सिंघम ने अपने जासूसों द्वारा पूरा-पूरा पता रक्खा औ
१५८३ में थ्रॉकमार्टन प्लाट (Throgmorton Plot) तथा १५८



लार्ड बिरले

में बैबिंग्टन प्लाट (Babington Plot) का पता लगा कर उसने विद्रोहियों को दण्ड दिया। अन्तिम षड्यंत्र में उसने बड़ी चतुराई से काम लिया उसने इस बात को सिद्ध कर दिया कि षड्यंत्र में मेरी का भी हाथ है। बैबिंग्टन के प्रति मेरी का एक पत्र पकड़ा गया जिसमें एलीज़बेथ को मारने की आज्ञा थी। अब तो मेरी के विरुद्ध पूर्ण प्रमाण मिल गया और उसका अभियोग करने के लिए एक कमीशन बैठा, जिसने यह निर्णय किया कि मेरी अपराधनी है और उसको नियमा-

नुसार प्राणदण्ड दिया जाये। पार्लियामेंट ने अनुमति दे दी और एलीजवेथ को भी अपनी इच्छा के विरुद्ध जनता के आदेशानुसार प्राण-दण्ड के आज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ा। अतः फरवरी १५८७ ई० में मेरी को फ़ादरिंगे कैसल (Fotheringay castle) में प्राणदण्ड दिया गया। मेरी ने मरने के समय बहुत साहस और धैर्य दिखाया।

यह समय भी इस कार्य के लिये उपयुक्त था। एलीजवेथ ने इसके पूर्व कई बार मेरी की हत्या का विरोध किया था, क्योंकि प्रथम वह एक रानी की हत्या न चाहती थी और दूसरे इससे उसका मतलब भी सिद्ध न होता था। स्पेन का राजा इंगलैंड का वैरी था, परन्तु मेरी के जीवन-काल में उसको कैथोलिक पक्ष में आक्रमण करने का साहस न था, क्योंकि मेरी के जीवित रहने से फिलिप को सदा यह भय रहता था कि यदि वह सिंहासन पर बैठेगी तो इंगलैंड में फ्रेंच प्रभाव बढ़ जायेगा और इसीलिये वह बहुत विरोध होते हुये भी इंगलैंड से युद्ध न करता था। परन्तु १५८६ ई० में स्पेन और इंगलैंड में, अन्य कारणों वश जिनका उल्लेख आगे किया जायेगा, युद्ध छिड़ गया था और फ्रांस में एलीजवेथ का मित्र हेनरी बोर्बन (Henry Bourbon) राज्य का उत्तराधिकारी था। अब मेरी को प्राणदण्ड देने से किसी आपत्ति की आशंका न थी, वरञ्च देश में शांति की सम्भावना थी। अतः १५८७ ई० में एलीजवेथ ने उसके प्राणदण्ड की आज्ञा देकर देश में शांति स्थापित की और प्रजा की समस्त शक्ति स्पेन से युद्ध करने में लगाई और देश को पराधीनता से बचाया।

१०—एलीज़बेथ की परराष्ट्रनीति तथा अन्तिम दिवस

जिस समय एलीज़बेथ गद्दी पर बैठी थी, इङ्गलैंड की शक्ति अन्य राष्ट्रों के मुक़ाबले में बहुत कम थी। इस समय यूरोप में दो शक्तिशाली राष्ट्र थे; प्रथम स्पेन जिसका राजा फ़िलिप द्वितीय था और दूसरा फ्रांस। इन दोनों देशों में पुरानी कलह चली आती थी और दोनों का एक साथ मिलकर इंगलैंड पर आक्रमण करना असम्भव था। परन्तु दोनों देशों से इंगलैंड को भय जरूर था। फ्रांस में गाइज़ वंश का ज़ोर था और वे लोग १५६० ई० के उपरान्त सदा ही मेरी स्टुअर्ट को इंगलैंड की रानी बनाकर फ्रांस, स्काटलैंड और इंगलैंड को मिलाना चाहते थे। दूसरी तरफ़ फ़िलिप चाहता था कि इंगलैंड के सिंहासन पर प्रोटेस्टें: शासक न हो। वह मेरी ट्यूडर का पति था और चाहता था कि इस देश पर भी अपना प्रभुत्व जमाये। इसके अतिरिक्त वह कैथोलिक धर्म-सुधार (Counter-reformation) का पक्षपाती था और सारे यूरोप में पोप के धर्म को पुनः चलाना चाहता था। अतः उसका दाँत सदैव ही इङ्गलैंड पर लगा हुआ था।

परराष्ट्रनीति

एलीज़बेथ बहुत दूरदर्शिनी थी; उसे युद्ध से प्रेम न था और वह साफ़ तौर से जानती थी कि उसका देश युद्ध के लिये तैयार नहीं है। अपने शासन के पहले दिन से ही उसका कर्तव्य यह हुआ कि देश की शक्ति बढ़ाये और जब तक सम्भव हो सके युद्ध से बची रहे उसकी वाह्य नीति का मुख्य उद्देश्य इङ्गलैंड के महत्व को बढ़ाना था। उसने वूल्जे की चलाई हुई शक्ति-सन्तुलन नीति का सहारा लिया। फ्रांस को

स्पेन के मुक़ाबले में रक्खा ताकि दोनों ही धमकियों के सिवाय और कुछ ज्यादा विरोध न कर सकें। उसको पूर्ण आशा थी कि फ्रांस या स्पेन कोई भी इङ्गलैंड को दूसरे के अधीन न होने देगा; इस कारण उसने फ्रांस से स्पेन के विरुद्ध और स्पेन से फ्रांस के विरुद्ध मित्रता रक्खी। फ्रांस और स्पेन दोनों ही कैथोलिक प्रदेश थे अतः एलीज़बेथ ने वहाँ के राज-विद्रोही प्रोटेस्टेन्ट दलों को सहायता देकर दोनों देशों की शक्ति को निर्बल किया। फ्रांस से बराबर उसकी बाहरी मित्रता रही परन्तु फिर भी उसने वहाँ के प्रोटेस्टेन्ट विद्रोहियों को राजा के विरुद्ध सहायता दी। इस प्रकार फ्रांस को कभी यह अवसर न मिलने दिया कि मेरी स्टुअर्ट की सहायता कर सके। स्पेन के विरुद्ध भी उसने १५८५ ई० के पूर्व छिपकर नीदरलैंड के प्रोटेस्टेन्ट विद्रोहियों को धन और मनुष्यों से सहायता दी। इससे फ़िलिप को भी इंगलैंड पर आक्रमण करने का अवकाश न मिल सका। स्काटलैंड में भी उसने फूट कराई और प्रोटेस्टेन्ट दल को सहायता दी जिसमें उस तरफ़ से भी कोई भय न रहे। परन्तु जब देश शक्तिशाली हो गया और मेरी स्टुअर्ट की मृत्यु से देश के भीतर कोई डर न रहा तो उसने फ़िलिप से युद्ध किया (१५८८ ई०) और इङ्गलैंड के महत्व को बढ़ाया।

ऊपर लिखा जा चुका है कि एलीज़बेथ इंगलैंड का महत्व बनाये रखने के लिये फ्रांस व स्पेन को एक दूसरे के विरुद्ध रखना चाहती थी। इस नीति के अनुसरण में दो बातों से इसको विशेष सहायता मिली। प्रथम फ्रांस में घरेलू धार्मिक युद्ध तथा स्पेन के प्रति नीदरलैंड का विद्रोह, और द्वितीय; उसकी अविवाहित

विवाह प्रश्न

अवस्था। एलीज़बेथ सदा ही अविवाहित रही; क्योंकि वह समझती थी कि देश का भला इसी में है। वह जानती थी यदि वह किसी विदेशी राजा से विवाह करेगी तो देश में अशान्ति फैलेगी, और यदि देश में विवाह करती है तो दोनों धर्मावलम्बियों में पारस्परिक विद्रोह बढ़ेगा। इसके अतिरिक्त उसको

अपने विवाह की राजनैतिक महत्व का ज्ञान था। उसने फ़िलिप के प्रस्ताव को तो अस्वीकार किया था परन्तु फ्रांस के दो राजकुमारों (ऐंजू और अलंसॉं ड्यूक) को बहुत दिन तक इस आशा पर रक्खा कि वह उनसे विवाह कर लेगी और इस तरह फ्रांस को अपना मित्र बनाये रही। जब तक उसको स्पेन से भय रहा और देश में उसकी स्थिति दृढ़ न थी तब तक उसने अपने विवाह के प्रस्ताव द्वारा फ्रांस से मित्रता और देश में शान्ति रक्खी।

इंगलैंड और स्पेन

एलीजबेथ की वाह्य नीति में सबसे मुख्य घटना स्पेन से युद्ध है। शासन काल के आरम्भ से ही यह स्पष्ट हो गया था कि रानी का सबसे बड़ा वैरी उसका बहनोई फ़िलिप ही है। इसके कई कारण थे। प्रथम एलीजबेथ प्रोटेस्टेन्ट धर्म को मानती थी और फ़िलिप कट्टर कैथोलिक था। दूसरे एलीजबेथ ने उसके विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार करके उसको क्रुद्ध कर दिया था। तीसरा सबसे बड़ा कारण फ़िलिप की सारे संसार पर शासन करने की प्रबल इच्छा थी। वह इंगलैंड को भी अपने जगत-विस्तृत राज्य में मिलाना चाहता था, और वहाँ पोप के धर्म को पुनः चलाना चाहता था। चौथे दोनों देशों के आर्थिक हानि-लाभ में पारस्परिक मतभेद था। दोनों को सामुद्रिक साम्राज्य तथा विदेशीय व्यापार की अभिलाषा थी। अतः युद्ध के सब कारण वर्तमान थे। एलीजबेथ कुछ समय तक केवल ऊपरी मित्रता बनाये रही, क्योंकि उसका देश स्पेन से युद्ध करने को तैयार न था। परन्तु जब १५८६ ई० तक अन्य सब झंझट दूर हो गये और देश भी शक्तिशाली हो गया तो उसने युद्ध छेड़ दिया और स्पेन को पराजित किया।

नीदरलैंड को सहायता

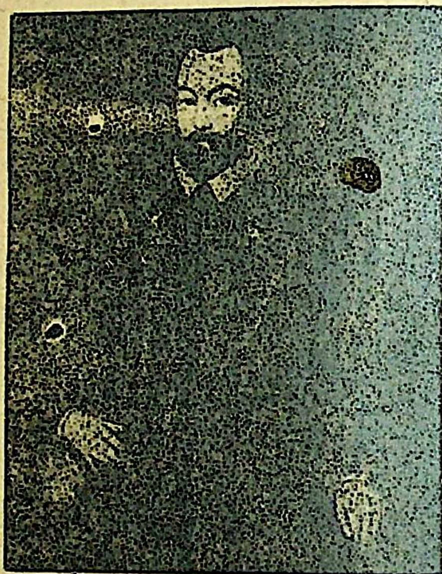
मित्रता की अवस्था में भी गुप्तरूप से एलीजबेथ और फ़िलिप एक दूसरे को हानि पहुँचाते रहे। फ़िलिप ने एलीजबेथ के विरुद्ध षड्यन्त्रियों को सहायता दी। इसके जवाब में एलीजबेथ फ़िलिप की राजद्रोही प्रजा को सहायता दे रही थी जिसका अवसर उसको नीदरलैंड में मिला जहाँ

फ़िलिप का राज्य फैला हुआ था। वहाँ उत्तरी भाग में अधिकांश डच जनता प्रोटेस्टेंट मत को मानती थी। फ़िलिप ने अपनी कट्टरता के कारण उनके साथ कठोरता का व्यवहार किया। डच लोग स्वतंत्र होना चाहते थे इसलिए उनके नेता विलियम, प्रिंस आफ़ ओरेंज (William, Prince of Orange) ने अन्य प्रोटेस्टेंट देशों से सहायता लेने का प्रयत्न किया। एलीज़बेथ चाहती थी कि स्पेन की शक्ति क्षीण हो जाए और फ़िलिप को इंगलैंड पर आक्रमण करने का अवसर न मिले, अतः वह नीदरलैंड के विद्रोह को शांत न होने देना चाहती थी। विद्रोह के जारी रहने ही में उसका कल्याण था। इसका कारण यह था कि इस प्रकार फ़िलिप नीदरलैंड में फंसा रहेगा और इङ्गलैंड पर आक्रमण न कर सकेगा। इसलिए वह छिपे छिपे नीदरलैंड में विद्रोहियों की सहायता करती रही। परन्तु जब १५८४ ई० में प्रिंस आफ़ ओरेंज की मृत्यु के बाद यह स्पष्ट हो गया कि बिना उसकी पूर्ण सहायता के विद्रोह ठण्डा पड़ जायगा, तब उसने अपने मित्र लीस्टर (Liecester) की अध्यक्षता में एक सेना भेजी। प्रतिनिधि ने बिना आज्ञा के नीदरलैंड में प्रधान पद स्वीकार कर लिया, जिसमें यह साफ़ मालूम हो गया कि एलीज़बेथ के कारण ही विद्रोह चल रहा है। रानी बहुत क्रुद्ध हुई और उसने लीस्टर को वापस बुला लिया। परन्तु फ़िलिप को सन्देह हो गया और उसने समझ लिया कि बिना इङ्गलैंड को जीते विद्रोह शांत नहीं हो सकता है, इसलिए उसने १५८७ में युद्ध की घोषणा कर दी। इस विद्रोह से एलीज़बेथ को बहुत लाभ हुआ। स्पेन की शक्ति शनैः शनैः क्षीण होती गई और फ़िलिप को कभी यह अवसर न मिल सका कि अपनी सम्पूर्ण शक्ति इङ्गलैंड को जीतने में लगा सके।

इङ्गलैंड और स्पेन दोनों समुद्र पर भी आपस में झगड़ा कर रहे थे। हेनरी सप्तम के समय में कोलम्बस ने अमेरिका का पता लगाया था और उसके नियोजक स्पेन राज्य में नई दुनिया

समुद्र पर झगड़ा में अपने उपनिवेश क़ायम कर लिये थे। पुर्तगाल

वासियों ने भारतवर्ष के लिए समुद्री रास्ते का पता लगाया था। पोप ने संसार को दो भागों में बाँट कर भाग एक पुर्तगाल को और दूसरा स्पेन को दे दिया था। अमेरिका स्पेन के हिस्से में आया और पुर्तगाल को अफ्रीका तथा एशिया पर अधिकार मिला। इससे अमेरिका में किसी अन्य राष्ट्र को व्यापार करने या उपनिवेश क़ायम करने का कोई अधिकार न था। ट्यूडर काल में इंगलैंड में शांति स्थापना के साथ



ड्रेक

साथ व्यापार की इच्छा भी हुई। वे लोग भारतवर्ष से सीधे तिजारत करके लाभ उठाना चाहते थे और कुछ लोग अमेरिका से सोना चांदी लाकर देश को धनवान बनाना चाहते थे। इन दोनों की इच्छाओं को पूर्ण करने में स्पेन तथा पुर्तगाल से युद्ध की सम्भावना थी। एलीज़बेथ के पूर्व ही इङ्गलैंड के कुछ मल्लाह दूर समुद्र में जाकर नए रास्तों का पता लगा रहे थे या लूटमार करते थे; परन्तु इस रानी के शासन काल में यह

काम बहुत जोरों से होने लगा। मुख्यतया हाकिंस (Sir John Hawkings) और ड्रेक (Sir Francis Drake) ने अपने उद्योग से देश का मान बढ़ाया। ये दोनों स्पेन के अमेरिकन उपनिवेशों में जाकर वहाँ की प्रजा से नियम विरुद्ध व्यापार करथे थे और रोके जाने पर उनके नगर जला देते थे, उनके जहाज डुबा देते थे या लूट लेते थे। इन लोगों का विचार था कि कैथोलिकों को हानि पहुँचाना या मार डालना प्रोटेस्टेंटों का कर्तव्य है। अतः इस कार्य में वे लोग विशेष अग्रसर थे। १५८० में इनके अत्याचारों से स्पेन का राजा पीड़ित था; क्योंकि उसकी बहुत हानि होती थी। परन्तु स्पेन वाले भी जब इनको पकड़ पाते थे तब इनके जहाज जला देते थे और मल्लाहों को विधर्मी होने के कारण धार्मिक न्यायाधीश (Inquisition) को सौंप देते थे; जिसके द्वारा या तो वे लोग अँधेरे जेलखानों में डाल दिए जाते थे या जला दिए जाते थे। एलीज़बेथ ने कई बार इसके विरुद्ध अनुरोध किया, परन्तु निष्फल। इस तरह दोनों में वैमनस्य बढ़ता गया और युद्ध के लिए नए कारण उपस्थित होते गये।

युद्ध की घोषणा

फ़िलिप बहुत दिनों तक इस अपमान को न सह सकता था। १५८६ में जब मेरी का प्राणदण्ड मिला तो उसने इंगलैंड के सिंहासन पर अपने सम्पूर्ण अधिकार फ़िलिप को दिए। फ़िलिप ने अपनी पुत्री आइज़ाबेला (Infants Isabella) को इंगलैंड का शासक बनाना चाहा और इसके लिए उसने तैयारी शुरू की। युद्ध के कारणों की कमी न थी। जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, धार्मिक मतभेद, वैवाहिक प्रश्न, फ़िलिप की संसार विजय की इच्छा, मेरी स्टुअर्ट का बदला, नीदरलैंड के विद्रोहियों को अंग्रेजी सहायता; व्यापारिक हौसले तथा अंग्रेज़ मल्लाहों के अत्याचार ये सब बहाने युद्ध के लिए पर्याप्त थे। एलीज़बेथ को भी बहुत शिकायतें थी, उनमें मुख्य तो फ़िलिप को षड्यन्त्रियों का सहायता और अंग्रेज़ी मल्लाहों के साथ स्पेन में किए गए अनुचित व्यवहार थे। दोनों देशों में

युद्ध की तैयारी होने लगी। १५८७ ई० में फ़िलिप से कैडिज (Cadiz) में एक जहाज़ी बेड़ा इकट्ठा किया; परन्तु इसके पूर्व कि सब तैयारी हो सके ड्रेक अपने कुछ जहाज़ को लेकर वहां गया और बेड़े को जला दिया। कुछ जहाज़ जल गए और बहुत सामान लूटा गया। ड्रेक ने लौट कर कहा कि "मैं फ़िलिप की दाढ़ी जला आया हूं।" सच ही फ़िलिप की दाढ़ी जली थी क्योंकि वह एक वर्ष तक फिर आक्रमण करने में असमर्थ था और उसके कुछ अच्छे जहाज़ जल गए थे। इधर इंगलैंड में भी बहुत धूम थी। सेना को कमी के कारण मिलिशिया को तैयार होने की आज्ञा दी गई और जहाज़ों का प्रवन्ध भी ठीक किया गया।

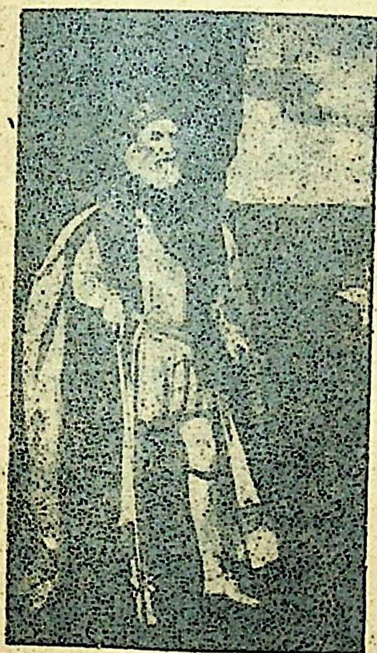
दूसरे वर्ष १५८८ में फ़िलिप ने दूसरा बेड़ा तैयार कराया जिसमें १३२ जहाज़ थे। स्पेनियों का यह अनुमान था वह अजेय है अतः उसका नाम अजेय आरमाडा (Invincible Armada) रक्खा गया। स्पेन वाले जल-युद्ध में निपुण नहीं थे और उनके जहाज़ भी बहुत बड़े थे;

आरमाडा

इसलिए फ़िलिप ने एक भारी सेना साथ भेजी थी जो इंगलैंड में उतर कर शीघ्र ही देश को जीत ले। उसकी सहायता के लिए परमा (Alexander Duke of Parma) जो इस समय नीदरलैंड का शासक था, उन्हीं जहाज़ों पर जाने को था। इस उपाय में सफलता की आशा इसलिये थी कि इङ्गलैंड में थल-सेना न थी और स्पेन की सेना यूरोप में सबसे बढ़कर थी। परन्तु स्पेन को फिर भी स्वतन्त्रता न मिल सकी क्योंकि नाविक शक्ति इतनी प्रबल न थी आरमाडा के नेता ड्यूक आफ़ मेडीना सिडोनिया (Duke of Medina Sidonia) था परन्तु वह जल युद्ध से अनभिज्ञ था और यह उसकी प्रथम-यात्रा थी। इसके विपरीत अंग्रेज़ी जहाज़ छोटे थे, जल्दी घूम सकते थे और उन पर बहुत तोपें थी जो जल्दी चलाई जा सकती थी। अंग्रेज़ी मल्लाह चतुर और होवर्ड (Lord Howard Effingham) ड्रेक तथा हाकिंस की अध्यक्षता में विजय की पूरी आशा थी। हाल पर भी टिलबरी

पर सेना एकत्रित कर ली गई थी और कैथोलिक लोग भी मेरी की मृत्यु के बाद राजभक्त हो गए थे। एलीज़बेथ ने प्रत्येक देशवासी के हृदय में देश-प्रेम तथा राजभक्ति का संचार कर दिया था। यह युद्ध प्रजा के लिये स्वतन्त्रता का युद्ध था इसलिए वे लोग प्राणपण से लड़ने को तैयार थे, अतः आरमाडा से भय नहीं रहा था।

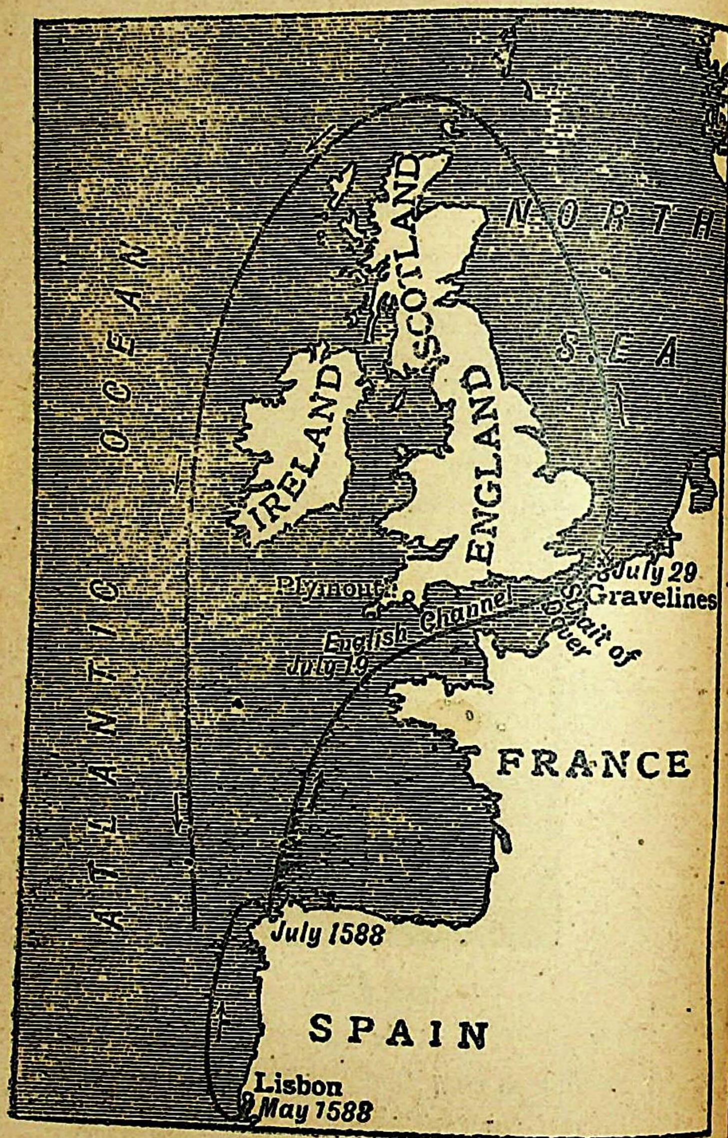
अंग्रेजी बेड़े का अध्यक्ष लार्ड होवर्ड अपने सहायक ड्रेक तथा



लार्ड होवर्ड

हाकिंस और अन्य समुद्री कुत्तों (Sea dogs) की सलाह, से काम कर रहा था। उन लोगों की इच्छा थी कि लड़ाई समुद्र ही पर लड़ ली जाए ताकि स्पेनियों को स्थल पर उतर कर अधिक हानि पहुंचाने का अवसर न मिल सके। सम्पूर्ण

आरमाडा से युद्ध



THE ROUTE OF THE ARMADA

जल सेना तथा व्यापारी जहाज़ प्लाइमथ पर एकत्रित होकर आरमाडा के आने की राह देखने लगे। १५८८ ई० की जुलाई के अन्तिम सप्ताह में आरमाडा इंगलिश चैनेल में दिखाई पड़ा। अंग्रेज़ों ने उसको आगे आने दिया। वह अर्ध चन्द्राकार आगे बढ़ रहा था। पीछे से भटके भटकाए जहाज़ों को अंग्रेज़ों ने पकड़ कर डुबा दिया। इस तरह से स्पेनियों की बहुत हानि हुई। तब ये लोग कैले में जाकर विश्राम करने लगे ताकि, वहाँ पर टूटे जहाज़ों की मरम्मत हो सके, भोजन सामग्री इत्यादि भी भर ली जाय और परमा को भी जहाज़ों पर चढ़ा लिया जाए। कैले से इङ्गलैंड पर आक्रमण करने में भी सुविधा थी, क्योंकि वहाँ से अंग्रेज़ी तट निकट है और रात में चुपचाप जाना सम्भव है। कैले फ्रांस का नगर था और फ्रांस युद्ध में शरीक़ न था, इसलिए अंग्रेज़ लोग आरमाडा पर आक्रमण न कर सकते थे और देर करने में उनकी हानि थी। अतः ड्रेक की सलाह के अनुसार यह उपाय किया गया कि आग लगाकर थोड़े पुराने जहाज़ रात्रि में आरमाडा के मध्य में छोड़ दिए गये। हवा उसी तरफ़ की थी, इससे बहुत से जहाज़ जलने लगे। जब स्पेनियों के बचने का कोई उपाय न देख पड़ा तब वे रस्से काट कर समुद्र में आ गए। अंग्रेज़ तो यह चाहते ही थे। एक घमासान युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेज़ों की चपलता और तोपें चलाने की निपुणता के कारण स्पेनियों की हार हुई। वे लोग पीछे घूमने में असमर्थ थे, अतः नार्थ सी (उत्तरी सागर) की तरफ भागे ताकि स्काटलैंड का चक्कर काट कर स्पेन लौट जायं; परन्तु रास्ते में तूफ़ान आ गया और बहुत जहाज़ डूब गए। १३२ में केवल ५३ जहाज़ स्पेन लौट कर पहुँचे। फ़िलिप ने यह कहकर सन्तोष किया कि "मैंने तुमको मनुष्यों से लड़ने भेजा था, न कि तत्वों से (हवा से)।" इङ्गलैंड में भी जीत मानने के लिए एक तमग़ा चलाया गया, जिसमें लिखा था "ईश्वर ने हवा से उड़ा दिया और वे (वैरी) तितर-बितर हो गए।"

इतिहास में आरमाडा की पराजय भी एक महत्वपूर्ण तथा आश्चर्य-

जनक घटना। स्पेनियों के आशा के विपरीत इसके विध्वंस के कई कारण थे। प्रथम अंग्रेज़ी 'समुद्री कुत्तों' (Sea dogs) की समुद्री कला में निपुणता थी ड्रेक आदि ने जल-युद्ध का एक नया ही ढंग निकाला था जिसमें जहाजों की गति पर बहुत कुछ निर्भर था। स्पेनी जहाजों पर सेना की आवश्यकता थी; ताकि वह वैरी के जहाजों पर कूद कर विजय प्राप्त कर सकें। परन्तु अंग्रेज़ी मल्लाहों ने उनको इसका अवसर ही न दिया। दूसरे अंग्रेजों की तोपें जल्दी चलती थी, और उनसे बहुत हानि हो सकती थी। सबसे प्रधान कारण यह था कि स्पेनी नेताओं में कोई योग्य मल्लाह न था। सबसे योग्य सैनिक सैंटाक्रूज (Admiral Santa Cruz) की मृत्यु हो गई थी, और उसके उत्तराधिकारी मेडीना रिडोनिया को केवल अपने उच्च वंश के कारण ही; यह पद मिला था। उसको समुद्र से बहुत भय था और उसके बहुत से साथी भी ऐसे ही थे इसके विपरीत अंग्रेज़ी बेड़े में सब निपुण मल्लाह थे। इस परिस्थिति में आरमाडा की हार निश्चय थी।

आरमाडा के पराजय के कारण और परिणाम

इसका परिणाम इङ्गलैंड के लिए बहुत ही लाभदायक हुआ। फ़िलिप की हार से इङ्गलैंड का मान दूसरे देशों में बढ़ गया, बाहरी आक्रमणों से सदा के लिए छुट्टी मिल गई। साथ ही साथ व्यापार तथा समुद्र-यात्रा और खोज में उन्नति हुई जिसमें आज इङ्गलैंड इतना शक्तिशाली देश है। देश को अन्य लाभ यह हुआ कि प्रोटेस्टेंट धर्म की नींव पुष्ट हो गई और भविष्य में कैथोलिक धर्म-सुधार से कोई आशंका न रही। एलीज़बेथ को सिंहासन पर अब कोई भय न रह गया। परन्तु देश में शान्ति और बाहरी वैरियों से भय न होने के कारण प्रजा में जागृति हुई। उसने रानी के कार्यों में हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया। इस प्रकार हेनरी सप्तम और हेनरी अष्टम के समय जो पार्लियामेंट राजा के अधीन थी वही अब रानी के शासन के अन्तिम काल में, अधिकार-याचना के लिए आगे बढ़ी।

आरमाडा विजय के उपरान्त रानी की इच्छा होते हुये भी स्पेन से सन्धि न हो सकी, क्योंकि युद्ध के इच्छुक दल की देश में प्रधानता थी।

आरमाडा के पश्चात् परराष्ट्रनीति

वे लोग युद्ध द्वारा स्पेन से उसके उपनिवेश छीनना चाहते थे। और अमेरिका तथा भारतवर्ष से व्यापार करना चाहते थे। फ़िलिप भी सन्धि न चाहता था। उसने १५९६ ई० में पुनः एक दूसरा आरमाडा बनवाया, परन्तु इसके पूर्व कि वह काम में आ सके हावर्ड, रैले तथा एसेक्स ने उसको कैड्रिज में जला दिया। इसके सिवाय दोनों में बराबर शत्रुता बनी रही और स्पेनिश जहाज अंग्रेज़ों द्वारा बराबर लूटे जाते थे। एलीज़बेथ ने फ्रांस तथा हालैंड से मित्रता क़ायम रक्खी, क्योंकि वे लोग भी फ़िलिप से द्वेष रखते थे, अतः इंगलैंड से उनकी मित्रता स्वाभाविक थी। इस काल में एलीज़बेथ को बाहर से कोई विशेष कष्ट न मिला।

इस शासन के अन्तिम दिनों में, देश में शान्ति होने के कारण, पार्लियामेंट में बल संचार हुआ और वह अपने अधिकार माँगने लगी।

Monopolies और Poor Law

बहुधा उसने रानी से विवाह तथा उत्तराधिकार प्रश्न पर प्रार्थना की और कभी-कभी आपस में विरोध भी हुआ, परन्तु अन्तिम दिनों में एक बात से पार्लियामेंट की शक्ति का विशेष परिचय मिलता है। रानी की यह प्रथा थी कि वह अपने मुख्य दरबारियों को किसी वस्तु विशेष के क्रय-विक्रय का प्रधान अधिकार दे दिया करती थीं; इसको मानोपोली (एका-धिकार) कहते हैं। इसके द्वारा उस मनुष्य को वस्तु के दाम आदि का निश्चय करने का पूर्ण अधिकार था। उसको बहुत लाभ होता था परन्तु प्रजा को कष्ट। इसी के अनुसार भारतवर्ष से व्यापार करने के लिये ईस्ट इण्डिया कम्पनी स्थापित की गई (१६०० ई०) और केवल उसको ही इस देश से व्यापार करने का अधिकार मिला। १६०१ ई० में पार्लियामेंट ने इस प्रथा के विरुद्ध प्रस्ताव पास किये और रानी से प्रार्थना

की कि इसको तोड़ दे। एलीज़बेथ को जब मालूम हुआ कि प्रजा की क्या सम्मति है, तो उसने भविष्य में मानोपोली न देने का प्रण किया और पार्लियामेंट के अधिकारों को मान लिया। इससे ग़रीबों को लाभ हुआ।

इन्हीं दिनों में रानी ने अपनी पार्लियामेंट की सहायता से ग़रीबों के लिये कई नियम बनाये जिनसे उनकी दशा सुधरने लगी। ट्यूडर काल में धर्ममठों के टूट जाने से और घेरों (Enclosures) के कारण कृषि के नष्ट हो जाने से, ग़रीब लोग उद्यमहीन भूखां मरते थे। एलीज़बेथ ने कई उपाय किये परन्तु विशेष सफलता न हुई। १६०१ में नये दरिद्र संरक्षक नियम (Poor laws) बने जिनके द्वारा देश के हर भाग में Poor Rates (ग़रीबों के लिये सहायता) एकत्रित किये जाने लगे, और जो असमर्थ उनको भोजन तथा समर्थ को कार्यालयों (Work-house) में उद्यम दिया जाने लगा। इससे दरिद्रता कम हुई और ग़रीबों की दशा सुधरी।

मेरी की मृत्यु के बाद यह निश्चय था कि उसका पुत्र जेम्स इंगलैंड का शासक होगा; परन्तु एलीज़बेथ ने अपने जीवन में किसी को भी अपना उत्तराधिकारी नियत न किया, क्योंकि उसे षड्यन्त्रों का भय था। जब उसका स्वास्थ्य बिगड़ा और वह मृत्यु-शय्या पर थी तब उसने जेम्स के लिये अपनी स्वीकृति दी। १६०३ ई० में एलीज़बेथ इस संसार से बिदा हुई। अपने शासन-काल में उसने देश को उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचाया, उसको बैरियों से छुड़ाया और उसका मान बढ़ाया। देश में धन, व्यापार, साहित्य तथा कला में उन्नति हुई और सर्वत्र शान्ति तथा सुख-समृद्धि का राज्य हुआ। उसकी मृत्यु के बाद बिना किसी विरोध के जेम्स देश का राजा हुआ और भाग्यहीन स्टुअर्ट कुल का शासन आरम्भ हुआ।

रानी की मृत्यु

११—ट्यूडर काल में आयरलैंड का इतिहास

मध्यकाल में हेनरी द्वितीय के समय में अंग्रेजों का शासन आयरलैंड में भी क़ायम हो गया था। उस समय से अंग्रेज शासक उस देश में अपना राज्य दृढ़ करने के प्रयत्न में थे। उसका एलीज़बेथ के पूर्व प्रभुत्व देश के थोड़े ही भाग पर था, जिसको "अंग्रेज़ी बाड़ा" (English Pale) कहते थे, अन्यत्र उसका विरोध था। ट्यूडर काल के आरम्भ में विद्रोह की आग कम न हुई थी। हेनरी सप्तम के विरुद्ध लैम्बर्ट सिमनल् के विद्रोह में आयरलैंड ने सहायता दी थी, परन्तु शीघ्र ही विद्रोह शान्त हो गया था। हेनरी ने १४६४ में सर एडवर्ड पोयनिंग्स Sir Edward Poynings) को वहाँ का शासक बनाया और देश में शान्ति स्थापित करने के लिये भेजा। वह अपने कार्य में बहुत कुछ सफल हुआ। उसने ड्रोघेडा (Drogheda) में पार्लियामेंट स्थापित की और उससे दो क़ानून पास कराये कि आयरलैंड की पार्लियामेंट बिना राजा की आज्ञा के न बैठ सकेगी और न उसके नियम ही राजा की राय के बिना लागू हो सकेंगे; और दूसरा कि अंग्रेज़ी पार्लियामेंट के नियम आयरलैंड में माने जाएंगे इससे कुछ शान्ति स्थापित हुई, परन्तु 'बाड़े' के बाहर वही पूर्व विद्रोह और अराजकता अब भी फैली हुई थी।

हेनरी अष्टम के समय में भी समझौते की नीति क़ायम रही और धीरे-धीरे कुछ मुख्य नेता लोग भी मिला लिये गये थे। परन्तु इंगलैंड में प्रोटेस्टेन्ट धर्म के फैल जाने से वैमनस्य का एक नया कारण निकल आया उन्होंने आयरलैंड के कैथोलिकों को अपने धर्म में लाने की कोशिश की और असफल होने पर उनके साथ अत्याचार किए, जिससे

विद्रोह की आग और भी भड़क गई।। एडवर्ड षष्ठ के समय में भी इसी कारण से मेल न हो सका। मेरी ने कैथोलिक धर्म को पुनः स्थापित कर दिया, परन्तु उसने वहां के सरदारों से भूमि छीन कर अंग्रेज सरदारों को देना आरम्भ किया, और वहाँ अंग्रेज़ी प्रजा के उपनिवेश भी स्थापित किए, जिनमें मेरी टाउन व फ़िलिप टाउन मुख्य थे। इससे यह अभिप्राय था कि इस प्रकार आयरलैंड में अंग्रेज़ी प्रजा बढ़ेगी। और उनका शासन दृढ़ होगा; परन्तु इसका प्रभाव उल्टा पड़ा। आयरलैंड की प्रजा इस नीति से असन्तुष्ट हुई, क्योंकि भूमि छिन जाने से उसके पास जीवन निर्वाह के कोई भी साधन न रह गये। अतः विद्रोह कम न हुआ।

एलीज़बेथ के समय में झगड़े के तीन कारण थे; प्रथम राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की इच्छा दूसरा धर्म विरोध और तीसरा भूमि का छिन जाना।

एलीज़बेथ का काल इन तीनों कारणों के होते हुए शांति होना असम्भव था और जबकि रानी के वैरी कैथोलिक लोग अपने लाभ के लिए विद्रोहियों को उकसाने और सहायता देने पर कमर बाँधे हुए थे। रानी की इच्छा थी कि समझौते से काम लिया जाए और उसके शासन के लिए जन सम्मति तैयार की जाए। परन्तु तीन विद्रोहियों के कारण उसकी यह नीति न चल सकी और उसे बहुत कठोरता का व्यवहार करना पड़ा जिससे अंग्रेज़ी शासन बदनाम हो गया और वैमनस्य बढ़ता ही गया। १५६६ में शैन ओनील (Shan O' Niell) ने अलस्टर (Ulster) में विद्रोह किया। इसका मुख्य कारण यह था कि अंग्रेज़ी शासनों ने अर्ल आफ़ टीरोन (Earl of Tyrone) की मृत्यु के बाद उसके पुत्र को ही उचित उत्तराधिकारी माना, परन्तु वहाँ की जाति पंचायत (Glan) ने उसके भाई शैन को अपना नेता और प्रधान चुना। शैन विद्रोही हो गया। उसको प्रजा से बहुत सहायता मिली। उसने लार्ड ससेक्स (Lord Sussex) को हरा दिया परन्तु सर हेनरी सिडनी (Sir Henry Sydney) ने उसको

हरा दिया और वह १५६७ में मारा गया। विद्रोह अल्स्टर में तो शान्त हो गया, परन्तु थोड़े ही दिनों में (१५७६—१५८३) मन्स्टर Munster, Earl of Desmond) ने फिर झगड़ा किया। इस बार पोप तथा फ़िलिप ने इन लोगों को उकसाया था, क्योंकि पोप ने रानी को धर्मच्युत कर दिया था और फ़िलिप उससे द्वेष मानता था। अंग्रेज सैनिक ग्रे (Grey) ने बड़ा ही कठोर बदला दिया; आग और तलवार से उसने बहुत कुछ नाश किया। इस प्रकार यह विद्रोह भी दबा लिया गया। तीसरी बार १५९८ में अंग्रेजों के अत्याचार से पीड़ित होकर ह्यू ओनील (Hugh O' Neill) शैन के भतीजे ने विद्रोह किया। उसको पहले तो कुछ सफलता मिली। लार्ड मांटजाय (Lord Mountjoy) ने बहुत कठोरता के साथ विद्रोह का दमन किया। उसने नये क़िले बनवाये ताकि जीते हुये भाग में शासन हो सके। इस तरह रानी के समय तक भी कोई व्यवस्थित और शान्तिमय उपाय आयरलैंड पर शासन करने का न निकला था। अंग्रेज लोग सेना द्वारा अत्याचार करके वहाँ पर राज्य कर रहे थे। इससे आइरिश लोग असन्तुष्ट थे और सदा ही स्वतन्त्र होने का अवसर ढूंढ़ते थे। विद्रोह के तीनों कारण उपस्थित थे। सम्पूर्ण आधुनिक काल में, १९२२ ई० के पूर्व इन दोनों देशों में सदैव कलह बनी रही, क्योंकि आयरिश लोग स्वतन्त्रता चाहते थे।

१२—ट्यूडर काल में समुद्र-यात्रा और व्यापार

एलीज़बेथ-काल की महत्ता का मुख्य कारण इङ्गलैंड का समुद्र पर अग्रसर होना है। मध्ययुग में अंग्रेज़ लोग व्यापार और समुद्र-यात्रा में इतने चतुर न थे जितने कि इटली और पुर्त्तगाल वाले उनके पास कोई जल-सेना न थी इसी कारण भारतवर्ष और नई दुनिया की खोज में स्पेन तथा पुर्त्तगाल वाले ही आगे बढ़े थे। ट्यूडर काल के पूर्व देश में शान्ति न होने के कारण अंग्रेज़ लोग पूर्वी व्यापार भाग ले भी न सकते थे, परन्तु जब कोलम्बस ने अमेरिका का पता लगाया और वास्को डिगामा ने भारतवर्ष का सीधा जल मार्ग ढूंढ़ा तो अंग्रेज़ों की भी इच्छा हुई कि भारतवर्ष से व्यापार करें और अपने देश में मसाला इत्यादि लायें। हेनरी सप्तम का समय भी इसके लिए उचित था उसने विदेशी व्यापार के लिए सुविधाओं का उद्योग किया और जान कैबट (John Cabet) को उसकी सामुद्रिक खोजों में सहायता दी। परन्तु कोई विशेष सफलता न हुई। हेनरी अष्टम के समय में बहुत उन्नति हुई उसने एक बहुत अच्छी जल-सेना रखने का विचार किया और जहाज बनवाये। १५४८ में अपनी मृत्यु के समय उसने ५३ जहाज़ छोड़े थे। इसके अतिरिक्त इस समय ब्रिस्टल आदि के मल्लाह बहुत दूर तक समुद्र में चक्कर लगाते थे। हाकिंस (William Hawkins) ने पश्चिमी अफ्रीका का चक्कर लगाया। इन सब बातों से जल-यात्रा में बहुत उन्नति हुई। परन्तु उसकी मृत्यु के दस वर्ष में ही एडवर्ड और मेरी के शासन के कारण जल-सेना नष्ट हो गई थी, फिर भी विलोबी (Willoughby) और चांसलर (Chancellor) ने भारतवर्ष के वास्ते उत्तरी पूर्वी

समुद्र-यात्रा में उन्नति

भाग का पता लगाने का प्रयत्न किया और रूस का समुद्री रास्ता ढूंढ़ निकाला।

एलीज़बेथ के समय में सबसे बढ़कर उन्नति हुई, जिसके अनेक साधन थे। प्रथम, प्रोटेस्टेन्ट लोग अपने छोटे जहाजों में बैठकर इंगलिश चैनेल में कैथोलिक जहाजों को लूटते थे और इसको धर्म-संगत बताते थे। दूसरे मल्लाह लोग मछली का शिकार खेलते थे। इसके अतिरिक्त एलीज़बेथ के समय में स्पेनिश अमेरिका से ज़बरदस्ती व्यापार करने की इच्छा बहुत प्रबल थी। "समुद्री-कुत्ते" यानी अंग्रेज़ मल्लाह हाकिंस और ड्रेक इत्यादि अपने जहाजों में जाकर उन देशों से व्यापार करते थे और स्पेन के जहाजों को लूटते थे। साथ ही साथ बहुत से वालंटियर लोग भी अपने जहाजों से राजकीय जल-सेना को सहायता देते थे। इन सब कारणों से इस काल में बहुत उन्नति हुई और देश की जल सेना बढ़ी और इसका गौरव भी बढ़ा। आरमाडा युद्ध से तो इंगलैंड सर्व-प्रथम देश माना जाने लगा।

हाकिंस ने अपने देशवासियों को एक नया रास्ता दिखाया। वह यह अनुचित समझता था कि स्पेनी लोग ही अमेरिका से व्यापार कर सकें, इसलिये वह अपने जहाज लेकर वहाँ गया और वहाँ के निवासियों के साथ उसने व्यापार किया। वह अफ्रीका से हबशी पकड़ कर अमेरिका में बेचा करता था। उसका कुटुम्बी ड्रेक भी उसके साथ जाता था। फिर ड्रेक १५७२ में अकेले ही अमेरिका गया। वहाँ उसने कुछ जहाज लूटे और फिर प्रशान्त महासागर के दर्शन करके लौटा।

एलीज़बेथ के काल की प्रसिद्ध जल-यात्राएँ

पाँच वर्ष बाद १५७७ में फिर वह कुछ जहाज लेकर गया और मैगेलन के जल-मार्ग (Strait of Magellan) को पार करके प्रशान्त महासागर में चला गया। फिर जावा, सुमात्रा और केप आफ़ गुडहोप होते हुये वह १५८० में स्वदेश लौटा। उसने ही सर्वप्रथम संसार का एक चक्कर लगाया था। इन दोनों बड़े मल्लाहों के

सिवाय फ्रोबिशर (Frobisher) ने भारतवर्ष के लिये उत्तर पश्चिम से रास्ता ढूंढ़ने के प्रयत्न में ग्रीनलैंड (Greenland) को पाया और डेविस (Davis) भी उसी तरह डेविस का जलमार्ग (Davis Strait) होकर बैफ़िन की खाड़ी (Baffin's Bay) में पहुँचा। रैले (Sir Walter Raleigh) और गिलबर्ट (Gilbert) उत्तरी



सर वाल्टर रैले

अमेरिका गये और वहाँ उन्होंने उपनिवेश स्थापित करने का प्रयत्न किया, परन्तु असफल हुये। इस तरह एलीज़बेथ के समय में अंग्रेजी मल्लाहों ने संसार का बहुत सा भाग जान लिया था और वे लोग भारतवर्ष, अमेरिका, अफ्रीका और उत्तरी रूस तक अपने जहाज़ ले जाते थे।

उपनिवेश और व्यापार

स्पेनी लोगों ने अमेरिका में अपने उपनिवेश क़ायम किये थे और वहाँ से वे सोना-चाँदी की खानों को ढूंढ़ कर इन मूल्यवान धातुओं को अपने देश में लाते थे। अंग्रेज़ लोग उनके इस एकाधिकार को तोड़ना चाहते थे और इसी कारण वे लोग वहाँ जाकर बसना भी चाहते थे। परन्तु रैले



Voyages & Settlements of the 16th. Century

और गिलबर्ट ने एक अन्य मन्तव्य से उपनिवेश स्थापित करने का विचार किया। वे चाहते थे कि अमेरिका में अंग्रेज़ों का दूसरा घर हो जाये, ताकि वहाँ की पैदावार और व्यापार से वे अपने देश को धनी बनायें। इस आशय से प्रथम ने वर्जीनियां (Virginia) नाम का एक उपनिवेश स्थापित किया, परन्तु असफल रहा। दूसरे को न्यूफ़ाउन्डलैंड (Newfoundland) में सफलता मिली। यह पहला उद्योग था, पर स्टुअर्ट काल में इसमें बहुत सफलता मिली और बहुत उपनिवेश क़ायम हुए जो आगे चल कर संयुक्त देश अमेरिका (United States of America) बने।

साथ ही साथ दूर देशों से व्यापार करने के लिए कम्पनियों को अखण्ड अधिकार मिला, जिसको मनोपली (Monopoly) कहते हैं। इस उपाय में बहुत सुगमता थी क्योंकि व्यापार में स्पेन से युद्ध का भय था और नये स्थान की असुविधाएं अकेले एक व्यापारी के वश की बात न थी। इस प्रकार भारतवर्ष से व्यापार करने के लिये १६०० ई० में ईस्ट इन्डिया कम्पनी (East India Company) स्थापित की गई और रूस तथा बाल्टिक सागर-तट से व्यापार करने के लिये अन्य कम्पनियां बनी, जिनसे आगे चल कर देश के व्यापार, समृद्धि तथा साम्राज्य में उन्नति हुई।

१३—ट्यूडर काल में इंगलैंड की दशा

१—राजनैतिक स्थिति

राजा राष्ट्रपति था जो पार्लियामेंट की सहायता से शासन करता था ट्यूडर काल के राजा और रानी निरंकुश शासन करते थे। उसके अधिकार मध्यकाल की अपेक्षा बहुत बढ़ गये थे।

शासन शैली

राजा अब केवल अमीरों का मुखिया न था, बल्कि ईश्वर-नियुक्त देश का स्वामी था। वह नियम निर्धारक, शासक और न्यायकर्त्ता था। उसको शासन कार्य में सहायता देने के लिए एक प्रिवी कौंसिल (Privy Council) थी जिसके सदस्य केवल अमीर लोग और मंत्री होते थे। परन्तु ट्यूडर काल में प्रिवी कौंसिल के अधिकार बहुत कम हो गए थे। राजा स्वयं अपने मंत्री नियुक्त करता था जो शासन कार्य में उसके प्रति जिम्मेदार थे। इनका प्रधान चांसलर (Chancellor) होता था जो प्रधान मन्त्री के तुल्य था। हेनरी अष्टम अपने मन्त्रियों से बहुत काम लेता था और यदि उनके किसी काम से प्रजा असन्तुष्ट होती थी तो वह उनको प्रजा को प्रसन्न करने के लिए कठिन दण्ड देता था। मन्त्री लोग पार्लियामेंट के सदस्य न होते थे और न वे प्रजा को अपने कार्य के लिए उत्तरदायी थे।

जैसा ऊपर लिखा गया है, राजा की सहायता के लिए एक पार्लिया-मेंट थी, जिसके दो अंग थे; प्रथम हाउस आफ़ लार्ड्स (House of Lords) जिसके सदस्य देश के बड़े बड़े अमीर और चर्च के प्रधान कर्मचारी होते थे; दूसरा हाउस आफ़ कामन्स (House of Commons) था जिसके सदस्य प्रजा के प्रतिनिधि थे, जिनका चुनाव काउंटी (Counties) और बारो (Boroughs) में होता था। पार्लियामेंट का मुख्य काम नियम बनाना और देश पर कर लगाकर राजा का धन

देना था। बिना प्रतिनिधि सभा की अनुमति के राजा कोई नया कर लगा सकता था। पार्लियामेंट धन देने में बहुधा कृपण थी। शासन लिए, राजा के आदेशानुसार उचित नियम बनाना इसका कर्तव्य था। स्थानीय शासन प्रजा निर्वाचित काउण्टी (County) और बा (Borough) कौंसिल द्वारा होता था। राजा का प्रतिनिधि शेरिफ़ राजा के अधिकारों की रक्षा करता। न्याय शासन के लिए Justice of the Peace नियत थे जो देश में घूम कर न्याय सम्पादन करते थे। राजधानी में राजा द्वारा नियत न्यायाधीश लोग भी मुकद्दमों का फैसला करते थे। राजा के पास भी अपीलें जाती थीं जिनका प्रिवी कौंसिल में फैसला होता था। इसके अतिरिक्त दो विशेष न्यायालय ट्यूडर काल में स्थापित हुए थे, प्रथम कोर्ट आफ़ स्टार चैम्बर जिसमें असामान्य और अमीर अभियुक्तों का फैसला होता था; दूसरा कोर्ट आफ़ हाई कमीशन था जिसमें धर्म सम्बन्धी मुकदमें होते थे। इन दोनों न्यायालयों द्वारा ट्यूडर राजाओं की मर्यादा बढ़ गई थी।

पन्द्रहवीं शताब्दी में पार्लियामेंट की शक्ति बहुत बढ़ गई थी, यहाँ तक कि वह शासन में भी हस्तक्षेप करने लगी थी। परन्तु ट्यूडर काल में यद्यपि पार्लियामेंट की शक्ति क्षीण न हुई थी, तब भी राजा की शक्ति बहुत बढ़ गई थी और पार्लियामेंट उसकी इच्छा का पालन करती थी। ट्यूडर शासक स्वेच्छाचारी होना चाहते थे इसलिये उन्होंने पार्लियामेंट को बहुत अच्छे ढङ्ग से अपने हाथ में कर लिया। उनकी यह नीति थी कि जब तक विशेष आवश्यकता न हो पार्लियामेंट को न बुलाया जाए और सदा उसके अधिकारों पर कड़ी निगाह रक्खी जाए। इस काम में उनको सफलता मिली। हेनरी सप्तम ने तो अपने शासन काल में बहुत कम पार्लियामेंट बुलाई और धन एकत्रित करने के अन्य नवीन उपाय निकाले। हेनरी अष्टम ने भी १५३० ई० के पूर्व पार्लियामेंट कम बुलाई और वह भी केवल धन की आवश्यकता से।

राजा और पार्लियामेंट

इसके अतिरिक्त ये सब शासक पार्लियामेंट में अपने इच्छानुवर्ती सदस्य चाहते थे हेनरी अष्टम ने मठों की भूमि छीन कर अपने साथियों को दे दी थी, जिससे एक नया अमीर समूह बन गया था और वे लोग हाउस आफ़ लार्ड्स में सदा ही राजा के तरफ़दार रहते थे। चर्च के विशप भी राजा के सहायक थे; अतः इस सभा में विरोध की कोई सम्भावना न थी। प्रतिनिधि सभा (House of Commons) को वशवर्ती करने के लिए भी उन्होंने चुनाव में हस्तक्षेप करना आरम्भ किया। मेरी तथा एलीजवेथ ने बहुत नए 'बारो' (Boroughs) को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया, जिसका फल यह हुआ कि उनके सहायकों की संख्या बढ़ी। उनके पास चर्च-सम्पत्ति-हरण तथा अन्य उपायों से राजकोष में धन की कमी न थी। इससे पार्लियामेंट में अधिवेशन कम और बहुत समय उपरान्त होते थे। इससे सदस्यों को आपस में मिलकर दलवन्दियाँ करने और शासन पर प्रभाव डालने का कम अवसर मिलता था। अतः राजा की शक्ति बढ़ी और उसको पार्लियामेंट को अपने वश में करके निरंकुश राज्य करने में बहुत सुविधा हुई।

परन्तु फिर भी पार्लियामेंट ने इस काल में अपने पूर्व प्राप्त अधिकारों की रक्षा की और यद्यपि राजा का बहुत विरोध न किया तब भी पूर्णतया उसकी आज्ञानुवर्तिनी न थी। पार्लियामेंट को कभी यह मन्जूर न था कि राजा उसकी आज्ञा के बिना कोई कर लगाए; और ट्यूडर राजाओं ने इस नियम का उल्लंघन भी न किया। पार्लियामेंट अपने सदस्यों को स्वतन्त्रता की रक्षा करती थी। वह निरापद वाद-विवाद के लिए प्रयत्न करती थी और राजा द्वारा कोई भी हस्तक्षेप न सह सकती थी। हेनरी अष्टम के समय में प्रतिनिधि सभा ने वूल्ज़े की उपस्थिति में काम करने से इनकार किया; सर टामस मोर के विरुद्ध Bill of Attainder पास न होने दिया और मेरी के बहुत प्रयत्न करने पर भी मठों को सम्पत्ति वापस लौटाने से इनकार कर दिया। एलीज़बेथ के समय में भी रानी और प्रतिनिधि सभा में बहस की स्वतन्त्रता पर बहुत झगड़ा हुआ

क्योंकि रानी न चाहती थी कि पार्लियामेंट उसके विवाह, धर्म या वाह्य नीति सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार कर सके। परन्तु उसके शासन में ही पार्लियामेंट ने इन बातों का अधिकार प्राप्त कर लिया और रानी उसको रोक न सकी। प्रतिनिधि सभा को इसमें इतनी सफलता हुई कि १६०१ में उसने रानी की मनावली देने की नीति का विरोध किया और उससे प्रार्थना की कि इस हानिकारक प्रथा को तोड़ दे। एलाजबेथ को अपनी गलती जान पड़ी और उसने प्रण किया कि वह उनकी इच्छानुसार काम करेगी यद्यपि पार्लियामेंट इस काल के आरम्भ में क्षीण-शक्ति थी, परन्तु अन्त तक वह प्रबल हो गई थी और उसको अपने अधिकारों का ज्ञान हो गया था जिससे स्टुअर्ट काल की कलह आवश्यक हो गई थी।

पार्लियामेंट की उन्नति के कारण

पार्लियामेंट की शक्ति धीरे-धीरे वढ़ी। इस काल के आरम्भ में देश में शक्ति स्थापना की आवश्यकता थी, घरेलू युद्ध और वाहरी आक्रमणों का भय था, धन और शिक्षा की कमी थी, इसमें पार्लियामेंट अपने अधिकारों को दृढ़ न कर सकी और देश के हितैषी, शान्ति स्थापनाशक्त ट्यूडर राजाओं को पूर्ण सहायता दे रही थी परन्तु धार्मिक क्रान्ति, आर्थिक उन्नति और नवीन विद्या प्रचार से मध्य श्रेणी के लोगों में आत्मसम्मान और आत्मशक्ति का विकास हुआ। वे लोग अपने अधिकारों को समझने लगे और उनको पाने का प्रयत्न करने लगे। फिर धीरे-धीरे देश में शान्ति स्थापित हो गई। और आरमाडा की पराजय के बाद बाहरी आक्रमणों को चिन्ता भी दूर हो गई। अब तो राजनैतिक अधिकार पाने की प्रबल इच्छा हुई और एलीजबेथ के अन्तिम दिनों में पार्लियामेंट की स्वन्त्रता और शक्ति इसी कारण सम्भव हो सकी। सदस्य लोग आपस में मिलने लगे, उसके पास धन था और प्यूरिटन लोगों के आधिक्य से स्वतन्त्रता की लहर अधिक फैली। इसी समय राजनीति में नए विचारों का विकास हो रहा था और जब तक

शासक और पार्लियामेंट आपस में समझौते से काम कर सकते थे कलह की शंका थी। परन्तु जैसे ही उनमें विरोध हुआ उन्होंने स्टुअर्ट काल में नवीन राजनैतिक विचारों पर कार्य किया और प्रजातन्त्र स्थापित करना सम्भव कर दिया।

ट्यूडर निरंकुशता के कारण

मध्ययुग में राजा की शक्ति पर तीन विशेष बन्धन थे। प्रथम, कैथोलिक चर्च का संगठन जो सदा ही राजा को अनियमित आचरण से रोकता था। चर्च की आज्ञा या उसके नियम के विरुद्ध कोई राजा निर्भय कुछ न कर सकता था। द्वितीय, उसको सदा ही अमीरों के विद्रोह का डर था और तृतीय, पार्लियामेंट के कर लगाने के अधिकार का भय था क्योंकि राजा प्रजा पर कोई कर बिना पार्लियामेंट की अनुमति के नहीं लगा सकता था। ट्यूडर काल के आरंभ में वार आफ़ रोजे़ज के कारण बहुत अमीर नष्ट हो चुके थे और जो बचे थे वे इस योग्य न थे जो राजा का विरोध कर सकें, इस कारण यह बन्धन इस काल में कम हुआ। दूसरे, हेनरी अष्टम ने अपनी धार्मिक नीति द्वारा पहला बन्धन भी तोड़ दिया। राजा चर्च का प्रधान अफसर था इसलिए उसको चर्च की कोई भी आज्ञा किसी काम से रोक न सकती थी। लेकिन तीसरा बन्धन रह गया, परन्तु इस काल में जैसा ऊपर लिखा गया है प्रतिनिधि सभा था,(House of Commons) ने भी राजा का बहुत विरोध न किया और उसको निरंकुश शासन करने दिया।

ट्यूडर शासक निरंकुश राज्य करते थे और इसमें वे लोग बहुत कुछ सफल हुए। इसका कारण यह था कि उनके आदेश और देश की आकांक्षाओं में कोई विशेष भेद न था। उन्होंने कभी भी कोई कार्य जन-सम्मति के विरुद्ध न किया इसी से जनता और उसके प्रतिनिधि उनके कार्य में हस्तक्षेप न करते थे। हेनरी अष्टम तथा उसकी पुत्री एलीज़बेथ ने जब जाना कि पार्लियामेंट या प्रजा उनके किसी कार्य से असहमत है तो उन्होंने बिना अपनी मर्यादा को विचार किए हुए उसको बन्द कर

दिया इसी कारण प्रजाको उनमें अटल विश्वास और भक्ति थी। शासन की बागडोर अपने हाथों में रखते हुए भी उन्होंने पार्लियामेंट की अनुमति और विरोध का सदा ध्यान रक्खा; उसके अधिकारों के कोई हस्तक्षेप न किया, पार्लियामेंट के नियम-निर्माण तथा धन देने के अधि-कार को कभी भी रद्द न किया। उससे उनकी निरंकुशता से प्रजा अप्रसन्न न थी वरन् वह उसमें अपने आदर्शों तथा आकांक्षाओं का पूर्ण निरूपण समझती थी साथ ही साथ देश की स्थिति भी ऐसी न थी कि वैध शासन (Consttiutional govt.) सम्भव हो सके। सर्व-सम्पन्न शक्तिमान राजा ही देश में शान्ति स्थापित करके, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति सम्भव कर सकता था। देश को बाहरी वैरियों से डर था, कैथोलिक पुनरावर्तन और स्पेन के शासन से बचने के लिए मज़बूत शासन और शक्तिशाली शासक की अवश्यकता थी; इस कारण आरमाडा के समय तक देश में ट्यूडर राजाओं के प्रति पूर्ण सहानुभूति थी और निरंकुशता का कोई विरोध न था। एलीज़वेथ के गौरवपूर्ण शासन से प्रजा प्रसन्न थी अतः उसका अन्त तक कोई विरोध न हुआ और ट्यूडरी निरंकुशता क़ायम रही।

इस शासन से देश का भारी उपकार हुआ। प्रजा को शान्ति मिलने से आर्थिक तथा साहित्यिक उन्नति करने का अवकाश मिला। पार्लियामेंट को भी अपने अधिकारों का ज्ञान हो गया और सत्रवीं शताब्दी के युद्ध के लिए वह तैयारी हो गई। देश में आंग्ल चर्च की नींव पुष्ट हो गई और इंगलैंड यूरोप में एक प्रधान राष्ट्र गिना जाने लगा। बिना इस शासन के देश में शान्ति न होती, शक्ति न बढ़ती और देश का गौरव और सम्मान बाहरी देशों में न होता।

२—आर्थिक तथा साहित्यिक उन्नति

ट्यूडर काल में राजनैतिक उन्नति के साथ साथ देश की आर्थिक दशा में भी बहुत उन्नति हुई। देश में शान्ति होने से व्यापार और कला-

कौशल में उन्नति हुई। ट्यूडर शासक अपनी प्रजा को व्यापार के लिए सुविधाएं देते थे और उनका उत्साह बढ़ाते थे। हेनरी सप्तम ने नीदरलैंड से व्यापारिक सन्धि करके उनके व्यापार को लाभ पहुँचाया हेनरी अष्टम के समय में भी व्यापार में अवनति न हुई। ऊन की तिजारत अब भी थी। परन्तु एलीज़बेथ के समय में व्यापार बहुत बढ़ा। अंग्रेज़ी मल्लाहों ने समुद्र पार दूर देशों का रास्ता ढूंढ़ा और सौदागर लोग अपना सामान लेकर वहाँ पहुँचे और उन देशों में अपनी कोठियाँ बनाई हाकिंस और ड्रेक के कारण अमेरिका से व्यापार होने लगा और अंग्रेज लोग हबशी पकड़ कर वहाँ बेचते थे और उनसे लाभ उठाते थे। इसी समय रूस और बाल्टिक सागर के किनारे के प्रान्तों से भी लकड़ी का व्यापार शुरू हुआ और इगलैंड में जहाज़ बनाने का काम उन्नति कर गया। भारतवर्ष से व्यापार करने के लिए ईस्ट इंडिया कम्पनी स्थापित की गई और धीरे धीरे उसने पूर्वी देशों का सारा व्यापार अपने हाथ में कर लिया। इस व्यापार में दो बातों ने बहुत फ़ायदा पहुँचाया; प्रथम नेविगेशन नियम (Navigation Acts) ने जिनका अभिप्राय यह था कि जो वस्तु इङ्गलैंड में व्यापार के लिए आए वह उसी देश के बने जहाज़ों में आना चाहिए और दूसरा, कम्पनियों को 'एकाधिकार' देना। इस समय नीदर-लैंड में विद्रोह होने के कारण ऐंटवर्प व्यापार केन्द्र न रह गया और व्यापार की उन्नति हुई। व्यापार की उन्नति का प्रमाण एलीज़बेथ के समय में लन्दन में एक्सचेंज घर (Royal Exchange) का स्थापित होना है जहाँ बड़े बड़े व्यापार मिल कर अपना लेन देन करते हैं।

व्यापार

इस काल में व्यवसाय में भी कुछ उन्नति हुई। मध्ययुग में व्यव-साय का विधान गिल्ड के हाथ में था। ट्यूडर काल में गिल्ड बिलकुल तो नष्ट न हुए थे, परन्तु फिर भी उनके अधिकार बहुत कम हो गए थे और कारीगर लोग स्वतंत्र व्यवसाय कर सकते थे। इससे नए उपाय मालूम

व्यवसाय

हुए और नई नई चीजें बनने लगीं एलीज़बेथ ने नए व्यवसायों की उन्नति के लिए कुछ आदमियों को सम्पत्ति दे दी थी, जिससे कि उसको हानि न हो और कला पुष्ट हो जाए। इस समय नीदरलैंड और फ्रांस से प्रोटेस्टैंट लोग भाग कर आए उनको राज्य ने सुविधाएं दीं और उनके आने से कपड़े बिनने की कला ने देश में उन्नति की। रुई के कपड़े भी बिने जाने लगे।

कृषक-मजदूरों

हेनरी सप्तम के शासन काल में ऊन के व्यापार में उन्नति होने से कृषि की अवनति हो गई थी। जमींदारों को खेतों को चरागाह बनाकर भेड़ पालने और उनका ऊन बेचने में अधिक लाभ था, इससे हेनरी अष्टम के समय तक बहुत खेत चरागाह में बदल गए और कृषक लोग निरुद्यम घूमने लगे। एडवर्ड षष्ठ के राज्य काल में तो इन लोगों ने विद्रोह भी किया था परन्तु, एलीज़बेथ के शासन तक वह प्रगति बन्द हो चुकी थी और उद्यम का प्रश्न इतना कठिन न रह गया था। फिर रानी के दरिद्रता नियमों (Poor Laws) के कारण यह कठिनाई बिल्कुल दूर हो गई और गाँवों में बहुत कष्ट न रह गया।

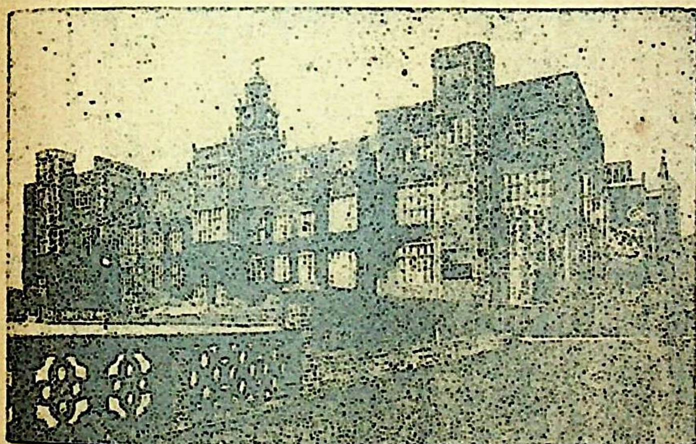
राष्ट्रीय आय

एलीज़बेथ के पूर्व देश की आर्थिक दशा अच्छी न थी। हेनरी अष्टम की लड़ाइयों और दर्बार के खर्चों के कारण उसको भाँति-भाँति के उपायों से प्रजा से धन लेना पड़ा। जब प्रजा अधिक न दे सकी तो उसने मुद्राओं में चाँदी कम करके उनका मूल्य कम कर दिया, जिसका प्रभाव यह पड़ा कि देश के आर्थिक प्रबन्ध में बहुत गड़बड़ी मची। मेरी के समय तक यह कष्ट बना रहा परन्तु एलीज़बेथ ने अपनी शान्तिप्रिय नीति से शासन का व्यय कम किया। वह स्वयं कृपण थी इससे उसने बहुत रुपया बचा लिया और पार्लियामेंट से माँगने की उसको कम आवश्यकता पड़ती थी। इस समय देश में व्यापार और व्यवसाय में उन्नति होने से और समुद्री डाकुओं द्वारा स्पेन के सोना चाँदी भरे जहाजों की लूट से

देश में धन बढ़ गया और पार्लियामेंट अब कर लगाने में और प्रजा कर देने में विरोध न करती थी। देश में धनवानों की संख्या बढ़ी और देश की आर्थिक दशा अच्छी हो गई।

भोग विलास की सामग्री की वृद्धि

धन बढ़ने से भोग विलास की इच्छा प्रबल हुई। अब नगरों में अच्छे अच्छे मकान बनने लगे जिनमें स्वास्थ्य तथा आराम का विचार रहता था। वास्तुविद्या में उन्नति हुई और देश में जगह जगह भूमिपतियों के विशाल भवन बने जिनका निर्माण नए ढंग का था। मनुष्यों के घरों में और उनके रहने के ढंग में भी उन्नति हुई। इस समय के पूर्व, धुआँ निकालने की चिमनी तकिया या शीशा



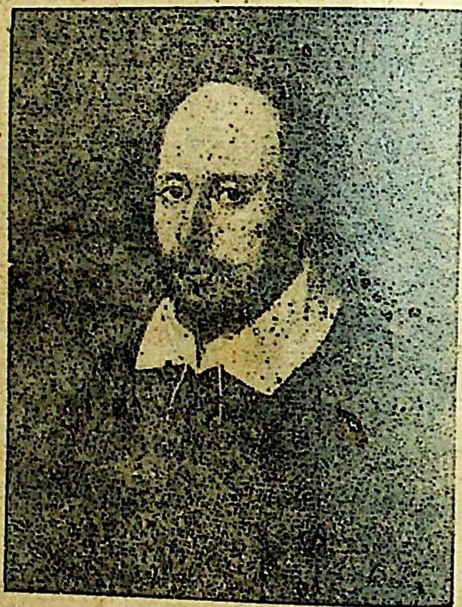
हैटफ़ील्ड हाउस

लगी खिड़की केवल धनवानों के भोग की वस्तुएं थी परन्तु अब साधारण ग़रीब आदमी के घरों में भी ये विलास के सामान मौजूद थे। भोजन सामग्री भी अच्छी हो गई। घास के स्थान पर मकान के फ़र्श पर दरी और चटाई बिछाने लगी, और कृषक के घर में भी मेज कुर्सी मिलने लगी। ये लोग कांटे छुरी से खाने लगे अमीरों के पास बढ़िया घोड़ा

गाड़ी हो गई और अब वे लोग आराम से यात्रा कर सकते थे। पर सड़कें अब भी ख़राब थीं और डाकुओं का डर था।

हेनरी सप्तम के समय नवीन विद्योन्नति आरम्भ हो गई थी ग्रीक और लैटिन विद्या का प्रचार हुआ था। हेनरी अष्टम के समय में सर टामस मोर ने अपनी प्रख्यात पुस्तक यूटोपिया (Utopia) लैटिन भाषा में लिखी थी, जिसमें समाज संगठन सम्बन्धी उनके नए विचार हैं। अंग्रेज़ी साहित्य में बहुत उन्नति न हुई थी। एलीज़ाबेथ के समय में

साहित्य



शेक्सपियर

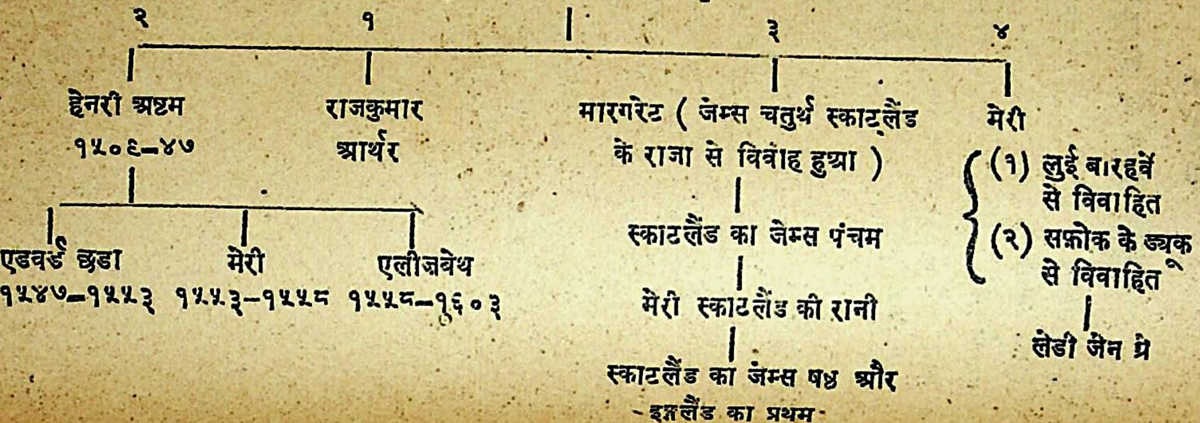
राष्ट्रीय साहित्य का विकास हुआ। शांति तथा जातीय गौरव के साथ मनुष्यों की विचार शक्ति में उन्नति हुई और देश में महान् लेखक और कवि उत्पन्न हुए। एलीज़ाबेथ साहित्यिक पुरुषों का विशेष सम्मान

करती थी और स्वयं भी काव्य से प्रेम रखती थी। स्पेंसर (Edmund Spenser) ने Shephard's Galendar और विख्यात Faerie Queene' लिखकर सर्वश्रेष्ठ कवियों में स्थान पाया। सिडनी (Sir Philip Sidney) और अन्य बहुत से कवि हुए जिन्हों ने देश का गौरव बढ़ाया। इस समय नाटयकला ने भी जोर पकड़ा। शेक्सपियर (William shakespeare) ने अपने नाटक लिखकर अपना नाम सदैव के लिए अमर कर दिया। उसने ३६ नाटक लिखे जो अंग्रेजी साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। शेक्सपियर ने स्फुट कविता भी लिखी थी। गद्य लेखकों में बेकन (Sir Francis Bacon) के लेख विचारपूर्ण और शिक्षाप्रद हैं। हूकर (Bishop Hooker) ने भी गद्य में अपनी पुस्तक Ecclesiastical polity लिखी थी जिसमें एलीज़बेथ के समय की धार्मिक नीति का अच्छा विवेचन है। इन लेखकों और कवियों ने अपनी रचनाओं से देश का मान बढ़ाया और एलीज़बेथ के समय को इंगलैंड के इतिहास में "स्वर्ण युग" बना दिया।

परिशिष्ट

ट्यूडर काल के शासक

हेनरी सप्तम	१४८५—१५०९
हेनरी अष्टम	१५०९—१५४७
एडवर्ड षष्ठ	१५४७—१५५३
मेरी	१५५३—१५५८
एलीज़बेथ	१५५८—१६०३


ट्यूडर वंशावली
हेनरी सप्तम १४८५—१५०६
[एलीज़बेथ से विवाहित]
२
१
३
४
हेनरी अष्टम
१५०६–४७
राजकुमार
आर्थर
मारगरेट (जेम्स चतुर्थ स्काटलैंड
के राजा से विवाह हुआ)
मेरी
(१) लुई बारहवें
से विवाहित
(२) सफ़ोक के ड्यूक
से विवाहित
लेडी जेन ग्रे
एडवर्ड छठा
१५४७–१५५३
मेरी
१५५३–१५५८
एलीज़बेथ
१५५८–१६०३
स्काटलैंड का जेम्स पंचम
मेरी स्काटलैंड की रानी
स्काटलैंड का जेम्स षष्ठ और
इंगलैंड का प्रथम

MODEL QUESTIONS

TUDOR PERIOD

1. What do you think are the Chief characteristics of the modern age ? When do you regard the modern period to commence in England any why ?

2. What were the distinguishing features of the Tudor Period, and how far did the Policy of Henry VII contribute to them ?

Hints:—(अ) (i) फ्युडलिज्म का अन्त (ii) निरंकुश शासन की स्थापना।

(ब) विद्या का पुनरुत्थान।

(स) धर्म--सुधार।

(द) समुद्र--यात्राएं।

(य) राजवंशीय विवाह।

हेनरी सप्तम इन विशेषताओं और राज्य की नवीन आवश्यकताओं को समझता था। उसका मुख्य उद्देश्य देश को शक्तिशाली बनाना था। इसकी पूर्ति के लिए उसने अपने शासन में तीन बातों का ध्यान रखा।

I. अपनी तथा अपने वंश की शक्ति को बढ़ाना।

उसे दो विद्रोहों का सामना करना पड़ा था—

(i) लैम्बर्ट सिमनेल।

(ii) पर्किन बारबेक।

II. बैरनों को शक्तिहीन करके राजा की शक्ति बढ़ाना।

(i) बैरनों के विरुद्ध नियम जारी करना।

(ii) राजा की आर्थिक अवस्था का सुधारना।

(iii) पार्लियामेंट के साथ मेल।

III. हेनरी ने उपरोक्त ढंग से अपनी गृहनीति द्वारा राजा की शक्ति को पूर्णतया दृढ़ कर लिया। देश में शान्ति थी और अब उसने अपनी वाह्यनीति द्वारा इङ्गलैंड का मान यूरोपीय देशों के मुक़ाबले में बढ़ाया।

(i) राजवंशीय विवाह। (ii) समुद्री यात्राएं में जिनका लाभ आगे चलकर हुआ।

IV. सारांश-देश धन-धान्यपूर्ण था, और उसका मान यूरोपीय देशों में बढ़ गया। शिक्षा की वृद्धि। अपने शक्तिशाली शासन द्वारा हेनरी ने इंगलैंड को समृद्धिशाली बनाया। हेनरी ने इस प्रकार इंगलैंड की महत्ता का बीजारोपण किया।

3. Give a brief sketch of the career of Wolsey and his influence on the foreign Policy of Henry VII.

4. "The Reformation mevmentin England was guided by purley personal and political motives of Henry VII." Discuss.

Hints:—हेनरी अष्टम के समय में इङ्गलैंड में धर्म सुधार।

(अ) पोप का पतित जीवन; जर्मनी और यूरोपमें धर्म-सुधार।

(ब) हेनरी पहले तो 'Defender of the faith' किन्तु कैथराइन के त्याग के कारण पोप से अनबन।

(स) प्रधानता का नियम तथा धार्मिक मामलों में पोप को शक्तिहीन करने के लिए अन्य क़ानून।

(द) हेनरी के सुधार केवल चर्च की बुराइयों को मिटाने को थे। वह 'पोप' के विरुद्ध था कैथोलिक चर्च के नहीं।

(य) इंगलैंड में धर्म-सुधार पहले केवल एक वैयक्तिक वस्तु था किन्तु बाद में यह प्रोटेस्टेंट धर्म-सुधार हो गया।

5. Trace the course of the Reformation movement in England during the Tudor Period and its effect on the history of the land.

Hints:—(i) (अ) यूरोप में धर्म-सुधार का संक्षिप्त वर्णन।

(ब) हेनरी अष्टम के समय धर्म-सुधार; यह केवल रोमन चर्च का सुधार था।

(स) एडवर्ड षष्ठ के समय में यह साफ़-साफ़ प्रोटेस्टेंट धर्म हो गया।
(द) मेरी ट्यूडर के शासन-काल यह पुनः कैथोलिक धर्म-सुधार हो गया।
(य) एलीजबेथ के समय में समझौता तथा मध्यम मार्ग का अनुसरण और एंग्लिकन चर्च की स्थापना।
(ii) धर्म सुधार ने राजनीति पर प्रभाव डाला। राजा धार्मिक और राजनैतिक दोनों का प्रधान हो गया धार्मिक आधार पर देश में बहुत-सी पार्टियाँ बन गईं।

6. Estimate the religius policy of Elizabeth showing clearly her treatment of the Roman catholics and puritans,

7. "Elizabeth's reign was one of constant struggle against the forces of Counter-Reformation." Elucidate.

8. Discuss the causes of the war of the Spanish Armada and its effects on the growth of the nation.

9. Briefly narrate the main voyages of discovery during the Tudor period, Illustrate your answer with a map,

10. Why is Elizabeth's reign regarded as the 'Golden Age' in the History of England?

Hints:—(अ) धार्मिक समझौता, यह एक कठिन समस्या थी।
(ब) रानी की शक्ति थी, स्काटलैंड की मेरी की मृत्यु के पश्चात् दृढ़ हो गई।
(स) जब इंगलैंड में आन्तरिक शाँति स्थापित हो गई तब महरानी ने अपनी दूरदर्शी बाह्य नीति द्वारा इंगलैंड का मान तथा गौरव यूरोपीय देशों में बढ़ाया।
(i) यूरोप में, फ्रांस तथा नीदरलैंड्स में प्रोटेस्टेंटों की सहायता।

(ii) स्पेन से व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता (rivalry); आरमाडा की पराजय; इस प्रकार यूरोप के सर्वशक्तिमान राष्ट्र स्पेन पर इंगलैंड की विजय।

(द) अन्य देशों के साथ व्यापार तथा उपनिवेशों की स्थापना।

(य) जनता की आर्थिक तथा सामाजिक दशा, साहित्य की उन्नति—शेक्सपीयर।

सारांश—जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असाधारण उन्नति, अतः उसका शासन काल इंगलैंडके इतिहास में 'स्वर्ण युग'।

11. What are the chief characteristics of Tudor Depotism ? What factors made it possible.

12. Trace the relationship between the porliament and king during Tudor Period stating clearly the power wich the parliament olaimed at the end of Elizabeth's reign.

13. Narrate briefly the chief aims of the foreign policy of Elizabeth, and show her relations with France.

14. Examine criticaly Elizabeth's treatment of Mary Queen of Scots.

15. Trace the growth of commerecial and industrial development during the Tudor Period.

16. Write short notes on:—
(perkin warbeck, Morton's Fork, Luther, John Knox, Puritans, act of 42 Articles, First Common prayer Book pilgrimage of Grace, Thomas Cramwell, Bishop Gardiner, Utopia, Drake, Hawkins, Seadogs, Casket Letters, Poor Law, Monopolies, East India Company, Shakespeare, Act Uniformity, Dissenters, Anna Boleyn, Court of Star Chamber Essex.

स्टुअर्ट-काल

१६०३—१७१५ ई०



१४-जेम्स प्रथम

१६०३—१६२५ ई०

दैवी अधिकार

सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में देश की स्थिति

एलीजबेथ की मृत्यु के समय इंगलैंड को बाहर से कोई भय न था। स्पेन और कैथोलिक मतावलम्बियों के वैर से उसका बाल भी बांका न हुआ था वरन् देश का नाम और गौरव योरोप में बढ़ गया था। प्रत्येक देशवासी के हृदय में जातीय अभिमान का जोश भरा हुआ था। अब धार्मिक कलह का अन्त हो चुका था और देश में आंगल चर्च का आधिपत्य था। वैरनों के विद्रोह की कोई सम्भावना न थी। अमीर लोग राजभक्त हो गये थे और राजा की कृपा पर निर्भर थे। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रजा के पास धन की वृद्धि हुई; व्यापार में उन्नति हुई, और एक नवीन सभ्यता का विकास हुआ। जनता के हृदय में स्वतन्त्रता और स्वराज्य की इच्छा प्रबल हुई, जातीयता और राष्ट्रीयता के भाव उत्पन्न हुए और व्यक्तित्व के भाव में उन्नति हुई। देश में धनवान-विद्वान् और शक्तिमान सौदागरों और जमीदारों का एक नया संघ बन गया जिसको अपने अधिकारों का ज्ञान था और जो आत्माभिमान और जातीयता के विचारों से पूर्ण था। इस प्रकार स्टुअर्ट काल में प्रारंभ में अंग्रेज जाति में इतना परिवर्तन हो गया था कि अब वह ट्यूडरों द्वारा शासित सामाजिक और धार्मिक झगड़ों से घबराई हुई शक्तिहीन जाति से बिल्कुल भिन्न मालूम पड़ती थी।

इसी समय में देश में एक नवीन धार्मिक भाव उत्पन्न हुआ, और प्यूरिटन मत के मानने वालों की संख्या बढ़ी। इसके कई कारण थे।

देश पर प्यूरिटन मत का प्रभाव

विशेषतः एलीजवेथ काल के धार्मिक और राज-नैतिक संघर्ष के कारण इस मत की उन्नति हुई। संसार भर में फैली हुई रोमन कैथोलिक शक्ति से युद्ध करने के लिए प्यूरिटन लोगों को जोश की आवश्यकता थी। वे लोग स्पेन से लड़े, अमेरिकन पर धावा किया और कैथोलिक धर्म को देश में नीचा दिखाया। रानी ने भी अपनी नीति से उनको बहुत कुछ लाभ पहुँचाया। यद्यपि वह स्वयं इस मत से घृणा करती थी; फिर भी उसने यूरोप से भागे हुए काल्विन मतानुयायों को अपनी शरण में रक्खा और कैथोलिकों के षड्यंत्र से बचने के लिए उनको पार्लियामेंट तथा चर्च में भी स्थान दिया था। उसके शासन के अन्तिम दिनों में प्यूरिटन लोगों का जोर कम हो गया था; परन्तु इसका कारण यह था कि वे लोग रानी को वृद्धावस्था में कोई कष्ट न देना चाहते थे। और अपने सुधार-सम्बन्धी विचारों को उसकी मृत्यु तक रोके हुए थे।

प्यूरिटन लोग प्रजातन्त्र के प्रेमी न थे। उनको राजा में उतनी ही श्रद्धा थी जितनी किसी और को, परन्तु वे राजा के निरंकुश शासन को न मानते थे। उसको राजभक्ति में अन्धविश्वास न था। वे देश के नियमों को, पार्लियामेंट की आज्ञाओं को, और प्रजा के स्वत्व को उतना ही पवित्र मानते थे जितना कि राजा को। अतः वे राजा की शक्ति को नैतिक प्रथा (Constitutional tradition) और पार्लियामेंट के सहयोग पर निर्भर मानते थे। पार्लियामेंट से भिन्न राजा का व्यक्तिगत शासन उनको सह्य न था और उनकी समझ में नियम विरुद्ध था। वे सच्चरित्र और कर्त्तव्य-परायण थे, उनको बेकार बैठना पसन्द न था, आमोद-प्रमोद से प्रेम न था और ईश्वर तथा पाप का भय सदैव उनके सामने रहता था। इस समय उनका कट्टरपन भी बढ़ गया था वे लोग कैथोलिक धर्म को समूल नष्ट करना चाहते थे, उनको प्रोटेस्टेंट धर्म से स्वाभाविक प्रेम था, यूरोप के प्रोटेस्टेंट लोगों से सहानुभूति थी। अतः

इसका प्रभाव स्टुअर्ट काल के इतिहास पर बहुत पड़ा वे लोग एलीज-बेथ के धार्मिक सममौते से अप्रसन्न थे और कैथोलिक के विरुद्ध कठिन नियम बनाना चाहते थे। और देश में प्यूरिटन मतानुकूल धार्मिक सुधार चाहते थे। सुधारों की आवश्यकता भी थी, क्योंकि प्रजा मुख्यतया प्रोटेस्टेन्ट धर्म को मानती थी इसलिये अब कैथोलिक रीतियों की कोई आवश्यकता न रह गई थी।

इस समय नये राजवंश के सामने दो विशेष समस्याए' उपस्थित थीं, प्रथम देश में राजनैतिक स्वत्व की इच्छा, और दूसरे धार्मिक सुधार की आवश्यकता उसकी सफलता और विफलता इन्हीं दो प्रश्नों के समुचित उत्तर पर निर्भर थी। परन्तु स्टुअर्ट कुल के राजाओं को जातीय आकांक्षाओं से कोई सहानुभूति न थी, उनकी समझ में अंग्रेजी चरित्र न आता था और वे लोग अपने दैवी अधिकार का पक्ष लिये हुये थे। अतः सममौते की कोई सम्भावना न रही और सत्रहवीं शताब्दी में राजा और प्रजा का संघर्ष जारी रहा, जो उस युग की विशेषता है। इस समय प्रश्न था कि राजा अपने अधिकार से शासन कर सकता है या पार्लियामेंट की इच्छा और सहयोग से। इसी प्रश्न पर इङ्गलंड का पूरा इतिहास बनने को था। प्यूरिटन लोग अपने तथा जाति के अधिकारों के लिये लड़े और अपनी सफलता से सदा के लिये देश में वैध शासन, व्यक्ति की स्वतन्त्रता और पार्लियामेंट का राजा के ऊपर अधिकार स्थित कर दिया।

देश की ऐसी अवस्था में रानी मेरी का पुत्र, स्काटलैंड का राजा जेम्स १६०३ ई० में इङ्गलैंड के सिंहासन पर बैठा। जेम्स के राजा होने से स्काटलैंड, इंगलैंड और आयरलैंड तीनों देशों का एक ही शासक हुआ। जेम्स की इच्छा थी कि स्काटलैंड और इंगलैंड का नैतिक और आर्थिक सम्मिलन हो जाये, परन्तु इसके लिये दोनों देश तैयार न थे। उनको दोनों धार्मिक दल, प्यूरिटन और कैथोलिक चाहते थे, प्रथम क्योंकि उसकी शिक्षा प्रेस्बीटेरियन मत के अनुसार

जेम्स प्रथम का अभिषेक

हुई थी और दूसरे, क्योंकि वह मेरी का पुत्र था। इससे उसके शास
के आरम्भ में सब सुविधाएं थीं। परन्तु जेम्स ने अपनी नीति से ऐ
झगड़ा खड़ा किया कि उसका शासन असफल हुआ और उसके पुत्र
अपने प्राण से हाथ धोना पड़ा। इसके लिये जेम्स का चरित्र औ
उसके विचार उत्तरदायी हैं।



जेम्स प्रथम

जेम्स का चरित्र और राज्य सम्बन्धी विचार

जेम्स को राजा के अधिकारों का बहुत ख्याल था। उसने राजनैतिक विचारों का अच्छा अध्ययन किया था और उन पर मनन किया करता था। वह राजा को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था और उसकी शक्ति पर कोई अंकुश मानने को तैयार न था। वह कभी भी प्रजा को संतुष्ट करने का प्रयत्न न करता था। वह सुस्त और

पेट्ट था, इससे राजा अनुकूल सम्मान पाने योग्य न था। परन्तु जेम्स विद्वान था, उसने धर्मग्रन्थ, इतिहास और कूटनीति का अध्ययन किया वह था अंग्रेज़ी चरित्र कभी न समझ सका और इससे राजा और प्रजा में सहानुभूति न हो सकी। वह पार्लियामेंट को अपने अधीन समझता था परन्तु इसी समय पार्लियामेंट अपने अधिकार बढ़ाना चाहती थी और जेम्स अपने स्वत्वों का एक अंश भी देने को तैयार न था वह हठी और मदान्ध था।

सिंहासन पर आते ही झगड़ा शुरू हो गया। जेम्स समझता था कि वह ईश्वर का प्रतिनिधि है, अतः मनुष्य-कृत पार्लियामेंट के बनाये नियम उस पर लागू नहीं है। इस भावना से उसने नियमों का उल्लंघन किया। पार्लियामेंट की आज्ञा के बिना उसने प्रजा पर कर लगाये और उससे जबरदस्ती धन वसूल किया। उसकी परराष्ट्रनीति भी देश के लिये सन्तोषजनक न थी और जनता की इच्छा के विपरीत थी। इसके अतिरिक्त धार्मिक प्रश्नों पर भी मतभेद था। प्रजा इस समय सुधार चाहती थी परन्तु जेम्स न तो सुधार के ही पक्ष में था न अपने धार्मिक अधिकारों को ही छोड़ना चाहता था। पार्लियामेंट ने प्रजा का पक्ष लिया और अपने तथा प्रजा के अधिकारों की रक्षा का बीड़ा उठाया। इस कारण जेम्स के शासन में राजा और पार्लियामेंट के बीच झगड़ा आरम्भ हुआ।

कष्टों का स्रोत

जेम्स के राजा होने से कैथोलिकों और प्यूरिटन दोनों को आशा थी कि उनके विरुद्ध कठिन नियम हटा दिये जायेंगे। परन्तु जेम्स एलीज़बेथ की नीति से हटना न चाहता था। विशेषतयः वह प्यूरिटन मत से डरता था। क्योंकि स्काटलैंड में वह देख चुका था कि प्रेस्बीटेरियन मत के कारण राजा का कोई अधिकार धर्म शासन पर रह न गया था। इसमें वह इंगलैंड में आंग्ल

धार्मिक झगड़े
(i) जेम्स और प्यूरिटन सम्प्रदाय

चर्च का ही यह समर्थक था। परन्तु प्यूरिटन लोग धर्म सम्बन्धी सुधार चाहते थे और जब जेम्स स्काटलैंड से आ रहा था तब उन्होंने रास्ते में १००० पादरियों के हस्ताक्षर सहित इसी आशय का एक प्रार्थना-पत्र दिया था जो मिलेनरी पेटीशन (Millenary Petition) के नाम से विख्यात है। जेम्स ने १६०४ में अपने विशपों की एक सभा की जो हैंप्टन कोर्ट कानफ्रेंस कहलाती है और उसके सामने प्यूरिटन लोगों के प्रतिनिधियों को बुलाया। परन्तु सुधारों की प्रार्थना न मानी गई और उन लोगों के विरुद्ध नियम और भी कठिन कर दिए गए। बाइबिल का एक नया अनुवाद अवश्य हुआ जो अब तक माना जाता है। इसके बाद अपने शासन के अन्त तक जेम्स प्यूरिटन मत का विरोध ही करता रहा जिससे देश में झगड़ा बढ़ता गया।

धार्मिक झगड़े (ii) जेम्स और कैथोलिक मत

इसके विपरीत जेम्स को प्यूरिटन मत की अपेक्षा कैथोलिक मत से अधिक सहानुभूति थी, वह स्पेन से सन्धि करना चाहता था और कैथोलिक देशों से मित्रता रखकर देश में अवैध शासन करना चाहता था। अतः उसने उनके विरुद्ध जुरमाना (Recusancy Fines) हटा दिया। इससे अधिक वह कुछ न कर सकता था क्योंकि नियमों में परिवर्तन पार्लियामेंट की आज्ञा से ही हो सकता था और पार्लियामेंट में प्यूरिटन लोगों की अधिकता थी। इसका नतीजा यह हुआ कि जेम्स के साथ कैथोलिकों की भी सहानुभूति न रही। रोमन कैथोलिक लोग इसमें असन्तुष्ट हुए और उनके नेता वाट्सन (Watson) ने प्यूरिटन लार्ड ग्रिल्टन के साथ एक षड्यन्त्र रचा। परन्तु भेद खुल जाने से वे पकड़े गए और टावर में बन्द कर दिए गए। इस षड्यन्त्र (Bye Plot) के असफल होने के उपरान्त कैट्स्बी (Catesby) के नेतृत्व में उन्होंने एक बड़ा भयंकर षड्यन्त्र (Gun Powder Plot) रचा। उन लोगों ने प्रयत्न किया कि पार्लियामेंट-घर को बारूद से उड़ा दें जिसमें राजा और सब सदस्य नष्ट

हो जाय। इस विचार से उन्होंने पार्लियामेंट घर के नीचे एक कोठरी किराया पर ली और उसमें बारूद भरकर ५ नवम्बर १६०५ ई० का इन्तिजार करने लगे, क्योंकि उस दिन पार्लियामेंट की बैठक आरम्भ होने वाली थी। साथ ही साथ देश में विद्रोह करने के अभिप्राय से उन्होंने कुछ अमीर लोगों को भी मिलाया ताकि स्पेन से आक्रमण होकर कैथोलिक शासन स्थापित हो जाए। परन्तु एक षड्यंत्री ने भयभीत होकर इसका पता दे दिया और सेसिल ने खोज कराई। गाई फ़ाक्स (Gay Fawkes) बारूद में आग लगाने को तैयार था कि पकड़ा गया अन्य षड्यन्त्री भी पकड़े गये और इस तरह एक भयंकर घटना बच गई। इसके बाद कैथोलिक लोगों के प्रति विरोध और भी बढ़ गया और उनके विरुद्ध नियम और भी कठोर कर दिए गए।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, आरमाडा युद्ध के बाद पार्लियामेंट अपनी शक्ति से अनभिज्ञ न थी और वह अपने स्वत्वों को बढ़ाना चाहती थी। इधर जेम्स दैवी अधिकार के विचारों में मस्त था और समझता था कि राजा की दया से ही पार्लियामेंट काम कर सकती है अन्यथा नहीं इन दोनों विपरीत विचारों के कारण आवश्यक था कि राजा और पार्लियामेंट में लड़ाई होती। जेम्स ने अपने मंत्रियों के कहने से प्रजा से कर लेने के लिये १६०४ में अपनी पहली पार्लियामेंट के चुनाव की आज्ञा दी परन्तु रीति के विरुद्ध उसने यह घोषणा भेजी कि दिवालिए और समाज-बहिष्कृत पुरुष (Outlaws) न चुने जाएं वरन् राजा के ही आदमी पार्लियामेंट में भेजे जाएं। इससे देश में सनसनी फैल गई और बहुत से सदस्य, अपने अधिकारों के लिए लड़ने को तैयार होकर आए। वे लोग बहस की स्वतंत्रता चाहते थे और राजा के अधिकारों को कम करने के पक्ष में थे। पार्लियामेंट की अनुमति के बिना राजा कोई कर न वसूल करे, इस पर वे जिद करते थे। पार्लियामेंट की बैठक होते ही झगड़ा शुरू हो गया। जेम्स चाहता था कि

जेम्स की प्रथम पार्लियामेंट १६०४–१६११ ई०

इङ्गलैंड और स्काटलैंण्ड दोनों मिला दिए जाएं परन्तु पार्लियामेंट के सदस्य स्काट लोगों का असाध्य समझते थे और उनको यह भी डर था कि ऐसा करने से राजा की शक्ति बढ़ जायगी और वह अनियमित शासन करने लगेगा। १६०७ में राजा के अनुरोध करने पर भी कामन्स सभा ने इसका विरोध किया और स्काटलैंड और इंगलैंड सौ वर्ष तक एक न हो सके। इसके बाद दूसरा प्रश्न राज कर का उठा। जेम्स के समय में राजा के विलास-प्रेम के कारण खर्च बहुत बढ़ गया था। हर साल एक लाख पौंड की घटी पड़ती थी। जेम्स ने सोचा कि बिना पार्लियामेंट से पूछे वह बाहर आने जाने वाले माल पर चुंगी लगा कर अपनी आय बढ़ाए। देश का व्यापार बढ़ रहा था अतः इस उपाय से घटी पूरी होने की आशा थी। उसने कुछ वस्तुओं

Impositions "अनुचित राजकर"

पर चुंगी बढ़ा दी। १६०६ में बेट (Bate) नामक एक व्यापारी ने कर देने से इनकार किया, क्योंकि वह कहता था कि यह कर पार्लियामेंट की अनुमति के बिना नियम विरुद्ध है। उसका मुकदमा जजों के पास गया। उन्होंने राजा के दबाव से यह निश्चय किया कि राजा को कर लगाने का अधिकार है। १६१० ई० की बैठक में कामन्स सभा में राजा के इस असंगत कार्य की तीव्र आलोचना हुई। कुछ निश्चय न हुआ और यह प्रश्न भी झगड़े के अन्य प्रश्नों में मिल गया।

सेसिल ने अन्य समझौता करने के विचार से यह प्रस्ताव किया कि राजा २००००० पौंड वार्षिक लेकर बदले में अपने सम्पूर्ण फ्यूडल अधिकार छोड़ दे। इस तरह आय भी उचित हो जायगी और राजा पार्लियामेंट के आज्ञा के बिना कोई कर न लगायगा। दोनों दल इससे सहमत थे, परन्तु उसी समय कामन्स सभा ने धार्मिक प्रश्नों को छेड़ दिया और ३०० प्यूरिटन पादरियों के निकाले जाने के विरुद्ध आवाज उठाई। जेम्स कहता था कि धार्मिक मामले में कामन्स कोई अधिकार नहीं है। पारस्परिक सन्देह फिर पैदा हो गया। और ग्रेट कंट्रैक्ट नामक

समझौता खत्म हो गया। जेम्स ने क्रोध में पार्लियामेंट को बरखास्त (१६११ ई० में) कर दिया। इस प्रकार प्रथम पार्लियामेंट में ही वैमनस्य के बीज बो गये।

इसके बाद दस वर्ष तक जेम्स ने पार्लियामेंट के बिना ही मनमाना शासन किया। उसने प्रजा पर 'अनुचित कर' लगाकर और जबरदस्ती ऋण वसूल करके अपनी आय बढ़ाई। आय बढ़ने के अन्य नए उपाय निकाले गये। व्यापारियों से धन लेकर उनको कुछ पदार्थों के बेचने और बनाने का एकाधिकार (Monopoly) दिया गया, और धनवानों को रुपये के बदले में उपाधियाँ दी गई। बैरन की नई उपाधि भी इसी समय चलाई गई थी। इन सब अनुचित कार्यों से उसके मुख्य सलाहकार, उसके चापलूस मित्र और दरबारी थे। जिनमें दो विशेष उल्लेखनीय हैं, प्रथम सोमरसेट (Robert Carr, Earl of Somerset) जिसको उसकी सुन्दरता के कारण राजा ने उच्चपद और सम्मान दिया और शासन का कुल भार सौंप दिया था। दुराचार के कारण १६१५ इ० में उसका पतन हुआ। द्वितीय, विलियर्स (George Villiers) जो उसके स्थान पर नियुक्त हुआ, इसको ड्यूक आफ बकिंघम (Duke of Buokingham) का पद मिला। अपनी मृत्यु पर्यन्त वह प्रधान मंत्री रहा और स्पेन से मित्रता का पक्षपाती था। इन चापलूस मन्त्रियों से प्रजा बहुत अप्रसन्न थी और इसके कारण जेम्स बहुत बदनाम हो गया।

जेम्स का निरंकुश शासन

अनुचित उपायों द्वारा भी धन का ठीक प्रबन्ध न हो सका, क्योंकि खर्च में कमी न हुई थी। राजा को विवश होकर १६१४ में दूसरी पार्लियामेंट बुलानी पड़ी जिसके चुनाव में राज मन्त्रियों ने हस्तक्षेप किया था। परन्तु यह पार्लियामेंट भी अधिकारों की रक्षा करने पर दृढ़ थी, अतः जब जेम्स ने धन माँगा तो उसने राजा के अनुचित कार्यों की समालोचन

अन्य पार्लियामेंट

की। इस पर जेम्स ने अप्रसन्न होकर पार्लियामेंट भंग कर दी। इसका नाम इतिहास में एडल्ड पार्लियामेंट पड़ा फिर सात वर्ष तक पार्लियामेंट न बुलाई गई, परन्तु १६२१ ई० में यूरोप में होने वाले तीस वर्षीय युद्ध के कारण धन की आवश्यकता पड़ने पर बकिंघम ने पार्लियामेंट बुलाने की सलाह दी। यह पार्लियामेंट भी अपने अधिकारों की पूर्णतया रक्षा करना चाहती थी और राजमंत्रियों पर भी अपना दबाव रखना चाहती थी, बैठक होते ही उसने क्रय-विक्रय के एकाधिकार का विरोध किया। बहुत से व्यापारियों को कारागार भेज दिया गया, कुछ देश छोड़ कर भाग गए। इसके पश्चात् बैकन (Sir Roger Bacon) पर रिश्वत के अपराध में अभियोग चलाया गया। बैकन प्रधान न्यायाधीश था और उसने यह निर्णय किया था कि जेम्स का अपने मित्रों को व्यापार का एकाधिकार देना न्यायानुकूल है। इससे कामन्स सभा अप्रसन्नता थी। दूसरे वह राज कर्मचारियों पर अपना अधिकार जमाना चाहती थी और जेम्स को यह बतलाना चाहती थी कि पार्लियामेंट का अधिकार शासन के प्रत्येक अंग पर है। अतः लार्ड्स के सामने कामन्स द्वारा अभियोग चलाने की पुरानी प्रथा फिर काम में लाई गई। बैकन पर लार्ड सभा में अभियोग चला। उसने अपना अपराध स्वीकार किया। वह अपने पद से हटा दिया गया और उस पर चार हजार पौंड जुरमाना हुआ। बैकन का अपराध प्रचलित प्रथा के अनुसार क्षम्य था। परन्तु फिर भी पार्लियामेंट ने दृष्टान्त-स्वरूप उसको दण्ड देकर यह लिख दिया कि राजकर्मचारी उसके अधिकार से बाहर नहीं हैं, वरन् वे प्रजा के प्रतिनिधियों के सामने अपने कार्य के लिए उत्तरदायी हैं।

यहाँ तक तो जेम्स कुछ न बोला। परन्तु जब कामन्स सभा ने पर-राष्ट्रीनीति में हस्तक्षेप किया तो उसके क्रोध की सीमा न रही। कामन्स में राजा की स्पेन से मित्रता की नीति का विरोध हुआ। पार्लियामेंट ने स्पष्टरूप से स्पेन की कुमारी से चार्ल्स के विवाह का विरोध किया गया

जेम्स ने कामन्स को राजकुमार के विवाह प्रश्न पर वादविवाद करने से मना किया इस पर कामन्स सभा ने दृढ़तापूर्वक यह प्रस्ताव किया कि पार्लियामेंट को समस्त राज्य सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने की स्वतंत्रता है और पार्लियामेंट की स्वतंत्रता और उसके अधिकार प्रत्येक अंग्रेज की पैतृक सम्पत्ति हैं। जेम्स वहुत विगड़ा और उसने कामन्स की कार्यवाही के वे पृष्ठ जिनमें यह लिखा था फाड़कर फेंक दिए। दूसरे दिन पार्लियामेंट बरखास्त कर दी गई। इस प्रकार धार्मिक भेद; अनुचित करो तथा दैवी अधिकार के कारण जेम्स का तीनों पार्लियामेंट से झगड़ा रहा।

जेम्स की परराष्ट्र नीति

जिस प्रकार जेम्स अपनी घरेलू नीति में असफल रहा वैसे ही उसकी परराष्ट्रनीति भी असफल हुई। वह स्पेन से वहुत डरता था और आरम्भ से ही स्पेन से मित्रता करने के पक्ष में था। इस जानती थी कि स्पेन से विरोध करने में ही लाभ है, अतः वह स्पेन से युद्ध करने के पक्ष में था। प्रजा प्रकार दोनों में विरोध के कारण उपस्थित हुए। कुछ वर्ष तक एलीजबेथ की नीति का पालन हुआ और जेम्स अपनी इच्छा पूरी न कर सका। परन्तु सेसिल की मृत्यु के बाद जेम्स को अवसर मिला कि अपनी नीति को काम में लाए। वह चाहता था कि वह कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों धर्मों के साथ तटस्थ (Neutral) रहे इस प्रकार वह दोनों प्रकार के राष्ट्रों के बीच रह कर पंच बनना चाहता था। इसलिए उसने अपनी पुत्री एलीजबेथ का विवाह जर्मनी में पैलेटिनेट (Palati; nate) के शासक फ्रेडरिक (Frederick) के साथ किया। वह काल्विन सम्प्रदाय का नेता था। पुनः वह अपने पुत्र का विवाह स्पेन की राजकुमारी से करना चाहता था, ताकि प्रोटेस्टेंट तथा कैथोलिक दोनों दलों से उसका सम्बन्ध रहे, और स्वयं बिना युद्ध किये हुए यूरोप का पंच बन जाए। परन्तु जेम्स का यह विचार असंगत था, क्योंकि समुचित शक्ति के बिना पञ्च कार्य करना कठिन था और ऐसा करने से जेम्स केवल स्पेन के राजा का अनुगत बना रहता। स्पेन में इस सम्बन्ध के लिए कोई

उत्साह न था। केवल कैथोलिक लोगों को इंगलैंड में स्वतंत्रता दिलाना चाहते थे और जब इसमें सफल न हुए तो टालमटोल करने लगे। जेम्स यह कुछ न समझ सका और अपनी प्रजा की इच्छा के विरुद्ध स्पेन से मित्रता करने पर आरूढ़ रहा।

इसी समय जर्मनी में प्रोटेस्टेंट तथा कैथोलिक मतों में एक महायुद्ध छिड़ गया। जिसका कारण यह था कि जेम्स के दामाद फ्रेडरिक ने जर्मन सम्राट के आधीन देश बोहेमिया पर शासन करना चाहा। वह हरा दिया गया और कैथोलिक सेना ने उसके राज्य पैलेटिनेट पर कब्ज़ा कर लिया।

तीस वर्षीय युद्ध

जब यह समाचार इङ्गलैंड पहुंचा तो कामन्स सभा ने युद्ध के लिये अपनी सम्पत्ति प्रकट की प्रजा में उत्साह था क्योंकि वह युद्ध द्वारा यूरोप में प्रोटेस्टेंट मत का आधिपत्य क़ायम करना चाहती थी और अपने वैरी स्पेन की शक्ति को नष्ट करना चाहती थी। परन्तु जेम्स युद्ध न चाहता था। उसका विचार था कि स्पेन के राजवंश से विवाह सम्बन्ध हो जाने से फ़िलिप उसके दामाद के लिए प्रयत्न करके पैलेटिनेट वापस दिलवा देगा और इस तरह से स्पेन तथा इङ्गलैंड के सहयोग से जर्मन में शांति हो जायगी। अतः उसने स्पेन से मित्रता रखना उचित समझा और अपनी पार्लियामेंट का विरोध किया। इस कार्य के लिए उसने अपने पुत्र चार्ल्स और बकिंघम को वेष बदल कर स्पेन भेजा। परन्तु उन लोगों को कोई सफलता न हुई। स्पेन की राजकुमारी कभी भी प्रोटेस्टेंट के साथ विवाह करने को राजी न हुई और यद्यपि फ़िलिप के कहने से चार्ल्स ने अपने देश में कैथोलिकों को बहुत से अधिकार देना स्वीकार कर लिया, फिर भी फ़िलिप इस पर सहमत न हुआ कि पैलेटिनेट फ्रेडरिक को लौटा दिया जाए। चार्ल्स वापस आया और देश में स्पेन से युद्ध करने की आग भड़क उठी। बकिंघम से सब अप्रसन्न हो गए। युद्ध के लिये एक सेना यूरोप भेजी गई, परन्तु पार्लियामेंट के

चार्ल्स का विवाह

उचित धन न देने से वह कुछ कार्य न कर सकी। हालैंड में वह भूख और सर्दी से नष्ट हो गई। इसी समय चार्ल्स का विवाह फ्रांस के राजा की बहन हेनरीटा मैरिया (Henrietta Maria) से हुआ परन्तु प्रजा प्रसन्न न हुई, क्योंकि इससे रोमन कैथोलिकों को कुछ स्वतंत्रता मिल गई थी। इसके पूर्व ही जेम्स १६२५ ई० में मर गया।

जब चार्ल्स राजा हुआ तो पैलेटिनेट को बचाने के लिए वह प्रोटेस्टेंट दल की ओर सम्मिलित हुआ और उसने स्पेन से भी युद्ध छेड़ दिया। कैडिज के बन्दरगाह पर आक्रमण करने के लिए बकिंघम भेजा गया, परन्तु आक्रमण निष्फल हुआ और धन तथा उत्साह न होने के कारण चार्ल्स ने युद्ध से हाथ खींच लिया। युद्ध १६४८ तक चलता रहा परन्तु इङ्गलैंड इसमें भाग न ले सका और अपना सम्मान खो बैठा। जेम्स तथा चार्ल्स दोनों ही विफल हुए। इसका कारण यह था कि वे दोनों अपना उद्देश्य न समझते थे और जेम्स ने स्पेन की मित्रता के लिए बहुत अमूल्य समय खो दिया। युद्ध के बिना फ्रेडरिक का भला करना असम्भव था। युद्ध के लिए प्रजा को साथ लेना आवश्यक था और निरंकुश राज्य को छोड़ना पड़ता। जेम्स और चार्ल्स दोनों इसके लिए तैयार न थे। पार्लियामेंट तथा राजा के बीच में पारस्परिक संदेह था। इससे धन की कमी थी और इन्हीं कारणों से इङ्गलैंड को इस युद्ध में सफलता न मिली वरन् उसका मान कम कर दिया।

तीस वर्षीय युद्ध और इंगलैंड की विफलता

जेम्स की परराष्ट्रनीति से भी प्रजा असन्तुष्ट थी अतः राजा और पार्लियामेंट का वैमनस्य बढ़ता गया और अगले शासन में उसका भयंकर परिणाम हुआ।

यद्यपि राजनैतिक दृष्टि से जेम्स का शासन-काल असफल रहा और पार्लियामेंट तथा राजा में विरोध बढ़ता ही गया, तथापि व्यापारिक दृष्टि से इस काल में बहुत उन्नति हुई। इङ्गलैंड के समुद्र

उपनिवेश स्थापना तथा व्यापार वृद्धि पार उपनिवेशों तथा व्यापार की नींव इस शासन काल में पड़ी। एलीजवेथ के समय में समुद्री खोज हो रही थी और वर्जीनिया (Virginia) में उपनिवेश स्थापित करने का निष्फल प्रयत्न हुआ था। परन्तु अब १६०६ ई॰ में सोने के लालच से वर्जीनिया में अंग्रेज लोग बसे और यद्यपि सोना न मिला, फिर भी उन्होंने खेती करके वहाँ पर अपना एक उपनिवेश स्थापित किया इसके अतिरिक्त एक नया कारण उपस्थित हुआ जिससे अमेरिका में अंग्रेजों की बस्तियां फैल गईं। १६२० ई॰ में प्यूरिटन लोग राजधर्म की कठोरता से पीड़ित होकर मेफ्लावर नामी जहाज पर अमेरिका भाग गए और वहाँ अपना उपनिवेश कायम किया। ये लोग पिलग्रिम फ़ादर्स नाम से विख्यात हैं। कैथोलिक लोग भी प्यूरिटन लोगों के अत्याचार से पीड़ित होकर वहाँ गए और मेरीलैंड (Maryland) में जाकर बसे। इस प्रकार जेम्स तथा चार्ल्स के राज्य-काल में अमेरिका के पूर्वी तट पर अंग्रेज़ों की बहुत सी बस्तियां बन गईं।

इस काल में व्यापार में भी उन्नति हुई। एलीज़वेथ ने १६२० में चार्टर द्वारा ईस्ट इंडिया कम्पनी स्थापित करके उसको भारतवर्ष तथा अन्य पूर्वी देशों से व्यापार करने का एकाधिकार दिया था। जेम्स ने जहाँगीर के दरबार में दो दूतों को भेज कर इस कम्पनी के लिए कुछ अधिकार माँगे। पहला हाकिंस १६१० में आया था और उसने व्यापार की आज्ञा प्राप्त की। १६१४ में सर टामस रो (Sir Thomas Roe) ने सूरत में कोठी बनाने की आज्ञा पाई और व्यापार करने का अधिकार दृढ़ कर लिया इसी समय इन लोगों ने अपनी कोठियाँ जावा आदि में भी बनाई, परन्तु डच लोगों के विरोध से वे वहाँ ठहर न सके। यूरोप के देशों से भी व्यापार में उन्नति हुई।

जेम्स १६२५ ई॰ के मार्च मास में इस संसार से अपनी असफलता का टीका लगाए हुए सदा के लिए विदा हो गया। उसको अपनी विफलता का पूर्ण ज्ञान था। उसने पार्लियामेंट से

जेम्स की मृत्यु

झगड़ा किया पर पार्लियामेंट पहले से अधिक हो गई। उसने राजा के अधिकारों को बढ़ाना चाहा परन्तु राजा के अधिकार पहले से अधिक दब गये थे। वह प्यूरिटन दल को नष्ट करना चाहता था; परन्तु उसकी मृत्यु पर्यन्त सारा देश उसी मत की तरफ़ जा रहा था। उसने अपनी नीति से राजभक्ति को भारी धक्का पहुँचाया और राजा की शक्ति को सदा के लिए कम कर दिया। यह सब इस कारण हुआ कि उसकी नीति प्रजा की इच्छा के विरुद्ध थी और इसी कारण वह असफल हुआ। परन्तु अपने हठ से उसने देश में स्वतन्त्रता और वैध शासन के विचार उत्पन्न करा दिये जिससे इंगलैंड संसार में श्रेष्ठ और महा स्वतन्त्र देश हो गया।

१५—चार्ल्स प्रथम

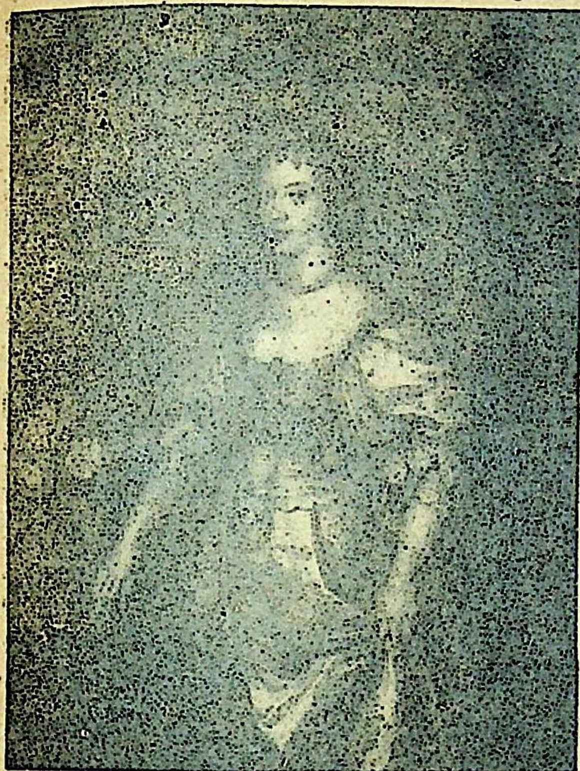
१६२५—१६४६ ई०

पार्लियामेण्ट और राजा का झगड़ा

जिस समय चार्ल्स स्पेन से लौटा था प्रजा उससे बहुत प्रसन्न थी, परन्तु थोड़े दिनों में सब भेद खुल गया और उसके राज्याभिषेक के समय तक जनता की प्रसन्नता नैराश्य में बदल गयी थी,

चार्ल्स का चरित्र क्योंकि उसको मालूम हो गया था कि चार्ल्स ने अपने स्वार्थ के लिए धर्म तथा देश के हानि लाभ .. कुछ भी विचार नहीं किया था। प्रजा को यह दृढ़ विश्वास था कि चार्ल्स की बात का भरोसा नहीं है; वह प्रण तो कर लेता था पर निबाहना उसके लिए असम्भव था। वह तड़क-भड़क पसन्द करता था, राजोचित शान से रहता था, परन्तु उसका ज्ञान संकुचित था और वह बहुत बुद्धिमान न था। उसको राजा के स्वत्वों का ख्याल था और युद्ध के बिना उसको छोड़ने को तैयार न था। वह अवैध शासन का मानने वाला था इसलिए पार्लियामेंट से झगड़ा होना आवश्यक था। अपने धार्मिक विचारों में वह आंग्ल चर्च को मानता था और प्यूरिटन मत से कोई सहानुभूति न रखता था। उसके मित्र और सलाहकार भी अच्छे न मिले। लार्ड, बकिंघम और रानी हेनरीटा मैरिया की सलाह के अनुसार चलने के कारण प्रजा से उसकी अनबन रही। अपने विवाह के कारण भी वह अप्रिय था। फ्रांस की राजपुत्री से विवाह करने से उसको ैथोलिक लोगों को कुछ स्वतन्त्रता देनी पड़ी, जो प्यूरिटन प्रजा को सह्य न था।

जब चार्ल्स सिंहासन पर बैठा तो जर्मनी में तीस वर्षीय युद्ध हो रहा



रानी हेनरीटा मेरिया

था। इस समय डेनमार्क के राजा ने प्रोटेस्टेन्ट दल की सहायता का भार लिया था। चार्ल्स ने भी उसके साथ सन्धि करके उसको युद्ध के लिए ३६०००० पौंड वार्षिक देने का वचन दिया था और ४६००० पौंड दे भी दिए थे। यह उपाय ठीक था, परन्तु चार्ल्स के पास धन था और पार्लियामेंट को वह अपनी नीति से अनभिज्ञ रखता था अतः वह अपना वचन पूर्ण न कर सका पैले-

परराष्ट्रनीति (स्पेन से युद्ध) १६२५—२६

टिनेट की रक्षा न हो सकी। इधर प्रजा भी जर्मनी में युद्ध से असन्तुष्ट थी। उसका विचार था कि स्पेन से युद्ध करने ही से फ्रेडरिक का लाभ हो सकता है। स्पेन इंगलैंड का विशेष बैरी माना जाता था और उससे युद्ध करने में व्यापारिक लाभ की आशा थी। अतः चार्ल्स ने बकिंघम की सलाह से और प्रजा को सन्तुष्ट करने के लिए स्पेन के विरुद्ध एक जल-सेना कैडिज पर आक्रमण करने के लिए भेजी। बकिंघम इसका नेता था। वे लोग अमेरिका से आते हुए सोने से लदे हुए जहाजों को लूटने की फ़िक्र में थे। परन्तु सेना अयोग्य थी, आक्रमण निष्फल हुआ और पराजित होकर वे लौट आये। इस प्रकार चार्ल्स की नीति असफल हुई और वह तीस वर्षीय युद्ध में कोई समुचित भाग न ले सका। देश में भी कैडिज के आक्रमण की असफलता से असन्तोष फैला।

फ्रांस से युद्ध १६२५–२७ ई०

इसी समय बकिंघम ने फ्रांस से भी झगड़ा पैदा किया। इसमें सरासर उसकी भूल थी। पैलेटिनेट की रक्षा के लिए आवश्यक था कि इङ्गलैंड और फ्रांस मिल कर स्पेन तथा आस्ट्रिया से युद्ध करते; परन्तु बकिंघम ने इसका विचार न करके १६२७ ई० में फ्रांस से भी युद्ध छेड़ दिया। इसके कई कारण थे। बकिंघम का लुई तेरहवें से निजी झगड़ा हो गया था और इधर इंगलैंड में विवाह की शर्तों के विरुद्ध कैथोलिक लोगों को स्वतन्त्रता न मिली थी। दूसरे चार्ल्स फ्रांस के विद्रोही ह्यूजनाट प्रोटेस्टेन्ट का रक्षक बनना चाहता था। जब दोनों देशों ने एक दूसरे के जहाजों को पकड़ना शुरू किया तो युद्ध छिड़ गया। लारोशेल में ह्यूजनाटों को सहायता देने के लिए बकिंघम ने जल-सेना लेकर रही (Rhe) द्वीप पर आक्रमण किया (१६२७)। परन्तु पराजित होकर लौट आया। देश में उसका सब मान जाता रहा और विरोध की आग भड़क उठी। उसने फिर एक सेना तैयार की परन्तु इसके पूर्व कि वह जा सके फेल्टन (Felton) नामी एक व्यवसाय-हीन सैनिक ने १६२८ ई० में उसको पोर्टस्मथ में मार डाला।

इसके बाद चार्ल्स ने स्पेन तथा फ्रांस दोनों से सन्धि कर ली और फिर कभी भी यूरोप के मामलों में कोई भाग न लिया। यहीं पर उसकी परराष्ट्रनीति का अन्त है। धन का अभाव और सेना की अयोग्यता उसकी विफलता के कारण हैं। पार्लियामेंट से उससे झगड़ा था, पार्लियामेंट राजा की नीति न समझती थी और सदा ही राजा पर सन्देह करती थी इसलिए पर्याप्त धन न मिलता था, और धन के अभाव से सेना की कमी थी। इसी कारण चार्ल्स फिर तीस वर्षीय युद्ध में कोई भाग न ले सका और इङ्गलंड का मान यूरोप के अन्य देशों में कम हो गया। इधर देश में राजनैतिक अधिकारों के लिये प्रजा के प्रतिनिधियों और प्रजा में झगड़ा शुरू हुआ जिसमें सम्पूर्ण शक्ति लग गई और फिर परराष्ट्रनीति में किसी की भी रुचि न रही।

जेम्स के समय में ही पार्लियामेंट अपने अधिकारों के लिये लड़ी थी और राजा के दैवी अधिकार का विरोध किया था। परन्तु चार्ल्स के समय में यह झगड़ा बहुत ही बढ़ गया। इसके बहुत कारण थे। प्रथम तो धार्मिक प्रश्न था, जो जेम्स के समय में ही एक मुख्य प्रश्न हो गया था। चार्ल्स आंग्ल चर्च (High Church Party) से सहानुभूति रखता था और प्यूरिटन दल से अप्रसन्न था। पर जेम्स प्रथम के ही समय से इङ्गलैंड में एक ऐसे राजा की आवश्यकता थी जो भिन्न धार्मिक दलों—कैथोलिक तथा प्यूरिटन—के साथ समानता का व्यवहार रखता। दूसरे पार्लियामेंट राजा की परराष्ट्रनीति से असन्तुष्ट थी, उसको राजमन्त्रियों में विश्वास न था और वह चाहती थी कि शासन उसकी इच्छानुसार हो। तीसरे पार्लियामेंट चार्ल्स के अनुचित कर लगाने तथा मनुष्यों को बिना मुक़-दमा किये ही जेल में भेजने से क्रुद्ध थी। पार्लियामेंट अब सदा के लिये इस प्रश्न का निपटारा करना चाहती थी कि प्रभुता का निवास राजा में है या राजा और पार्लियामेंट दोनों में। १६२५ से लेकर १६४० तक

पार्लियामेंट से झगड़ा १६२५–१६२९

मुख्यतया इसी प्रश्न पर झगड़ा होता रहा और अन्त में यह तै हो गया कि राजा पार्लियामेंट की अनुमति के बिना न कोई कर लगा सकता है और न प्रजा के जन्म-अधिकारों में दखल दे सकता है।

प्रथम व द्वितीय पार्लियामेण्ट १६२५-१६२६

१६२५ ई० में पहली पार्लियामेंट की बैठक हुई जिसमें जेम्स के समय के बहुत से नेता मौजूद थे। चार्ल्स ने लड़ाई के लिये धन माँगा, परन्तु यह न बताया कि किससे लड़ना है और कितना धन आवश्यक है। कामन्स सभा ने पर्याप्त धन देने से इनकार किया। साथ ही साथ टनेज और पौंडेज कर जो अब तक प्रत्येक सम्राट को जीवन भर के लिए दिया जाता था चार्ल्स को केवल एक ही वर्ष के लिए दिया गया। राजा बहुत बिगड़ा और जब कामन्स ने बकिंग्रम के विरुद्ध आलोचना शुरू की तो उसने पार्लियामेंट को भंग कर दिया, क्योंकि वह पार्लियामेंट को मन्त्रियों के काम में हस्त-क्षेप न करने देना चाहता था। इसके बाद कैडिज पर असफल आक्रमण हुआ और फ्रांस से भी अनबन हो गई। चार्ल्स ने टनेज और पौंडेज यथापूर्व वसूल तो किया, परन्तु धन की कमी रही और उनको १६२६ में दूसरी पार्लियामेंट बुलानी पड़ी। इस सभा में अनेक नये योग्य सदस्य चुने गये थे जिसमें मुख्य इंगलैंड (Sir John Eliot) था जिसकी वक्तृता इतनी ओजस्विनी और जोरदार थी कि वह शीघ्र ही नेता हो गया। इन लोगों ने बैठक होते ही इस बात पर जिद की कि धन देने के पूर्व कैडिज-आक्रमण की असफलता की जाँच होनी चाहिए। ईलियट ने अपनी आँखों से सेना की दुर्दशा देखी थी और जानता था कि बकिंघम की अयोग्यता के कारण ही हार हुई है, अतः उसने इस बात पर जोर दिया। चार्ल्स को यह मंजूर न था कि पार्लियामेंट मन्त्रियों के काम की जाँच करे इसलिये वह इस प्रस्ताव से बहुत बिगड़ा। अतः उसने यह पार्लियामेंट भी भंग कर दी।

युद्ध तो जारी था परन्तु कोष में धन न रह गया था। इधर फ्रांस

बलात ऋण
Forced Loan's

से भी लड़ाई छिड़ गई थी। अतः चार्ल्स को अधिक धन की आवश्यकता हुई। पार्लियामेंट की स्वीकृति के विना ही वह टनेज और पाउन्डेज वसूल कर रहा था। अब उसने प्रजा से ऋण माँगा। जनता को राजा में विश्वास न था, इसलिए कोई सफलता न मिली। तब उसने 'बलात-ऋण' लेना शुरू किया। राजकर्मचारियों को आज्ञा थी कि वे प्रत्येक मनुष्य को आर्थिक स्थिति के हिसाब से उसके ऊपर ऋण निश्चित करें, और न देने पर उसको कारागार में डाल दें। बहुतों ने तो दिया परन्तु लगभग ८० मनुष्यों ने इनकार किया। वे विना अभियोग चलाएं ही बन्दीगृह में डाले गए, क्योंकि न्यायाधीशों ने कहा कि राजा को अधिकार है कि जिसे चाहे कैद करे। इसके विरुद्ध बहुत आन्दोलन हुआ। लोगों को इसी समय जबरदस्ती सेना में भरती किया जाता था और उनको गृहस्थों के यहाँ ठहरा दिया जाता था, जिससे प्रजा पर बहुत अत्याचार होते थे। इनके शासन के लिए सैनिक न्यायालय (Court Martial) बुलाए गए थे। भय था कि प्रजा की स्वतन्त्रता पर भी कुठाराघात होने लगेगा। प्रजा को तो इतना कष्ट सहना पड़ा परन्तु चार्ल्स को काफ़ी धन न मिला। इस समय उसके लिए दो उपाय थे कि युद्ध जारी रक्खे और पार्लियामेंट को बुलाकर धन माँगे और अपने अवैध शासन का अन्त करे या युद्ध को बन्द करके मनमाना राज्य करे। चार्ल्स ने इस समय प्रथम उपाय का प्रयोग किया और १६२८ में अपनी तीसरी पार्लियामेंट को बुलाया।

'अधिकार याचना'
१६२८ ई०

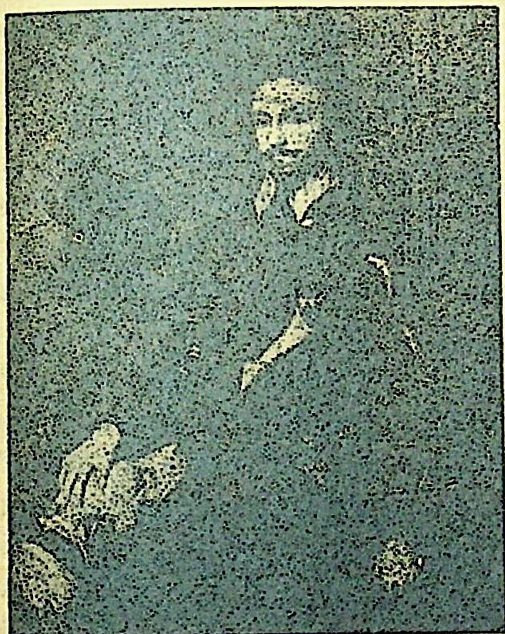
इस सभा के सदस्य स्वतन्त्रा के जोश में भरे हुए थे। उन्होंने आते ही वेंटवर्थ (Sir Thomas Wentworth) तथा पिम (Pym) के नेतृत्व में एक 'अधिकारों' का आवेदन पत्र (Petition of Rights) उपस्थित किया जिसमें चार बातों पर जोर दिया गया। (१) जब तक पार्लियामेंट की स्वीकृत न मिले, राजा किसी स्वतन्त्र व्यक्ति

को कर या ऋण देने के लिए बाध्य नहीं कर सकता है। (२) बिना न्यायानुकूल उचित अभियोग चलाए राजा किसी आदमी को कैद नहीं कर सकता है। (३) सैनिक लोग साधारण गृहस्थों के घर में न रखे जाएं और (४) शान्ति के समय में किसी व्यक्ति पर सैनिक न्यायालय में अभियोग न चलाया जाय। चार्ल्स ने मजबूर होकर इच्छा विरुद्ध स्वीकृति दी, क्योंकि उसको धन की आवश्यकता थी और इस प्रस्ताव के स्वीकार हुए बिना कामन्स सभा धन न देती। परन्तु चार्ल्स इसके अनुसार चलने को राजी न था। जब स्वीकृति मिली प्रजा ने आनन्द मनाया और कामन्स ने चार्ल्स को धन देना मंजूर किया। परन्तु बकिंघम का फिर विरोध किया गया और पार्लियामेंट का अधिवेशन स्थगित हो गया। इस अन्तर में युद्ध में हार हुई और चार्ल्स ने भी न्याय विरुद्ध कार्यवाही बन्द न की। धार्मिक प्रश्न भी झगड़े का कारण हुआ। इससे जब १६२९ में पुनः बैठक हुई तो कामन्स सभा ने राजा पर अधिकारों के आवेदनपत्र की शर्तों को उल्लंघन करने को दोष लगाया। उसने धार्मिक बातों में भी अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। चार्ल्स ने सभा भंग कर दी परन्तु उसके पूर्व ही कामन्स सभा ने ईलियट के नेतृत्व में तीन क्रान्तिकारी प्रस्ताव पास किए थे, जिनमें चार्ल्स तथा उसके साथियों के विरुद्ध ये नियम बने कि धर्म में परिवर्तन करने वाले बिना पार्लियामेंट के कर लगाने वाले तथा कर देने वाले, सब देश के शत्रु हैं। इस बात से राजा और प्रतिनिधि सभा में पूर्ण वैमनस्थ हो गया और चार्ल्स ने अवैध शासन करने का निश्चय कर लिया। उसने ईलियट[1] को कैद कर दिया जहाँ वह १६६२ ई० में क्षयी रोग में मर गया। यह स्वतन्त्रता युद्ध का प्रथम बलिदान है।

ग्यारह वर्षों का अनियन्त्रित शासन : १६२९-१६४० ई०

इसके बाद ग्यारह वर्षों तक चार्ल्स ने पार्लियामेंट का कोई अधिवेशन न किया, परन्तु तब भी वह पार्लियामेंट की संस्था को बिलकुल तोड़ना न चाहता था। प्रतिनिधि सभा अप्रिय राजमन्त्रियों को पदच्युत करने का अधिकार प्राप्त करके शासन पर अपना प्रभाव डालना चाहती

थी। परन्तु वह पार्लियामेंट की अधीनता सहन न कर सकता था। वह पार्लियामेंट की सलाह चाहता था न कि उसकी आज्ञा; और पार्लियामेंट अब ऐसी सलाह न देना चाहती थी जिस पर कार्य न किया जाए। अतः जब तक दोनों के विचारों में परिवर्तन हो जाए, चार्ल्स ने पार्लियामेंट के बिना ही निरंकुश शासन करने की ठानी।



वेंटवर्थ

इस समय उसके मुख्य सलाहकार (Thomas Wentworth, Earl of Strafford) तथा लार्ड (Laud, Archbishop of Canterbury) थे। वेंटवर्थ ने प्रतिनिधि सभा में रहकर अधिकारों के आवेदनपत्र को पास कराया था और बकिंघम के शासन की तीव्र आलोचना की थी। परन्तु जब १६२९ में प्रतिनिधि सभा ने राजा

वेंटवर्थ

की शक्ति को कम करना चाहा तो वह चार्ल्स का मित्र बन गया और उसका मुख्य सलाहकार हो गया। चार्ल्स ने उसको बैरन वेंठवर्थ तथा पुनः स्ट्रैफोर्ड के अर्ल की पदवी दी और उसको आयरलैंड का शासन बनाकर भेजा। स्ट्रैफ़ोर्ड के ऊपर इतिहासकारों ने धोखाबाजी का दोष लगाया है कि उसने पार्लियामेंट का पक्ष छोड़कर राजा को निरंकुश शासन करने में सहायता दी सत्य तो यह है कि वह कभी भी प्रजातन्त्र का प्रेमी न था। वह बकिंघम से जलता था अतः उसने शासन का विरोध किया था, जब बकिंघम मारा गया और पार्लियामेंट ने राजा के अधिकारों को दबाकर स्वयं शासन करने की इच्छा की, तो वह राजा के पक्ष में हो गया। इसको पार्लियामेंट की उपयोगिता में श्रद्धा न थी। शासन की बुराइयों की आलोचना करना वह इसका मुख्य कर्तव्य समझता था। उसे जनता की राजनैतिक बुद्धि में तनिक भी विश्वास न था। वह पक्का शासन था और आरम्भ से ही इसके लिए अवसर की खोज में था। पार्लियामेंट में रहते हुए भी वह इसी फ़िक्र में था। उसे बकिंघम के शासन से घृणा थी और उससे वैमनस्य भी। इसीलिए वह चाहता था कि शासन में सुधार हो, परन्तु उसका ईलियट के समान यह उद्देश्य न था कि पार्लियामेंट शासन पर अधिकार कर ले। वह केवल ट्यूडर प्रजा को फिर से चलाना चाहता था जिसमें राजा पार्लियामेंट की सहायता से ही शासन करता था।

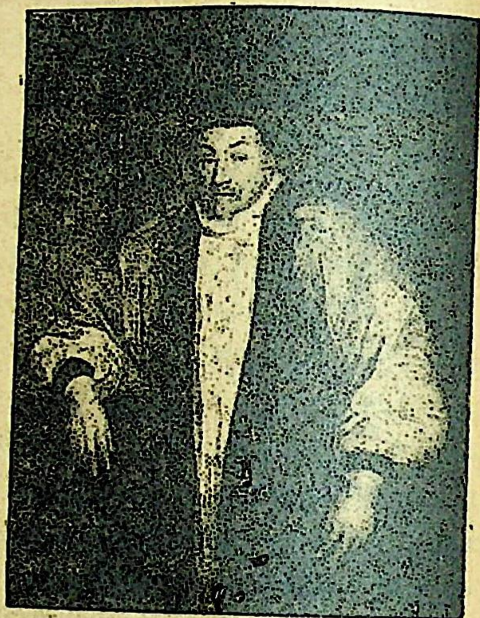
१६२६ ई० में वह प्रधान मन्त्री हो गया और लार्ड बनाया गया। शासन में भाग लेते ही उसका आधिपत्य जम गया। पहिले दिन से ही उसने राजतन्त्र को जन-सम्मति के बन्धन से छुटकारा देकर राजा को निरंकुश शासन बनाना चाहा। परन्तु वह भली भाँति जानता था कि इंगलैंड के लिए यह नई प्रथा है और क्योंकि जनता सहज ही न मानती इससे उसने भय का प्रयोग करना चाहा वह सेना रखना चाहता था और इस प्रकार फ्रांस के प्रधान मन्त्री रिशेलू (Richelieu) के समान शक्ति को दृढ़ करके देश में निरंकुश शासन स्थायी करना चाहता था। परन्तु राजा ने उसके मतलब को न समझा और उसके साथ सहयोग न किया।

वेंटवर्थ ने कर वसूल करने का अच्छा प्रवन्ध किया और दरबार का खर्च कम करने की सलाह दी। वह स्थाई सेना रखना चाहता था और इसके लिए उसने आयरलैंड में सुविधा समझी। चार्ल्स ने उसको वहां का शासक बनाया। वेंटवर्थ ने वहाँ अपनी नीति का प्रयोग किया परन्तु इसका फल विशेष न हुआ। इङ्गलैंड में उसके प्रति संदेह बढ़ता गया और प्रजा में विद्रोह के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे।

वेंटवर्थ आयरलैंड में शासन करता था और लार्ड धार्मिक मामलों में चार्ल्स का सलाहकार था। वह विद्वान, धर्माचारी और ईमानदार शासक था परन्तु संकुचित विचार का था। वह आंग्ल चर्च का मानने वाला था और उसकी यह धारणा थी कि बिशपों का होना धर्म के लिए आवश्यक है। वह चाहता था कि देश में एक ही मत रहे। उसके धार्मिक विचार में राजा के सहयोग की आवश्यकता थी अतः राजा की अनियन्त्रित शक्ति में उसको पूर्ण विश्वास था। वह राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। उसके इन विचारों से प्यूरिटन दल के लोग नाराज थे। वह भी प्यूरिटन मत को सहन न कर सकता था। इस कारण दोनों में झगड़ा था। लार्ड चर्च को बुराइयों से बचाना चाहता था, इससे वह दौरा करता था और जहाँ भी अपने विचारों का उल्लंघन होते देखता था कठिन दण्ड देता था। १६२६ ई० में वह देश का धर्मप्रधान केंटम्बरी का आर्कबिशप हुआ। अपने शासन काल में उसने बहुत प्यूरिटन पादरियों को पदच्युक्त किया और बहुत उपदेशकों को दण्ड दिया। वह बहुधा अपने बैरियों को हाई कमीशन कोर्ट तथा स्टार चेम्बर में कठिन दण्ड देता था। इन बातों में प्यूरिटन प्रजा बिगड़ गई और उसके ऊपर कैथोलिक होने का दोष लगाया गया। इसमें संशय नहीं है कि लार्ड की रुचि कैथोलिक मत की तरफ थी इसी से उसने कैथोलिकों के साथ अच्छा वर्ताव किया। लार्ड की इसी धर्मनीति के कारण भी चार्ल्स बहुत अप्रिय हो गया था और उसके ऊपर भी कैथोलिकों के साथ पक्षपात का दोष लगाया गया।

लार्ड और धर्म-शासन

पार्लियामेंट भंग होने के बाद चार्ल्स ने, जैसा ऊपर लिखा गया है, वेंटवर्थ की सलाह से कुछ मितव्यता से काम लिया, परन्तु तब भी



लार्ड

आय व्यय के बराबर न हुई और चार्ल्स को इसको बढ़ाने के लिए नए आय बढ़ाने का उपाय ढूंढ़ने पड़े। इसलिए उसने राजा के बहुत उपाय से पुराने अधिकारों की शरण ली। इसमें से एक प्रथा यह थी कि जिन लोगों के पास ४० पौंड वार्षिक आय की भूमि हो Entorced वे नाइट (knight) हो जाए। अब जो लोग knight hood आनाकनी करते थे उनपर भारी जुर्माना किया जाता था और मानने वालों को भारी शुल्क देना पड़ता था। इसके बाद उसने इसकी खोज कराई कि जमीदारों ने राजा के जंगलों की कितनी भूमि दबा ली है। १६३३ ई० में इसकी जाँच हुई। बहुत भूमि

वापस ली गई और कोष में बहुत धन जुरमाना में आया। परन्तु अमीर लोग इससे अप्रसन्न हो गए। लन्दन नगर में बिना आज्ञा घर बनवाने वालों पर जुरमाना किया गया। इस प्रकार उसने धन इकट्ठा करके प्रजा को असन्तुष्ट किया। परन्तु सबसे अधिक असन्तोष तो कुछ व्यक्तियों को व्यापार विशेष में एकाधिकार देने से फैला। पार्लियामेंट ने १६२४ ई० में इसको नियम-विरुद्ध बताया था, परन्तु चार्ल्स ने साबुन, शराब, ईंटें और अन्य आवश्यक वस्तुओं के क्रय-विक्रय का एकाधिकार कुछ व्यापारियों को दिया। इससे इन वस्तुओं का मूल्य बढ़ गया, प्रजा को कष्ट हुआ और देश में राजा के विरुद्ध भारी असन्तोष फैला।

Reclamation of Forests

Monopolie's

इन करों के लगाने में चार्ल्स को उसके न्यायाधीशों ने बहुत सहायता दी। वे लोग इसको न्यायानुकूल बताते थे और जो लोग कर देने से इनकार करते थे उनको दण्ड देते थे। इसमें मुख्यतः राजा को दो अदालतों से बहुत सहायता मिली। प्रथम हेनरी सप्तम के समय में स्थापित स्टार चैम्बर अदालत थी जो बिना जूरी के ही न्याय शासन करती थी। इसके सामने अब राजाज्ञा को न मानने वाले सभी अपराधी लाए जाते थे और कठिन दण्ड पाते थे। दूसरा हाई कमीशन कोर्ट (Court of High Commission) था जिसमें धर्म सम्बन्धी अभियोगों का निर्णय होता था। वह एलीजबेथ के काल में स्थापित हुआ था परन्तु चार्ल्स ने इससे बहुत काम लिया। प्यूरिटन लोगों को राजा, लाड तथा आंग्ल चर्च के विरुद्ध कुछ कहने या लिखने के कारण इसके सामने आना पड़ता था और कठोर दण्ड का भागी होना पड़ता था। १६३० में डाक्टर लीटन (Dr. Leighton) को विशपों के विपरीत लिखने के कारण अपने कान काटने पड़े थे और १६३७ में प्रीन (Prynne) बर्टन (Burton) और बैस्ट्रिक

न्याय विरुद्ध अदालतें

(Bastrick) को चर्च शासन के विरुद्ध लिखने के लिए समान दण्ड का भागी होना पड़ा था। इन दण्डों से प्रजा की यह धारणा हुई कि ये अदालतें सर्वथा अत्याचार के लिए हैं, अतः वे लोग क्रुद्ध होकर प्राणप्रण से इनका विरोध करने लगे। उनके विचार में न्यायालय निरंकुश शासन तथा दासता के चिन्ह थे और जब तक यह टूट न जाते स्वतन्त्रता और नियमित शासन असम्भव था।

चार्ल्स को पूर्व लिखित उपायों से पर्याप्त धन न मिल सका, तब उसने १६३४ ई० में एक पुराने कर की प्रथा को चलाया। पहले जब देश पर आक्रमण का भय होता था तो राजा को अधिकार था कि वह समुद्र-तट के रहने वालों से जहाज या धन लेकर जल-सेना तैयार करे और आक्रमण रोके। परन्तु बहुत दिन से यह कर लगाया न गया था। जल-सेना को पुष्ट करने के लिए धन की आवश्यकता थी इसीलिए चार्ल्स ने यह बहाना किया कि

जहाजीकर (Shipmoney) १६३४ ई०

अंग्रेजी व्यापार को अल्जेरिया (Algeria) के समुद्री डाकुओं से बचाने के लिए जलसेना की आवश्यकता है। अतः उसने समुद्रतटवासियों से यह कर वसूल किया। जो धन मिला वह डाकुओं को रोकने में नहीं किन्तु डचों से भविष्य युद्ध के लिए जहाजी बेड़ा को सुधारने में खर्च किया गया। इस सफलता से प्रसन्न होकर उसने दूसरे वर्ष देश के भीतर के प्रान्तों पर भी कर लगाया। यह न्याय विरुद्ध था। लोगों ने धन तो दिया परन्तु बिगड़े बहुत। पर जब तीसरे वर्ष फिर यह कर लगाया गया तो उनकी अप्रसन्नता की सीमा न रही। ऐसा प्रतीत हुआ कि चार्ल्स इसको एक नियमानुकूल कर बना देगा। अतः हैंपडन (Sir Johh Hampden) ने सन् १६३७ में यह कह कर कि राजा को कर लगाने का कोई अधिकार नहीं है कर देना अस्वीकार किया। जब उसका अभियोग हुआ तो बाहर से सात जजों ने राजा के दबाव में पड़ इस कर को न्याय संगत बताया और हैंपडन को

दण्ड दिया। अब चार्ल्स निर्भय होकर यह कर वसूल करने लगा, परन्तु इससे असन्तोष की मात्रा और भी बढ़ी।



जान हैंपडन

असन्तोष होते हुए भी प्रजा विद्रोह के लिए तैयार न थी। लोग अत्याचारों को सहते थे परन्तु उनको अत्याचारों से बचने का उपाय न मालूम था। नैतिक आन्दोलन की प्रथा अभी चली न थी और पुराने विद्रोहों का युग बीत गया था। इससे बहुत लोग अमेरिका गए और वहाँ नए उपनिवेश स्थापित हुए। प्यूरिटन लोग धार्मिक अत्याचार से बचने के लिए वहाँ जाकर बसे। प्रजा यह सब सहन कर रही थी परन्तु साथ ही साथ क्रांति के प्रथम चिन्ह भी दृष्टि-गोचर होने लगे थे १६२७ ई० में क्रांति के प्रथम चिन्ह दिखाई पड़े। जहाजी कर का विरोध हैंपडन से सहानुभूति तथा स्काटलैंड में धार्मिक आन्दोलन इसके द्योतक थे और इससे यह प्रतीत होता था कि घटना चक्र राजा का अन्त ही कर देगा।

स्काटलैंड के निवासियों का मुख्य धर्म नाक्स द्वारा स्थापित प्रेस्बी-टेरियन चर्च था। इसमें न तो कोई पादरी होता था न कोई प्रार्थना पुस्तक। जेम्स इससे बहुत बिगड़ता था और उसने अपने समय में बिशपों की संस्था चलाई थी। इन बिशपों के हाथ में कोई शक्ति न थी क्योंकि प्रजा ने उन्हें स्वीकार न किया था। जेम्स और चार्ल्स दोनों चाहते थे कि इंगलैंड की तरह वहाँ भी एक प्रार्थना पुस्तक रहे और बिशपों को चर्च पर पूर्ण अधिकार हो। वे प्रेस्बीटेरि-यन मत को जड़ से उखाड़ डालना चाहते थे इससे १६२७ ई० में एक प्रार्थना पुस्तक चलाई गई जो इंगलैंड की प्रार्थना पुस्तक से मिलती थी। आज्ञा दी गई कि यह पुस्तक हर गिरजा घर में पढ़ी जाए। पहली ही बार एक स्त्री, जेनी गेडीज, ने पुस्तक पढ़ने वाले पादरी को स्टूल फेंककर मारा और एडिनबर्ग में विप्लव हो गया सम्पूर्ण स्काट जाति ने एक वर्ष के भीतर "जातीय प्रतिज्ञापत्र" (National Covenant) पर हस्ताक्षर करके यह प्रण किया कि अपने धर्म की रक्षा करना मुख्य कर्त्तव्य है। इस प्रश्न को तय करने के लिए १६३८ ई० में ग्लासगो में बृहत् धर्मसभा बैठी जिसने बिशप शासन को तोड़ दिया, प्रार्थना पुस्तक को रद्द कर दिया और अंग्रेजी पादरियों को निकाल दिया। वे जानते थे कि चार्ल्स इसको अंगीकार न करेगा; इसलिए युद्ध के लिए भी तैयारियाँ हुईं।

स्काटलैंड में धार्मिक आन्दोलन

जब चार्ल्स ने देखा कि समझौता होना असम्भव है तो उसने स्काट-लैंड में युद्ध द्वारा अपने वश में करना चाहा। परन्तु उसके पास न तो समुचित सैन्य-शक्ति ही थी न धन ही था। स्काट लोग रण कुशल थे और उनका नेता अलेक्जेंडर लेस्ली (Alexander Leslie) बहुत ही योग्य सैनिक था। उनके पास युद्ध सामग्री भी काफी थी। दोनों सेनाएं बरविक (Berwick(के समीप पहुँची, परन्तु

पहला बिशप युद्ध १६३९ ई०

चार्ल्स को अपनी निर्बलता का ज्ञान था इसलिये उसने उस स्थान पर एक क्षणिक सन्धि कर ली। इसमें मुख्य शर्त यह थी कि दोनों दल अपनी सेनाएं भंग कर दें और धार्मिक मामलों को तय करने के लिए एक सभा बैठाई जाए और उसके निश्चय

वरविक की सन्धि के अनुसार आगे कार्य हो। परन्तु युद्ध की तैयारी दोनों तरफ़ होती रही।

अब चार्ल्स के पास कोई उपाय न रह गया। स्टैफ़ोर्ड आयरलैंड से लौट आया और उसकी सलाह से फिर पार्लियामेंट बुलाई गई। वह समझता था कि प्रतिनिधि सभा राजा को स्काट-

अल्पकालीन पार्लियामेंट (Short Parliament) १६४० ई०

लोगों के विरुद्ध सहायता देगी परन्तु इसमें उसकी भूल थी। जैसे ही अधिवेशन शुरू हुआ राजा की तरफ़ से यह प्रस्ताव किया गया कि यदि प्रजा जहाज़ी कर के बदले में एक निश्चित धन दे तो राजा उस कर पर अपना अधिकार छोड़ देगा। परन्तु पिम ने अपनी वक्तृता में देश में होते हुए अत्याचारों का वर्णन किया। इससे यह निश्चित हुआ कि जब तक चार्ल्स प्रजा की असुविधाओं को दूर न करेगा धन न दिया जायगा। स्काटिश युद्ध के विरुद्ध आवेदन पत्र की तैयारियाँ हो रही थीं कि चार्ल्स ने अपना काम न होते देखकर पार्लियामेंट को भंग कर दिया। यह पार्लियामेंट एक महीना भी न रही थी, इस कारण यह अल्पकालीन पार्लियामेंट कहलाती है।

स्टैफ़ोर्ड के सामने अब यह समस्या आई कि स्काटलैंड से युद्ध करने के लिये सेना कहाँ से मिले। उसने जबरदस्ती सेना जमा की और न्याय विरुद्ध बहुत से कर वसूल किये, पार्लियामेंट के

दूसरा बिशप युद्ध (१६४० ई०) और देश में अशान्ति

सदस्यों को कारागार में डाल दिया और नये धर्म सम्बन्धी क़ानून बनवाये। इंगलैंड के कई प्रान्तों में विद्रोह हुए। देश में राजा के विरुद्ध एक प्रजा-दल का विकास हुआ, जो जन सम्मति पर निर्भर था

और जिसके द्वारा देश में क्रान्ति की लहर फैल गई। स्काटलैंड से फि
युद्ध हुआ। चार्ल्स की सेना अयोग्य थी, अतः न्यूवर्न (Newburn)
पर हार हुई। स्काट लोग इंगलैंड में प्रविष्ट हुए। चार्ल्स घबरा
और उसने अमीरों की एक सभा यार्क में बुलाई। अमीरों ने धन
करने का प्रण तो किया परन्तु पार्लियामेंट बुलाने के लिए जोर दिया
उपायहीन चार्ल्स ने निराश होकर पार्लियामेंट को नवम्बर १६४०
में बुलाया और वाध्य होकर स्काट लोगों से रिपन (Ripon)
सन्धि कर ली। इसके द्वारा प्रेस्बीटेरियन चर्च स्काटलैंड का मुख्य
माना गया। बिशप युद्ध का देश पर बहुत प्रभाव पड़ा। इसके का
चार्ल्स को पार्लियामेंट बुलानी पड़ी और उसके निरंकुश शासन
अन्त हुआ। साथ ही साथ देश में स्काटलैंड के साथ सहानभूति
और जनता राजा के अत्याचारोंसे बचने के लिए तैयार हो गई।

१६—राजतंत्र का विनाश

लाँग पार्लियामेंट और घरेलू युद्ध

(१६४०—१६४६ ई०)

धन की आवश्यकता के कारण बाध्य होकर चार्ल्स ने पार्लियामेंट को बुलाया। इस सभा ने आकर देश की राजनैतिक स्थित में बड़ा परिवर्तन किया और पार्लियामेंट के अधिकारों को दृढ़ करके राजा की शक्ति को कम किया। इसने राजा के साथ लड़ाई लड़कर चार्ल्स को प्राणदण्ड दिया और इंगलैंड में प्रजातन्त्र शासन की नींव डाली। परन्तु जिस समय बैठक आरम्भ हुई कोई भी न कह सकता था कि यह सभा इतना महान कार्य कर सकेगी। इसके सदस्य भी मुख्यतया जमींदार, वकील या धनवान व्यापारी थे, और इन श्रेणियों के लोग बहुधा क्रांतिकारी नहीं होते हैं। इनमें बहुत से लोग प्यूरिटन मत के थे परन्तु उनमें आपस में बहुत मतभेद था। कुछ तो केवल थोड़ा ही सुधार चाहते थे, अन्य प्रेस्बीटेरियन चर्च का शासन पादरियों और अन्य लोगों की सम्मिलित समितियों के हाथ में देना चाहते थे, तीसरा दल उन लोगों का था जो धार्मिक मामलों में स्वतन्त्रता चाहते थे, और जो प्रत्येक मत से सहानुभूति रखते थे। ये लोग इंडेपेंडेंट कहलाते थे। क्रामवेल (Oliver Cromwell) इसी दल का आदमी था परन्तु ये सब लोग इस बात पर दृढ़ थे कि पार्लियामेंट का शासन पर अधिकार रहे और चार्ल्स का निरंकुश शासन पुनः सम्भव न हो सके। लार्ड सभा के सदस्य भी इस बात से सहमत थे, यद्यपि उनको प्यूरिटन मत

लांग पार्लियामेंट (The long Parliament) १६४०–१६४६ई०

से विशेष सहानुभूति थी। प्रतिनिधि सभा में जनता के नेता हैंपडन, क्रामवेल, सेल्डन हाइड और फाकलैंड मौजूद थे।

शासन पर पार्लियामेंट का अधिकार जमाने के लिए आवश्यक कि मन्त्री अपने कार्यों के लिए उसके प्रति उत्तरदायी हों। अब तक की आज्ञा के अनुसार वे काम करते थे, परन्तु पार्लियामेंट राजा को विरुद्ध कार्य के लिए दण्ड न दे सकती थी। इसीलिए अब यह आवश्यकता पड़ी कि मन्त्रियों को राजा के कार्यों के लिए उत्तरदायी मान न्याय विरुद्ध कार्यों के लिए दण्ड दिया जाए। इसी प्रकार प्रजा पर हुए अत्याचारों का अन्त हो सकता था। दूसरी आवश्यकता यह थी पार्लियामेंट का अधिवेशन नियमानुसार नियत समय पर हुआ क्योंकि राजा बहुत से अत्याचार केवल इस कारण कर सकता था उसको यह भय न था कि पार्लियामेंट उसके कामों की आलोचना करे इन दो बातों के होने से आशा थी कि राजा के निरंकुश शासन का हो जाएगा और वह पार्लियामेंट की अनुमति के विना शासन का कार्य न कर सकेगा।

इसलिए बैठक होते ही प्रतिनिधि सभा ने स्ट्रैफोर्ड और लार्ड ऊपर राष्ट्र के विरुद्ध षड्यन्त्र करने का अभियोग चलाया और बन्दीगृह में भेज दिया। उन्हीं दो मन्त्रियों की सलाह से चार्ल्स ने तथा राष्ट्र का शासन ग्यारह वर्ष तक किया था। इसी समय आज्ञा कि गिरजाघरों में मूर्तियां आदि तोड़ डाली

Trieninl Act और भविष्य में पार्लियामेंट की नियमानुसार होने के लिए एक नियम बनाया गया जिसका तात्पर्य यह था कि प्रत्येक तीन वर्ष में कम से कम एक बार पार्लियामेंट का अधिवेशन अवश्य होना चाहिए। इसको ट्राएनियल ऐक्ट कहा है। दूसरे प्रस्ताव द्वारा यह भी निश्चित हुआ कि वर्तमान पार्लियामेंट के अधिवेशन का अन्त बिना उसकी इच्छा के नहीं हो सकता है। प्रकार पार्लियामेंट ने अपने आपको राजा की आज्ञा से स्वतन्त्र

लिया। चार्ल्स ने मजबूर होकर धन की इच्छा से इन सब प्रस्तावों को स्वीकार किया और यह क़ानून बन गए।

इस तरह जब पार्लियामेंट की स्थिति दृढ़ हो गई तो उसने स्ट्रैफ़ोर्ड की ख़बर ली। प्रजा की धारणा थी कि उसकी सलाह से ही ग्यारह वर्ष तक अवैध शासन हुआ है और उसको भय था कि वह आयरलैंड से सेना बुलाकर प्रजा के स्वत्वों को दबा देगा। परन्तु उसके विरुद्ध राजद्रोह का प्रमाण मिलना सम्भव न था, इसलिए प्रतिनिधि सभा ने अभियोग (Impeachment) त्याग दिया और बिल आफ़ अटेंडर पास किया जिसमें उसको राजद्रोही बताया गया। लार्ड सभा से होकर यह प्रस्ताव स्वीकृत के लिए चार्ल्स के पास गया। कुछ दिन आनाकानी करने के बाद सब की सलाह से उसने इसको स्वीकार कर लिया। स्ट्रैफ़ोर्ड को १२ मई १६४१ ई० को फाँसी दी गई। राजा का सबसे बड़ा मित्र मर गया। जन-समुदाय ने खुशी मनाई और नेताओं को प्रसन्नता हुई कि उनका सबसे बड़ा वैरी दूर हो गया।

स्ट्रैफ़ोर्ड की मृत्यु १६४१ ई०

इसके बाद पार्लियामेंट ने राजा के अधिकारों के कम करने का प्रयत्न किया। उसने चार्ल्स द्वारा लगाए हुए जहाज़ी कर को बन्द करा दिया, उपाधिप्रधान में जो धन मिलता था वह भी असंगत बताया और राजा के जङ्गलों की सीमा निश्चित कर दी। अन्य अनुचित कर जो चार्ल्स ने लगाए थे वे भी नियम विरुद्ध बताए गए। इसके अतिरिक्त पार्लियामेंट ने उन न्यायालयों को भी तोड़ दिया जिनके द्वारा चार्ल्स मनमाना अत्याचार कर सकता था (जैसे स्टार चैम्बर कोर्ट हाई कमीशन कोर्ट, कौंसिल आफ़ दी नार्थ और कौंसिल आफ़ वेल्स)। इनको तोड़ कर पार्लियामेंट ने राजा की शक्ति बहुत कम कर दी। चार्ल्स न तो अब पार्लियामेंट को भंग कर सकता था, न कोई कर ही लगा सकता था और न किसी व्यक्ति को अपनी आज्ञानुसार दण्ड ही दे सकता

राजा के अधिकार कम किए गए

था। और अब उसके पास केवल एक अधिकार था कि वह प्रस्तावों को स्वीकार न करे परन्तु पार्लियामेंट धन न देकर उसको स्वीकृत देने के लिए बाध्य कर सकती थी, चार्ल्स ने इन सब प्रस्तावों को इसलिए स्वीकार कर लिया कि वह समझता था कि वह उसको युद्ध के लिए धन मिलेगा और जब वह विजयी हो जायगा तो फिर इन नियमों के विरुद्ध आचरण कर सकेगा। यहाँ तक तो सब काम शान्तिपूर्वक हो गया और यदि इन सुधारों का यहीं अन्त हो जाता तो बिना युद्ध हुए ही इङ्गलैंड में वैध शासन स्थापित हो गया होता। परन्तु पार्लियामेंट को राजा पर विश्वास न था और प्यूरिटन सदस्य बिना विशपों को दूर किए हुए चैन न ले सकते थे। अतः शांतिपूर्वक समझौता असम्भव था।

इसी समय पार्लियामेंट में भी दो दल हो गये अभी तक सब काम पूर्ण सहमत से हुए थे, परन्तु धार्मिक प्रश्न पर सहमति असम्भव थी।

Root and Branch Bill प्यूरिटन लोग विशप द्वारा चर्च शासन का अन्त करना चाहते थे, अतः उन्होंने प्रतिनिधि सभा में एक प्रस्ताव रूट ऐंड ब्रांच बिल नामी पेश किया और दूसरे प्रस्ताव द्वारा विशपों को लार्ड सभा से हटाना चाहा। अन्य लोग चर्च में इस परिवर्तन को अच्छा न समझते थे, अतः वे लोग प्यूरिटन लोगों का विरोध करने के लिए दलबन्दी करने लगे। अन्य कुछ सदस्य समझते थे कि राजा के अधिकार बहुत कम कर दिये गये हैं, इससे अब पार्लियामेंट को अधिक आगे न बढ़ना चाहिए। वे सब लोग चार्ल्स के पक्षपाती होने लगे और प्यूरिटन लोगों के क्रांतिकारी विचारों का विरोध करने लगे। इनके मुख्य नेता हाइड और फ़ाकलैंड थे।

चार्ल्स ने स्काट लोगों से सन्धि कर ली और उनकी सहायता माँगने के लिये वह स्काटलैंड चला गया था। इसी बीच में आयरलैंड में

Grand Remonstrance कैथोलिक प्रजा ने भारी विद्रोह करके बहुत से प्रोटेस्टेन्ट मतानुयायी अंग्रेज़ी निवासियों को मार डाला। इस हत्याकाण्ड की सूचना जब पार्लिया-

मेंट को मिली तो उसको दृढ़ निश्चय हो गया कि यह सब चार्ल्स का किया हुआ है। वे समझते थे कि चार्ल्स को कैथोलिक मत से सहानुभूति है और वह अंग्रेज़ों के न्याययुक्त अधिकारों को दवाना चाहता है अतः उसने आयरलैंड की प्रजा को भड़काया है। परन्तु समस्या यह थी कि विद्रोह शान्त कैसे किया जाए। चार्ल्स में उन्हें विश्वास न था इससे सेना का भार उसके हाथ में दिया न जा सकता था। इसी समय प्रतिनिधि सभा में भी चार्ल्स के पक्षपातियों की संख्या बढ़ रही थी। इसलिए पिम ने पार्लियामेंट के वाहर देश में प्रजा का अपनी तरफ़ करना चाहा जिससे स्वतन्त्रता युद्ध का अन्त यहीं पर न हो जाए। उसने "ग्रैंड रिमांस्ट्रैंस" (Grand Remonstrance) नामी एक प्रस्ताव उपस्थित किया जिसमें चार्ल्स के शासनकाल की सब बुराइयों का उल्लेख था और उनके सुधार के उपाय थे, जिनमें मुख्य यह था कि राजमन्त्री पार्लियामेंट के विश्वासपात्र हों। प्यूरिटन दल ने इसका समर्थन किया। परन्तु दूसरे दल ने जिसका नेता हाइड था इसका कठिन विरोध किया। अन्त में रात भर की वहस के वाद ग्यारह वोट से यह प्रस्ताव स्वीकार हुआ और शीघ्र ही इसके छपने की आज्ञा हो गई। इस प्रकार 'रूट एन्ड ब्रांच विल' तथा 'ग्रैंड रिमान्सट्रैंस' के बाद देश में दो दल हो गये।

ग्रैंड रिमान्सट्रैंस के पास होने के दो दिन वाद चार्ल्स स्काटलैंड से लौटा। लन्दन के नागरिकों ने उसका वहुत सम्मान किया। इसमें चार्ल्स को यह भ्रम हुआ कि सम्भवतः लन्दन नगर से उसको पार्लियामेंट के विरुद्ध सहायता मिलेगी। इसलिए उसने चाहा कि "ग्रैंड रिमांस्ट्रैंस" प्रस्ताव के प्रवर्तक मुख्य सदस्यों के ऊपर राजद्रोह का अभियोग चलाया जाए। राजा के मुख्य वकील ने लार्ड सभा में उस सभा के सदस्य लार्ड किंबोल्टन (Lord Kimbolton) तथा प्रतिनिधि सभा के पाँच सदस्य पिम, हैंपडन, होल्स (Hoiles), हेज़लरिंग (Ha-

पांच सदस्यों का पकड़नेका प्रयत्न

zelring) और स्ट्रोड (Strode) के विरुद्ध अभियोग (Impeach-ment) चलाने को आज्ञा माँगी। यह नियम विरुद्ध था क्योंकि राजा स्वयं अभियोग न चला सकता था; अतः दोनों सभाओं ने इस पर विचार करने के लिए समय चाहा। देर होते देख कर चार्ल्स क्रोधित होकर स्वयं ही उन सदस्यों को पकड़ने के लिए ३०० सशस्त्र सैनिक लेकर पार्लियामेंट पर पहुंचा। इसके पूर्व ही पता लग जाने से वे लोग नाव द्वारा नगर में चले गए थे। चार्ल्स ने जब चारों तरफ़ देखा और उनको न पाया तो उसने बहुत क्रोध में कहा—"मैं समझता हूँ मेरी चिड़िया उड़ गई।" यह कह कर वह निराश लौटा गया, परन्तु इसका भयङ्कर परिणाम हुआ। सदस्यों ने "अधिकार रक्षा" की आवाज़ उठाई। अब तक ऐसा अनाचार कभी न हुआ था। इसका दूसरा परिणाम यह हुआ कि पार्लियामेंट को मालूम हो गया कि चार्ल्स अपने खोए अधिकारों को फिर से लेना चाहता है, अतः उनके लिए युद्ध के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय स्वत्व-रक्षा का नहीं रह गया है। वे लोग युद्ध के लिए तैयार हो गए। चार्ल्स पाँच दिन बाद लन्दन से चला गया, परन्तु सात महीना तक सन्धि के लिए बातें होती रही न अन्त में उसने अगस्त १६४२ ई० में नाटिंघम के स्थान पर युद्ध पताका खड़ी कर दी और घरेलू युद्ध का आरम्भ हुआ।

घरेलू युद्ध की तैयारी और दलबन्दियां

पार्लियामेंट ने आयरलैंड में विद्रोह-दमन के लिए नागरिक सेना को एकत्रित करने की आज्ञा दी। यह आज्ञा नियम विरुद्ध थी, क्योंकि सेना बुलाने का अधिकार केवल राजा ही को प्राप्त था। इसी समय पार्लियामेंट ने देश के तीन मुख्य शस्त्रागारों पर भी अधिकार कर लिया और युद्ध के लिए टनेज और पौंडेज कर वसूल करने की आज्ञा भेजी। दूसरी ओर राजा भी सेना जमा कर रहा था। उसकी रानी हालैंड में शस्त्र खरीदने और सहायता माँगने गई थी। चार्ल्स अपने ज्येष्ठ पुत्र के साथ यार्क चला गया। वहाँ आंत

चर्च के मानने वाले प्रतिनिधि सभा के सदस्य और बहुत से अमीर लोग राजा से जा मिले। सम्पूर्ण देश दो दलों में बंट गया। अमीरों तथा ग्रामीण जनता ने अधिकांश राजा का साथ दिया, परन्तु व्यापारियों, नगर निवासियों और मध्यम श्रेणी के लोग पार्लियामेंट के पक्ष में रहे। आंग्ल चर्च (High Church) के मानने वाले राजा के साथ थे, परन्तु प्यूरिटन लोग पार्लियामेंट के पक्ष में थे।



घरेलू युद्ध का आरम्भ

पार्लियामेंट के पास पहले अच्छी सेना न थी और न रण कुशल सैनिक, परन्तु दूसरी तरफ़ चार्ल्स के पास धन की कमी थी और प्रजा उसके विचारों का विरोध कर रही थी। इस प्रकार युद्ध के आरम्भ में दोनों दल समान थे। पार्लियामेंट मैनचेस्टर के अर्ल (Earl of Manchester) और लार्ड एसेक्स (Earl Essex) को प्रधान सेनापति बनाया। राजा के साथ उसका भानजा रूपर्ट (Prince Rupert) था। राजा के सहायक कैवेलियर (Cavaliers) कहाए

और पार्लियामेंट दलवाले राउण्डहेड (Roundheads) क्यों कि उनके बाल छोटे होते थे ।

चार्ल्स ने नाटिंघम से युद्ध आरम्भ किया । वह चाहता था कि शीघ्र ही लन्दन पर अधिकार करके पार्लियामेंट के विद्रोह का अन्त कर दे ।

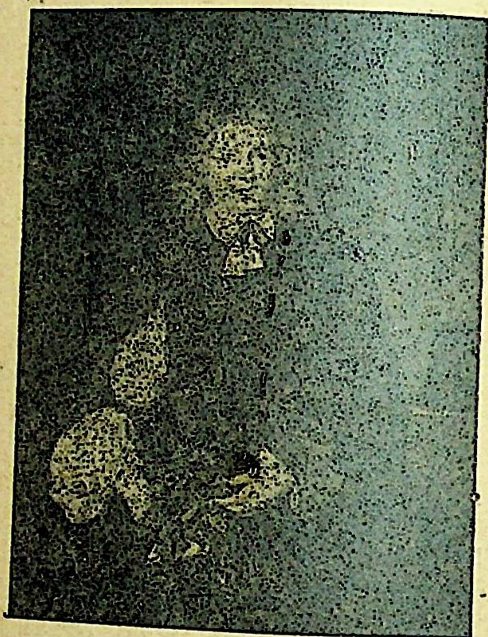


प्रिंस रूपर्ट

परन्तु एसेक्स ने उचित प्रबन्ध कर लिया था और चार्ल्स की विजय नगर के निकट दुर्गों पर अपना अधिकार जमा लिया था । इस युद्ध का प्रथम संग्राम एजेहिल (Edgehill) के स्थान पर १३ अक्टूबर १६४२ ई० को हुआ । इसमें

इंगलैंड १६४३-१६४८ ई०
घरेलू युद्ध
राजा के सहायक
पार्लियामेंट
मास्टन मूर
नसबी १६४५
एजहिल १६४२
लन्दन
न्यूबरी १६४३-१६४४
लैंगपोर्ट १६४५

राजा की हार हुई और वह लन्दन न पहुंच सका। परन्तु उसने आक्सफ़र्ड पर अधिकार कर लिया और यह नगर इसके पास अन्त तक रहा। इसके पश्चात् १६४३ ई० में न्यूबरी का युद्ध हुआ, जिसमें पार्लियामेंट पक्ष का वीर सैनिक लार्ड फ़ाक़लैंड (Lord Falkiand) मारा गया। दूसरे वर्ष पार्लियामेंट की सेनाएं उत्तर दक्षिण पश्चिम में पराजित



लार्ड फ़ाकलैंड

हुई। चालग्रोव (Chalgrove) के संग्राम में हैंपडन मारा गया। जान पड़ता था कि चार्ल्स कुछ महीनों में पूर्णतया विजई हो जाएगा क्यों कि उसकी सेना में बहुत से योद्धा थे और दूसरी ओर एसेक्स तथा मैनचेस्टर दोनों निरुत्साह थे। मैनचेस्टर कहताथा "यदि हम राजा को बार भी हराएं तो भी वह राजा है, परन्तु यदि राजा ने हमें एक

बार भी हराया तो हम सब फाँसी पर लटका दिए जायंगे।" इससे जान पड़ता है कि पार्लियामेंट की सेना में कितना कम उत्साह था। इसी कारण पहले चार्ल्स की जीत हुई। परन्तु जब पिम ने यह हाल देखा तो उसने स्काट लोगों से सैनिक सहायता लेने के लिए शीघ्र ही सन्धि कर ली जो (Solemn League and Convenant) के नाम से प्रसिद्ध है (१६४३)। इसके अनुसार स्काटलैंड की तरफ़ से लेस्ली (Alexandar Leslie) के नेतृत्व में २०००० सैनिक पार्लियामेंट की सहायता के लिए आए और बदले में पार्लियामेंट ने इङ्गलैंड में प्रेस्बीटेरियन चर्च स्थापित करने का वचन दिया। दूसरी तरफ चार्ल्स ने आयरलैंड के विद्रोहियों से सन्धि कर ली और उसकी सहायता के लिए आयरिश सेना भेजी गई।

स्काटलैंड से सहायता मिलने से पार्लियामेंट की सैनिक शक्ति बहुत बढ़ गई क्योंकि वे लोग रणकुशल, वीर और उत्साही सैनिक थे। इङ्गलैंड में भी क्रामवेल ने एक नई सेना तैयार की थी जिसमें उसने पूर्वीय प्रान्तों के रहने वालों को भर्ती किया था। ये लोग अच्छे सवार थे, इसलिए पार्लियामेंट की तरफ जो सवार-सेना की कमी थी वह पूरी हो गई। इनमें उत्साह, धैर्य और धार्मिक जोश भरा हुआ था। इन सेनाओं के संयोग से पार्लियामेंट की हार, जीत में बदल गई। १६४४ ई० में यार्क के पास मार्स्टन मूर-(Marston-Moor) के मैदान में घमासान युद्ध हुआ। जिसमें स्काटसेना और क्रामवेल के नए सैनिकों आइरन साइड (Iron sides) ने बड़ी वीरता दिखलाई। चार्ल्स की सेना नष्ट हो गई और वह पूर्णतया पराजित हुआ। उत्तरी इङ्गलैंड में उसे ठिकाना न रह गया परन्तु अब भी आक्सफोर्ड पर उसका अधिकार था। क्रामवेल एसेक्स से मिलकर चार्ल्स को वहाँ आने से रोकना चाहा। न्यूबरी (Newbury) में भी सेनाओं में मुठभेड़ हुई। राजा की हार हुई, परन्तु मैन-

मार्स्टन मूर और न्यूबरी १६४४ ई०

चेस्टर की निर्बलता से क्रामवेल राजा को आक्सफर्ड पहुंचने से न रोक सका।

परन्तु अभी लड़ाई का अन्त न जान पड़ता था। चार्ल्स को दबाने के लिए इससे अधिक दृढ़ नेताओं तथा अच्छी सेना की आवश्यकता थी। पार्लियामेंट के जोशीले सदस्य अब अग्रसर हुए। क्रामवेल इनका नेता था। उसकी धारणा थी कि राजभक्ति को निष्फल करने के लिए सेना में धार्मिक उत्साह की आवश्यकता है।

नई आदर्श सेना NewModel Army और क्रामवेल

उसकी सवार-सेना ने अच्छा काम किया था, इससे पार्लियामेंट ने १६४५ ई० में एक क़ानून बनाया, जिसके अनुसार २०००० आदमियों की एक सेना बनाने का उपचार किया गया। इनको अच्छी शिक्षा; अच्छे शस्त्र और अच्छी तनख्वाह दी गई। यह सेना नई आदर्श सेना (New Model Army) के नाम से प्रसिद्ध है। अपने धार्मिक जोश के कारण वे लोग उत्साह से लड़े और यूरोप में बहुत नाम किया। इसके साथ यह आवश्यकता पड़ी कि नए रणविद्या कुशल सेनापति भी रक्खे जाएं, इसलिए पार्लियामेंट ने एक नया क़ानून बनाया जिसके अनुसार उसका कोई सदस्य सेना का भार नहीं ले सकता था। एसेक्स आदि को अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा, इसलिए यह क़ानून सेल्फ डिनाइंग आर्डिनेन्स कहा जाता है। क्रामवेल ने भी इस्तीफ़ा दिया परन्तु उसकी रणचातुरी के कारण उसको दूसरे क़ानून द्वारा आज्ञा मिली कि वह सदस्य होते हुए सेनाध्यक्ष बना रहे। फेयरफैक्स (Fairfax) प्रधान सेनापति हुआ और क्रामवेल उसका मुख्य सहायक।

Seit Denyiug Ordinance

नई आदर्श सेना को विश्वास था कि वे ईश्वर के सैनिक हैं और अजेय हैं, इसलिए वे मृत्यु से न डरते थे। जून १६४५ ई० में नेस्बी (Naseby) के संग्राम में उन्होंने चार्ल्स का मुं॰

नेसबी का युद्ध और चार्ल्स का पकड़ा जाना

बला किया। वे लोग इतनी वीरता से लड़े कि चार्ल्स की सेना पूर्णतया नष्ट हो गई और वह असहाय इधर-उधर भटकने लगा। उसको विश्वास था कि उसका सेनापति मांटरोज़ (Montrose) जो स्काटलैंड में युद्ध कर रहा था, वहाँ विजयी होकर इंगलैंड पर आक्रमण करेगा। परन्तु शीघ्र ही फ़िलिपहाफ़ (Philipheugh) के मैदान में मांटरोज़ की हार हुई और चार्ल्स की इस आशा का भी अन्त हो गया। १६४६ ई० के आरम्भ में चार्ल्स ने स्काटिश सेना की शरण ली और वहाँ सम्मानपूर्वक कैदी की भाँति रहा। स्काट सेना को चार लाख पौंड देकर पार्लियामेंट ने चार्ल्स को अपने अधिकार में कर लिया और उसे होम्बी हाउस (Holmby House) में सम्मानपूर्वक रखा।

पार्लियामेंट और सेना में झगड़ा

इस विजय के बाद ही पार्लियामेंट और सेना में झगड़ा आरम्भ हो गया। १६४३ ई० में धार्मिक प्रबन्ध को ठीक करने के लिए एक समिति बैठी थी, उसने प्रेस्बीटेरियन चर्च स्थापित करने की सलाह दी थी। पार्लियामेंट ने इसको स्वीकार कर लिया था परन्तु सेना को यह अच्छा न लगा क्योंकि सैनिक लोग बहुधा स्वतन्त्र विचार (Independents)' के थे। दूसरा कारण यह था कि पार्लियामेंट को भय था कि कहीं सेना उस पर अपना प्रभुत्व न जमा ले इससे वह अब सेना को कम करना चाहती थी। उसने कानून बनाकर इसकी संख्या कम कर दी और सब सेनापतियों के प्रेस्बीटेरियन चर्च को मानने की आज्ञा दी। साथ ही साथ उनकी तनख्वाह भी कम कर दी गई। इससे सेना में हलचल मची। क्रामवेल ने समझौता करना चाहा परन्तु निष्फल : सेना ने बलपूर्वक चार्ल्स को अपने अधिकार में कर लिया और उसके साथ सन्धि की बात चीत आरम्भ की। सेना ने बिशप द्वारा (Episcopacy) चर्च शासन स्थापित करने का वचन दिया, परन्तु वह चाहती थी कि चार्ल्स अन्य मतों को भी स्वतंत्रता दे। ये शर्तें बुरी न थीं परन्तु चार्ल्स

का विचार था सेना और पार्लियामेंट के झगड़े से उसका अ
लाभ होगा, इसलिए उसने इनको स्वीकार न किया और छिप कर
से बचकर वाइट द्वीप (Isle of Wight) को भाग गया।

फिर उसने स्काट लोगों से सन्धि की और प्रेस्बीटेरियन चर्च स्था
करने का वचन दिया। राजा के सहायकों ने फिर युद्ध आरम्भ कर दि
और द्वितीय घरेलू युद्ध छिड़ गया। हैमि

प्रेस्टन का संग्राम १६४८ ई०

(Duke of Hamilton) स्काटिश सेना
साथ इङ्गलैंड पहुँचा, परन्तु प्रेस्टन (Preston)
के मैदान में नई आदर्श सेना ने उसको हा
दिया। इस हार से चार्ल्स की आशाओं का अन्त हो गया। उ
पार्लियामेंट से सन्धि कर ली और तीन वर्ष के लिए प्रेस्बीटेरियन
स्थापित करने का वचन दिया, परन्तु विजयी सेना इस समझौता
मानने के लिए तैयार न थी। उसका विश्वास था कि चार्ल्स के जीव
में देश में शांति नहीं रह सकती है, इसलिए वह उसको प्राणदण्ड दे
चाहती थी।

पार्लियामेंट में प्रेस्बीटेरियन सदस्यों की संख्या अधिक थी। ये लो
राजा को पुनः शक्ति देने को तैयार थे। परन्तु सेना इस प्रबन्ध का विरो
कर रही थी; क्रामवेल ने अपने एक सैनि

Prides' Purge और चार्ल्स पर मुकदमा १६४९ ई०

प्राइड (Colonel Pride) को आज्ञा दी कि
वह राजा के पक्षपाती सदस्यों को पार्लियामेंट में न
बैठने दे। प्राइड ने सेना से जाकर पार्लियामें
घर को घेर लिया और १५० के लगभग सदस्
को प्रतिनिधि सभा से निकाल दिया। यह कार्य
इतिहास में प्राइड्स पर्ज के नाम से विख्यात है। इसके बाद ५३ सदस्
शेष बचे, जो सेना के विचारों से सहमत थे। वे लोग 'रम्प' (Rump
Parliament) कहलाए और सेना की आज्ञानुसार कार्य करने लगे।

चार्ल्स पर देशद्रोह का अभियोग चलाने का प्रस्ताव हुआ रम्प ने

तो उसे पास कर दिया, परन्तु लार्ड सभा ने विरोध किया। अब यह निश्चित हुआ कि लार्ड सभा की स्वीकृति अनावश्यक है। चार्ल्स का मुक़दमा ५२ जजों के सामने जनवरी १६४७ ई० में वेस्टमिनिस्टर हाल में आरम्भ हुआ। चार्ल्स ने अपने पक्ष में कुछ भी नहीं कहा, क्योंकि उसकी दृष्टि में यह न्यायालय न्याय विरुद्ध था। उसका अपराध सिद्ध हुआ और उसको मृत्यु की सजा दी गई। व्हाइटहाल (Whitehall) महल में फाँसी-गृह बनाया गया। चार्ल्स ने मृत्यु के समय बहुत शांति और धैर्य दिखाया। प्रजा की खुशियों के बीच में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। इस तरह से प्रजा ने राजा के रक्त से अपने ऊपर किये गये अत्याचारों का बदला लिया। चार्ल्स ने अपनी हठ और विवेक-हीनता के कारण प्राण खोये; उसके सैनिक आपस में लड़ते थे, स्वार्थी और विलासप्रिय थे और पार्लियामेंट की सेना सुसंगठित थी, सैनिक धार्मिक उत्साह से भरे थे, इसी कारण चार्ल्स की हार हुई। परन्तु मुख्य कारण यह है कि उसने प्रजा की इच्छा के विरुद्ध शासन करना चाहा था, जो बहुत दिन तक होना असम्भव था। प्रजा ने विद्रोह करके शासन अपने हाथ में लिया, एक राजा का रक्त बहाया और अन्त में स्वतन्त्रता प्राप्त की।

चार्ल्स की फांसी

१७—प्रजातंत्र

१६४६-१६६० ई०

चार्ल्स की मृत्यु के बाद शासन का भार रम्प के हाथ में आया। सेना उसकी सहायक थी इसलिए देश का विरोध होते हुए भी वह अपनी शक्ति क़ायम रख सकी। रम्प के प्रति कोई प्रेम भाव न था, वह जातीय मत की प्रतिनिधि न थी और सामर्थ्य के लिए केवल सेना पर निर्भर थी। सेना का नेता क्रामवेल था। वह देश में सैनिक शासन स्थापित करना नहीं चाहता था और न सेना ही इसका विचार रखती थी। वे लोग देश में धार्मिक तथा राजनैतिक स्वतन्त्रता चाहते थे; सेना पार्लियामेंट का स्वतन्त्र चुनाव चाहती थी और नई प्रजातन्त्र के हाथ में शासन का भार सौंपकर स्वयं अलग हो जाना चाहती थी। परन्तु देश की दशा इसके लिए ठीक न थी। देश में फूट थी और यदि सेना दृढ़ता न दिखाती तो देश में राजकता का ज़ोर होता। कोई अन्य उपाय न होने से रम्प का शासन कुछ दिन तक चलता रहा। शासन के लिए एक समिति बनाई गई जिसमें ४१ सदस्य सेना तथा रम्प द्वारानियुक्त किये गये। यह समिति पार्लियामेंट के आधीन थी।

प्रजातन्त्र की स्थापना

इंगलैंड के बाहर इस समय चारों ओर आशाहीनता दिखलाई पड़ रही थी और ऐसा जान पड़ता था कि प्रजातन्त्र नष्ट हो जायगा। आयरलैंड में विद्रोह जोरों पर था, स्काटलैंड में चार्ल्स के प्रति राजभक्ति के भाव मौजूद थे और उसके पुत्र को वे राजा मानने को तैयार थे। यूरोप में इंगलैंड का कोई मान न रह गया था। हालेंड में प्रजातन्त्र के दूत मार डाले गये। फ्रांस, स्पेन तथा रूस ने भी बुरा व्यवहार

किया। इन संकटों से बचने के लिए शक्तिशाली शासन की आवश्यकता



क्रामवेल

थी। प्रजातन्त्र के शासन की प्रसिद्धि इसी पर निर्भर है कि उसने इङ्ग-लैंड को १२ वर्षों तक बाहरी संकटों तथा आन्तरिक भेदों से बचा कर पुनः राज्य स्थापना और वैध शासन के लिए पक्का कर दिया।

विद्रोह दमन १६४९-५० ई०

इङ्गलैंड में सेना के कुछ अंगों ने विप्लव किया, क्योंकि वे लोग जान लिलबर्न (john Lilburn) के सामाजिक तथा राजनैतिक विचारों के पक्षपाती थे और लेवलर (Levellers) नाम से विख्यात थे। इनको क्रामवेल ने दण्ड दे कर शांत किया। परन्तु आयरलैंड में विद्रोह की भयंकर आग भड़क गई थी। वे लोग राजभक्त

थे और इस समय इङ्गलैंड की पारस्परिक फूट में अपनी स्वतन्त्रता लिए ठीक समय समझते थे। अतः उन्होंने प्रोटेस्टैंट निवासियों अत्याचार किया। तब कौंसिल ने क्रामवेल को उनका दमन करने लिए भेजा। क्रामवेल ने ड्रोघेडा (Drougheda) के दुर्ग आक्रमण करके समस्त आयरिश सेना को कत्ल कर दिया और वेक्सफोर्ड (Wexford) में भी वैसा ही व्यवहार किया। सम्पूर्ण में भय फैल गया और बहुत से नगर युद्ध के बिना ही शान्त हो इस प्रकार आयरलैंड का विद्रोह ठंडा हुआ।

जब क्रामवेल वहाँ से लौटा तो स्काटलैंड से युद्ध की तैयारी समाचार मिला। कौंसिल ने आक्रमण होने के पूर्व ही स्काट लोगों परास्त करना चाहा और फेयरफैक्स (Fairfax) को स्काटलैंड की आज्ञा दी। उसने कवनैन्टर्स (Covenanters) के विरुद्ध करने से इनकार कर दिया और अपने पद से इस्तीफा दे दिया। क्रामवेल सेनाध्यक्ष बनाया गया। उसने स्काटलैंड पर आक्रमण किया डनबार (Dunbar) के युद्ध में उसको सफलता मिली। परन्तु भी स्काट लोग चार्ल्स के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को लेकर लन्दन की बढ़े। चार्ल्स इसके पूर्व स्काटलैंड का राजा हो गया था। क्रामवेल उनको वोरस्टर (Worcester) के स्थान पर रोक कर पूर्णतया परास्त किया। स्काटिश सेना नष्ट हो गई, चार्ल्स छिप कर भागा और बहुत कठिनता से हालैंड पहुँचा। इन दोनों युद्धों के बाद स्काटलैंड पर प्रजातन्त्र का पूर्ण अधिकार हो गया और सम्पूर्ण ब्रिटिश द्वीप (British Isles) पर प्रजातंत्र का आधिपत्य हुआ।

जिस समय क्रामवेल विद्रोह शान्त कर रहा था, उसी समय सेनाध्यक्ष ब्लेक (Blake) राजपक्ष की जल-सेना को समुद्र में परास्त कर रहा था। उसने रूपर्ट का पीछा किया और

हालैंड से युद्ध १६५२-१६५५ ई० भूमध्य सागर के किनारे के देशों में इङ्गलैंड की धाक जमाई। उसने दुनियाँ में वर्जीनिया

(Virginia) और ब्रैबेडोस (Brabadoes) पर फिर अधिकार कर लिया और इंगलिश चैनेल के द्वीपों पर प्रजातन्त्र का अधिकार जमाया इस सफलता को देखकर रम्प ने जल-सेना की शक्ति को अधिक बढ़ाया। १६५१ ई० में प्रजातन्त्र जल और स्थल दोनों पर विजयी हो गया था, ब्रिटिश साम्राज्य पर इसका पूर्ण प्रभाव हो चुका था और सैनिक शक्ति के कारण विद्रोहों की कम आशंका थी। दूसरे राष्ट्रों में भी इंगलैंड का सम्मान होने लगा था। अब यदि रम्प शान्तिपूर्वक शासन करती तो व्यापार में उन्नति होती और शान्ति तथा समृद्धि की नींव मजबूत पड़ जाती। परन्तु क्षणिक जीत की खुशी में पार्लियामेंट ने बाहरी युद्ध करना चाहा। इसमें दो लाभ थे; प्रथम हालैंड और स्पेन से युद्ध होने से उसके पुराने वैरियों की शक्ति कम होती और इङ्गलैंड का व्यापार बढ़ता; और दूसरा, बाहरी युद्ध में विजयी होने से देशवासियों के हृदय में प्रजातन्त्र का महत्व बढ़ता और रम्प की शक्ति प्रबल हो जाती। उस विचार से रम्प के सदस्यों ने सेना की इच्छा के विरुद्ध हालैंड से युद्ध छेड़ दिया, क्योंकि यह लन्दन के व्यापारियों को प्रसन्न करना चाहती थी।

डच लोगों को अपने जहाजों में व्यापार की चीजें ले जाने से बहुत लाभ होता था। यह व्यवसाय पूर्णतया उन्हीं के हाथ में था इससे अंग्रेज लोग द्वेष मानते थे। १६५१ ई० में पार्लियामेंट में एक क़ानून बनाया गया जो नैविगेशन ऐक्ट के नाम से प्रसिद्ध है; इसके द्वारा यह निश्चित हुआ कि इङ्गलैंड या उसके उपनिवेशों में जो वस्तु व्यापार के लिए आए वह उसी देश के बने हुये जहाजों में आनी चाहिये। इस क़ानून का मतलब हालैंड के व्यावसाय को हानि पहुँचाना था। ये लोग इससे बहुत बिगड़े। साथ ही साथ यह निश्चित हुआ था कि इङ्गलिश चैनेल में डच जहाजों को अंग्रेजी जहजों के सामने अपना झण्डा गिराकर उनका सम्मान करना पड़ेगा। इससे १६५२ ई० में युद्ध छिड़ गया। ब्लेक ने कैंट (Kent) के पास डच सेना को हराया। दूसरे वर्ष डच सैनिक वान ट्रम्प (Van Tramp) ने नेस (Ness) के पास ब्लेक

को हराया, परन्तु उसने पोर्टलैंड (Portland) के पास पुनः डच सेना को परास्त किया इस युद्ध से डच लोगों को बहुत हानि हुई क्योंकि उसके जहाज़ समुद्र पार उपनिवेशों से खाद्य पदार्थ न ला सके और देश में लोग भूखों मरने लगे। बाध्य होकर उन्होंने १६५४ ई० में सन्धि कर ली और अंग्रेजों के सब प्रस्तावों को मान लिया। इस विजय से यूरोप में तो बहुत सम्मान बढ़ा। परन्तु देश के प्रजातन्त्र ने सैनिक शासन की स्थापना कर दी। सैनिक शासन के अत्याचारों से प्रजा बिगड़ गई और देश में शान्ति की आशा जाती रही।

'रम्प' का भंग होना

क्रामवेल और उसकी अनुगत सेना चाहती थी कि शीघ्र ही देश में विधिवत शासन होने लगे और जन-सम्मति अनुसार चुनी हुई पार्लियामेंट स्थापित हो जाए। लोग 'रम्प' के अत्याचारों तथा स्वार्थी व्यावहारों से अप्रसन्न थे। इसलिए वे चाहते थे कि रम्प भंग कर दी जाए और दूसरी पार्लियामेंट का चुनाव हो। परन्तु रम्प अपनी प्रभुता को आसानी से न त्याग सकती थी। उसने भंग होने के लिए ३ नवम्बर १६५० ई० निश्चित किया, परन्तु इससे सेना सहमत न थी। इसी समय रम्प ने एक बिल पेश किया जिसके अनुसार वे लोग अपने पद पर स्थिर रहते और स्वयं ही थोड़े सदस्य चुन लेते। क्रामवेल इससे असहमत था और उसने अन्य नेताओं से वचन ले लिया था कि वे लोग इस बिल को पास न करेंगे। परन्तु एक दिन जब उसे समाचार मिला कि पार्लियामेंट में उस पर बहस हो रही है, वह तुरन्त सादे कपड़े पहने हुए कुछ सेना साथ लेकर पार्लियामेंट घर पहुंचा। उसने सब सदस्यों को निकाल कर ताला बन्द कर दिया। एक मसखरे ने द्वार पर लिखकर लटका दिया कि "मकान किराए के लिए खाली है।"

इसके बाद क्रामवेल तथा अन्य सैनिकों ने एक नई कौंसिल आफ स्टेट बनाई। इसके सामने पार्लियामेंट बुलाने का प्रश्न आया। स्वतन्त्र चुनाव होना कठिन था। शासन पद्धति बनाने की भी आवश्यकता थी।

अतः इंडिपेंडेंट पादरियों को आज्ञा दी गई कि वे ऐसे लोगों के नामों की सूची भेजें जो सेना के विचारों से सहमत हों और जो पार्लियामेंट के सदस्य चुने जा सकें। इन नामों में से १४० सदस्य चुने गए और नई पार्लियामेंट की बैठक हुई। इसके एक सदस्य का नाम बेयरबोन (Praise God Barebone) था अतः यह सभा बेयरबोन पार्लियामेंट के नाम से विख्यात हुई।

बेयरबोन पार्लियामेंट Barebone's Parliament

क्रामवेल का विचार था कि वह शासन पद्धति निश्चित करके भंग हो जाएगी, परन्तु इस सभा ने सुधार करना आरम्भ कर दिया और बहुत कुछ क्रांतिकारी सुधार पेश किए। क्रामवेल इसके धार्मिक विचारों से भी अप्रसन्न था। आपस में भेद होने के कारण, यह सभा अपने समस्त अधिकार क्रामवेल के हाथों में सौंप कर स्वयं भंग हो गई।

इस उपाय के असफल होने पर, सैनिकों ने एक 'शासन नियम' (Instrument of Govt.) बनाया जिसके अनुसार क्रामवेल को संरक्षक (Lord Protector) पद दिया गया और वह राष्ट्र का प्रधान नियुक्त हुआ। उसकी सहायता के लिए २१ सदस्यों की एक समिति (Council) बनाई गई जो स्थाई थी। जनता द्वारा चुनी गई पार्लियामेंट का भी विधान किया गया क्रामवेल जल तथा थल-सेना का प्रधान सैनिक नियत हुआ। युद्ध तथा सन्धि के मामलों में समिति की अनुमति आवश्यक थी। पार्लियामेंट की पहली बैठक सितम्बर १६५४ ई० में होना निश्चित हुआ। इस समय के उपरान्त मृत्यु पर्यन्त क्रामवेल देश का प्रधान शासक रहा और स्वेच्छाचारी शासन करता रहा। उसने पार्लियामेंट के अधिकारों को कम किया, बहुधा उसके बिना ही शासन किया। और देश में सैनिक शासन क़ायम किया। यद्यपि उसने अपनी परराष्ट्रनीति तथा दृढ़ शासन द्वारा शांति

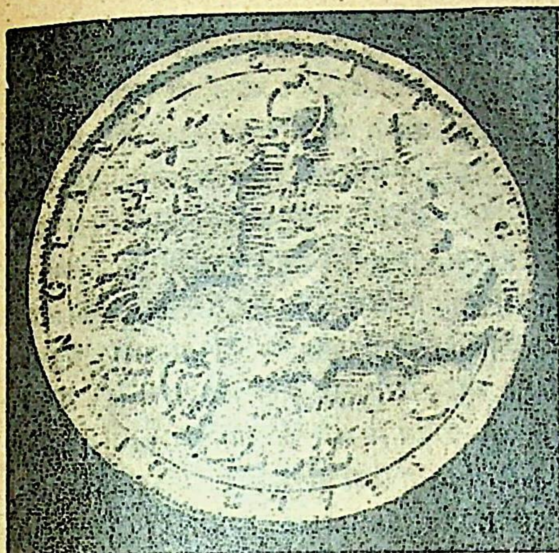
संरक्षक Protectorate की स्थापना' क्रामवेल का शासन १६५३-१६५८ ई०

रक्खी, तब भी कठोर सैनिक के शासन के कारण प्रजा की स्वतन्त्रता कम हो गई प्रथम पार्लियामेंट का चुनाव कैवेलियर दल के अतिरिक्त सारी जनता ने किया। इसमें ४६० सदस्य थे और सम्पूर्ण ब्रिटिश द्वीप के प्रतिनिधि मौजूद थे। इस पार्लियामेंट ने 'शासन नियम' को स्वीकार नहीं किया। इस पर मतभेद हुआ और क्रामवेल ने इसको १६५५ में भंग कर दिया। इस मतभेद से उत्साहित होकर राजभक्तों ने दो विद्रोह किये। क्रामवेल ने शान्ति रखने के लिए देश को ग्यारह भागों में बाँट दिया और हर एक में एक सैनिक (मेजर जनरल) अफ़सर शासन के लिए नियुक्त किया। इन लोगों ने राजभक्तों (Royalists) को कष्ट दिया और देश पर कठोरता से शासन किया।

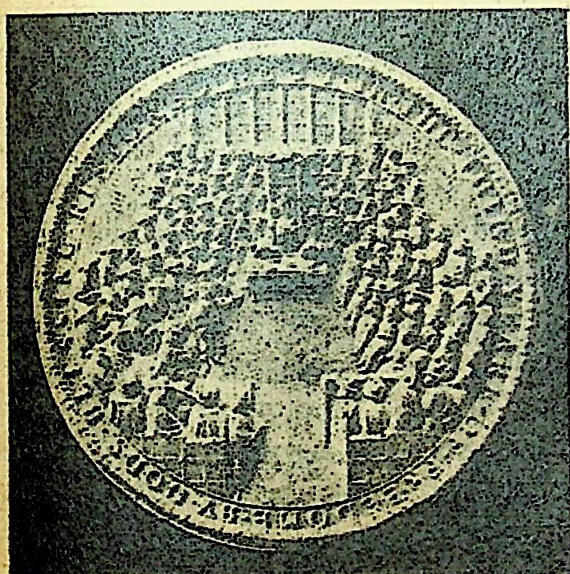
१६५६ ई० में क्रामवेल ने दूसरी पार्लियामेंट को बुलाया। उसकी कदापि यह इच्छा न थी कि पार्लियामेंट के बिना शासन करे परन्तु वह यह भी न चाहता था कि पार्लियामेंट शासन-पद्धति के मूल तत्व ही पर झगड़ा करे, क्योंकि इससे देश में अशान्ति फैलने का डर था। अतः उसने नई पार्लियामेंट में से १०० के लगभग विद्रोह सदस्यों को बैठने ही न दिया। इस सभा ने क्रामवेल को राजा बनाना चाहा और नम्र निवेदन (Humble Petition and Advice) नामी प्रस्ताव द्वारा यह प्रार्थना की कि वह लार्ड सभा स्थापित करे और स्वयं राजा हो जाए। सेना राजपद के विरुद्ध थी। क्रामवेल सेना को अप्रसन्न न करना चाहता था, अतः उसने राजपद लेना अस्वीकार किया, परन्तु लार्ड सभा क़ायम कर दी। इस पर संरक्षक पद परम्परागत (Hereditay) कर दिया गया। इस प्रकार पुरानी प्रथा फिर से क़ायम हुई कैथोलिकों के सिवाय सब मतों को स्वतन्त्रता मिल गई। १६५८ ई० में पार्लियामेंट की दूसरी बैठक हुई परन्तु लार्ड सभा में से मतभेद होने के कारण यह भी भंग कर दी गई। क्रामवेल ने मृत्यु के पहिले कुछ दिन तक बिना पार्लियामेंट के ही शासन किया।

क्रामवेल धार्मिक नीति अपने समय के अनुसार बहुत आगे

(१)



(२)



प्रजातन्त्र की मुहर

बढ़ी हुई थी। वह प्रत्येक मत को धार्मिक स्वतन्त्रता देने के पक्ष में था।

क्रामवेल की धार्मिक नीति

उसने कैथोलिक लोगों को अवश्य स्वतन्त्रता नहीं दी थी, परन्तु इसमें राजनैतिक कारण भी मिले हुए थे। उसने प्यूरिटन धर्म को देश में चलाया। आंग्ल चर्च की प्रार्थना पुस्तक हटा दी। बिशपों का शासन तोड़ दिया, परन्तु पुराने मत के मानने वालों के ऊपर कोई अत्याचार नहीं किया। राजपक्ष से सहानुभूति रखने वाले पादरियों को अपना पद छोड़ना पड़ा और १६५५ ई० के क़ानून के अनुसार वे लोग देश में कहीं पर भी उपदेश कार्य नहीं कर सकते थे। उनके समय में यहूदियों (Jews) को देश में रहने का अधिकार मिला।

जैसे ऊपर लिखा जा चुका है, क्रामवेल पार्लियामेंट द्वारा ही शासन करना चाहता था, परन्तु उसके प्रयत्न असफल हुए और उसको शान्ति-

क्रामवेल की गृह-नीति

स्थापना के लिए देश में सैनिक शासन कायम करना पड़ा। इन अफ़सरों ने प्रजा पर अत्याचार किया, जबरदस्ती कर वसूल किया और देश में प्यूरिटन विचारानुसार मनुष्यों के चरित्र-सुधार का प्रयत्न किया। उसके शासन में सम्पूर्ण आमोद-प्रमोद के साधनों का अन्त हो गया। नाचघर, थियेटर, तमाशाघर आदि बन्द कर दिए गए। ताश खेलना, जुआ खेलना, ग़ाली देना या क़सम खाना न्याय विरुद्ध था। इस तरह देश में प्यूरिटन मतानुसार सच्चरित्रता। आधिपत्य हो गया। विद्या में उन्नति हुई शिक्षालय खोले गये और यूनिवर्सिटियों को सहायता दी गई। साथ ही साथ व्यापार में उन्नति हुई, व्यवसाय को सहायता मिली और देश में धन की वृद्धि हुई। स्काटलैंड और आयरलैंड में भी समान शासन हुआ और उन देशों को भी इस एकता से बहुत लाभ हुआ। विशेषतः उनके व्यापार की उन्नति हुई, क्योंकि इंगलैंड से व्यापार न करने के पुराने बन्धन तोड़ दिए गए थे। इस तरह क्रामवेल ने अपने दृढ़ शासन द्वारा देश की उन्नति की, यद्यपि वह प्रजा

को असाधारण अवस्था के कारण राजनैतिक स्वतंत्रता न दे सका। उसका शासन केवल सेना की सहायता पर निर्भर था। अतः उसके सैनिक नियमों का पालन करने तथा शांति स्थापित करने में, प्रजा के साथ कठोरता का व्यवहार करते थे। ऐसी परिस्थिति में साधारणतः प्रजा उससे असंतुष्ट थी। इस प्रकार क्रामवेल उदार विचार रखते हुये भी अपनी गृहनीति में पूर्ण सफलता न प्राप्त कर सका। परन्तु क्रामवेल की महत्ता उसकी परराष्ट्रनीति पर निर्भर है। उसकी कीर्ति यूरोप में फैल गई थी और इंगलेंड का सम्मान बढ़ गया था।

उसकी परराष्ट्रनीति उसने ऐलीजबेथ की नीति का आश्रय लिया और वैसे ही सफलता भी प्राप्त की। क्रामवेल जानता था कि स्टुअर्ट राजाओं की स्पेन से मित्रता रखने की नीति प्रजा को अरुचिकर है और साथ ही साथ वह समझता था कि स्पेन से विरोध करके ही इङ्गलैंड का व्यापार और औपनिवेशिक साम्राज्य बढ़ सकता है। इसलिए उसने फ्रांस को स्पेन के विरुद्ध सहायता दी। उसकी सेना ने स्पैनिश नीदरलैंड (Spanish Netherlands) में बड़ी कीर्ति पाई और इस सहायता के बदले में फ्रांस ने डंकर्क (Dunkirk) का बन्दरगाह इंगलैंड को दे दिया। उसने नई दुनियां में सेना भेज कर स्पेनियों के हाथ में जमैका (Jamaica) छीन लिया और ब्लेक ने उत्तरी अफ्रीका के समुद्री डाकुओं को परास्त किया। यूरोप में उसका इतना प्रभाव बढ़ा कि बहुत से राजा उससे डरने लगे। इस समय सवाय का ड्यूक अपने देश में प्रांटेस्टेंट प्रजा पर अत्याचार कर रहा था। क्रामवेल की भर्त्सना का वह प्रभाव पड़ा कि उसने १६५६ ई० में प्रोटेस्टेंट प्रजा को कष्ट देना बन्द कर दिया।

क्रामवेल की परराष्ट्रनीति के तीन उद्देश्य थे; (१) स्टुअर्ट वंश के प्रतिनिधियों को बाहर सहायता मिलने से रोकना जिसमें वे फिर इङ्गलैंड पर अधिकार न कर सकें, (२) प्रोटेस्टेंट धर्म की उन्नति और रक्षा, और (३) इङ्गलैंड के व्यापार की उन्नति। इन तीनों उद्देश्यों की सफलता

के लिए आवश्यक था कि यूरोप के अन्य राष्ट्र उनको डरें और उससे सन्धि करने के लिए तैयार रहें। वह चाहता था कि प्रोटेस्टेंट देशों में ऐक्य हो जाए जिससे कैथोलिक राष्ट्र उन पर अत्याचार न कर सकें। इसलिए उसने हालैंड, डेनमार्क, स्वेडन और ब्रैंडनबर्ग (Brandenburg) से सन्धि की। वह समझता था कि स्पेन, कैथोलिक दल का नेता है और अंग्रेज़ी व्यापार को उसके द्वारा हानि पहुंचती है, इसलिए उसने स्पेन के विरुद्ध फ्रांस से मित्रता की और चार्ल्स द्वितीय को उस देश में भी आश्रय न मिलने दिया। परन्तु इसमें उसकी भूल थी। क्योंकि क्रामवेल द्वारा फ्रांस की सहायता के कारण स्पेन अत्यंत दुर्बल हो गया और इससे यूरोपीय शक्ति-सामंजस्य को भारी धक्का पहुंचा। फ्रांस में लुई चौदहवें की अजेय शक्ति इसी कारण सम्भव हो सकी। दूसरे, उसने स्पेन से युद्ध करके देश की सुधरती हुई आर्थिक दशा को भी हानि पहुंचाई और अपने करों द्वारा प्रजा को असन्तुष्ट कर दिया। परन्तु यह सब होते हुए भी, क्रामवेल की वाह्य नीति पूर्णतया सफल हुई और इङ्गलैंड की कीर्ति चारों तरफ फैल गई और उसकी गणना यूरोप की महान शक्तियों में होने लगी। इस प्रकार उसकी अन्तरास्ट्रीय स्थिति फिर से दृढ़ हो गई।

क्रामवेल का चरित्र

क्रामवेल नारफ़क निवासी एक जमींदार का लड़का था। उसका जन्म १५५६ ई० में हुआ था और चार्ल्स की पार्लियामेंटों का सदस्य रहा था। उसने अपनी वीरता तथा रण-कुशलता के कारण शीघ्र ही घरेलू युद्ध में उच्च स्थान प्राप्त कर लिया; यहाँ तक कि राजा की मृत्यु के पश्चात यह राष्ट्र का प्रधान व्यक्ति हो गया। उसके वीर होने में कोई सन्देह नहीं है, उसकी देश भक्ति अटल थी और यद्यपि उसका शासन सैनिक ढंग का था तथापि वह पार्लियामेंट के अधिकारों का विशेष पक्षपाती था। प्रजा के अधिकारों के प्रेमी और अवैध शासन के वैरी, क्रामवेल को देश की असाधारण स्थित के कारण, बहुत से न्याय-विरुद्ध कार्य करने पड़े और उसका शासन वैसा ही मनमाना हुआ जैसा कि चार्ल्स का। परन्तु

इसके लिए क्रामवेल अपराधी नहीं है। शांति स्थापना के लिए उसे सब कुछ करना पड़ा और जहाँ चार्ल्स ने प्राण से हाथ धोए वहाँ वह सेना की शक्ति के कारण सफल हुआ। उसके कठोर शासन में भी देश ने उन्नति की और बाहर सम्मान बढ़ा। क्रामवेल अपने आन्तरिक जीवन में सच्चरित्र, ईश्वरभक्त, पाप से भय करने वाला, दयालु और सहृदय था। उसके विचार उच्च थे, आदर्श महान और यद्यपि वह बहुत कार्य न कर सका तो भी उसने धार्मिक स्वतंत्रता देकर पश्चिमी सभ्यता के विकास में बहुत सहायता दी। वह विद्या-प्रेमी था और विज्ञान की उन्नति उसके समय में हुई। वह ३ सितम्बर १६५८ ई० को इस संसार से विदा हो गया।

प्रजातन्त्र का अन्त १६५८ ई०

क्रामवेल की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र रिचर्ड संरक्षक हुआ। वह न तो अच्छा सैनिक था न राजनीतिज्ञ ही; और न ऐसा धार्मिक ही कि कट्टर लोगों की सहायता पा सके। उसने आते ही नई पार्लियामेंट बुलाई, परन्तु इस सभा में भी पुराने झगड़े उठ खड़े हुए। वह भी अपने पिता की तरह सेना की सहायता पर निर्भर था और उसने पार्लियामेंट भंग कर दी। सेना ने उसका ख्याल न करके रम्प के सदस्यों को फिर बुलाया। यह देख कर रिचर्ड ने अपना पद छोड़ दिया और साधारण जीवन व्यतीत करने लगा। इधर देश में विद्रोह शुरू हो गया। लैम्बर्ट (Lambert) ने चेशायर (Cheshire) में विद्रोह शांत किया, परन्तु जैसे ही वह लन्दन पहुंचा, रम्प ने उसको पदच्युत कर दिया। क्रोधित होकर उसने रम्प को फिर भगा दिया।

इसके बाद सेना के हाथ में पूर्ण शक्ति आई; परन्तु स्काटलैंड से सेनाध्यक्ष मांक (Ceneral Monk) लन्दन पर चढ़ाई कर रहा था। लैम्बर्ट उसको रोकने के लिए उत्तरी तरफ़ बढ़ा, परन्तु रास्ते में फेयर-फ़ैक्स ने सेना एकत्रित करके उसको हरा दिया। मांक बेखटके लन्दन पहुंचा और उसने रम्प को जो फिर एकत्रित हो गई थी वाध्य किया कि

वह स्वयं भंग हो जाए। इसके बाद उसने पार्लियामेंट का चुनाव कराया जिसमें राजत्ववाले और प्रेस्बीटेरियन लोगों की अधिकता थी। इन लोगों ने एक स्वर से राजतन्त्र स्थापित करने का प्रस्ताव किया और चार्ल्स के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को बुलाना चाहा। चार्ल्स प्रसन्नता से



जार्ज मांक

लौट आया और २१ मई १६६० को लन्दन पहुँचा। राजतन्त्र की पुनः स्थापना हुई और प्रजातन्त्र का बारह वर्ष बाद अन्त हुआ।

———

१८—चार्ल्स द्वितीय

१६६०—१६८५ ई०

राज्य की पुनः स्थापना

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, १६६० ई० में जनरल मांक की सहायता से चार्ल्स अपने निर्वास से वापस आया। इस समय उसकी अवस्था ३० वर्ष की थी और बाहर देशों में रहने से उसकी बुद्धि तीव्र हो गई थी उसको कष्टों ने समझदार बना दिया था। वह पार्लियामेंट से व्यर्थ झगड़ा करने का पक्षपाती न था, परन्तु फिर भी व्यक्तिगत शासन का प्रेमी था और पार्लियामेंट को केवल रुपया देने वाली भेड़ समझता था। उसने अपने इस अभिप्राय में बहुत सफलता पाई, क्योंकि लोग उसकी विलास-प्रियता के कारण उसके आशय को ठीक न समझ सकते थे; अतः विरोध की मात्रा भी कम रही।

राज्य स्थापना

राज्य की पुनर्स्थापना एक प्रकार से आवश्यम्भावी थी और दूसरी तरह फलहीन। यदि इस पुनर्स्थापना से यह आशय था कि स्टुअर्ट शासन पद्धति, उनके शासन सम्बन्धी विचार और उनकी अत्याचारपूर्ण निरंकुशता की दूसरी बार स्थापना है तो इसमें उनकी भूल थी जैसा कि तीस वर्ष बाद रक्तहीन राज्यक्रांति से प्रमाणित होता है। जाग्रत प्रजा अब निरंकुश शासन को सहन करने को कदापि तैयार न थी। परन्तु यदि इसका अर्थ पुरानी अंग्रेजी पद्धति का पुनरागमन है तो यह सामयिक स्थिति और अंग्रेजी चरित्र के अनुकूल था। जनता प्रजातन्त्र के काल में किये गये अनाचार से क्रुद्ध थी। पुरानी संस्थाओं का विनाश, प्रजा के दैनिक जीवन पर असह्य बंधन और कठोर सजायें इनसे वह शासन अरुचि-

कर हो गया था, और इसलिए ही अंग्रेज प्रजा ने चार्ल्स का स्वागत किया। परन्तु वह राजा को निरंकुश शासन न करने दे सकती थी, क्योंकि अभी वह चार्ल्स के प्राणदण्ड को भूली न थी। इस कारण चार्ल्स के समय में तीव्र विरोध हो सका। इस बार विरोध शासन की बुराइयों के विरुद्ध न था, किन्तु बुराइयों के सम्भावना के विरुद्ध। इसी



चार्ल्स द्वितीय

कारण प्रजा को जैसे ही जेम्स की अत्याचारपूर्ण नीति का भय हुआ वह शान्तिपूर्ण ढंगों से राजपद से अलग कर दिया गया और जनता ने देश में सदा के लिए वैध शासन स्थापित किया।

चार्ल्स के आने के पूर्व ही एक सार्वजनिक सभा निर्वाचित हुई थी

जिसने कि एक स्वर से उसको बुलाने का प्रस्ताव किया था। इसको कनवेंशन पार्लियामेंट कहते हैं; क्योंकि इसकी बैठक बिना राजा की आज्ञा के हुई थी। इस सभा ने कुछ क़ानून बनाये। पहला क़ानून (Act of Indemnity और Oblivion) यह बना कि प्रजातन्त्र के समय के किए गए हुए अपराधों के लिए मनुष्यों को क्षमा दी जाए परन्तु जिन लोगों ने राजा चार्ल्स प्रथम के ऊपर अभियोग चलाया था या उसको फाँसी दी थी उनको कुछ भी लाभ न हुआ। उनमें से कुछ तो मर गए थे, परन्तु जो लोग पकड़े गए उनमें से दस को प्राणदण्ड मिला और दूसरों को कारागार। इसमें मुख्य जनरल लैम्बर्ट (General Lambert) और सर हेनरी वेन (Sir Henry Vane) थे जिन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया। प्रथम को कारागार मिला और दूसरे को प्राणदण्ड।

कनवेंशन पार्लियामेंट

इसी सभा ने जागीर प्रथा को भी तोड़ दिया। साथ ही साथ बेगार प्रथा भी बन्द कर दी गई, और राजा अपनी सेवा के लिए प्रजा की गाड़ी आदि न ले सकता था और न मनमाना मूल्य ही वस्तुओं के लिए दे सकता था। इसी के साथ देश की रक्षा का भार राजा को सौंप दिया गया। सेना और दुर्ग उसी के आधीन हो गए। क्रामवेल की सेना तोड़ दी गई परन्तु फिर भी ५००० सैनिकों की एक स्थायी सेना कायम रही। यह पुरानी प्रथा के विरुद्ध था, परन्तु देश की नई आवश्यकताओं के अनुसार उचित था। स्थायी सेना का होना, विशेषकर एक व्यापारी देश के लिए आवश्यक होता है, क्योंकि साधारण प्रजा सदा सैनिक कार्य के लिए तैयार नहीं रह सकती है। इन परिवर्तनों के बाद १६६१ ई० में सभा विसर्जित हुई और नई पार्लियामेंट (Cavalier Parliament) राजा की आज्ञा से बुलाई गई। इस सभा के सदस्य राजा के पक्षपाती (Royalists) थे और वे लोग प्रजातन्त्र के नेताओं से बदला लेने के लिए इतने उत्सुक थे कि बहुत कठिनता से उन्होंने कनवेंशन पार्लियामेंट

के बनाये हुये नियमों को स्वीकार किया। इस नई सभा ने धार्मिक तथा राजनैतिक मामलों में पूर्व रीति को चलाना चाहा, जिससे राजा के अधिकारों में उन्नति हो गई।

नई पालियामेंट में बहुत सदस्य आंग्ल चर्च के अनुयायी थे और चाहते थे कि वह धर्म पुनः मुख्य राजधर्म हो। परन्तु प्रेस्बीटेरियन धर्म वालों ने भी राजा की सहायता की थी और यह उचित था कि उनको कोई हानि न पहुंचे एक सभा की गई जिसमें दोनों धर्म के प्रतिनिधि मौजूद थे, परन्तु कोई समझौता न हो सका। तब पार्लियामेंट ने क़ानून द्वारा आंग्ल चर्च को सर्वश्रेष्ठ पद दिया और एक-धार्मिक नियमावली रूपता का नियम (Act of Uniformity) (१६६२) बनाकर यह निश्चय किया कि सब पादरियों को बिशप के आधीन होना पड़ेगा, उनको प्रार्थना पुस्तक (Book of Common Prayer) के अनुसार ही प्रार्थना करनी पड़ेगी और कसम खानी होगी कि राजद्रोह पाप है। बहुत पादरियों ने वह अस्वीकार किया और उनको अपने पद से अलग होना पड़ा। अनुमान है कि कोई १५०० पादरी इस प्रकार पदच्युत हुए और उनकी जगह पर आंग्ल चर्च वाले लोग नियत किए गए। फिर भी उन लोगों ने छिपकर अपने धर्मानुयाइयों को खेत या गाँवों में प्रार्थना करने में सहायता दी। अतः इसको रोकने के लिए और विधर्मियों को कष्ट देने के अभिप्राय से पार्लियामेंट ने १६६४ ई० में कन्वेंटिकल ऐक्ट (Conventicle Act) बनाया जिसके द्वारा चर्च के अतिरिक्त अन्य प्रार्थना सभाएं नियम विरुद्ध मानी गईं। फिर १६६५ ई० में पाँच मील नियम (Five Mile Act) बनाकर निकाले हुए पादरियों को शिक्षण कार्य से या नगरों से पाँच मील की दूरी के भीतर रहने से रोका गया। इसके पूर्व ही १६६१ में कारपोरेशन एक्ट बनाया गया था जिसके अनुसार कोई भी मनुष्य म्यूनिसिपल सभा का सदस्य न हो सकता था जब तक कि वह आंग्ल चर्च का न मानता हो। डिसेंटर (Dissenter) लोग नगरों

में अधिकांश रहते थे और वहाँ उनकी शक्ति भी अधिक थी, अतः उनका प्रभाव कम करने के लिए यह नियम बनाया गया। ये चारों नियम क्लैरेंडन नियमावली (Clarendon Ccde) के नाम से प्रसिद्ध हैं, क्योंकि क्लैरेंडन ने इसमें बहुत भाग लिया था। इनका अभिप्राय विधर्मियों को सताना था। इससे प्यूरिटन लोग कम तो अवश्य हो गए परन्तु धार्मिक सहिष्णुता सम्भव न हो सकी।

जिस समय चार्ल्स द्वितीय इंगलैंड के शासन पर बैठा उसी समय फ्रांस में राज की बागडोर लुई चौदहवें के हाथ में आई। इसके पूर्व ही फ्रांस यूरोप में प्रधान राष्ट्र हो चुका था और अब लुई ने इसको सर्वश्रेष्ठ बनाने का निश्चय कर लिया था। उसकी इच्छा थी कि वह फ्रांस से उत्तर तथा पूर्व के देश, जो राइन (Rhine) नदी के उत्तरी तट पर था, अपने वश में कर ले और फ्रांस को प्राकृतिक सीमा प्रदान करे। वह देश स्पेन और जर्मनी सम्राट के आधीन था, अतः लुई चौदहवाँ सदा ही स्पेन के राजा और जर्मनी के सम्राट का वैरी रहा। इधर चार्ल्स लुई का सम्बन्धी था, और दोनों के विचार भी समान थे, इसलिए उनमें मित्रता बनी रही इससे चार्ल्स भी स्पेन से विरोध करता था। यह नीति क्रामवेल की नीति के समान थी और प्रजा की इच्छा के अनुकूल, क्योंकि इंगलैंड और स्पेन में व्यापारिक तथा औपनिवेशिक विद्रोह चला आ रहा था। परन्तु फिर भी यह नीति न तो देश के लिए ही लाभदायक थी न यूरोप ही के लिए। क्योंकि स्पेन अब निर्बल हो चुका था और इंगलैंड को उससे कोई भय न रह गया था। इसके विपरीत फ्रांस में नई जाग्रति आरम्भ हो गई थी, उपनिवेश स्थापना और समुद्र व्यापार दोनों ही में फ्रांस आगे बढ़ रहा था लुई की सेना यूरोप में सर्वविजयी होने वाली थी। अतः फ्रांस इंगलैंड का मुख्य वैरी था। इस समय फ्रांस यूरोप का सर्वशक्तिमान देश था। अतः यूरोप में अपना सम्मान क़ायम रखने के लिए फ्रांस को पराजित करने का उपाय सोचना चाहिए था न कि मित्रता का। चार्ल्स

परराष्ट्रनीति

इस बात को न समझ सका, और न कुछ समय तक प्रजा ही, परन्तु शीघ्र ही प्रजा को इसका अनुमान हुआ, राजा तथा पार्लियामेंट में वैमनस्य आरम्भ हो गया।

चार्ल्स ने लुई के आदेशानुसार पुर्तगाल की राजपुत्री से १६६१ ई० में अपना विवाह कर लिया था। दहेज में चार्ल्स को बम्बई का टापू मिला जो उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ बेच दिया। इधर फ्रांस से मित्रता करने के लिए क्लैरंडन ने डंकर्क नगर लुई के हाथ बेच दिया। प्रजा इससे बहुत असंतुष्ट हुई और क्लैरंडन की बदनामी हुई। इसी समय इंगलैंड और हालैंड में युद्ध छिड़ गया। इन दोनों देशों में व्यापारिक द्वेष था, क्योंकि दोनों ही भारतवर्ष तथा पूर्वी देशों से व्यापार करते थे, और दोनों ही के उपनिवेश अमेरिका में थे। इनके अतिरिक्त चार्ल्स डच शासकों से अप्रसन्न था, क्योंकि उन्होंने उसके भानजे विलियम (Wiliam. Prince of Orange) को अधिकारहीन कर रक्खा था। युद्ध विशेषकर समुद्र पर हुआ। अमेरिका में अंग्रेजों ने डच उपनिवेश न्यू एम्स्टर्डम (New Amsterdam) पर अधिकार कर लिया और उसका नाम न्यूयार्क (New York) रक्खा। यह युद्ध १६६० ई० तक चलता रहा। प्रिंस रूपर्ट तथा मॉंक ने कई स्थान पर डच जल-सेना को हराया, परन्तु १६६७ ई० में डच जहाज टेम्स नदी में घुस आए और मेडवे (Medway) में अंग्रेजों के जहाजों को जला दिया। इसमें शीघ्र ही युद्ध का अन्त हो गया और दोनों देशों में ब्रेडा की संधि हो गई (Treaty Breda १६६७ ई०)।

डच युद्ध

इस अपमान से प्रजा बहुत क्रुद्ध हुई और उसने क्लैरंडन का विरोध किया। चार्ल्स भी मंत्री से असन्तुष्ट था, इससे क्लैरंडन को अपने पद से अलग होना पड़ा और उसके स्थान पर चार्ल्स ने पाँच मंत्रियों की एक समिति जो कैबल (Cabal) नाम से प्रसिद्ध है, नियुक्त की। उन लोगों की नीति क्लैरंडन से विपरीत थी। उन्होंने फ्रांस की बढ़ती हुई शक्ति

को रोकना चाहा और जिस समय लुई स्पैनिश नीदरलैंड (Spanish Netherlands) पर अधिकार जमाने का प्रयत्न कर रहा था, हालैंड और स्वीडन के साथ सहयोग करके उन्होंने लुई को स्पेन के राजा के साथ सन्धि करने के लिए बाध्य किया। यह सहयोग इतिहास में ट्रिपल अलाए'स (त्रिवर्ग सहयोग) (१६६८ ई०) के नाम से प्रसिद्ध है। इस समय देश में फ्रांस की शक्ति का अनुमान हो गया था और लोग समझ गए थे कि यदि फ्रांस की शक्ति कम न हुई तो शीघ्र ही इङ्गलैंड में लुई की सहायता से चार्ल्स कैथोलिक धर्म तथा निरंकुश शासन पुनः स्थापित कर देगा।

त्रिवर्ग सहयोग Triple Alliance) १६६८ ई०

डच लोगों से बदला लेने के लिए लुई स्वीडन और इंगलैंड को अपनी ओर फोड़ना चाहता था। चार्ल्स तो पहिले से ही लुई का मित्र था, केवल प्रजा के भय से उसने त्रिवर्ग सहयोग में भाग लिया था। वह पार्लियामेंट से स्वतन्त्र होना चाहता था इसलिए उसको धन की आवश्यता थी वह कैथोलिक धर्म का प्रचार करना चाहता था, इसलिए उसको सेना को आवश्यकता थी। ये सब उसको फ्रांस से सहज ही मिल सकते थे। अतः उसने १६७० ई० में डोवर के स्थान पर लुई के साथ एक गुप्तसन्धि की जिसके द्वारा यह निश्चय पाया कि चार्ल्स फ्रांस को हालैंड के विरुद्ध सहायता देगा, और लुई बदले में धन देगा। पुनः चार्ल्स ने प्रण किया कि वह शीघ्र ही इङ्गलैंड में कैथोलिक धर्म फैलायेगा; इसके लिए लुई ने उसको धन तथा सेना से सहायता देने का वचन दिया। पिछली बात गुप्त रक्खी गई और दो मंत्रियों (आरलिंगटन और क्लिफोर्ड) के अतिरिक्त किसी को भी न मालूम हुई।

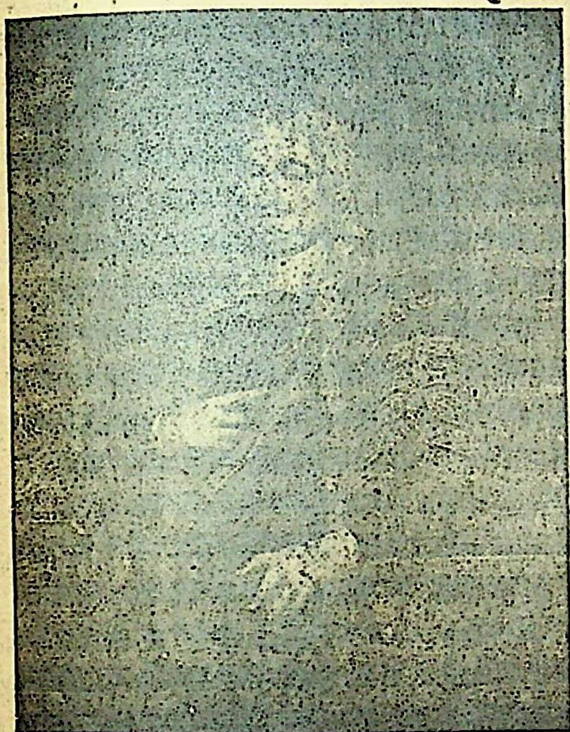
डोवर की गुप्त सन्धि १६७० ई० (Sacret Treaty of Dover)।

इसके पश्चात, इङ्गलैंड ने १६८८ ई० तक केवल फ्रांस का साथ दिया और अपना महत्व खो बैठा। हालैंड के युद्ध (१६७२—१६७८)

में डच लोगों ने असामान्य धैर्य तथा बहादुरी से काम लिया। अंग्रेज़ी जहाज़ों को कोई विजय प्राप्त न हुई और लुई भी उनके देश पर अधिकार न कर सका। १६७४ ई० में चार्ल्स ने थोड़े समय के लिए हालैंड से सन्धि कर ली, परन्तु फिर कुछ काल पश्चात् वह लुई का अनुयायी हो गया। चार्ल्स को इस मित्रता के बदले धन मिलता था जिससे वह पार्लियामेंट से स्वतन्त्र हो सका, और और मनमाना शासन करने में समर्थ हुआ। लुई भी ऐसी चाल चल रहा था कि चार्ल्स कभी भी उससे विमुख न हो सके। जब चार्ल्स कुछ स्वतंत्रता के लक्षण दिखाता था तो लुई धन देना बन्द कर देता था और पार्लियामेंट में उसके विरोधियों को रिश्वत देकर भड़काता था। इससे देश को घरेलू झगड़ों के कारण कभी अवकाश न मिल सका कि कोई दृढ़ परराष्ट्रनीति का आश्रय ले और इसी कारण फ्रांस की उन्नति हुई और १६८८ ई० तक इङ्गलैंड का मान घट गया।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, चार्ल्स के वापस आने पर देश में एक भारी परिवर्तन हुआ। जो लोग इसके पूर्व शासन के भय से आमोद और विलास से अपने को रोके हुए थे, वे अब आन्तरिक शासन खुले तौर से दुश्चरित्र हो गए। राजा उनका पथ प्रदर्शक था। चार्ल्स को काम पसन्द न था वह स्त्रियों और विदूषकों के समाज में प्रसन्न रहता था। उसकी उच्छृंखलता बहुत बढ़ी चढ़ी थी, इससे जो लोग अपनी राजभक्ति प्रमाणित करना चाहते थे, उसीके समान विलास प्रिय और चरित्र हीन हो गए थे। इस समय की दूसरी विशेषता धार्मिक असहिष्णुता थी। प्यूरिटन लोगों का समय जा चुका था, अब तो आंग्ल चर्च के मानने वालों का युग था और ये लोग प्यूरिटन तथा रोमन कैथोलिक दोनों दलों पर अत्याचार करने को तैयार थे, जिसका प्रमाण क्लैरंडन-नियमावली है। ऐसे समय में चार्ल्स ने छिपे-छिपे निरंकुश शासन स्थापित करना चाहा, कैथोलिक धर्म में राज भक्ति की शिक्षा दी जाती थी इसलिए वह कैथोलिक धर्म

को फैला कर राजा की शक्ति को दृढ़ करना चाहता था। इसके लिए उसने फ्रांस से मित्रता की और वहाँ से वह धन की सहायता लेता रहा। इसी के लिए वह स्थायी सेना रखना चाहता था और शासन-काल के आरम्भ से ही उसने ५००० के लगभग सिपाही रक्खे। परन्तु पार्लिया-



हाइड अर्ल आफ़ क्लैरंडन

मेंट में और बाहर प्रजा में ये फैल गई और शीघ्र ही राजा के विरुद्ध एक नया दल बन गया। चार्ल्स के राज्यकाल का प्रधान महत्त्व यही दलबंदियों का आरम्भ है, जो इस समय तक चला आ रहा है

उसका शासन-काल होने वाली राज्यक्रान्ति की भूमिका है और इंगलैंड तथा यूरोप के भावी इतिहास के लिए बहुत आवश्यक था।

चार्ल्स ने आरम्भ में एडवर्ड हाइड लार्ड क्लैरंडन (Edward Hyde, Earl of Clarendon) को अपना प्रधान मंत्री बनाया। उसने लांग पार्लियामेंट में मुख्य भाग लिया था और प्रजातन्त्र के समय में विदेशों में भटकता फिरा था। वह आंग्ल चर्च का कट्टर अनुयायी था इससे उसने क्लैरंडन नियमावली द्वारा डिसेंटर लोगों के प्रति घोर अत्याचार किया। परन्तु राजनीति में वह नम्र विचार का था। वह राजा और पार्लियामेंट दोनों के अधिकार सीमा बद्ध करना चाहता था और स्वयं इसका प्रयत्न करता था कि इनमें से कोई भी दूसरे के अधिकारों पर हस्तक्षेप न कर सके वह पार्लियामेंट को केवल न्याय बनाने वाली और धन देने वाली समिति समझता था और सम्पूर्ण शासन कार्य राजा के हाथों में देना चाहता था। इस नीति से दोनों ही अप्रसन्न रहे। उसके प्रति लोगों का यह विचार था कि वह स्वार्थी है और उसने अपनी शक्ति क़ायम रखने के लिए ही अपनी पुत्री का विवाह चार्ल्स के भाई जेम्स ड्यूक आफ़ यार्क (James Duke of York) से किया है। विरोध की मात्रा बढ़ती गई और डच युद्ध की असफलता का कारण भी वही ठहराया गया। विधाता भी विपरीत था क्योंकि १६५५ ई० में लन्दन और देश के अन्य नगरों में प्लेग महामारी का घोर प्रकोप हुआ, जिसके कारण लन्दन में पाँचवें हिस्से के लगभग प्रजा मर गई। देश में भारी अशान्ति फैल गई। इसके दूसरे ही वर्ष १६६६ ई० में लन्दन नगर में बड़ी भयंकर आग लगी, जिससे आधा शहर जल गया और बड़े बड़े मकान और गिरजाघर नष्ट हो गए। अब तो लोगों को पूर्ण निश्चय हो गया कि वह

क्लैरंडनका मंत्रित्व-काल और उसका पतन १६६०–१६६७ ई०

प्लेग महामारी १६६५ ई० और लन्दन में आग १६६६ ई०

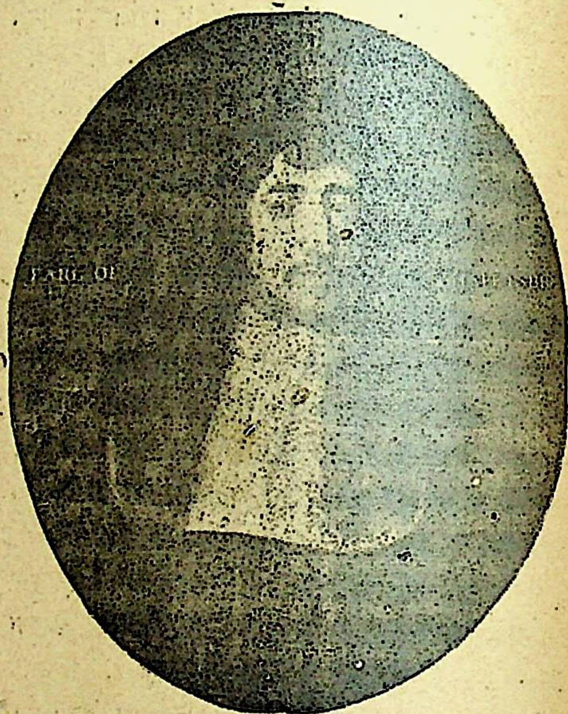
उनके शासकों के पापों का परिणाम है। कुछ लोगों ने तो, समझा कि आग कैथोलिक लोगों ने लगाई है, इससे कैथोलिकों की बहुत दुर्गति की गई। सब ने क्लेरंडन ही को दोषी ठहराया। राजा भी उससे अप्रसन्न था, इसलिए उसने उसको पदच्युत कर दिया। पार्लियामेंट ने उसके ऊपर मुकदमा चलाया, इस कारण वह देश से बाहर चला गया।

क्लैरंडन के जाने के बाद चार्ल्स ने पाँच मुख्य मन्त्रियों पर शासन भार छोड़ा, जिसका नाम "कैबल मन्त्रि मण्डल" पड़ा। क्योंकि इन पाँचों के नाम के प्रथम अक्षर मिल कर कैबल (Cabal) शब्द बनाते थे। ये क्लिफोर्ड, ऐशले, बकिंघम, आर्लिंग्टन और लारडेल थे। इनकी नीति क्लैरंडन के विपरीत थी। १६७२ ई० में चार्ल्स ने अपने अधिकार से एक घोषणा (Decleration of Indlgence) प्रकाशित की जिसके द्वारा प्रत्येक मतावलम्बी को पूजा करने की स्वतन्त्रता मिल गई; केवल कैथोलिक लोग अपने घर पर ही पूजा कर सकते थे। धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए उपयोगी होते हुए भी यह नियम प्रजा को सन्तुष्ट न कर सका, क्योंकि उनको यह भय था कि शीघ्र ही चार्ल्स सब सरकारी नौकरियाँ कैथोलिकों को देकर उनकी राजनैतिक स्वतन्त्रता पर हस्तक्षेप करेगा। इसलिए देश में बहुत खलबली मची। १६७३ में पार्लियामेंट की बैठक हुई और प्रतिनिधियों ने राजा को बाध्य किया कि वह घोषणा को रद्द करे। उसके पश्चात उन्होंने सर्वमत से एक परीक्षा नियम (Text Act) बनाया, जिसका आशय यह था कि प्रत्येक, राज्य-पदाधिकारी को पद मिलने के पहले परीक्षा देनी पड़ेगी कि वह आंग्ल चर्च के सिद्धान्तों को मानता है और उन्हीं के अनुसार पूजा करता है। इसके अनुसार जेम्स (Duke of York) को जलसेना के नेतृत्व से इस्तीफा देना पड़ा, क्योंकि वह कैथोलिक हो गया था और दो कैथोलिक मन्त्रियों क्लिफ़ोर्ड और

कैबल मन्त्रि-मंडल १६६७-१६७३ ई० Cabule minstry

टेस्ट ऐक्ट १६७३ ई०

आर्लिंग्टन को अपना मन्त्रिपद छोड़ना पड़ा। इनके पदत्याग से 'कैबल' का अन्त हो गया, क्योंकि शीघ्र ही चार्ल्स ने ऐशले (Ashley, Lord Shaftesbury) को अलग कर दिया। यह 'कैबल' एक मत का न था और न आधुनिक कैबिनेट (Cabinet) के समान इसकी एक नीति थी। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि 'कैबिनेट' के उत्थान में वह प्रथम सोपान था।



ऐशले, अर्ल आव शेफ्ट्सबरी

चार्ल्स की नीति से प्रजा असन्तुष्ट थी। लोग समझते थे कि चार्ल्स स्थाई सेना और धार्मिक स्वतन्त्रता के विरोधी नियमों द्वारा उनके धर्म और उसकी राजनैतिक स्वतन्त्रता पर कुठाराघात करना चाहता है, इससे

देश तथा पार्लियामेंट में एक नया दल बन गया, जिसके नेता शेफ्ट्सबरी इत्यादि थे। ये लोग आंग्ल चर्च को दृढ़ करना चाहते थे और कैथोलिक लोगों का अविश्वास करते थे। ये फ्रांस से वैर रखना चाहते थे और हालैंड से मित्रता। यह दल देशदल नाम से पुकारा गया है इसके विरुद्ध राजा के सहायकों का एक दल बन गया जो दरबारी दल कहलाया। इसका मुख्य नेता लार्ड डेनबी था। वह आंग्ल चर्च का कट्टर भक्त था और राज भक्त को दृढ़ करने का पक्षपाती था। चार्ल्स ने उसको प्रधान मंत्री बनाया। डेनबी ने रिश्वतें देकर और राजभक्ति का राग अलापकर इस दल को पुष्ट किया और पाँच वर्ष तक शासन करता रहा। वह स्वयं फ्रांस से मित्रता रखने का पक्षपाती न था और चाहता था कि हालैंड से मित्रता रक्खी जाए। इसी कारण उसने १६७७ ई० में जेम्स की पुत्री मेरी का विवाह हालैंड के विलियम, प्रिंस आफ़ ओरेंज के साथ किया। चार्ल्स तथा जेम्स के कोई पुत्र न था, इसलिए वह चाहता था कि जेम्स के बाद इङ्गलैंड के सिंहासन पर प्रोटेस्टेंट विलियम का अधिकार हो। लुई इस बात से अप्रसन्न हो गया और तत्पश्चात् डेनबी का नाश करने पर उद्यत हुआ। चार्ल्स स्वयं लुई की मित्रता चाहता था, क्योंकि उससे धन मिलता था विरोधी दल भी लुई से रिश्वतें लेता रहता था, इस कारण राजनीति स्थायी न हो सकी और देश में बड़ी हलचल मची रही।

प्रधान मंत्री डेनबी (Denby) १६७३—१६७८

इसी समय टाइटस ओट्स (Titus Oates) नामी एक व्यक्ति ने सुलगती हुई आग में दियासलाई का काम किया। उसने लन्दन के न्यायाधीश के सामने एक गढ़ी हुई कहानी कही; जिससे यह सिद्ध होता था कि देश में एक पोपिष षड्यंत्र रचा गया है और उसका अभिप्राय राजा को मार कर जेम्स को सिंहासन दिलाना और फ्रांस से सेना लेकर प्रोटेस्टेंट मत का अन्त करना है। शीघ्र ही वह न्यायाधीश

पोपिष षड्यंत्र १६७८

मार डाला गया। अब तो लोगों को विश्वास हो गया कि अवश्य यह बात ठीक है। कुछ अन्य व्यक्तियों ने भी ऐसे ही बयान दिए। तब तो प्रजा भयभीत होकर कैथोलिकों को पकड़ने और मारने लगी। पार्लियामेंट घर पर पहरा बैठा और प्रतिनिधियों को राजा तथा मंत्रियों पर इतना अविश्वास था कि उन्होंने इसकी जाँच का काम अपनी एक समिति के हाथ में दिया। इसी समय जेम्स के एक सेवक कोलमैन (Coleman) के कुछ पत्र पकड़े गए जिससे भी यह सिद्ध होता था कि फ्रांस से धन तथा सेना की सहायता लेकर इंगलैंड में कैथोलिक धर्म फैलाने का प्रयत्न हो रहा है। इस षड्यंत्र की बात झूठी थी, परन्तु राजा और उसके भाई दोनों इसी काम में लगे थे। शेफ्ट्सबरी ने इससे लाभ उठाया और इसका प्रयत्न आरम्भ किया कि जेम्स अपने अधिकारों से वंचित कर दिया जाए और उसको सिंहासन न मिल सके।

डेनबी पर अभियोग और उसका पतन

इसके पूर्व (१५७६) डेनबी ने चार्ल्स की आज्ञा से फ्रांस के साथ एक गुप्त सन्धि की थी जिसके द्वारा लुई ने तीन वर्ष तक बहुत धन देने का वचन दिया था। वह सन्धि-पत्र डेनबी ने स्वयं लिखा था। लुई ने अब अवसर पाया और उससे बदला लेने के आशय से वह सन्धि-पत्र विरोधी दल को दे दिया। अब क्या था पार्लियामेंट ने तुरन्त डेनबी पर अभियोग चलाया, क्योंकि उसको पूर्ण विश्वास हो गया कि डेनबी भी इस षड्यंत्र में सम्मिलित है। चार्ल्स ने उसको अभयदान दिया और एक पत्र में लिखा कि डेनबी ने सब कुछ उसकी आज्ञा से किया है। परन्तु पार्लियामेंट ने इसको स्वीकार न किया और यह निर्धारित कर दिया कि मंत्री अपने कामों के लिए प्रतिनिधि सभा को उत्तरदायी है। अभियोग चला परन्तु चार्ल्स ने पार्लियामेंट को भंग कर दिया। दूसरी पार्लियामेंट का चुनाव हुआ और इसने भी डेनबी पर अभियोग चलाया और उसको दुर्ग (Tower) में बन्द कर दिया, जहाँ वह चार्ल्स की मृत्यु तक रहा। इसी पार्लियामेंट ने एक और महान

कार्य किया। इसने एक बिल पास किया जिसके द्वारा यह आवश्यक हो गया कि प्रत्येक अभियुक्त पकड़े जाने के बाद जितना शीघ्र सम्भव हो सके न्यायाधीश के सामने मुक़दमा के लिए लाया जायगा। यह स्वतंत्रता नियम हेबियस कार्पस ऐक्ट (Habeas Corpus Act) के नाम से विख्यात है। इसके अनुसार कोई व्यक्ति जबरदस्ती कारागार में नहीं रक्खा जा सकता है। इंगलैंड की स्वतन्त्रता प्राप्ति में मैगनाचार्टा की भाँति यह नियम बड़े महत्व का है।

Habeas Corpus Act १६७६

शेफ़्ट्सबरी इत्यादि का विशेष प्रभाव लन्दन के बाहर था और पार्लियामेंट के नए चुनाव से उनके अनुयाइयों की संख्या प्रतिनिधि सभा में बढ़ गई थी। ये लोग पोपिश षड्यन्त्र के समाचार से भयभीत हो गए थे और चाहते थे कि जेम्स को अलग करके चार्ल्स के बाद किसी प्रोटेस्टेंट को राज्य दें। इनमें दो मत थे; कुछ लोग तो जेम्स की पुत्री मेरी के पति विलियम को चाहते थे और कुछ, जिनमें शेफ़्ट्सबरी मुख्य था, चार्ल्स के वर्णशंकर पुत्र (Illegal son) मनमथ (Duke of Monmouth) को चाहते थे। वे कहते थे कि मनमथ की माता का विवाह चार्ल्स के साथ विधि पूर्वक हुआ है, अतः वह चार्ल्स का न्यायसंगत पुत्र है। चार्ल्स इसके लिए राजी न था। वह अपने भाई के अधिकारों को रद्द न करना चाहता था। तीन पार्लियामेंट एक दूसरे के बाद बुलाई गईं। इन तीनों में जेम्स के बहिष्कार का प्रस्ताव रक्खा गया, परन्तु इसके पूर्व कि वह पास हो सके चार्ल्स सभा भंग कर देता था। १६८१ ई० में अन्तिम सभा का अधिवेशन आक्सफ़ोर्ड में हुआ था। इस प्रस्ताव के फल-स्वरूप पार्लियामेंट तथा देश में दो दल बन गये; प्रथम, वे लोग जो चाहते थे और प्रार्थना करते थे कि पार्लियामेंट की बैठक हो और वह प्रस्ताव पास हो, वे Petitioners और फिर ह्विग कह-

बहिष्कार प्रस्ताव (Exclusion Bill)

राजनैतिक दलबंदी

लाए। दूसरे वे जो इससे घृणा करते थे और चाहते थे कि राजा के अधिकारों पर कोई हस्तक्षेप न हो, Abhorere और फिर टोरी कहलाए। इस प्रकार ह्विग लोग पार्लियामेंट के पक्ष में थे और टोरी राजा के पक्ष में थे। यह दलबन्दी स्थायी हो गई और आज तक ये दोनों दल इंगलैंड के राजनैतिक जीवन में विद्यमान हैं।

आक्सफ़ोर्ड पार्लियामेंट के पश्चात् देश में पुनः राजा के प्रति सहानभूति पैदा हुई। लोगों को विश्वास हो गया कि पोपिष षड्यंत्र केवल राजनैतिक भूत था, जिसके कारण बहुत अत्याचार हो चुके हैं। उनको विश्वास हो गया कि विरोधी दल मात्रा से बढ़ गया है, अतः उन्होंने राजा की शक्ति का समर्थन करना आरम्भ किया। चार्ल्स ने भी जन-सम्मति की सहायता से अपने वैरियों को दण्ड दिया। शेफ़्ट्सबरी भाग गया और विदेश में जाकर मर गया। उसके भागने के बाद मनमथ, रसेल तथा सिडनी आदि नेताओं ने चाहा कि एक संगठन बनाकर पार्लियामेंट की बैठक के लिए देश में आन्दोलन करें। इस कार्य में उनको डिसेंटर समुदाय से सहायता मिलने की आशा थी। उसी समय कुछ अन्य लोगों ने एक षड्यंत्र रचा जिसका आशय यह था कि शेफ़्ट्सबरी का बदला लेने के लिए वे देश में कुछ प्रमुख लोगों की हत्या करें। उन्होंने यह तै किया कि जब चार्ल्स और उसका भाई जेम्स दोनों लन्दन से न्यूमार्केट जाते हुए मार्ग में राई हाउस के पास से निकलें उन पर आघात किया जाए। इसका पता लग गया और षड्यंत्रकारी पकड़े गए। यद्यपि दोनों दलों में कोई सहयोग न था तो भी सरकारी वकीलों ने दोनों षड्यंत्रों को एक ही समझा और रसेल आदि पर अभियोग चलाया। ह्विग नेताओं, रसेल और सिडनी, को प्राणदण्ड मिला। इसके अनन्तर चार्ल्स ने लन्दन और अन्य ६५ नगरों की स्वतन्त्रता का अपहरण किया। अब वहाँ का नागरिक शासन-प्रबन्ध राजा

चार्ल्स के अन्तिम दिवस
१६८१-८५ ई०

राइ हाउस प्लाट

द्वारा नियुक्त पुरुषों के हाथ में आ गया और उन्हीं लोगों को पार्लियामेंट में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त हुआ। इस प्रकार इन नगरों में ह्विग प्रभाव का अन्त हुआ। चार्ल्स ने फिर पार्लियामेंट की बैठक भी नहीं की और लुई द्वारा प्राप्त धन से शासन कार्य चलता रहा। इस सब का परिणाम यह हुआ कि चार्ल्स के प्रति विरोध क्षीण हो गया और उसकी मृत्यु के बाद जेम्स राजसिंहासन पर बैठ सका। चार्ल्स ने १६८५ ई० में यह संसार छोड़ा। उसने मरते समय अपने को कैथोलिक मत का अनुयायी प्रकट किया।

चार्ल्स के समय में पार्लियामेंट तथा राजा के अधिकार में युद्ध-नाटक का द्वितीय अंक समाप्त हुआ। देश में दलबन्दी हो गई थी, राजा के अधिकारों को कम करके उसके मन्त्रियों को पार्लियामेंट, के प्रति उत्तरदायी बनाने का प्रयत्न हुआ था, और पार्लियामेंट शासन पर अपना पूर्ण अधिकार जमाना चाहती थी। इसमें कुछ सफलता मिली, परन्तु अभी राजा स्वेच्छाचारी हो सकता था जिसका प्रमाण जेम्स के समय में मिला। उसके विरोध करने के बाद जेम्स के समय में पार्लियामेंट पूर्णतया सफल हुई और उसके पश्चात् राजा के स्वत्वों में कमी होती गई।

१६—जेम्स द्वितीय

१६८५—१६८८ ई०

रक्तहीन राज्यक्रान्ति

राज्याभिषेक तथा चरित्र

यद्यपि चार्ल्स द्वितीय के समय में जेम्स को अधिकार से गिराने का बहुत प्रयत्न हुआ था, तथापि राजा के मरने के पूर्व आन्दोलन शान्त हो गया था और जेम्स के कैथोलिक होते हुए भी प्रजा ने उसका विरोध न किया। शान्तिपूर्वक वह राजा बन गया। लोगों का विचार था कि 'बहिष्कार प्रस्ताव' द्वारा उसके साथ कठोर वर्ताव किया गया है इसलिए अब वे उसको सभी प्रकार से सहायता देने को तैयार थे। पार्लियामेंट ने भी उसको इच्छानुसार धन दिया और शासन कार्य के लिए कुछ नए कर भी प्रजा पर लगाए। सब प्रकार शान्तिपूर्वक शासन की आशा थी, परन्तु जेम्स ने क्षुद्र विचारों और कट्टर धार्मिकता के कारण अपने ऊपर दुःखों को बुलाया। वह कट्टर कैथोलिक था और अपने धर्म को देश में फैलाना चाहता था। वह ज़िद्दी और संकीर्ण विचारों का पुरुष था। परन्तु प्रजा को विश्वास था कि वह अपने भाई की तरह मिथ्यावादी और छली नहीं है। सब को विश्वास था कि जेम्स को अपने देश के गौरव का ध्यान है और वह उसको पराधीनता से बचाएगा। परन्तु उसके प्रथम कार्य ने ही यह भ्रम दूर कर दिया। उसने आते ही टाइटस ओट्स पर झूठी गवाही देने के अपराध में मुक़द्दमा चलाया। जज ने उसको ३४०० कोड़ों की सज़ा दी। उसने डेनबी तथा अन्य कैथोलिक अमीरों को कारागार से मुक्त किया और बैक्सटर (Baxter) नामी एक डिसेंटर पादरी को सज़ा दिलवाई क्यों कि उसने नानकनफ़र्मिस्ट लोगों के प्रति अत्याचारों का प्रतिरोध किया था। इससे पता लग गया कि

शासन की गति कैसी होगी, परन्तु फिर भी प्रजा ने कोई असन्तोष प्रकट न किया।

शासन काल के आरम्भ में ही मनमथ ने विद्रोह खड़ा किया। उसको विश्वास था कि ह्विग लोग उसके पक्षपाती हैं और देश में उसके ससैन्य आने से सम्पूर्ण जनता उसके साथ उठ खड़ी होगी और जेम्स को उतार कर उसे सिंहासन देगी। अतः उसने स्काटलैंट के अमीर अरजाइल (Argyll) के साथ देश में विद्रोह खड़ा करने का विचार किया।

मनमथ का विद्रोह १६८५ ई०

अरजाइल ने स्काटलैंड में विद्रोह किया, परन्तु अधिक सहायता न मिलने के कारण वह पकड़ा गया और उसको प्राणदण्ड मिला। इधर इंगलैंड के दक्षिणी पश्चिमी भाग में मनमथ ने अत्याचार पीड़ित प्रोटेस्टेंट प्रजा को उकसाया। उसका अच्छा स्वागत हुआ और कृषक लोगों ने अपनी एक भारी सेना बनाकर उसका साथ दिया। वह ब्रिस्टल पर आक्रमण करना चाहता था, परन्तु रास्ते में उसको चरचिल (Churchill) के नेतृत्व में राजा की सेना का मुकाबला करना पड़ा। सेजमूर (Sedgemoor) के स्थान पर युद्ध हुआ जिसमें कृषकों ने बहुत उत्साह दिखाया, परन्तु वे लोग देर तक ठहर न सके। मनमथ भाग निकला और उसकी सेना नष्ट हो गई। वह शीघ्र ही पकड़ा गया; उसको फाँसी मिली। जेम्स ने बदला लेने के विचार से जज जेफरीज को न्याय करने के लिए भेजा जो 'खूनी न्याय' (Bloody Assize) के नाम से प्रसिद्ध है। विद्रोहियों में से बहुतों को प्राणदण्ड दिया और ८०० को देश निकाला हुआ। उसने अपने अत्याचारों से प्रजा को पीड़ित कर दिया। स्त्रियों तक को भी कठिन दंड मिला। श्रीमती लिस्ले (Mrs. Lisle) तथा एलीजबेथ गांट (Elizabeth Gaunt) को विद्रोहियों के साथ दया दिखाने के लिए प्राण देने पड़े। जब यह मालूम हुआ कि यह सब राजा की आज्ञा से हुआ है तो लोगों को जेम्स से घृणा हो गई। चरचिल सा राजभक्त भी उसका बैरी हो गया।

खूनी न्याय

जेम्स के शासन को सरलता पूर्वक समझने के लिए उसे दो भागों विभाजित किया जा सकता है, प्रथम गृह नीति, द्वितीय वाह्य नीति।

जेम्स की नीति

उसकी गृह नीति दो मुख्य बातों पर अवलम्बित थी (१) उसका दैवी अधिकार में विश्वास (२) उसकी रोमन कैथोलिक धर्म के साथ सहानुभूति।



डयूक आफ़ मनमथ

मनमथ के विद्रोह से जेम्स को अपनी नीति को प्रयोग में लाने तथा अपनी शक्ति को बढ़ाने का बहाना मिल गया। उसने स्थायी सेना की संख्या १०००० से ३०००० कर दी और उसमें कैथोलिक अफ़सरों को

नियुक्त करना शुरू किया। इन सब का यही उद्देश्य था कि वह देश में कैथोलिक धर्म फैलाए। परन्तु इसमें उसका केवल धार्मिक उद्देश्य ही न था। वह अन्य स्टुअर्ट राजाओं की भाँति दैवी अधिकार में विश्वास रखता था। वह राजा के अधिकारों को बढ़ाना चाहता था और बिना किसी भी बाधा के निरंकुश शासन करना चाहता था। फ्रांस के लुई का उदाहरण उसके सामने था। इस बेरोक शासन के लिए आवश्यक था कि उसके पास पर्याप्त सेना हो और सैनिक उसके विश्वासपात्र हों क्योंकि वह कैथोलिक था इसलिए उसको केवल कैथोलिक अफ़सरों ही पर विश्वास था। उसको विश्वास था कि उसकी निरंकुशता के बाधक प्रोटेस्टेंट लोग हैं इसलिए वह उनके साथ अत्याचार करने को तैयार था और चर्च तथा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं पर अपना पूर्ण अधिकार जमाना चाहता था। बाह्य नीति में वह लुई का मित्र था क्योंकि वह जानता था कि उसके घरेलू नीति की सफलता के लिए एक धनवान तथा शक्तिशाली देश से मित्रता की आवश्यकता है।

जेम्स को निरंकुश घरेलू नीति के पश्चात् उसकी वाह्यनीति को समझना चाहिए। इस समय यूरोप की राजनैतिक दशा बड़ी डाँवाडोल थी लुई चाहता था कि फ्रांस को राइन नदी तक बढ़ाये और स्वयं जर्मनी तथा स्पेन का सम्राट हो जाये। वह हालैंड को नष्ट करके प्रोटेस्टेंट मत का विध्वंस करना चाहता था। उसकी शक्ति इतनी बढ़ी हुई थी कि कोई भी राष्ट्र अकेले उससे युद्ध करने में समर्थ न था। अतः यूरोप की स्वतन्त्रता को बचाने के हेतु विलियम, प्रिंस ऑफ़ ऑरेंज, तथा स्पेन का राजा, जर्मन सम्राट और एशिया के शासकों ने मिलकर उससे युद्ध करने का विचार किया। इंगलैंड की सहायता के बिना यह उद्योग असम्भव था, परन्तु इंगलैंड में कुछ और ही रंग था। जेम्स स्वयं कैथोलिक था और अपनी आन्तरिक नीति के कारण फ्रांस का मित्र हो रहा था। इस प्रकार यूरोप को लुई के चंगुल से बचाने के लिए तथा इङ्गलैंड में राजनैतिक और धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए दो बातें आवश्यक थीं।

प्रथम इङ्गलैंड का राजा पार्लियामेंट के कथनानुसार चले, द्वितीय वह प्रोटेस्टेंट मत का अनुयायी हो। जेम्स के राज्यकाल में इसका निर्णय होना था और उसके निर्वास तथा विलयम के अभिषेक से यह सिद्ध हो गया कि इंगलैंड में निरंकुश शासन और यूरोप में लुई का साम्राज्य दोनों असम्भव है। अब हम देखेंगे कि किस प्रकार जेम्स के निरंकुश शासन से प्रजा अप्रसन्न हो गई और अन्त में उसको देश से भागना पड़ा। जेम्स का निर्वास (Expulsion) इङ्गलैंड के इतिहास की एक राज्य क्रांति है।

कैथोलिकों की स्वतंत्रता के उपाय

ऊपर लिखा गया है कि मनमथ के विद्रोह को शान्त करने के बाद जेम्स की शक्ति बढ़ गई। उसको विश्वास हो गया कि प्रजा उसके साथ है अतः उसने कैथोलिकों को स्वतन्त्रता देकर उनको शासन का मुख्य अङ्ग बनाने का प्रयत्न आरम्भ किया उसका विचार था कि राजा को नियमोल्लङ्घन अधिकार (Dispensing Power) है अतः उसने टेस्ट एक्ट (Test Act) के विरुद्ध कैथोलिकों को उचपद दिए। उसने एक कैथोलिक सर एडवर्ड हेल्स (Sir Edward Hales) को सेना में स्थान दिया और इसको जानने के लिए कि यह नियम विरुद्ध तो नहीं हैं उसने अपने गाड़ीवान से उसके ऊपर मुक़दमा चलवाया। जजों ने, राजा के भय से, यह निर्णय दिया कि राजा नियमों का उल्लङ्घन कर सकता है और यह नियुक्तियाँ न्याय विरुद्ध नहीं हैं। बस फिर क्या था, उसने सब पदों पर कैथोलिकों को नियुक्त किया। आयरलैंड में उसने टिरकोनेल (Tyrconnel) को जो कैथोलिक था, मुख्य शासक बनाया। परन्तु अभी यह सब न्यायसंगत न था। उसने अपना अभीष्ट सिद्ध करने के लिए नानकनफ़र्मिस्ट लोगों के साथ भी उपकार करना चाहा, जिससे उसके कार्यों में कैथोलिकों के प्रति पक्षपात न जान पड़े। अतः उसने १६८० में एक घोषणा (Declaration of Indulgence) द्वारा कैथोलिकों तथा डिसेंटरों को प्रार्थना करने की स्वतन्त्रता

दे दी। इससे प्रजा में हलचल मच गई और लोगों को उसकी धार्मिक नीति पर संदेह होने लगा। परन्तु यह सन्देह पुष्ट न हुआ था क्योंकि इसे लोग उसकी धार्मिक सहिष्णुता का परिणाम समझते थे।

इधर जेम्स इङ्गलैंड में कैथोलिकों को स्वतन्त्रता दे रहा था, उधर लुई ने फ्रांस में प्रोटेस्टेंट ह्यूजनाट जनता को नष्ट करने के अभिप्राय से उसके ऊपर कठोर अत्याचार किये। ह्यूजनाट लोग सहस्रों की संख्या में फ्रांस से भाग कर इङ्गलैंड, हालैंड या प्रशिया में जा बसे।

आंग्ल चर्च पर अत्याचार

लुई के इस धार्मिक कट्टरपन का इङ्गलैंड पर बहुत प्रभाव पड़ा। लोग जेम्स की कैथोलिक नीति से तो घबड़ा रहे थे ही, अब लुई के इस आचरण से उनको भारी शंका हुई। उनको विश्वास होने लगा कि लुई और जेम्स मिलकर इस देश में भी कैथोलिक मत का प्रचार करेंगे। इसलिए वे भयभीत हुए और कैथोलिकों का विरोध करने को तत्पर हो गये। लन्दन में एक कैथोलिक गिरजाघर के बनने पर बलवा हो गया। परन्तु फिर भी जेम्स ने अपना काम बन्द न किया। अपने मित्रों की सलाह के विरुद्ध भी वह उसी नीति पर दृढ़ रहा। उसने स्काटलैंड में घोर अत्याचार करके प्रोटेस्टेंटों को दबाया और उच्चपदों पर कैथोलिकों को नियुक्त किया। आयरलैंड में उसने एक कैथोलिक सेना तैयार की जो आवश्यकता पड़ने पर इङ्गलैंड में काम आ सके। अब उसने अपने धार्मिक अधिकारों द्वारा इङ्गलैंड के राजधर्म आंग्ल चर्च को भी बदलना चाहा। यह बहुत ही कठिन कार्य था और जेम्स भूल गया था कि उसके पिता को इसी प्रयत्न के कारण प्राण देने पड़े थे। उसने, लोग पार्लियामेंट की आज्ञा के विरुद्ध, एक धार्मिक न्यायालय (Court of Ecclesiastical Commission)स्थापित किया जिसमें सात न्यायाधीश थे और जिनका प्रधान जज जेफ्रीस था। इसके द्वारा उसने स्वतंत्रता प्रेमी पादरियों को दण्ड देना शुरू किया। परन्तु फिर भी वे लोग कैथोलिकों के विरुद्ध उपदेश देते ही रहे। अनिषेध घोषणा (Declara-

tion of Indulgence) का कोई परिणाम न हुआ क्यों कर डिसेंटर लोग भी प्रोटेस्टेंट धर्म पर अत्याचार न देख सकते थे और उन्होंने भी जेम्स का साथ न दिया। अब उसको ज्ञात हो गया कि टेस्ट ऐक्ट को रद्द कराए बिना कैथोलिकों को स्वतन्त्रता मिलना असंभव है। पार्लियामेंट ने उसकी प्रर्थना को स्वीकार न किया तब उसने पार्लियामेंट भंग कर दी और प्रयत्न करने लगा कि पार्लियामेंट में कैथोलिक तथा डिसेंटर लोगों का चुनाव हो। इसके लिए उसने प्रान्तीय अफसरों (Lord Lieutenant) को लिखा परन्तु कुछ ने जवाब ही न दिया और बहुतों ने त्यागपत्र भेज दिया। लार्ड सभा तो मनमानी बन सकती थी, परन्तु प्रतिनिधि सभा के लिए कठिनाई थी। अतः उसने पार्लियामेंट बुलावे का विचार ही छोड़ दिया और स्वयं निरंकुश शासन करने लगा।

इस असफलता के पश्चात् उसने चाहा कि विश्वविद्यालयों को अपने आधीन करे और वहाँ पर कैथोलिकों को भर कर प्रोटेस्टेंट पादरियों के मुख्य शिक्षा-स्थान पर अपना प्रभाव डाले।

जेम्स तथा विश्वविद्यालय

कैम्ब्रिज में जेम्स चाहता था कि एक कैथोलिक वेनेडिक्टाइन यती (Bendictine Monk) को एम० ए० की उपाधि मिल जाए, परन्तु यह नियम-विरुद्ध था इसलिए वाइस चान्सलर (Vice Chancellor) ने मना कर दिया। इस पर वह पदच्युत कर दिया गया। कैम्ब्रिज पर तो इतनी ही बीती परन्तु आक्सफोर्ड पर अधिक अत्याचार हुआ। जेम्स चाहता था कि वहाँ के मैंगडालेन कालेज (Magdalen; College) के प्रधानाध्यापक पद पर फ़ारमर (Farmer) नामी एक दुश्चरित्र कैथोलिक को नियुक्त करे। अध्यापकों (Fellows) के मना करने पर वे निकाल दिये गये और उसके स्थान पर कैथोलिक अध्यापक नियुक्त हुए। इस अत्याचार से उसने अपने सहायकों को संख्या कम कर ली। अभी तक राजा के समर्थक अमीर लोग, टोरीगण, पादरी और विश्व-विद्यालय थे, परन्तु जेम्स से अपनी संकीर्णता के कारण इन सब को अपने

विरुद्ध कर लिया। अब उसकी शक्ति केवल सेना और कैथोलिक जनता पर निर्भर थी। हाँसलो मैदान (Hounslow Heath) में एक भारी सेना एकत्रित थी। और वह विशेषतः लन्दन को आधीन करने के लिए रक्खी गई थी। उसके सेनापति कैथोलिक थे परन्तु सिपाही अपने धर्म के पक्के थे इसलिए जेम्स को उनसे सहायता मिलने की कोई आशा न थी। अपनी नीति से उसने लुई को भी क्रुद्ध कर दिया था और अब फ्रांस से भी सहायता मिलना कठिन था।

सात बिशपों पर अभियोग १६८८ ई०

ऐसे समय में जेम्स ने दूसरी 'अनिषेध घोषणा' जारी की और आज्ञा दी कि सब गिरजाघरों में पादरी लोग दो सप्ताह तक रविवार को उसको पढ़कर प्रजा को सुनाएं। पादरियों ने एक मत से इसको अस्वीकार किया और सैंक्राफ्ट (Archbishop Sancroft) तथा अन्य ६ बिशपों ने पत्र द्वारा इसका विरोध किया। जेम्स ने उन पर राजविद्रोह का अभियोग चलाया। जज उसके आज्ञानुवर्ती थे, परन्तु जूरी ने सातों बिशपों को 'निर्दोष' ठहराया और वे लोग ३० जून १६८८ ई० को मुक्त कर दिए गए। देश में सर्वत्र खुशी मनाई गई। लंदन में रोशनी हुई और सेना ने प्रसन्नता प्रकट की। इसी बीच में जेम्स की द्वितीय पत्नी (Mary of Modena) के १० जून को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इस बात ने सुलगती हुई आग को भड़का दिया। अब तक लोगों को विश्वास था कि जेम्स की मृत्यु के बाद उसकी प्रोटेस्टेंट पुत्री मेरी को राज्य मिलेगा और क्योंकि जेम्स बुड्ढा था वे लोग उसके अत्याचारों को कुछ समय तक सहने के लिए तैयार थे। परन्तु इस पुत्रोत्पत्ति

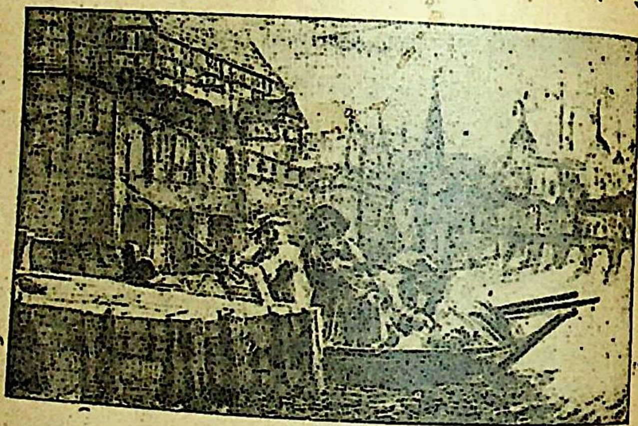
पुत्रोत्पत्ति

से उनको आशंका हुई कि अब इङ्गलैंड में कैथोलिक राजवंश स्थायी हो जायगा। अतः उनको अपनी धार्मिक तथा राजनैतिक स्वतंत्रता के लोप होने का भय हुआ और असन्तोष विद्रोह में बदल गया।

जिस दिन सात बिशप मुक्त हुए उसी संध्या को देश के मुख्य सात

पुरुषों ने विलियम को ससैन्य निमंत्रित किया जिसमें वह आकर उनकी खोई हुई स्वाधीनता को पुनः स्थापित करे।

विलियमको निमंत्रण विलियम ने शीघ्र ही सेना एकत्रित करना आरम्भ किया, परन्तु उसके मार्ग में दो कठिनाइयां थीं। प्रथम, डच शासक उसको इतनी बड़ी सेना लेकर बाहर न जाने दें और ऐसे समय जबकि लुई उनके देश पर दाँत लगाए था; और दूसरी, लुई की जल-सेना जो उसके मार्ग को रोक सकती थी। परन्तु विधाता ने दोनों कठिनाइयाँ दूर कर दीं। डच शासकों को विश्वास हो गया कि इङ्गलैंड की सहायता के बिना लुई का मुक़ाबला असम्भव है इससे उन्होंने विलियम को जाने की आज्ञा दे दी; और उधर जेम्स ने अपनी नीति से लुई को क्रुद्ध कर दिया था इसलिए लुई ने विलियम को रोकने का विचार छोड़ दिया। विलियम को इङ्गलैंड पहुँचने में कठिनाई न हुई।



जेम्स द्वितीय का भागना

वह नवम्बर १६८८ में टारवे (Torbay) के स्थान पर सेना सहित जहाजों से उतरा। जेम्स की सेना काम न आई। उसने समझौता करना चाहा, परन्तु उसका समय निकल चुका था विलियम लन्दन पहुंचा और जेम्स को राचेस्टर (Rochester) भेज दिया, परन्तु वहाँ से जेम्स

ने भाग कर फ्रांस में शरण ली। इस प्रकार, विना रक्तपात ही एक राज्यक्रांति हो गई।

विलियम ने पिछली पार्लियामेंट के सदस्य, अमीर तथा पादरियों की सलाह से १६८६ ई० में कनवेंशन (Convention) पार्लियामेंट की बैठक निमंत्रित की। इस सभा ने यह घोषित किया कि जेम्स के भाग जाने से इङ्गलैंड का सिंहासन खाली हो गया है। अतः उसने विलियम तथा मेरी को 'संयुक्त शासक' बनाया। इङ्गलैंड में इस प्रकार राजपद का परिवर्तन ही महान् राज्यक्रांति के नाम से प्रसिद्ध है।

महान राज्यक्रांति (Glorious Revolution

राज्यक्रांति—इसलिये क्योंकि इङ्गलैंड की शासन-पद्धति में भारी परिवर्तन हो गया। अब तक दैवी अधिकार द्वारा राजा लोग शासन करते थे, परन्तु अब उनका पद पार्लियामेंट की अनुमति पर निर्भर था। अभी तक राजा सामान्य नियमों के ऊपर था, परन्तु अब उसको एक मामूली प्रजा की तरह पार्लियामेंट के बनाये नियमों का पालन करना पड़ा। इसी व्यवस्था के लिए अंग्रेज लोग १७ वीं शताब्दी के आरम्भ से लड़ रहे थे और इसी पार्लियामेंट और राजा के झगड़े के फलस्वरूप चार्ल्स प्रथम ने अपने प्राण खोये। परन्तु फिर भी जनता के कष्टों का अन्त न हुआ। १६८८ ई० में जेम्स द्वितीय का भागना और विलियम और मेरी का शासक होना इंगलैंड के इतिहास में एक महान् परिवर्तन है, जो विना रक्तपात के ही सम्भव हो सका। इसी कारण इसे रक्तहीन (Bloodless) राज्यक्रांति भी कहते हैं, राज्यक्रांति रक्तपात रहित हुई अतः इसको महान् राज्यक्रांति (Glorious Revolution) कहते हैं। इस क्रांति ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रभुता का निवास प्रजा में है और राजा अपने कार्यों के लिए प्रजा के सम्मुख उत्तरदायी है। १६८८ की राज्यक्रांति इङ्गलैंड के इतिहास में एक नवीन युग का प्रारम्भ करती है। यहीं से पार्लियामेंट के शासन का आरम्भ होता है। इस प्रकार वह राज्यक्रांति इङ्गलैंड तथा यूरोप—बल्कि संसार की—स्वतन्त्रता के इतिहास में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

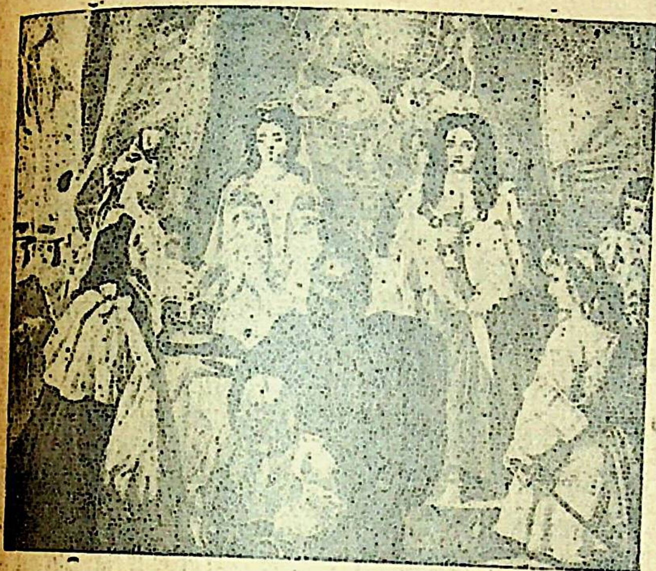
२०—विलियम और मेरी

१६८६—१७०२ ई०

विलियम इंगलैंड का शासक बनाया गया परन्तु उसको सिंहा
पर कोई पैतृक अधिकार प्राप्त न था। वह तो प्रजा की इच्छा
पार्लियामेंट की अनुमति से देश पर राज्य करने
लिए बुलाया गया, अतः यह आवश्यक था
उसके अधिकार पार्लियामेंट द्वारा निश्चित
दिए जाएं। १६८६ ई० में पार्लियामेंट ने विलि
और मेरी के सामने एक घोषणा-पत्र पेश कि
जो Declaration of Rights के नाम से विख्यात है और जि
उसने जेम्स द्वारा किए गए अत्याचारों और अन्यायों की व्याख्या
के बाद देश के पुराने नियमों की रक्षा करने की दृढ़ इच्छा प्रक
इसमें यह घोषणा की गई कि राजा को न किसी नियम को रद्द करने
अधिकार है, और न बिना पार्लियामेंट की आज्ञा कोई कर प्रजा
सकता है। इसके अनुसार धार्मिक न्यायालय (Ccurt of Ec
siastical Commission) तथा इसी प्रकार के अन्य न्याया
गैर कानूनी बताए गए। राजा बिना पार्लियामेंट की आज्ञा स्थायी
नहीं रख सका है और प्रजा को अपनी कठिनाइयों के बारे में राजा
पास प्रार्थना-पत्र भेजने का अधिकार है। यह भी निश्चित हुआ
पार्लियामेंट का चुनाव बिना किसी रोक टोक के होगा और पार्लि
में बोलने तथा बहस करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी और वहाँ कही
बातों के ऊपर न्यायालयों में कोई अभियोग न चल सकेगा।
पार्लियामेंट की बैठक समय-समय पर हुआ करेगी। पुनः विलियम
मेरी इंगलैंड के राजा और रानी माने गए। उनके पश्चात

अधिकार घोषणा (Declaration of Rights)

संतानहीन मर गए, तो जेम्स की पुत्री ऐन को सिंहासन मिलेगा। कैथो-



विलियम और मेरी का अभिषेक

लिक मतानुयायी, या कैथोलिक से विवाह करने वाले व्यक्ति सदा के लिए सिंहासन से अलग कर दिए गए। विलियम ने इसको स्वीकार किया और तब यही घोषणा पार्लियामेंट अधिकार नियम (Bill of Rights) के नाम न क़ानून रूप में बदल दी। इससे राजा के अधि-कार कम हो गए और पार्लियामेंट ने शासन पर प्रभुता पाई। अब राजा दैवी अधिकार का आश्रय लेकर कोई गैर क़ानूनी काम न कर सकता था वह धन के लिए, सेना के लिए और क़ानूनों के लिए पार्लियामेंट के ऊपर निर्भर था, जिसके कारण उसके शासन कार्यों पर पार्लियामेंट में आलोचना हो सकती थी, और पार्लियामेंट की इच्छा-नुसार ही शासन कार्य चल सकता था।

पार्लियामेंट इतने से ही सन्तुष्ट न हुई। उसने शीघ्र ही 'अपने

अधिकार बढ़ाए। इस बात की आयोजना के लिए कि पार्लि
बैठक प्रति वर्ष हुआ करे, प्रतिनिधि सभा
कार्य के लिये धन एक ही साल के वास्ते
करने लगी और राजा खर्च के लिए
पौंड सालाना निश्चित हुए जो सिविल

पार्लियामेंट की प्रभुताकी स्थापना

नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार प्रतिवर्ष पार्लियामेंट का बुलाना के लिए आवश्यक हो गया और पार्लियामेंट भी पूर्णतया नजर रख सकी। इसके पूर्व 'अधिकार घोषणा' (Declaration of Rights) द्वारा स्थायी सेना रखना नियम विरुद्ध माना गया देश के लिए सेना रखना बहुत आवश्यक था। इसलिए वर्ष म्यूटिनी ऐक्ट (Mutiny Act) पास करना आरम्भ इस नियम के बिना सेना का शासन असम्भव था। इससे यह कि स्थायी सेना भी रखी जा सकी और राजा सेना की सहायता की स्वतन्त्रता भी न हर सकता था। इन दो उपायों से ने शासन पर अपना प्रभाव जमा लिया और यह सिद्ध कर दिया बिना काम नहीं चल सकता है। परन्तु पार्लियामेंट का श्रेष्ठ प्रमाण १७०१ ई० का "उत्तराधिकार निर्णय नियम" (Settlement) था जिसके द्वारा ऐन की मृत्यु के पश्चात् प्रथम की दौहित्री सोफ़िया, हैनोवर की डचेस, के पुत्र जार्ज सिंहासन का उत्तराधिकारी माना और वैध शासन की पुष्टि के महत्वपूर्ण नियम बनाए; जैसे (१) भविष्य में आंग्ल चर्च के के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बी राजा न हो सकेंगे। (२) अन्य युद्ध करने के लिए पार्लियामेंट की स्वीकृति आवश्यक होगी पदच्युत न किए जा सकें जब तक पार्लियामेंट राजा से प्रार्थना न करे। इस प्रकार न्यायधीशों को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई राजा की अप्रसन्नता का भय न रहा। प्रजा भी अन्यायपूर्ण

। इन धाराओं से पार्लियामेंट नें वैयक्तिक स्वतन्त्रता को दृढ़ करने के तिरिक्त प्रतिनिधि सभा (,House of Commons) की महत्ता को गया और आन्तरिक तथा बाह्य नीति ही को पार्लियामेंट की मति पर निर्भर कर दिया।

इसी राज्यकाल में पार्लियामेंट ने प्रजा की स्वतन्त्रता बढ़ाने के कुछ र उपाय भी किए। इस समय यह तो स्थिर हो गया था कि पार्लियामेंट की बैठक प्रति वर्ष हुआ करे, परन्तु अब भी यह सम्भव था कि राजा अपनी चाही हुई प्रतिनिधि सभा को पाकर उसको बहुत दिन तक न बदले और जन सम्मति के विपरीत शासन करे। अतः तीन वर्षीय नियम द्वारा यह निश्चित हुआ कि र्लियामेंट का चुनाव प्रति तीन वर्ष के उपरांत हुआ करे। इससे यह भ हुआ कि शासन के ऊपर प्रजा का प्रभाव हो सका और प्रतिनिधि- अपने उत्तरदायित्व का ध्यान रखने लगे। इस नियम में आगे चल कुछ परिवर्तन हुए। दूसरी बात जो इस काल में हुई वह १६८० धार्मिक सहिष्णुता के लिए टालरेशन ऐक्ट (Toleration Act) भी एक नियम का बनाना था। इसके द्वारा भिन्न-भिन्न मतावलम्बियों प्रार्थना करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। यद्यपि कैथोलिक लोग अब राजकर्मचारी न हो सकते थे, तथापि प्रोटेस्टेंट के लिए किसी प्रकार रोक-टोक न रही। धार्मिक सहिष्णुता युग का यहाँ से आरम्भ होता। इसके अतिरिक्त छापेखाने को स्वतन्त्रता मिल गई। इसके पहले राज-चारी प्रत्येक पुस्तक या समाचार-पत्र को छपने के पूर्व देख लेते थे र यदि उसमें चर्च या राजा के विरुद्ध कोई बात होती थी तो उसको बंद कर देते थे। परन्तु अब स्वतन्त्रपूर्वक समाचार-पत्र और पुस्तकें सकती थीं। इसका प्रभाव यह पड़ा कि राजनैतिक शिक्षा सम्भव सकी और जनता स्पष्टतया अपने विचार प्रकट कर सकती थी।

न वर्षीय नियम (Triennial Act) इत्यादि

विलियम ने ह्विग और टोरी दोनों दलों को प्रसन्न रखने के लिए

दलबंदी शासनका आरम्भ—कैबिनेट प्रजा का उत्थान

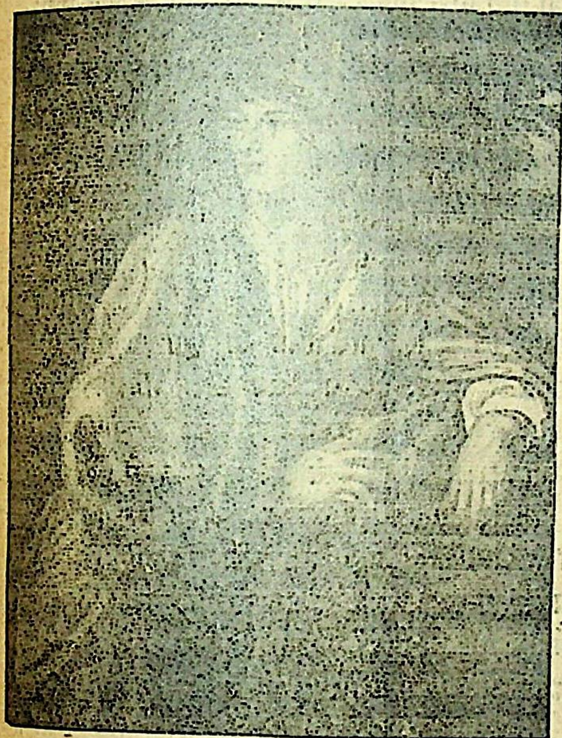
आरम्भ में दोनों ही दलों से मंत्रियों को चुन कर नियुक्त किया। ... दोनों ही दलों की सहायता की आवश्यकता ... क्योंकि दोनों के पारस्परिक सहयोग और सन्तु... से ही देश में शान्ति रह सकती थी। इसलि... उसने लार्ड डेनबी, हैलीफैक्स (Halifax) ... गोडोल्फिन (Godolphin) आदि को शास... भार सौंपा। इससे वह आशा करता था कि काम सरलता से हो सकेगा



गोडोल्फिन

परन्तु थोड़े समय बाद ह्विग और टोरियों में "क्षमा नियम" (Indem...

nity Bill) के ऊपर झगड़ा हो गया। इस नियम का मतलब था कि जेम्स के समय में किए गए नियम विरुद्ध कार्यों के लिए कुछ कर्मचारियों को अभयदान दे दिया जाये। ह्विग दलवाले इसके विरुद्ध थे।



अर्ल आफ संडर लैंड

इससे दोनों में झगड़ा छिड़ गया और शासन कार्य असम्भव हो गया। विलियम बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने पार्लियामेंट भंग कर दी। चुनाव में टोरी दल को विजय प्राप्त हुई क्योंकि ह्विगों ने अपनी असहिष्णुता से प्रजा को अप्रसन्न कर दिया था। टोरियों की बहुतायत से पार्लियामेंट ने एक्ट आफ ग्रेस (Act of Grace) नामी नियम बनाया जिससे

उन लोगों को क्षमा मिल गई। परन्तु अभी तक शासन सुविधापूर्वक न हो सकता था। पार्लियामेंट अधिकार तो पा गई थी, परन्तु उन अधिकारों को कार्य-रूप में परिणत करना सहज न था। उसके पास कोई ऐसी संस्था न थी जिसके द्वारा वह अपनी बनाई हुई नीति का पालन करा सके। मन्त्री सभा द्वारा नियुक्त होते थे और उसी के प्रति उत्तरदायी थे। पार्लियामेंट उनके ऊपर अभियोग चला सकती थी जैसा कि पहले कई बार हो चुका था। परन्तु यह पर्याप्त न था। विलियम ने दोनों दलों के सहयोग से शासन करना चाहता था परन्तु वह असफल हुआ। ऐसे अवसर पर १६६३ ई० में जेम्स के मंत्री संडरलैंड (Sunderland) ने विलियम को सलाह दी और वह एक ही दल, सम्भवतः ह्विग दल, के ही सब मंत्री नियुक्त करें। उसका आशय था कि पार्लियामेंट के सर्वप्रधान दल के सब मंत्रियों को नियुक्त करने से शासन कार्य सफलता से हो सकता है और पार्लियामेंट का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो सकता है विलियम ने १६६५ ई० तक सब टोरी मंत्रियों को अलग कर दिया। १६६५ ई० में नए चुनाव में ह्विगों की संख्या अधिक थी इसलिए ह्विग मंत्री ही शासन-कार्य करते रहे, परन्तु १६६८ ई० में टोरियों ने विजय प्राप्त की और शासन भार उनके हाथों में आ गया। इस प्रकार इंगलैंड की शासन शैली में एक नई प्रथा चल निकली कि जो दल प्रतिनिधि सभा में अधिक संख्या में हो उसी दल से मन्त्री नियुक्त किए जाएं और जब तक उनकी सामर्थ्य पर्याप्त रहे शक्ति में रहें। इसका प्रभाव यह पड़ा कि देश में दो दल संगठित रूप से बन गए, एक वह जिसके हाथ में शासन हो और दूसरा वह जो विरोध करे और सदा ही शासन कार्य संभालने के लिए तैयार रहें। इसके अतिरिक्त, शासन कार्य पार्लियामेंट के आधीन हो गया और राजा विशेष हस्तक्षेप न करने लगा। मंत्री अपने कार्य के लिए प्रतिनिधि सभा को उत्तरदायी थे, अतः राजा उनसे, प्रतिनिधि सभा के मत के विरुद्ध कोई काम न ले सकता था। इस प्रकार इङ्गलैंड में प्रजातन्त्र का आरम्भ हुआ और

कैबिनेट प्रथा का उत्थान हुआ जो आज तक प्रचलित है और संसार के सब देशों के लिए आदर्श है।

विलियम के राज-काल में इङ्गलैंड बराबर फ्रांस से युद्ध करता रहा, जिसका वर्णन आगे होगा। विलियम की सब शक्ति इसी में लगी थी।

आर्थिक प्रबन्ध

उसे इंगलैंड का राज्य इसीलिए आवश्यक था क्योंकि इंगलैंड की सहायता के बिना लुई पर विजय पाना सहज न था। इस कार्य में ह्विग लोग विलियम के सहायक थे कि लुई की विजय के साथ ही साथ इंगलैंड में जेम्स का पुनरागमन और कैथोलिक धर्म का प्रचार दोनों ही सम्भव नहीं वरन् आवश्यक हो जायंगे। अतः वे लोग भी प्राणपण से विलियम की युद्ध-नीति का समर्थन करते थे। युद्ध के लिए धन की आवश्यकता थी परन्तु इंगलैंड का व्यापार नष्ट हो गया था और युद्ध के कारण देश में दारिद्रय फैल रहा था। ऐसे समय में ह्विग मंत्री मांटेगू (Moutague) ने विलियम पेटरसन (William Paterson) नामी स्काट की सम्मति के अनुसार, एक बैंक (Bank of England) स्थापित किया और इसके द्वारा देश की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रजा से ऋण लिया। १२ लाख पौंड का ऋण दस दिन में ही प्रजा से मिल गया और यह ऋण ही जातीय ऋण (National Debt) के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

विलियम का शासन शांतिपूर्वक आरम्भ न हो सका, क्योंकि देश में जेम्स के सहायक अब भी बहुत थे। विशेषकर आयरलैंड और स्काट-

स्काटलैंड में युद्ध

लैंड में उससे सहानुभूति रखने वालों की संख्या अधिक थी। जेम्स भी फ्रांस में लुई की सहायता से पुनः इङ्गलैंड का सिंहासन पाने का प्रयत्न कर रहा था और विदेशियों को सहायता दे रहा था। स्काटलैंड में जेम्स के भागते ही अधिकांश जनता ने विलियम के राज्य को स्वीकार कर लिया, क्योंकि वे लोग भी जेम्स के अत्याचारों से पीड़ित थे। परन्तु कुछ लोग अब भी

जेम्स के पक्षपाती थे और उसी को असली राजा मानते थे। इनका लार्ड डंडी (Dundee) था। उसने स्काटलैंड के पहाड़ी हिस्सों रहने वाले लड़ाके डाकुओं को जेम्स के पक्ष में युद्ध करने के उत्तेजित किया। विलियम ने मैके (Mackay) के नेतृत्व में एक भेजी परन्तु जब तक ये लोग संभल सकें, डंडी की सेना ने इनको क्रैंकी (Killiecrankie) के युद्ध में विध्वंस कर दिया (१६८६ ई.) पहाड़ियों को विजय प्राप्त हुई, परन्तु युद्ध में डंडी को गहरी चोट जिसके कारण वह शीघ्र ही मर गया। उसके मरने से सेना छिन्न-भिन्न हो गई और विद्रोह का अन्त हो गया। विलियम की सरकार ने पहाड़ी देशों को शांत करने के लिए कई उपाय किए। इनमें एक नियम था कि बड़े-बड़े सरदार निश्चित तिथि तक शपथ खाएं कि वे विलियम को राजा स्वीकार करते हैं।

इसी समय आयरलैंड में भी विद्रोह की आग भड़क उठी। जेम्स स्वयं कैथोलिक था और चाहता था कि आयरलैंड के कैथोलिकों की सहायता से इङ्गलैंड पर अपना अवैध शासन स्थापित करे। इसलिए उसने वहाँ एक कैथोलिक गवर्नर नियुक्त किया था और उन लोगों की एक सेना भी तैयार की थी। इधर आयरिश लोग इङ्गलैंड में प्रोटेस्टेन्ट शासकों के अत्याचारों से पीड़ित थे, इसलिए जेम्स के व्यवहार से उनको स्वतन्त्रता की कुछ आशा हो गई थी। परन्तु शीघ्र ही जेम्स के हट जाने से और प्रोटेस्टेंट विलियम के राजा होने से निराश हो गए और नए शासन का विरोध करने के लिए तत्पर हुए। अपने ऊपर किए गए अत्याचारों के बदले में उन्होंने आयरलैंड निवासी अंग्रेज़ी प्रोटेस्टेंटों का रक्तपात आरम्भ किया। प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकों में युद्ध छिड़ गया। प्रोटेस्टेंटों ने लन्दनडेरी (Londonderry) और एनिसकिलन (Enniskillen) के सुदृढ़ दुर्गों में शरण ली। आयरिश सेना ने इन पर घेरा डाल दिया। जेम्स

आयरलैंड का विद्रोह १६८६-१६९० ई०

भी इसी समय फ्रांस से आ गया, परन्तु लन्डनडरी के प्रोटेस्टेंटों ने उसको नगर में घुसने न दिया। विलियम को भी आयरलैंड आना पड़ा। लन्डनडरी का घेरा १०५ दिन तक चलता रहा, अन्त में सहायता पहुंच जाने से दुर्ग निवासियों ने आयरिश सेना को मार भगाया। एनिसकिलन के निवासियों ने वैरियों को न्यूटन बटलर (Newton Butler) के युद्ध में हराया और अपने नगर की रक्षा की विलियम का मुक़ाबला करने के लिए जेम्स अपनी सारी सेना लिए हुए ब्वायन (Boyne) नदी के दूसरी ओर पड़ा हुआ था। विलियम ने वीरता-पूर्वक नदी पार करके जेम्स को हराया। आयरिश सेना के पैर उखड़ गए और उसने भागकर पहाड़ों में शरण ली। जेम्स निराश होकर फ्रांस लौट गया। विलियम को भी शीघ्र इङ्गलैंड जाना पड़ा, परन्तु उसकी अनुपस्थिति में वर्किल ने आयरिश विद्रोहियों को आंघ्रिम (Anghrim) के युद्ध में पराजित किया और कुछ समय उपरान्त उनके सुदृढ़ दुर्ग लिमरिक (Limerick) को अपने अधीन कर लिया। आयरिश प्रजा को विलियम का शासन स्वीकार करना पड़ा। उनके, ऊपर पहले की तरह अत्याचार होने लगे। उनकी भूमि छीनी गई, उनको पार्लियामेंट में बैठने का अधिकार न मिला और इसी प्रकार सौ वर्ष तक उन पर अत्याचार होते रहे।

इङ्गलैंड में भी विलियम के प्रति विरोध की मात्रा कम न थी। जेम्स के सहायक, जो "जैकोबाइट" कहलाते थे, चाहते थे कि लुई अपनी सेना भेजे और उनके आने पर देश में विद्रोह खड़ा किया जाए। परन्तु लुई चाहता था कि पहले विद्रोह हो तब वह सेना भेजे। बहस में कुछ समय बीत गया और ये लोग निराश होने लगे। तब १६६६ ई० में चालीस आदमियों ने राजा की हत्या करने के लिए एक षड्यन्त्र रचा। वे चाहते थे कि विलियम को शिकार से लौटते समय टर्नहमग्रीन (Turnhamgreen)

षड्यन्त्र तथा विलियम का चरित्र

के स्थान पर भार डालें परन्तु इसका पता लग गया और
पकड़े गए; इसके बाद कोई विशेष प्रयत्न न हुआ।
आरम्भ में यह आज्ञा हुई थी कि राजकर्मचारी और पादरी लोग
यम के प्रति राजभक्ति की शपथ लें; परन्तु चार विशप और
पादरियों ने शपथ लेने से इनकार किया। वे लोग अपने पद
गए और आगे इतिहास में नान जूरर्स (Non-jurors) के
विख्यात हुए। इसके अतिरिक्त कुछ महान कर्मचारियों ने
जेम्स से पत्र व्यवहार रक्खा। इनमें डेनवी, चर्चिल और
थे। पार्लियामेंट में भी विरोध होता था। इसका कारण यह था
को विलियम के प्रति कोई भक्ति न थी।

राजभक्ति की कमी आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि विलि
रिक शासन और प्रजा के हिताहित में कोई विशेष दिलचस्पी न
था। उसका ध्येय था लुई को पराजित करना, अतः उसकी सम्पू
परराष्ट्रनीति संचालन में लगी थी। प्रजा को उसकी युद्धनीति
प्रीति न थी और फिर वह अंग्रेजी मन्त्रियों से गुप्त मन्त्रणा भी न
था। उसके मुख्य मन्त्री डच लोग थे और अंग्रेज लोग इन विदे
द्वेष रखते थे। अतः प्रजा राजा में कोई सहानुभूति न हो
इसके अतिरिक्त विलियम के धार्मिक तथा राजनैतिक विचार भी
प्रिय न थे। वह काल्विन का अनुयायी था, अतः आंग्ल च
उससे प्रसन्न न थे। राजनैतिक दलबन्दियों का भी विशेष
रखता था, इसलिए किसी भी दल की पूर्ण सहायता प्राप्त न कर
वह बहुत मिलनसार न था और देश में उसका कोई मित्र न था
चिड़चिड़े स्वभाव का था। इन सब कारणों से वह प्रजा को प्रिय न
उसकी पत्नी मेरी अंग्रेज होने के कारण सब को प्रिय थी, अत
जीवन में विरोध की आशङ्का कम थी। परन्तु १६९४ ई० में
मृत्यु हो गई और उसके पश्चात् विलियम और प्रजा में कोई सम्
हार। विलियम ने इङ्गलैंड के लिए जो कुछ किया उसका अनुमा

लोगों को न हुआ था। उसने फ्रांस की शक्ति को क्षीण करके, पार्लियामेंट द्वारा शासन को सहायता देकर भावी इंगलैंड का बड़ा उपकार किया और उसकी महत्ता तथा शक्ति को बढ़ाने में भारी सहयोग दिया। विलियम की मृत्यु १७०२ ई० में हुई, अतः फ्रांस से युद्ध करने का भार उसकी उत्तराधिकारिणी ऐन पर पड़ा।

२१—फ्रांस से युद्ध

१६८६—१७१४ ई०

रक्तहीन राज्यक्रांति ने जिस प्रकार इङ्गलैंड की राजनैतिक [illegible] का युग आरम्भ किया उसी प्रकार उसने परराष्ट्रनीति में भी [illegible] वर्तन किया। १६८६ ई० के उपरान्त [illegible] वर्ष से अधिक तक यूरोपीय युद्धों में फंसा [illegible] उसका मुख्य बैरी था फ्रांस और मुख्य [illegible] यूरोप तथा संसार में महत्ता। फ्रांस तथा [illegible] दोनों ही शक्तिशाली देश थे और अपनी [illegible]रिक तथा सैनिक उन्नति के कारण सं[illegible] आधिपत्य जमाना चाहते थे। औपनिवेशिक साम्राज्य तथा समुद्री [illegible] की वृद्धि ये ही दो बातें थीं जिनके कारण ये दोनों देश यूरोप में [illegible] से न रह सकते थे। विलियम तृतीय के समय में इस [illegible] आरम्भ हुआ।

विलियम की परराष्ट्रनीति

१—अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति

इस समय यूरोप में फ्रांस महाशक्तिशाली देश था। उसके [illegible] लुई चौदहवें ने राजा की शक्ति को प्रबल कर दिया था। उसने [illegible] बढ़ाई थी और उसके मन्त्री काल्बर्ट (Colbert) ने कोष में धन [illegible] किया था। लुई की सेना में योग्य सैनिक और इंजीनियर थे। उसकी [illegible] यूरोप में सबसे बढ़कर मानी जाती थी। लुई चाहता था कि उसको [illegible] में सर्वश्रेष्ठ सम्मान मिले। उसका आदर्श था चक्रवर्ती होना। [illegible] अतिरिक्त वह फ्रांस की सीम को राइन नदी तक पहुंचाना चाहता [illegible] जिससे उसका देश बाहरी आक्रमण से सुरक्षित हो जाए, परन्तु [illegible] नदी और फ्रांस के बीच की भूमि को पाने के लिए जमनी के [illegible]

तथा स्पेन के राजा से युद्ध करना आवश्यक था फ्रांस के उत्तरी भाग में नीदरलैंड (आधुनिक बेल्जियम) का प्रान्त था जिस पर स्पेन का शासन था। लुई इस प्रान्त को अपने वश में करना चाहता था। परन्तु इससे हालैंड की स्वाधीनता को भय था, अतः हालैंड में इस नीति का विरोध था। इंगलैंड के लिए भी नीदरलैंड का फ्रांस के आधीन होना हानि-कारक था, क्योंकि यूरोप के साथ इङ्गलैंड का व्यापार नीदरलैंड के द्वारा ही होता था, और फ्रांस के शासन से इसके बन्द हो जाने का भय था। पुनः लुई स्पेन के राज्य को भी अपने अधीन करना चाहता था। स्पेन पर फ्रांस का आधिपत्य हो जाने से स्पैनिश अमेरिका के साथ इङ्ग-लैंड के व्यापार को भारी धक्का पहुँचने का खटका था। पुनः फ्रांस की शक्ति बढ़ने से शक्ति सन्तुलन के बिगड़ जाने का भय था इस प्रकार लुई की आकांक्षाएं सर्वथा यूरोप तथा इङ्गलैंड के लिए हानि कारक था, और यदि सफल हो जाती तो यूरोप पर बोरबन वंश का निरोध एकाधिपत्य स्थापित हो जाता।

विलियम ने अपने जीवन में लुई के विरोध का बीड़ा उठाया था। उसने इङ्गलैंड आने के पहले लुई को हालैंड पर अधिकार करने से रोका था और आस्ट्रिया, स्पेन आदि देशों का एक संघ बना कर फ्रांस का मुक़ाबला किया था। परन्तु इंगलैंड की सहायता के बिना लुई को पराजित करना सहज न था, इसलिए विलियम ने इंगलैंड के शासन को स्वीकार किया था। उसके लिए इंगलैंड के राज्य की उपयोगिता यही थी कि अब वह फ्रांस को आश्रयहीन करके प्रोटेस्टेंट राज्यों तथा आस्ट्रिया और स्पेन का संघ बनाकर लुई को पराजित करे। लुई से विरोध और नीदरलैंड को फ्रांस के आधीन होने से रोकना ये दो ही विलियम की परराष्ट्रनीति के उद्देश्य थे। इसमें इंगलैंड का भी भला था क्योंकि अब इंगलैंड का मुख्य वैरी फ्रांस था। इस प्रकार विलियम ने सिंहासन पर आते ही फ्रांस से युद्ध की घोषणा कर दी।

२—विलियम की नीति

प्रजा भी इससे सहमत थी क्योंकि लुई ने जेम्स को ही इंगलैंड का राजा माना था और उसको फ्रांस में शरण दी थी। इससे इंगलैंड की जनता भी लुई से अप्रसन्न थी, क्योंकि इस प्रकार लुई उनके नए प्रबन्ध को अस्वीकार करता था। अतः विलियम के समय में फ्रांस से जो युद्ध हुआ वह इङ्गलैंड के इतिहास में 'उत्तराधिकारी निर्णय युद्ध' (War of Succession) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि इसके द्वारा यह निर्णय हो गया कि इंगलैंड की पार्लियामेंट को राजा बनाने का अधिकार है, अथवा राजा दैवी अधिकार से शासन कर सकता है। विलियम की नीति का आश्रय १७१४ ई० तक हुआ, यद्यपि उसकी मृत्यु पहले ही हो गई थी। इस काल में बराबर फ्रांस से युद्ध होता रहा।

नीदरलैंड की रक्षा के लिए विलियम ने लुई के विरुद्ध जर्मनी के सम्राट, स्पेन के राजा तथा जर्मनी के कुछ राजाओं का एक संघ बनाया था। वह इंगलैंड की भी सहायता चाहता था, उसी समय उसको राज करने का निमन्त्रण मिला। जेम्स ने भाग कर फ्रांस में शरण ली और लुई ने उसको इंगलैंड का राजा स्वीकार करके राज्य वापस पाने के लिए सहायता देने का वचन दिया। इससे इंगलैंड की प्रजा क्रुद्ध हो गई और आत्मरक्षा के लिए उसने विलियम की नीति का समर्थन किया। युद्ध की घोषणा हो गई। यूरोप में फ्रांस के विरुद्ध नीदरलैंड तथा जर्मनी की रक्षा का प्रश्न था परन्तु इंगलैंड में राज्यक्रान्ति की सफलता का निर्णय इसी पर निर्भर था। लुई चाहता था कि इंगलैंड में विरुद्ध खड़ा करके विलियम को हटा दे और जेम्स को पुनः सिंहासन पर बैठाए जिसमें यह देश उसका सहायक रहे। आयरलैंड में युद्ध हुआ और इंगलैंड में विद्रोह का प्रयत्न किया गया परन्तु निष्फल। विलियम ने नीदरलैंड में जाकर नामूर (Namur) के स्थान पर लुई की सेना को परास्त करके उस प्रान्त को लुई के हाथों में पड़ने से बचाया। इधर समुद्र पर भी युद्ध हुआ। लुई

पञ्चम युद्ध (War of Grand Alliance) १६८९-१६९७ ई०

इङ्गलैंड पर आक्रमण करना चाहता था परन्तु अंग्रेजी जलसेना ने देश की रक्षा प्राणपण से की। अंग्रेजी सेना बीचीहेड (Beachyhead) पर पराजित हुई परन्तु रसेल (Russell) ने ला हाग (La Hague) के युद्ध में फ्रांस की जलसेना को नष्ट कर दिया। फ्रांस को सफलता की आशा न रही। १६९७ ई० में दोनों ही युद्ध का अन्त करना चाहते थे। रिजविक (Ryswick) की सन्धि से यह युद्ध समाप्त हुआ। इसके द्वारा विलियम इंगलैंड का राजा स्वीकृत हुआ और लुई ने प्रण किया कि वह जेम्स की सहायता न देगा। इस प्रकार पहला युद्ध १६९७ में समाप्त हुआ परन्तु वह शांति स्थायी न थी।

स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध १७०२-१७१४ ई०

स्पेन का राजा चार्ल्स द्वितीय सन्तानहीन था और जल्दी उसके मरने की आशा थी। स्पेन के अधीन इटली, नीदरलैंड तथा दक्षिणी अमेरिका भी थे, जिससे उत्तराधिकार का प्रश्न विशेष जटिल हो गया था। चार्ल्स की दो बुआएं थीं और दो बहिनें; बड़ी बुआ का विवाह फ्रांस के राजा के साथ हुआ था जिसकी संतान लुई चौदहवाँ था, दूसरी विवाह जर्मन सम्राट के साथ हुआ था और उसकी संतान लियोपोल्ड (Leopold) तत्कालीन जर्मन सम्राट था। इन दोनों ने स्वयं भी चार्ल्स की बहिनों से विवाह किया था। इस तरह लुई और लियोपोल्ड दोनों ही का हक़ स्पेन के राज्य पर था लुई की माता और स्त्री दोनों बड़ी बहिनें थीं परन्तु उन्होंने विवाह के पूर्व अधिकारों को छोड़ देने का वचन दे दिया था। इस तरह जर्मन सम्राट ही अपना अधिकार प्रबल समझता था। परन्तु इनमें से किसी एक के हाथ में स्पेन के सम्पूर्ण साम्राज्य के जाने से उनकी शक्ति बहुत बढ़ जाती, जिसके लिए दूसरे राष्ट्र तैयार न थे। स्पेन के राजा से किसी प्रकार का समझौता करना असम्भव था। इसलिए १६९८ ई० में लुई तथा विलियम ने स्पेन साम्राज्य के बटवारे के लिए आपस में सलाह की

कारण

और एक 'बटवारा सन्धि' (Partition Treaty) की। इसके अनुसार जर्मन सम्राट की पुत्री, बैवेरिया की डचेस, का पुत्र स्पेन के अधिकांश राज्य का मालिक होता। परन्तु शीघ्र ही वह लड़का मर गया और कठिनाई बढ़ गई। दूसरी सन्धि १७०० ई० में हुई जिसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि लियोपोल्ड के दूसरे पुत्र चार्ल्स को स्पेन के राज्य का अधिक भाग मिले, और इटली के मीलान तथा नेपल्स प्रांत फ्रांस के युवराज के हिस्से में आएं। जब इस सन्धि का पता स्पेन के राजा चार्ल्स को लगा तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ और अधिक बीमार पड़ गया। उसकी बीमारी में एक दानपत्र लिखा गया जिसमें सम्पूर्ण राज्य का अधिकार लुई के दूसरे पोते फ़िलिप (Philip) को दिया गया। स्पेन में बटवारे का विरोध था क्योंकि वे न चाहते थे कि उनके राज्य के टुकड़े किए जाएं। अतः उन्होंने फ़िलिप को उत्तराधिकारी नियत किया जिससे लुई उसके अधिकार को रक्षा कर सके और साम्राज्य के टुकड़े होने से बचाए। शीघ्र ही चार्ल्स की मृत्यु हो गई। लुई के सामने दो मार्ग थे, प्रथम, कि वह सन्धि के अनुसार केवल नेपल्स तथा मीलान से संतुष्ट हो जाए और युरोप में शांति रक्खे, दूसरा, कि वह फ़िलिप के लिए स्पेन का सिंहासन स्वीकार कर ले और विलियम तथा जर्मन सम्राट युद्ध करे। लुई ने फ़िलिप तथा अपने वंश के हित का विचार करके दूसरे मार्ग अनुकरण किया और फ़िलिप को स्पेन का राजा मान लिया।

इससे ही शायद युद्ध न छिड़ जाता परन्तु लुई ने स्पेन पर अपना अधिकार जमाना शुरू किया और अपनी प्रजा के लिए वहाँ विशेष लाभ पाने का आयोजन किया। उसने फ्रांस की प्रजा के लिए स्पेन के उपनिवेशों में व्यापारिक अधिकार लिए जो अब तक केवल इङ्गलैंड को ही प्राप्त थे, और यह घोषित किया कि फ़िलिप अब भी यदि आवश्यकता पड़े तो फ्रांस का राजा हो सकता है। अन्त में उसने जेम्स द्वितीय के मरने पर उसके पुत्र (ओल्ड प्रिटेंडर) को जेम्स तृतीय के नाम से इंगलैंड का शासन घोषित किया। यह बात रिजविक की सन्धि के विरुद्ध

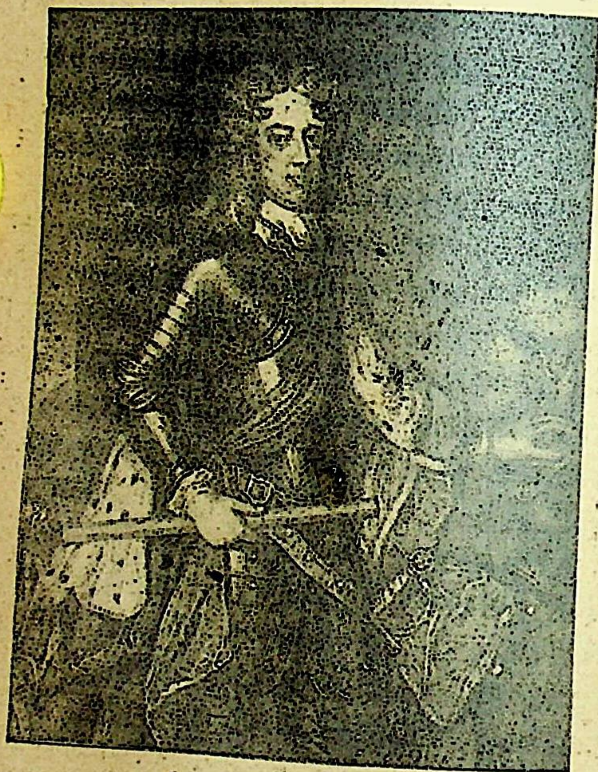
थी और इससे इंगलैंड में विरोध की भयंकर आग भड़क उठी। प्रजा तथा राजा दोनों ने एक मत से लुई को परास्त करने का प्रण किया। इधर जर्मन सम्राट इस निर्णय से अप्रसन्न था और उसने इंगलैंड की सहायता के लिए प्रार्थना की। विलियम लुई के विरुद्ध एक संघ बनाया जिसका उद्देश्य चार्ल्स को स्पेन का राजा बनाना था। युद्ध छिड़ गया, परन्तु इसी बीच में विलियम की मृत्यु हो गई और युद्ध का भार चर्चिल; ड्यूक आफ मार्लबरो (Duke of Marlborough) पर पड़ा।

मार्लबरो विश्वासपात्र न होते हुए भी एक महा योग्य सैनिक था। उसने नीदरलैंड में फ्रांस की सेना का मुक़ाबला किया। इसी बीच में आस्ट्रिया की राजधानी वियना (Vienna) पर फ्रेंच आक्रमण हुआ। मार्लबरो वियना की रक्षा के लिए गया और आस्ट्रिया में उसने ब्लेनहीम (Blenheim) के स्थान पर फ्रेंच सेनाओं को हरा कर आस्ट्रिया के संकट दूर किए। मार्लबरो का सहायक आस्ट्रिया का सेनापति और यूरोप का महा प्रतिभाशाली सेना नायक प्रिंस यूजीन (Prince Eugene) था। इन दोनों ने फिर फ्रांस को नीदरलैंड में रैमिलीज (Ramilles) के स्थान पर परास्त किया। इसके अतिरिक्त मार्लबरो ने १७०८ ई० में ऊडीनार्ड (Oudenarde) तथा दूसरे वर्ष माललपाकेट (Malplaquet) के युद्धों में लुई पर विजय पाई। इन विजयों से लुई की शक्ति कम हो गई और युद्ध में अंग्रेजों के जीतने की आशा हुई। परन्तु स्पेन में फ़िलिप की स्थिति पुष्ट थी। वह 'जातीय' राजा मान लिया गया; प्रजा ने पूर्ण सहायता दी और अंग्रेजों तथा आस्ट्रियन सेनाओं को परास्त किया अंग्रेज सेनानायक पीटरबरो ने फ़िलिप को राजसिंहासन से हटाना असम्भव मान लिया। इस तरह स्पेन में चार्ल्स के राजा होने की कोई आशा न रही। जल-युद्ध में अंग्रेजों की जीत रही। सेनानायक रूक (Rooke) ने जिब्राल्टर पर अधिकार करके भूमध्य सागर पर अंग्रेजी प्रभाव जमा लिया। परन्तु शीघ्र ही सब लोग युद्ध से पीड़ित हो गए

युद्ध

थे। लुई को स्पष्ट विदित हो गया था कि वह युद्ध में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। फ्रांस में राजा की युद्ध-नीति का बहुत विरोध हो रहा था, क्योंकि देश में दरिद्र्य बढ़ रहा था।

यूट्रेक्ट की सन्धि १७१३ ई० इधर इंगलैंड में भी टोरी दल ने अधिकार पा लिया था और वह ह्विगों की युद्ध-नीति का अन्त करना चाहता था। फ़िलिप को स्पेन से हटाना



ड्यूक आफ़ मार्लबरो

असम्भव था। इसी समय चार्ल्स भी जर्मनी तथा आस्ट्रिया का सम्राट


EUROPE
in 1713
Austrian dominions in 1720
Prussian
Sardinian
British Possessions underlined
POLAND
TURKEY
FRANCE
VENICE
Dublin
Limerick
Cork
Blenheim Palace
Beachy Hd.
Hougue
Brest
Ushant
Quiberon
Versailles
Paris
Malplaquet
Oudenarde
Fontenoy
Dunkirk
Ryswick
Berlin
Dresden
Vienna
Blenheim
Schellenberg
Turin
Parma
PAPAL STATES
TUS-CANY
Rome
Naples
Corsica
(1769 French)
Sardinia
(Austrian 1713
exchanged for Sicily 1718)
Sicily
(To Savoy 1713
exchanged for Sardinia 1718)
C. Passaro
Ionian Is.
(to Venice)
Minorca
(1708-1756)
and
(1762-1782)
Barcelona
CATALONIA
Brihuega
Madrid
Almanza
Seville
Gibraltar
(1704)
Tangier
(time of Charles II)
Lisbon

हो गया। अब उसके हाथ में स्पेन के जाने से उसकी शक्ति बहुत बढ़ जाती। फ़िलिप द्वितीय पुत्र था, और यदि लुई प्रण करे कि वह फ़िलिप को फ्रांस के राजसिंहासन का उत्तराधिकारी न मानेगा तो उसको स्पेन का राजा बनाए रखने में कोई हानि न थी। इसलिए टोरी मन्त्रियों और लुई में सन्धि के लिए बातचीत आरम्भ हुई और १७१३ ई० में यूट्रेक्ट (Utrecht) की सन्धि की गई जिससे यह युद्ध समाप्त हुआ। इसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि (१) फ़िलिप स्पेन तथा अमेरिकन उपनिवेशों का स्वामी हो परन्तु वह फ्रांस तथा स्पेन; दोनों देशों का राजा कभी भी न हो सकेगा; (२) इटली में स्पेन के भाग तथा नीदरलैंड दोनों आस्ट्रिया को मिले, और (३) ऐन के बाद बाद हैनोवर वंश को इङ्गलैण्ड का सिंहासन मिलने का पार्लियामेंट का निश्चय सब देशों ने स्वीकार कर लिया; (४) इसके अतिरिक्त इङ्गलैंड को जिब्राल्टर और अमेरिका में नोवास्कोटिया (Nova Scotia) न्यूफ़ाउण्डलैंड (New Foundland) आदि प्रांत मिले, तथा दक्षिणी अमेरिका में दास व्यापार का एकाधिकार मिल गया, और वहां प्रतिवर्ष एक जहाज भेज कर व्यापार करने का अधिकार मिला। इस प्रकार इंगलैंड ने अपने उपनिवेशों की वृद्धि की, उत्तरी अमेरिका में पैर जमाए, समुद्र पर अपनी शक्ति बढ़ाई, और जिब्राल्टर पा जाने से भूमध्यसागर को अपने अधीन कर लिया। इस समय से यूरोप में फ्रांस की शक्ति कम होने लगी और इंगलैंड सर्वशक्तिमान देश गिना जाने लगा। समुद्री शक्ति बढ़ जाने से आंग्ल साम्राज्य की नींव पड़ गई और इंगलैंड का व्यापार तथा साम्राज्य दोनों संसार के दूर-दूर देशों में फैले।

२२-रानी ऐन

१७०२—१७१४ ई०

विलियम के मरने के बाद जेम्स द्वितीय की दूसरी पुत्री ऐन सिंहासन पर बैठी। उसका पति डेनमार्क का राजकुमार जार्ज था। ऐन अपने

चरित्र

अच्छे स्वभाव के कारण "अच्छी ऐन" के नाम से प्रसिद्ध है। सीधी होते हुए भी वह ज़िद्दी थी। उनकी कट्टर आंग्ल चर्च या हाई चर्च पार्टी से सहानुभूति थी। टोरी दल से उसको विशेष प्रेम था, परन्तु अपने राज्य-काल के आरम्भ में उसने ह्विग दल से ही मित्रता रक्खी, क्योंकि ये लोग ही उसको स्पेन के युद्ध में सहायता दे रहे थे। ऐन की अंतरंग मित्र मार्लबरो की पत्नी सरह (Sarah) थी। उसके वश में रानी कोई आठ वर्ष तक रही और उस समय में मार्लबरो तथा ह्विग दल का आधिपत्य रहा। परन्तु अन्त में उसकी मित्रता टोरी दल की एक स्त्री माशम हिल (Mrs. Masham Hill) से हो गई, जिसके फलस्वरूप देश में भारी राजनैतिक परिवर्तन हुआ।

ऐन के समय में सबसे बड़ी बात जो हुई वह इङ्गलैंड तथा स्काटलैंड के दो अलग राज्यों का मिलाया जाना था। यद्यपि जेम्स प्रथम के

स्काटलैंड और इङ्गलैंड की एकता १७०७ ई०

समय में दोनों देशों का राजा एक ही था परन्तु उनकी पार्लियामेंट अलग अलग थी, उनके नियम और शासन प्रणाली भी भिन्न थे। १७वीं शताब्दी के अन्त में इंगलैंड का व्यापार बढ़ा और नए उपनिवेश हाथ लगे। स्काटलैंड वासियों को इस व्यापार में भाग लेने का अधिकार न था; इससे वहाँ की जनता में असन्तोष फैला

और इंगलैंड को धमकाने के विचार से १७०३ ई० में वहाँ की पार्लियामेंट ने प्रस्ताव (Bill of Security) पास किया कि ऐन की मृत्यु के



रानी ऐनी

बाद यह आवश्यक न होगा कि इङ्गलैंड का राजा ही उनका भी राजा हो, वरं उनको अपना स्वतन्त्र निर्वाचन करने का अधिकार होगा। इससे इङ्गलैंड में खलबली मच गई, क्योंकि स्काटलैंड के अलग हो जाने से पुनः दोनों देशों में झगड़ा होता और इङ्गलैंड को उत्तर से आक्रमणों का भय रहता। इंगलैंड की पार्लियामेंट ने भी इसका जवाब दिया और यह घोषित कर दिया कि १७०५ ई० के बाद सब स्काट लोग इङ्गलैंड में

विदेशी समझे जायंगे और उनको व्यापार आदि के कोई अधिकार न रहेंगे। इसका प्रभाव अच्छा पड़ा। दोनों ही देशों में समझौता करने की इच्छा हुई। १७०७ ई० में क़ानून, धर्म तथा कर आदि विषयों पर



डचेस आफ़ मार्लबरो

समझौता हो गया जिससे दोनों देशों का शासन एक हो गया और ग्रेट ब्रिटेन का संयुक्त राज्य क़ायम हो सका। दोनों पार्लियामेंट एक में मिल गए थे। स्काटलैंड को १६ प्रतिनिधि तो लार्ड सभा में और ४५ प्रतिनिधि लोक सभा में भेजने का अधिकार मिला स्काटलैंड के क़ानून तथा चर्च अलग रक्खे गए। इससे दोनों को लाभ हुआ। स्काट लोग

व्यापार में भाग लेने लगे और इंगलैंड को उत्तर से होने वाले आक्रमणों का भय न रहा।

रानी ऐन के समय में राजनैतिक दलबंदी की कथा पूर्ण रूप से ... गई। ह्विग और टोरी दोनों दल पहले ही संगठित हो गए थे और विलि... यम के समय में प्रयत्न भी हुआ था कि सब मंत्री राजनैतिक दलबंदी एक ही दल के हों। परन्तु ऐन के समय तक दोनों दलों से कुछ न कुछ मंत्री रहते थे। इस काल में पहले ह्विग दल का प्रभाव बढ़ा और १७०८ ई० के चुनाव में ह्विग दल पार्लियामेंट में बहुपक्ष में था। अब सभी मन्त्री इसी दल के हो गए और हार्ले (Harley) आदि टोरी मंत्री निकाल दिए गए। ह्विग दल धार्मिक स्वतंत्रता का पक्षपाती था और टोरी लोग आंग्ल चर्च के पक्के अनुयायी थे। टोरियों का प्रभाव शहरों के बाहर बहुत था। १७१० ई० में ह्विग दल के विरुद्ध आंग्ल चर्च के उपदेशक, टोरी दल के अनुयायी डाक्टर सैकवेरेल (Dr. Sacheverell) ने व्याख्यान दिए। ह्विग मंत्रिमंडल ने उपदेशक के ऊपर राजविद्रोह का अभियोग चलाया। देश भर में सनसनी मच गई। सभी की सहानुभूति टोरियों तथा चर्च पार्टी की तरफ थी। जजों ने सैकवेरेल को निरपराध बता कर छोड़ दिया। इस घटना से ह्विग दल बहुत बदनाम हुआ और उसका प्रभाव देश से बिलकुल जाता रहा। ऐन भी टोरियो के पक्ष में थी। उसकी मित्रता मिसेज माशम से हो गई थी। उसने ह्विग मंत्रि-मंडल को हटा करके टोरियों को नियुक्त किया। इनके नेता हार्ले, अर्ल आफ़ आक्सफ़ोर्ड और सेंट जान बोलिंगब्रुक (St. John Viscount Bolingbroke) थे। इन नए मंत्रियों ने सरह को दरबार से निकाल दिया और मार्लबरो को पदच्युत कर दिया। ये लोग फ्रांस से सन्धि करना चाहते थे क्योंकि देश में युद्ध के प्रति घृणा हो गई थी। इन्होंने यूट्रेक्ट की सन्धि करके स्पेन के उत्तराधिकार युद्ध का अन्त किया।

सेंट जान बोलिंगब्रुक चाहता था कि जेम्स के पुत्र जेम्स तृतीय को

ऐन के बाद सिंहासन पर बैठाए। वह हैनोवर वंश को न चाहता था।

उत्तराधिकार के लिए षड्यंत्र

परन्तु इस विचार में उसके सहकारी मंत्री उससे सहमत न थे। उसने चतुरता से हार्ले अर्ल आफ़ आक्सफ़र्ड को मंत्रिदल से अलग कर दिया और सब भारी पदों पर अपने सहायकों को रख दिया। वह चाहता था कि कपट द्वारा ऐन की मृत्यु के पूर्व ही वह जेम्स को इंग-



बेलिंगब्रुक

लैंड में ले आए और उसको सिंहासन पर शान्तिपूर्वक बैठा दे। ऐन बहुत बीमार थी। इधर जनता कैथोलिक राजा के विरुद्ध थी और जेम्स अपना

धर्म न छोड़ सकता था और टोरियों में भी आपस में फुट थी। परन्तु इसके पूर्व कि उसकी तदबीर पूरी हो सके, ऐन की मृत्यु हो गई और हेनेवर वंशीय जार्ज प्रथम राजा बना दिया गया। बोलिंगब्रुक असफल होकर देश से भाग गया।

ऐन के राज्यकाल का हाल बिना मार्लबरो के जीवन पर एक दृष्टि डाले अधूरा ही रहेगा, क्योंकि इस समय मार्लबरो ही देश का प्रधान व्यक्ति था, जिसने देश के इतिहास पर भारी प्रभाव डाला। वह जेम्स द्वितीय के समय में सैनिक नियुक्त हुआ था। जेम्स जब कि वह ड्यूक आफ़ यार्क था, उसको बहुत चाहता था और राजा होने पर उसने उसको उच्च पद नियुक्त किया। उसने युद्ध-कला फ्रांस के प्रसिद्ध सैनिक ट्यूरेन (Turenne) से सीखी थी और १६७२ ई० में उसकी अध्यक्षता में कार्य किया था। उसने जेम्स का साथ सेजमूर के युद्ध में दिया था उसके बाद जेम्स से विमुख हो गया और इंगलैंड के सिंहासन पर प्रोटेस्टेंट राजा बैठाने की इच्छा से उसने १६८८ ई० में जेम्स के विरुद्ध षड्यंत्र रचा और विलियम को निमंत्रित किया। विलियम ने भी उसको उच्च पद पर नियुक्त किया पर शीघ्र अनबन हो गई, क्योंकि मार्लबरो विलियम के प्रिय डच सैनिक से घृणा करता था। वह पदच्युत किया गया। विलियम उसके युद्ध कौशल को अच्छी तरह जानता था और मरने के समय ऐन से उसको प्रधान सेनाध्यक्ष नियुक्त करने के लिए कह गया था। ऐन ने वैसा ही किया और 'स्पैनिश उत्तराधिकार युद्ध' का पूरा भार उसको सौंप दिया। मार्लबरो ने यूजेन के साथ सहयोग करके लुई के छक्के छुड़ा दिये और सर्वत्र सफलता पाई। वह युद्ध तब तक जारी रखना चाहता था जब तक फ्रांस की शक्ति बिल्कुल क्षीण न हो जाए। परन्तु टोरी दल तथा ऐन दोनों ही युद्ध से तंग आ गए थे, अंतः १७११ में राजनैतिक परिवर्तन के बाद मार्लबरो पर रुपया खा जाने का अपराध लगाया गया। वह पदच्युत कर दिया गया और सन्धि

मार्लबरो का जीवन चरित्र

हो गई। उसको लालची, बेईमान आदि कहा गया है, पर इसके प्रमाण कम मिलते हैं। वह चतुर सैनिक था और उसने सब युद्धों में सफलता पाई। उसने पैदल सेना को सुसज्जित किया। वह क़िलों को न घेरता था बल्कि जल्दी सेना ले जाकर वैरी को धोखे में रखकर हरा देता था। वह बड़ा शान्त स्वभाव का था। इन्हीं कारणों से वह महान सैनिक कहा गया है।

२३–स्टुअर्टकाल में इंगलैंड

सामाजिक तथा आर्थिक दशा

१–सामाजिक जीवन

स्टुअर्टकाल में इङ्गलैंड के सामाजिक जीवन का वर्णन तभी ठीक तरह से हो सकता है जब इस युग को दो भागों में बाँटा जाए; प्रथम जेम्स के अभिषेक से चार्ल्स द्वितीय के राज्य पाने के समय (१६०३ से १६६० ई०) तक और दूसरा १६६० ई० से ऐन की मृत्यु तक। प्रथमकाल में सामाजिक जीवन पर प्यूरिटन मत का प्रभाव पड़ा था और देश की राजनैतिक स्थिति में भी एक विशेष वातावरण बना दिया था। दूसरेकाल में चार्ल्स द्वितीय की विलासप्रियता और फ्रांस तथा अन्य यूरोपीय देशों की सभ्यता का प्रभाव अंग्रेजी जनता पर पड़ा और प्यूरिटन रंग सदा के लिए धुल गया। पुनः आर्थिक दशा में परिवर्तन हुआ था और धन बढ़ने से सामाजिक जीवन अपनी सरलता को छोड़कर विलासप्रियता तथा फैशन की ओर अग्रसर हो गया था। इन विशेष परिस्थितियों के कारण एक काल की अवस्था दूसरे से बहुत भिन्न थी। परन्तु यदि प्रजा की समृद्धि का ध्यान रक्खा जाए तो कहना पड़ेगा कि आरम्भ से लेकर अन्त तक सत्रहवीं शताब्दी में देश सुखी रहा और प्रजा के सुख में बराबर वृद्धि होती रही।

मध्यम श्रेणी

सत्रहवीं शताब्दी के सामाजिक जीवन की विशेषता एक नई मध्यम श्रेणी (Gentlemen) का प्रभावशाली होना है। राजनीति, धर्म तथा सामाजिक व्यवहार में, सब जगह ये लोग अग्रसर थे। इस श्रेणी में बहुधा वे लोग समझे जाते थे जो स्कूलों तथा यूनीवर्सिटियों में शिक्षा पाते थे जो अपना निर्वाह भूमि अथवा संचित धन से करते थे। ये लोग

गांवों में रहते थे और घरेलू युद्ध के पहले कृषकों तथा असामियों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करते थे। प्रथम काल में इनका जीवन साधारण और सादा था। १६६० ई० के बाद इस श्रेणी के रहन-सहन



अर्ललोग



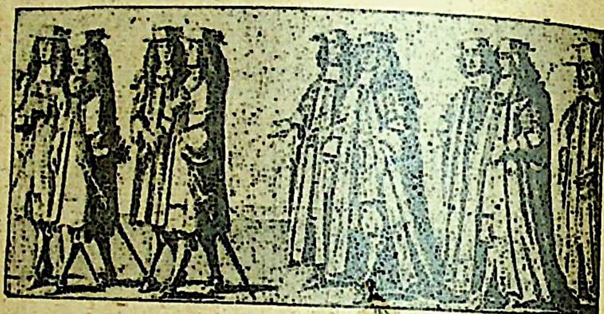
पादरी



ग़रीब आदमी

में बहुत परिवर्तन हो गया। चार्ल्स द्वितीय के "यूरोप भ्रमण" के समय कुछ देश-निर्वासित सज्जन उसके साथ फ्रांस आदि देशों में रहे थे और उन लोगों ने लुई चौदहवें के दरबार की शान देखी थी। अब देश में लौट कर उन्होंने फ्रांस के फ़ैशन को चलाना चाहा। अब वे ग्राम के लोगों के साथ पूर्व का सा समानता का व्यवहार न करते थे।

किसान लोग भी उनको ऊंचा समझने लगे थे। जिसका फल यह हुआ कि ये लोग हिन्दुस्तानी 'नवाबों' के समान गांवों पर मनमाना शासन करते थे। इसी समय लन्दन तथा अन्य नगरों की प्रजा ने भी जोर पकड़ा। खर्च बढ़ने से उनको आय बढ़ाने का उपाय ढूंढ़ना पड़ा, इसलिए उन्होंने कृषि में उन्नति की। स्टुअर्टकाल के अन्त तक इस श्रेणी का प्रभाव राजनीति पर दृढ़ हो गया था और अठारहवीं शताब्दी में इनका ही आधिपत्य हुआ।



सभ्य डाक्टर

जैसा पहले लिख चुके हैं, सत्रहवीं शताब्दी के प्रथम भाग में प्यूरिटन आदर्शों और विचारों ने देश के सामाजिक जीवन पर बहुत प्रभाव डाला था। प्यूरिटन लोग संसार में सच्चरित्रता, धर्मपरायणता और पवित्रता का साम्राज्य चाहते थे वे मनुष्य जीवन को सादा, साधारण और अलंकार-हीन बनाना चाहते थे। बाइबिल उनका मुख्य आधार था और वे प्राचीन ईसाई पवित्रता को फिर से लाना चाहते थे। इन आदर्शों में आमोद-प्रमोद, व्यसन, फैशन और अस्वाभाविकता के लिए कोई स्थान न था। अतः प्यूरिटन लोगों ने थियेटर, खेल तमाशा, कौतुक नाच, गाना मदिरापान इत्यादि व्यसनों को बन्द करना चाहा और प्रजातन्त्र के समय में सरकारी आज्ञा द्वारा उन्होंने इसको रोका। वे गिरजाघरों

प्यूरिटन जीवन

सादा रखना चाहते थे इसलिए वहाँ से मूर्तियां, तस्वीरें तथा अन्य अलंकार का सामान हटा दिया गया और गिरजाघर आडम्बरहीन पवित्र पूजास्थान हो गए। उन्होंने मूल्यवान वस्त्र और वेषभूषा का विरोध किया और स्वयं वे अपने बाल काटते थे और सादे कपड़े पहनते थे। ये विचार क्रामवेल के शासनकाल में कार्य में परिणत हुए थे और उस समय ताश खेलना, नाचना, थियेटर सुन्दर वस्त्र और आभूषण आदि सब बन्द हो गये थे।

चार्ल्स द्वितीय के समय में परिवर्तन

परन्तु चार्ल्स द्वितीय के आने से स्थिति बिलकुल बदल गई। प्रजातन्त्रकाल में जनता प्यूरिटन आदर्शों से असन्तुष्ट हो गई थी और पुनः पुराना विलासमय जीवन व्यतीत करना चाहती थी। अतः जब चार्ल्स लौटा तो सब बन्धन टूट गए और आमोद-प्रमोद, खेल-तमाशे पूरे वेग से होने लगे। चार्ल्स स्वभाव से विलासप्रिय था और फ्रांस में रहकर उसका चरित्र उच्छृंखल हो गया था। उसके साथ वेश्याओं का समूह आया था और उसके दरबार से सच्चरित्रता का लोप हो गया था। उसके उदाहरण से जनता ने भी अच्छी तरह से विलासपूर्ण जीवन व्यतीत किया। मदिरा पान, नाच, थियेटर, गाना और अश्लीलता का जोर हुआ। लोगों ने सुन्दर वस्त्र धारण किए और तड़क-भड़क पूर्ण अपनी अभिलाषाओं को तृप्त किया। चार्ल्स के राज्यकाल में, इस प्रकार फ़ैशन और दुर्व्यसनों का आधिपत्य हुआ और यद्यपि शताब्दी के अन्त में स्थिति कुछ भिन्न हो गई थी तब भी विलासिता कम न हुई। स्टुअर्टकाल के अन्त में भी अमीरों और धनियों का जीवन बहुत अच्छा न था।

नागरिक जीवन

स्टुअर्टकाल में व्यापार की वृद्धि से धन बढ़ गया था, प्रजा सुखी थी अतः जनसंख्या बढ़ गई थी। परन्तु फिर भी नगरों की संख्या में कोई विशेष अन्तर न पड़ा था। लन्दन सबसे बड़ा नगर था और उसकी जनसंख्या ५ लाख के लगभग थी। इसके अतिरिक्त ब्रिस्टल (Bristol) और नारविच

(Norwich) भी बड़े नगर थे परन्तु उनकी जनसंख्या ३०००० से अधिक न थी। इन नगरों की बनावट आधुनिक बड़े शहरों की सी न थी। इनकी सड़कें कम चौड़ी और गन्दी थीं, बस्ती घनी थी और नगर के भीतर पार्क आदि खुले स्थान न होते थे। सड़कों पर रोशनी का कोई प्रबन्ध न था। सड़कों पर दोनों ओर ऊंचे लकड़ी के घर होते थे जो एक दूसरे से मिले होते थे और बहुधा यह सम्भव था कि ऊपर एक घर से



एडीसन

दूसरे घर में सड़क के पार आदमी कूद सकता था। नगरों में स्वच्छता का कोई विशेष प्रबन्ध न था जिससे बीमारियाँ रहती थीं और १६६५ ई० में लन्दन महामारी के प्रकोप का शिकार हुआ था। घर लकड़ी के बनते थे और आग का बहुत भय रहता था। १६६६ ई० में जब लन्दन भयंकर अग्नि से आधा नष्ट हो गया तो सर क्रिस्टोफ़र रेन (Sir Chri-

stopher Wren) की अध्यक्षता में पत्थर के मकान बने। नगरों के मकान अब बड़े और विलास सामग्री से पूर्ण होते थे। बड़े व्यापारियों के घरों में शीशा के बर्तन, अच्छे गद्दे और सुन्दर सामान होता था। नगरों में व्यापार बढ़ रहा था और सौदागर लोग अपनी विचित्र बोलियों में सामान बेचते थे, जैसा कि एडीसन (Addison) के लेखों से पता लगता है नगरों में चाय और कहवाघर (Colfe-houses) खुल गए थे जहाँ नागरिक आपस में मिलते थे और नगर तथा राज्य सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार और वार्तालाप करते थे। परन्तु ग़रीबों की अवस्था नगरों में अच्छी न थी और इनकी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती थी क्योंकि स्टुअर्टकाल में गावों को छोड़ कर बहुत लोग उद्यम की खोज में नगरों में आ बसे थे।

गांवों का जीवन नगरों से बहुत भिन्न था। ग्रामवासी अभी सादा जीवन व्यतीत करते थे और अधिकतर खेती या खेतों में मजदूरी करके अपना निर्वाह करते थे। ग्राम का मालिक एक

ग्रामीण जीवन

जमींदार होता था परन्तु कृषकों को कुछ स्वतंत्र अधिकार भी प्राप्त थे और चराई आदि में पूर्ण स्वतंत्रता थी। इस शताब्दी में खेती की उन्नति हुई थी। किसानों की अवस्था अच्छी थी और कहीं-कहीं उनके घर अच्छे और सजे हुए थे; परन्तु अधिकांश किसान लोग सपरिवार एक कमरे में रहते थे।

इस शताब्दी में जनता में यात्रा करने की इच्छा बढ़ी और लोग देश में भ्रमण करते थे, और बाहर दूसरे देशों में भी जाते थे। मध्यम श्रेणी के लोगों की शिक्षा बिना बाहर-यात्रा

यात्रा और मार्ग

किए हुए पूरी न समझी जाती थी। यात्रा के लिए अच्छे मार्गों का होना आवश्यक है परन्तु अभी एक नगर से दूसरे नगर तक अच्छी सड़कें न बनी थीं बल्कि कच्ची सड़कें ही थीं जिनमें गड्ढे होते थे और कीचड़ के कारण गाड़ियों का चलना कठिन हो जाता था। इस काल में एक स्थान से दूसरे स्थान

के लिए बड़ी सवारी गाड़ियाँ (Stage-coaches) चलने लगी थीं, परन्तु वे एक दिन में ५० मील से अधिक न चलती थीं। मार्ग में डाकुओं का भी भय था और लन्दन के बाहर ही बहुधा लोग लूट लिए जाते थे। ये गाड़ियां धनाढ्यों के लिए ही थीं, क्योंकि इनका किराया अधिक था और गरीब लोग तथा गाँव वाले पैदल ही यात्रा करते थे।



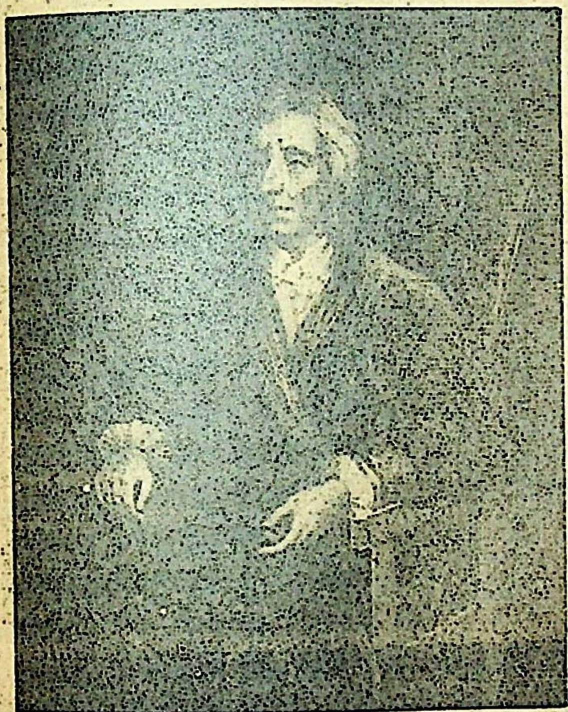
स्टील

स्टुअर्टकाल में भी साहित्य की उन्नति हुई, यद्यपि एलीज़बेथ के राज्यकाल के समान कविता, नाटक आदि केवल साहित्यिक रचनाओं का आधिक्य न था। प्यूरिटन प्रभाव तथा राजा और पार्लियामेंट के राजनैतिक संघर्ष के कारण जनता की रुचि साहित्य से हट कर राजनीति, धर्म आदि विषयों में लग गई थी। फिर भी मिल्टन की कविता ओजस्वनी और भावपूर्ण थी। इस शताब्दी

साहित्य और विज्ञान

(Milton)

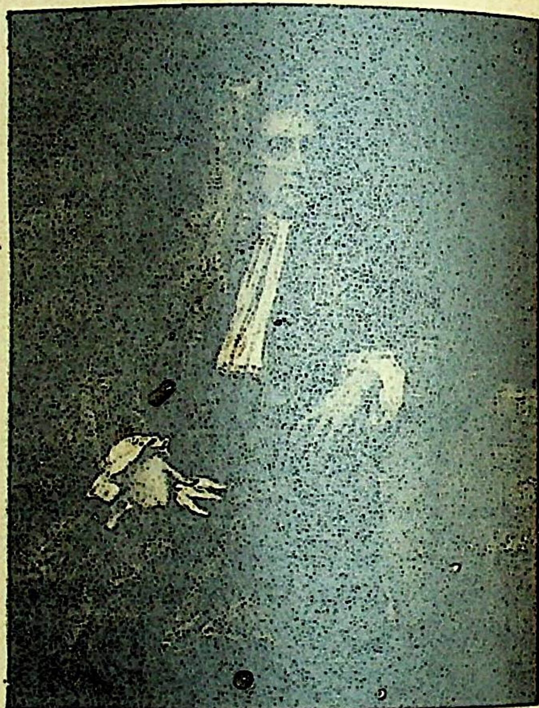
का महाकवि मिल्टन हुआ है। उसका पैराडाइज लास्ट (Paradise Lost) संसार साहित्य का एक अमूल्य रत्न है। मिल्टन ने समकालीन सभ्यता पर कटाक्ष किया और उसकी रचना में प्यूरिटन विचारों की विवेचना है। दूसरा कवि ड्राइडन (Dryden) हुआ है, जिसकी रचना चार्ल्स द्वितीय के समय की सभ्यता में रंगी हुई है। इस



जान लाक

काल में गद्यलेख ने बहुत उन्नति की। बनियन (Banyan) की पिलग्रिम्स प्राग्रेस आज भी सर्वप्रिय है। राजनैतिक साहित्य गद्य ही में लिखा गया और एडीसन (Addison) तथा स्टील (Steele) की पुस्तिकाओं ने ऐन के समय की राजनैतिक घटनाओं पर बहुत प्रभाव

डाला। इसके अतरिक्त राजनीति शास्त्र और तत्त्वज्ञान पर भी कुछ पुस्तकें लिखी गईं। स्टुअर्टकाल का योग्य तत्ववेत्ता जान लाक (John Locke) हुआ है जिसके राजनैतिक सिद्धांतों ने इङ्गलैंड की शासन



सर आइज़क न्यूटन

पद्धति और १६८८ ई० की राज्यक्रान्ति पर बहुत प्रभाव डाला है। उसकी मुख्य पुस्तक आन सिविल गवर्नमेंट (On Civil Government) है।

स्टुअर्टकाल में विज्ञान की भी उन्नति हुई और प्राकृतिक शक्तियों का ज्ञान होने से अन्धविश्वास में कमी हुई। इङ्गलैंड का महान् वैज्ञानिक सर आइज़क न्यूटन (Sir Isaac Newton), जिसने पृथ्वी की आक-

वेग शक्ति को मालूम किया, इसी समय में हुआ था। विज्ञान की ओर इतनी रुचि हुई कि १६६२ ई० में प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने एक संस्था खोली जिसका नाम रायल सोसायटी आफ़ लन्दन (Royal Society of London) रक्खा गया और जो आज भी संसार का सबसे प्रसिद्ध और माननीय परिषद् है। इञ्जीनियरिंग की कला की भी उन्नति हुई थी। सर क्रिस्टोफ़र रेन के बनाए सुन्दर भवन और प्रासाद वास्तुविद्या की पराकाष्ठा के अच्छे उदाहरण हैं। उसका बनाया सबसे प्रसिद्ध भवन सेंटपाल का गिरजाघर (St. Paul's Cathedral) है।

२—आर्थिक दशा

राजनैतिक झगड़ों और घरेलू युद्ध के होते हुए भी स्टुअर्टकाल में इङ्गलैंड की आर्थिक दशा में बहुत उन्नति हुई थी और देश में धन बढ़ गया था जिसके कारण विलियम तथा ऐन के समय में फ्रांस से युद्ध सम्भव हो सका। ट्यूडर काल में ही व्यापार तथा व्यवसाय में उन्नति हुई थी और एलीजबेथ की नीति से बाहरी देशों से व्यापारिक सम्बन्ध हो गया था और इङ्गलैंड की जहाजी शक्ति बहुत मजबूत हो गई थी। स्टुअर्टकाल में यह गति जारी रही और इङ्गलैंड संसार का व्यापारिक केंद्र बन गया। साथ ही उपनिवेश स्थापित किए गए, जिसके कारण मातृदेश अधिक धनवान हो गया।

एलीज़बेथ के समय में ही भारतवर्ष से व्यापार करने का प्रयत्न हुआ था और यूरोप के देशों के साथ भी व्यापार शुरू हो गया था।

व्यापार

उसके समय में ही प्रसिद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी का जन्म हुआ था। जेम्स प्रथम के शासन-काल में पूर्वी देशो के साथ व्यापार में वृद्धि हुई। १६१४ ई० में सर टामस रो ने मुग़ल सम्राट् जहाँगीर के दरबार में आ कर अंग्रेजों के लिए व्यापार करने और सूरत में अपनी कोठी बनाने की आज्ञा माँगी। शीघ्र ही सूरत की कोठी क़ायम हुई और सन् १६३६ ई० में मदास की भी स्थापना हुई। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहले जावा, सुमात्रा

आदि पूर्वी देशों के साथ व्यापार करना आरम्भ किया था, परन्तु वहाँ उसको डच जाति का मुक़ाबला करना पड़ा। अतः १६२३ ई० के अंबायना (Amboyna) के हत्याकांड के बाद कम्पनी ने वहाँ अपना कारबार बन्द कर दिया और तब से केवल भारतवर्ष को ही अपना मुख्य ध्येय बनाया। घरेलू युद्ध और प्रजातन्त्र काल में कम्पनी के प्रति शासन को सहानुभूति न थी। परन्तु चार्ल्स द्वितीय और जेम्स ने पुनः कम्पनी को सहयोग दिया और उसके समय में बम्बई प्राप्त हुआ और व्यापार भी बढ़ा। १६८८ ई० की राज्य-क्रांति के बाद कम्पनी का एकाधिकार भंग हुआ और अन्य कम्पनियाँ भी खुल गईं, परन्तु १७०२ ई० में एक संयुक्त कम्पनी (United East India Company) के बन जाने से पुनः अवस्था सुधर गई। भारतवर्ष के अतिरिक्त स्टुअर्टकाल में अमेरिकन उपनिवेशों, और पश्चिमी इंडीज़, (West Indies) से भी व्यापार होता था। उत्तरी अमेरिका में फ़र (Fur) के व्यापार और हडसन खाड़ी के पास भूमि साफ़ करने के लिए १६७० ई० में हडसन बे कम्पनी (Hudson Bay Company) की स्थापना हुई थी। इसी काल में अंग्रेज़ व्यापारियों ने अफ्रीका के हबशियों (Negroes) को अमेरिका के उपनिवेशों में बेच कर बहुत लाभ उठाया। यह व्यापार 'दास व्यापार' (Salve Trade) के नाम से प्रसिद्ध है और उस समय पुर्तगीज़ तथा डच लोगों के हाथ में था। १६७२ ई० में राजा की अध्यक्षता में राजकीय अफ्रीकन कम्पनी (Royal African Company) स्थापित हुई और उसको दुर्ग बनाने तथा अफ्रीका के पश्चिमी तट पर व्यापार करने का एकाधिकार मिला। ये लोग हबशियों को पकड़ कर ले जाते थे और अमेरिका में बीस पौंड प्रति के दर से बेचते थे। १७११ ई० में जब दक्षिण सागर कम्पनी (South Sea Company) बनी तब यह व्यापार बहुत बढ़ा। टर्की, रूस, फ्रांस, हालैंड तथा जर्मनी आदि देशों से भी लकड़ी, नाज, रेशम, ऊन आदि चीज़ों में व्यापार होता था। परन्तु व्यापार में डच और फ्रेंच जातियों का विरोध करना

पड़ा था, विशेषतया उच जहाजों को सामान ढोने से रोकने के लिए प्रजातंत्र काल में जलयात्रा नियम (Navigation Acts) बनाने पड़े, जिनका फल यह हुआ कि इङ्गलैंड का व्यापार अंग्रेजी जहाजों में ही होता था और इससे देश की जहाजी शक्ति बढ़ी।

इङ्गलैंड के व्यापार की वृद्धि में उपनिवेशों की स्थापना से बहुत सहायता मिली। अमेरिका तथा पश्चिमी इंडीज में व्यापार, कृषि या अन्य कारणों से अंग्रेज लोग जाकर बस गये थे।

उपनिवेश

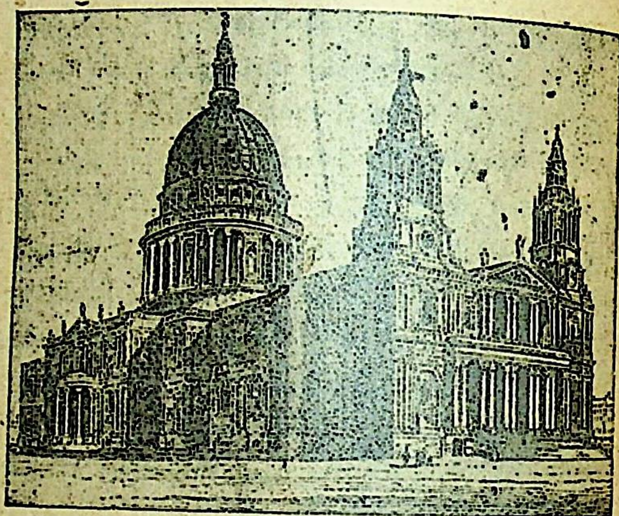
और वहाँ उनके उपनिवेश बन गये थे। इन उपनिवेशों में शक्कर, चावल तथा तम्बाकू की उपज होती थी और इन वस्तुओं में व्यापार होता था जिसमें अंग्रेज व्यापारियों को लाभ होता था। उपनिवेशों की स्थापना विशेषकर इस काल में हुई। जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के धार्मिक तथा राजनैतिक अत्याचारों से पीड़ित होकर कुछ लोग उत्तरी अमेरिका में चले गए थे। और वहाँ बस गये क्योंकि वहाँ वे उन अत्याचारों से मुक्त हो जाते थे। व्यापार तथा कृषि की इच्छा से भी कई उपनिवेश बने। इस प्रकार १६०८ ई० में वर्जीनिया (Virginia) १६३२ ई० में मेरीलैंड (Maryland) और १६३३ ई० में कैरोलीना (Carolina) की स्थापना हुई। इंडीज में भी ब्रैबेडोज (Brabadoes), और जमैका (Jamaica) जो स्पेन से १६६५ ई० में छीना गया था, अंग्रेजों के उपनिवेश थे। उपनिवेशों की महत्ता व्यापार के लिए बहुत थी क्योंकि इनकी उपज दूसरे देशों में भेजी जाती थी और इनमें अंग्रेजी व्यवसाय की खपत थी।

स्टुअर्टकाल में कला-कौशल तथा व्यवसाय ने भी उन्नति की। पहले बहुधा ऊन बाहर भेज दिया जाता था, परन्तु अब देश में ही ऊनी कपड़े बिने जाने लगे और जुलाहे करघों पर यह काम

व्यवसाय की उन्नति

करते थे। मशीनों का युग अभी नहीं आया था इससे ये सब काम हाथ से होते थे। इस सदी के दूसरे भाग में फ्रांस से ह्यूजनाट लोग बहुसंख्या में इङ्गलैंड में आ कर बसे और

उनके आने से कुछ नए व्यवसाय चल पड़े। पहले फ्रांस में रेशमी कपड़े बनते थे परन्तु इस समय इङ्गलैंड में भी रेशम का काम होने लगा। इसके अतिरिक्त लोहे की चीजें भी बनती थीं- परन्तु लोहा लकड़ी की आग में साफ़ किया जाता था इससे न तो उपज ही अधिक होती थी न बनता ही अच्छा था। लोहे का काम बहुधा जङ्गलों के पास होता था। स्टुअर्ट काल में भूगर्भ से निकले हुए कोयले का भी इस काम के लिए



सेंट पाल कैथेड्रल

प्रयोग हुआ और उत्तरी भाग में खानों से कोयला निकालने का व्यवसाय बढ़ा। परन्तु ये दोनों काम अभी प्रारम्भिक अवस्था ही में। स्टुअर्ट राजाओं की विलास-प्रियता और उनकी व्यापारिक नीति, कि बाहरी माल को देश में आने से रोका जाए, दोनों ही ने व्यवसाय की उन्नति में सहायता की। व्यवसाय तथा व्यापार के बढ़ने से धन बढ़ा और जनता सुखी थी जिसका प्रमाण बैंकों और कम्पनियों से होता है।

२४—स्टुअर्टकाल में आयरलैंड

१६०३—१७१४

रानी एलीजवेथ के मरने पर, जैसा पहले ऊपर लिखा जा चुका है, आयरलैंड में शांति न हो सकी थी और विद्रोह के तीनों कारण उपस्थित थे। लार्ड मांटजाय ने अपने कठोर सैनिक शासन की सहायता से विद्रोहियों का कुछ समय के लिये दमन कर लिया था, परन्तु देश में असन्तोष फैला हुआ था और किसी स्थायी शांति की उस समय तक आशा न थी जब तक अंग्रेजी शासन अपनी नीति न बदले। स्टुअर्ट-काल में नीति तो न बदली किन्तु धार्मिक मतभेद और शासकों की भूमि अपहरण नीति ने जोर पकड़ा जिससे विद्रोह भी बढ़ा और अत्याचार-पूर्वक उसका दमन भी किया गया। यह शताब्दी आयरलैंड के इतिहास में अत्याचार और हत्याकांड की शताब्दी है, जिससे दोनों देशों में वैमनस्य बढ़ गया और विरोध स्थायी हो गया।

जेम्स प्रथम के गद्दी पर आने से कैथोलिक आयरिश प्रजा को आशा हुई कि उसके साथ अच्छा व्यवहार होगा, और इस शासन काल का आरम्भ भी ऐसा ही हुआ। विद्रोहियों को अभय दान की घोषणा हुई, पिछली घटनाओं को भुला दिया गया परन्तु इससे अधिक कुछ न हो सका। जेम्स कैथोलिकों की कोई विशेष सहायता करने को तैयार न था। वह उनके विरुद्ध धार्मिक नियमों को हटाने को तैयार न था, बल्कि उसने ज़िद की कि वे लोग प्रोटेस्टेंट गिरजों में जाया करें। इस आज्ञा से आयरलैंड में पुनः अशान्ति हुई और पादरियों ने कई स्थानों पर विद्रोह भी कराया। परन्तु मांटजाय ने शीघ्र ही उसका दमन कर

जेम्स प्रथम का शासन काल

दिया। इसके पश्चात् आयरलैंड में अंग्रेजी नियम, अंग्रेजी अदालतें और भूमि अधिकार सम्बन्धी अंग्रेजी प्रथा को लागू करने का प्रयत्न हुआ। इसके पूर्व चार प्रान्तों में अंग्रेजी नियम लागू हो गये थे परन्तु अब सम्पूर्ण देश में पुराने केल्टिक नियमों को हटाकर नये विदेशी नियम प्रचलित किये गये। इसका आशय यह था कि पराजित जाति विजेताओं के नियमों पर चले जिससे कोई भेद न रह जाये और आयरिश जातीयता नष्ट हो जाये। इन नियमों से यद्यपि कुछ लाभ हुआ तथापि इसके द्वारा जातीय संगठन और दैनिक व्यवहार में इतना परिवर्तन हो गया कि प्रजा भयभीत होकर विरोधी हो गई। सैकड़ों के अधिकार नष्ट हो गए और सारे देश में असन्तोष फैल गया।

भूमि अपहरण और शासन-शैली में परिवर्तन

नियम और व्यवहार में परिवर्तन होने के साथ ही आयरिश लोगों की भूमि भी छीनी गई। १६०७ ई० में नई नीति से भयभीत होकर टीरकोनेल तथा टीरोन (Tyronne) के अर्ल देश छोड़ कर भाग गए। उनकी भूमि पर सरकार ने क़ब्ज़ा किया और साथ ही देश के अन्य पुराने अमीरों की भी जागीरें छीनी गईं। इस उपाय से सरकार के पास अल्स्टर (Ulster) प्रांत की पूरी भूमि आ गई और सारी भूमि अंग्रेजी तथा स्काट प्रजा को दे दी गई और अल्स्टर में उनकी बस्तियां बनाई गईं (Plantation of Ulster १६११ ई०)। इस उपाय से आयरलैंड में प्रोटेस्टैंट जनता की संख्या बढ़ी और ये नये जन-समुदाय आयरिश लोगों के साथ शासित तथा गुलामों के समान व्यवहार करने लगे।

इसके साथ ही आयरलैंड में प्रोटेस्टेन्ट मत ने भी जोर पकड़ा और आंग्ल चर्च ही देश का प्रधान मत माना गया। अब आंग्ल चर्च शासन का एक विभाग हो गया और इसके द्वारा पराजित आयरिश कैथोलिक प्रजा पर अत्याचार होने लगे। प्रोटेस्टेन्ट लोग अपने आप को विजेता समझते थे और कैथोलिक मत तथा कैथोलिक आयरिश जनता से घृणा

करते थे। इस प्रकार अब इस काल में आयरलैंड में प्रोटेस्टेंट मत की प्रधानता का आरम्भ हुआ और इस मत का साथ दे रही थी शासन करने वाली जाति और इन दोनों ने मिल कर अधिकांश प्रजा को गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा। इसका फल यह हुआ कि धार्मिक वैमनस्य की मात्रा बढ़ गई और दोनों में पूर्व से अधिक विरोध हो गया। विरोध का एक कारण और भी था। रोमन कैथोलिक चर्च धीरे-धीरे पोप का अधिक अनुगामी हो गया था और धार्मिक अत्याचार से उसकी प्रति-हिंसा बढ़ गई थी और क्योंकि अब चर्च ही आयरिश प्रजा के जातीय सम्मान की रक्षा कर रहा था, जनता में भी आंग्ल चर्च के प्रति घृणा और क्रोध बढ़ गया था। अंग्रेजी शासन ने उनको सताया भी इतना था कि ऐसे भावों का जन्म आवश्यक था। भिन्न धर्म के कारण उनको नौकरियाँ न मिलती थीं, वे वकालत न कर सकते थे और उनको कठिन जुरमाना की सजा भुगतनी पड़ती थी। इससे वे लोग तंग आ गए और धार्मिक विरोध अधिक हो गया।

इसी समय शासन-विधि में भी विशेष परिवर्तन हुआ। इसके पूर्व अंग्रेज शासक बहुधा सैनिक होते थे, परन्तु अब अधिकांश आंग्ल चर्च के पुजारी या वकील लोग आयरलैंड भेजे गए। ये लोग शासित प्रजा के साथ कठोर व्यवहार करते थे। इस नौकरशाही का शासन सभी कैथोलिकों, चाहे वे पुराने अंग्रेज हों या आयरिश, के लिए कठोर था, और इसने भूमि छीनने का व्यापार सा कर लिया था। आयरलैंड की पार्लियामेंट का संगठन भी इस समय ऐसा बदल गया कि वह भी इस अत्याचारी शासन की सहायक बन गई। सोलहवीं शताब्दी में उसने अपना स्वतन्त्रता-प्रेम दिखलाया था और शासन पर अपना प्रभाव डाला था। परन्तु उसको दबाने के लिए, जेम्स ने तेतालीस नए नगरों (Boroughs) को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया। इन नगरों से प्रोटेस्टेंट अंग्रेज लोग सदस्य होकर जाने लगे जिससे पार्लियामेंट में भी इसी दल की अधिकता हो गई, और उसकी रही सही स्वतन्त्रता का

लोप हो गया। पार्लियामेंट भी अत्याचारी शासन का एक अंग हो गई। इस प्रकार जेम्स प्रथम की मृत्यु के समय अत्याचारपूर्ण शासन पूरी तरह संगठित हो गया था। प्रजा शान्त थी परन्तु असन्तुष्ट।

स्ट्रैफौर्ड का शासन १६३३-४० ई०

चार्ल्स प्रथम को अपनी वाह्य नीति के लिए सेना की आवश्यकता हुई। दूसरे अपने देश में भी राजा की शक्ति बढ़ाने के लिए वह आयरलैंड से सेना चाहता था। उसके प्रतिनिधि फ़ाकलैंड को यह काम सौंपा गया परन्तु जब तक आयरिश प्रजा सन्तुष्ट न हो सेना या धन का मिलना असम्भव था। १६२६ ई० में उसने अपनी ओर से उनके विरुद्ध नियमों को हटाने का प्रण किया। चार्ल्स इस पर तैयार था कि यदि किसी के पास कोई भूमि साठ वर्ष से ऊपर तक रही हो तो उस पर राजा अधिकार न कर सके, कैथोलिक लोग केवल राजभक्ति की क़सम खाएं और उनको सरकारी नौकरियाँ दी जाएं तथा चर्च में न जाने से उसको जुर्माना न देना पड़े। इस उदार प्रण का नाम ग्रेसेज़ (The Graces) पड़ा। कैथोलिक लोग इस पर राज़ी हो गए और उन्होंने राजा को १२००० पौंड दिए। परन्तु चार्ल्स इस समझौते को स्थायी न करना चाहता था, जिससे आयरिश प्रजा को उसके मन्तव्य में संदेह होने लगा। तभी १६३३ ई० में चार्ल्स ने वेंटवर्थ स्ट्रैफ़ोर्ड के अर्ल को आयरलैंड का शासक बनाया। इसने आते ही शासन की काया पलट कर दी।

स्ट्रैफ़ोर्ड उस समय के लिए अनुपयुक्त था, क्योंकि वह अपनी न नीति के कारण आयरिश प्रजा को प्रसन्न और सन्तुष्ट न कर सकता था। वह जिस काम को लेता था उसे पूरी तरह निभाता था। उसे ढील और आलस्य पसन्द न था। उसकी नीति "पूर्णता" (Thorough) की नीति के नाम से प्रसिद्ध है। उसने आयरलैंड में आकर शासन की बुराइयों को दूर किया और अपने कामों से प्रजा का कुछ हित भी किया। उसने समुद्री डाकुओं को नष्ट किया, देश में कपड़े (Linen) का

व्यवसाय खुलवाया और अन्य सुधारों से भी देश की आय बढ़ाई। परन्तु उसकी शासन नीति से प्रजा विरोधी हो गई क्योंकि अब अत्याचार की मात्रा बढ़ गई थी। वह चाहता था कि आयरलैंड में राजा के अधिकारों पर कोई बन्धन न रहे और उसकी आज्ञा सर्वत्र मानी जाए। वह उस देश को पूर्णतया आधीन करना चाहता था। चाहे इसके लिए दूसरी बार सेना द्वारा विजय ही क्यों न करना पड़े। इसके पश्चात् वह आयरलैंड के धन और सेना से चार्ल्स को इंगलैंड में होते हुए राजा और पार्लियामेंट की कलह में सहायता देना चाहता था जिससे उस देश में भी राजा का अनियंत्रित शासन स्थापित हो सके। इस कारण उसने आयरलैंड के शासन को दृढ़ करना चाहा। जाते ही उसने यह घोषित किया कि ग्रेसेज़ के सभी भाग नहीं माने जा सकते हैं, और केवल थोड़े ही अंश को नियम के रूप में परिवर्तित किया जायगा। भूमि अधिकार सम्बन्धी समझौते को उसने रद्द कर दिया। पार्लियामेंट ने इस पर आपत्ति की परन्तु प्रोटेस्टेंटों की सहायता से उसने अपना मतलब पूरा करा लिया। यह हो चुकने पर उसने देश में एक सेना संगठित की जो वह इङ्गलैंड भेजना चाहता था फिर उसने भूमि अधिकारों की जाँच कराई और बहुतों की भूमि छीन ली, अनेकों को जुर्माना आदि देना पड़ा। इससे आयरिश लोग तथा नए बसे हुए प्रोटेस्टेंट सभी बिगड़े, परन्तु उसने अपना काम पूरा किया। आयरिश चर्च को उसने मजबूर किया कि वह अंग्रेजी चर्च के नियमों को स्वीकार करे। इसके बाद उसने यह आज्ञा दी कि सब लोग एक ही चर्च में जाया करें और न जाने पर जुर्माना लगाया गया और नौकरियों से अलग किया गया। इस धार्मिक असहिष्णुता से फिर असन्तोष बढ़ा। स्ट्रैफ़ोर्ड ने फिर डब्लिन में १६४० ई० में पार्लियामेंट बुलाई। इस सभा ने उसके दबाव से एक प्रस्ताव पास किया जिसमें वायसराय के काम की सराहना की। इसके बाद स्ट्रैफ़ोर्ड इङ्गलैंड चला आया और वहाँ से लौट न सका। पार्लियामेंट ने तब उसकी बुराई

की और उसके कार्य को उलट पुलट दिया। वेंटवर्थ के शासन सुधार का अन्त हो गया और आयरिश प्रजा फिर विरोधी हो गई, क्योंकि वह ग्रेसेज़ को चाहती थी।

ग्रेसेज़ की माँग के सिवाय इस समय विद्रोह के लिए कोई अन्य कारण न था, परन्तु फिर भी २३ अक्टूबर १६४१ ई० को ओ मोर (Rory o' More) तथा फेलिम ओनील (Sir Phelim o' Neill) ने विरोध छेड़ दिया। इंगलैंड में क्रान्ति की गति तेज़ हो रही थी। और प्यूरिटन दल का प्रभाव भी बढ़ रहा था। कदाचित इसको देखकर कैथोलिक प्रजा भयभीत हुई हो। कोई कारण हो, पर विद्रोह हुआ और क्योंकि ओनील ने यह घोषित कर दिया कि वह राजा तथा राजतन्त्र का सहायक है, इसलिए लगभग सम्पूर्ण आयरिश जनता ने उसका साथ दिया। जब इसका समाचार इङ्गलैंड पहुँचा तो पार्लियामेंट कठिनाई में पड़ गई। चार्ल्स ने अपनी सेवा अर्पण की, परन्तु उसकी सहायता किसी को रुचिकर न थी। धन की कमी थी अतः सेना के खर्च के लिए धन एकत्रित करने के लिए एक उपाय निकाला गया। आयरलैंड की भूमि के ऊपर क़र्ज़ लिया गया, जिससे अंग्रेज़ जनता के पास उस देश की भूमि आजाए। इस प्रकार कुछ धन हो गया। आरमांड ने विद्रोह का दमन आरम्भ किया। परन्तु इसी बीच में राजा और पार्लियामेंट में युद्ध शुरू हो गया था। चार्ल्स किसी प्रकार सन्धि करना चाहता था, जिससे उसको आयरलैंड से सहायता मिल सके। वहाँ १६४२ ई० में एक जातीय सभा (General Assembly) का अधिवेशन हुआ जिसमें सम्पूर्ण आयरिश जाति के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस सभा ने एक २४ सदस्यों की वृहत् समिति (Supreme Council) बनाई जिसको देश के शासन का भार सौंपा गया। सेना तथा स्थानीय शासन का प्रबन्ध किया गया और स्वतंत्र आयर्लैंड के दूतों को दूसरे देशों में भेजने का उपचार हुआ। अन्त में इसने राजा

१६४१ ई० का विद्रोह

के प्रति अपनी भक्ति प्रकट की। चार्ल्स ने इस नए शासन (Confederates) से सन्धि करने का प्रस्ताव किया। वे लोग स्वतन्त्र शासन के बदले में १०००० सैनिकों से उसको सहायता देने को तैयार थे, परन्तु चार्ल्स इसको न मान सकता था। अन्त में आरमांड ने एक वर्ष के लिए लड़ाई बन्द करने का समझौता कर लिया और आयरिश प्रतिनिधि चार्ल्स के साथ सन्धि करने के लिए इङ्गलैंड आए। १६४६ ई० तक कुछ फल न हुआ और अन्त में (२२ मार्च १६४६) जब चार्ल्स ने उसकी बातों को माना तब उसकी दशा स्वयं ही बहुत हीन थी। दूसरी ओर पार्लियामेंट ने विद्रोह को दबाने का प्रयत्न किया। स्काटलैंड से उसको सैनिक सहायता मिली और मनरो (Robert Monro) वहाँ गया। अधिक सफलता न देखकर १६४६ ई० में क्रामवेल स्वयं सेना सहित आयरलैंड गया और उसने लगभग दो वर्ष में कठोरतापूर्वक विद्रोह का दमन किया। सहस्रों के प्राण गए और आयरिश लोगों की भूमि छीनी गई। प्रजातन्त्र काल में यह शैली क़ायम रही। स्वतन्त्र पार्लियामेंट का अन्त किया गया और आयरिश प्रतिनिधि इङ्गलैंड की पार्लियामेंट में बुलाए गए परन्तु चुनाव का ढङ्ग ऐसा था कि जनता के आदमी आ ही न सकते थे। आयरलैंड अब केवल इंगलैंड का एक छोटा भाग हो गया और उसका पृथक अस्तित्व ही नष्ट हो गया। प्रजातन्त्र काल का यही प्रवन्ध (Settlement) था। १६५६ ई० तक सहस्रों की संख्या में अंग्रेज लोग वहाँ बसाये गये। इस काल में अत्याचार और विरोध दोनों ही मर्यादा के बाहर पहुंच गए।

प्रजातन्त्र काल में हेनरी अष्टम द्वारा आरम्भ की हुई प्रगति का सफल अन्त हुआ। इस अवधि में आयरलैंड में पुरानी प्रथा का अन्त हुआ और इंगलैंड के नियम चालू किए गए। केल्टिक जातीयता का इससे अन्त सा हो गया। उन लोगों की भूमि छीन कर अंग्रेज तथा स्काट बसने वालों (Adventurers) को दे दी गई। पार्लियामेंट का अन्त होने से रही सही स्वतन्त्रता का भी नाश हो गया और दोनों

देशों की एकता (Union) स्थापित हुई। क्रामवेल का शासन कठोर और अत्याचारी था और इस कारण देश में क्षणिक शान्ति हो गई। परन्तु इससे आयरलैंड की हानि हुई और दोनों देशों में वैमनस्य भी प्रबल हो गया क्योंकि अब धार्मिक मतभेद ने जोर पकड़ा था और उसके साथ ही स्वार्थ तथा स्वतन्त्रता के विचार मिश्रित थे। किसी स्थायी शान्ति की आशा न थी और जैसे ही प्रजातन्त्र का अन्त हुआ अवस्था बदल गइ।

राज्य पुनरावर्तन काल १६६०-१६८८ ई०

चार्ल्स द्वितीय के आते ही क्रामवेल का प्रबन्ध अस्त-व्यस्त हो गया। कैथोलिक प्रजा को चार्ल्स की सहानुभूति की आशा थी इससे वे लोग अपनी भूमि को पाने का प्रयत्न करने लगे। दूसरे चार्ल्स की सेना को वेतन न मिला था, उसके सहायक अपनी सेवा का पारितोषक चाहते थे और इन सब का पेट आयरलैंड की भूमि से ही भरा जा सकता था। परन्तु इसमें कठिनाई यह थी कि जिन लोगों ने इसको हड़प कर लिया था वे सहज ही लौटाने को तैयार न थे। इसमें विपत्ति की आशंका थी। आयरिश लोग क्रामवेल के 'प्रबन्ध' को तोड़ देना चाहते थे और वे फिर स्वतन्त्र पार्लियामेंट के लिए आन्दोलन करने लगे। चार्ल्स द्वितीय ने उनकी बहुत बातें मान लीं और आयरलैण्ड में पृथक पार्लियामेंट का पुनर्जन्म हुआ। उसके शासन-काल में बराबर कैथोलिकों के अधिकार बढ़ते ही रहे। परन्तु १६७७ ई० पुनः आरमांड वायसराय बनाया गया और प्रोटेस्टेन्ट समुदाय प्रसन्न हुआ। इसी समय इङ्गलैण्ड में पोपिश षड्यंत्र का किस्सा शुरू हुआ, जिससे आयरलैंड में भी कैथोलिकों के ऊपर अत्याचार किए गए। परन्तु राई हाउस षड्यंत्र के पश्चात् चार्ल्स के प्रति श्रद्धा बढ़ी और उसकी मृत्यु के समय कैथोलिकों को कुछ अधिकार भी मिल गए थे और उनके हित का ध्यान भी रक्खा गया। जेम्स के सिंहासन पर आने से कैथोलिकों की दशा सुधरी। नाम के लिए क्लैरेंडन वायसराय

परन्तु सब काम टीरकोनेल ही करता था। १६८७ ई० में दोनों में ...न होने से जेम्स ने क्लैरेंडन को बुला लिया और टीरकोनेल को ...राय बनाया। जेम्स चाहता था कि आयरलैंड की सहायता से इङ्ग... में कैथोलिक धर्म और विरोध शासन स्थापित करे। टीरकोनेल ...का मित्र था। उसने वहाँ एक सेना तैयार की जिसमें आयरिश कैथो... लोग ही सम्मिलित थे। शासन से भी प्रोटेस्टेंट कर्मचारी अलग ...ए और उनके स्थान पर कैथोलिक नियुक्त हुए। इधर सात ...ों के अभियोग के बाद जेम्स का इङ्गलैंड के सिंहासन पर रहना ...म्भव हो गया। उसने आयरलैंड से सेना बुलाई और टीरकोनेल ने ...दरी की फौज भेजी। परन्तु जेम्स फ्रांस भाग गया और विलियम ... गद्दी पर बैठा। पुनः प्रोटेस्टेंट शासन के हो जाने से आयरिश ...थोलिकों की आशा पर पानी पड़ गया और जेम्स का साथ देने से ... पर भी अत्याचार हुए।

जैसा पूर्व के एक अध्याय में लिखा जा चुका है, कैथोलिक लोगों ... १६८९ ई० में विद्रोह किया और जेम्स ने फ्रांस से आकर उनका साथ दिया। विलियम को भी आयरलैंड जाना पड़ा ...लियम की नीति और बोयन के युद्ध में उसने जेम्स तथा कैथोलिकों ...और लिमरिक की को परास्त किया और सदा के लिए जेम्स को ...न्धि १६९१ ई० बृटिश द्वीप से निकाल दिया। लिमरिक के दुर्ग की विजय के बाद आयरिश सेनाओं के पैर उखड़ ... और उन्होंने लिमरिक की सन्धि को स्वीकार कर लिया। इस सन्धि ...के दो प्रधान अंग थे, एक सैनिक और दूसरा शासन सम्बन्धी। प्रथम ... यह निश्चित हुआ कि सैनिक लोग, सिपाही और अफ़सर दोनों, ...पने स्त्री-बच्चों के यूरोप में जहाँ जाकर बसना चाहें जा सकते हैं ...और सरकार उनके लिए जहाज देगी। इस शर्त के अनुसार लगभग ...१,००० आयरिश देश के बाहर चले गए। दूसरे भाग के द्वारा यह तै हुआ कि आयरिश कैथोलिकों के वे सम्पूर्ण धार्मिक अधिकार जो उनको

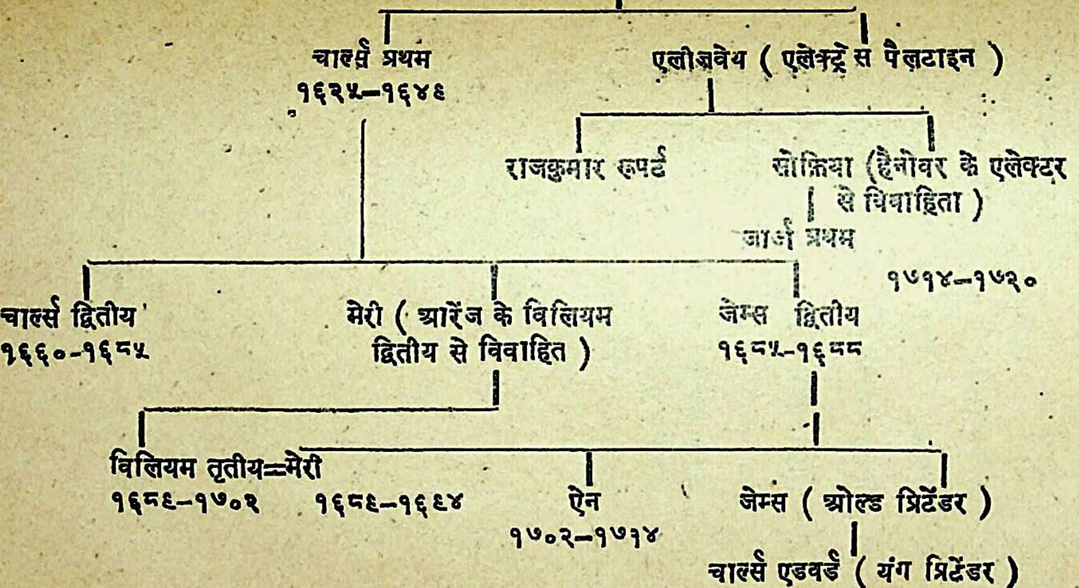
चार्ल्स द्वितीय के समय में मिले हुए थे दिए जायंगे, और जो लोग शीघ्र ही विरोध त्याग देंगे उनकी भूमि न छीनी जायगी। विलियम कैथोलिकों के साथ कोई अत्याचार न करना चाहता था क्योंकि उसने अपने मित्र जर्मन सम्राट से उनके साथ अच्छा व्यवहार करने का प्रण किया था। इस सन्धि में उसके सद्विचारों की झलक है। परन्तु इस सन्धि के स्थायी होने के लिए आवश्यक था कि आयरलैंड की पार्लियामेंट इसको स्वीकार कर ले। पार्लियामेंट में अधिक संख्या प्रोटेस्टेंटों की थी और वे लोग कैथोलिकों को कोई भी अधिकार न देना चाहते थे जिससे वे पुनः विद्रोह कर सकें। इसलिए पार्लियामेंट ने इसको टाला और १६९७ ई० में सन्धि को अस्वीकार किया।

लिमरिक की सन्धि से आयरलैंड के इतिहास में एक नए युग का आरम्भ होता है, जिसको प्रोटेस्टेंट आधिपत्य काल कहना अनुचित न होगा। अब आयरिश प्रोटेस्टेंटों को अपने विरोधियों को दमन करने का अवसर मिला था अतः वे यह चाहते थे कि कैथोलिकों के प्रति कोई ऐसा व्यवहार किया जाए जिससे उनकी शक्ति घट सके और वे पुनः उसके लिए दुःखद प्रतीत हों। बस इस समय से उन्होंने पार्लियामेंट में अपनी प्रभुता क़ायम कर ली और कठोर नियमों द्वारा कैथोलिकों का चैन से रहना असम्भव कर दिया। इंगलैंड वाले आयरलैंड को नैतिक समता देने के लिए तैयार न थे। वे उसको केवल राजकीय उपनिवेश (Crown Colony) समझने लगे। १६९१ में ही आयरिश पार्लियामेंट ने नियम द्वारा कैथोलिकों को पार्लियामेंट में बैठने से रोक दिया। फिर यह भी निश्चित हुआ कि पार्लियामेंट प्रति दो वर्ष में एक बार बैठा करेगी और शासन के लिए धन स्वीकार किया करेगी। अन्य काम सरकार स्वयं करने लगी। इसके पश्चात् लगभग पचास वर्ष तक कैथोलिकों के विरुद्ध नियम बनाते रहे जो दण्ड नियम (Penal Laws) कहे जाते हैं। इनके द्वारा कोई कैथोलिक अपने

प्रोटेस्टेंट आधिपत्य काल

बच्चों को कैथोलिक पाठशालाओं में न पढ़ा सकता था, वह स्वयं अध्यापक हो सकता था, और न कोई सरकारी नौकरी पा सकता था। यदि उसकी स्त्री या बच्चे प्रोटेस्टेंट हो जाएं तो वे निर्वाह के लिए भूमि या धन मुकदमा करके उससे ले सकते थे। यदि उसके लड़के प्रोटेस्टेंट हो जाएं तो उसके अधिकार से निकाल लिए जाते थे और उनको जायदाद का भाग मिलता था। किसी कैथोलिक को चुनाव का अधिकार न था और न वह वकील या न्यायाधीश हो सकता था। वह अस्त्र रख सकता था न स्वतन्त्रतापूर्वक कोई व्यवसाय कर सकता का जासूस उसके पीछे लगे रहते थे, उसको सदा अपने जीवन का भय रहता था। और कैथोलिक पादरियों के लिए तो आज्ञा थी कि यदि देश में पाए जाएं तो तुरन्त ही देश-वहिष्कृत कर दिए जाएं और पुनः आने पर मृत्यु के भागी हों। इन कठोर नियमों का सख्ती से पालन किया गया जिससे अठारहवीं शताब्दी में बहुसंख्यक कैथोलिक आयरिश प्रजा के साथ घोर अत्याचार हुआ और दोनों देशों के बीच में वैमनस्य बहुत बढ़ गया; परन्तु कैथोलिक मत या प्रजा में स्वतन्त्रता की इच्छा का ह्रास न हुआ।




स्टुअर्ट वंशावली
जेम्स प्रथम
१६०३–१६२५
चार्ल्स प्रथम
१६२५–१६४६
एलीज़बेथ (एलेक्टर स पैलटाइन)
राजकुमार रूपर्ट
सोफ़िया (हैनोवर के एलेक्टर से विवाहिता)
जार्ज प्रथम
१७१४–१७२०
चार्ल्स द्वितीय
१६६०–१६८५
मेरी (आरेंज के विलियम द्वितीय से विवाहित)
जेम्स द्वितीय
१६८५–१६८८
विलियम तृतीय=मेरी
१६८६–१७०२
१६८६–१६६४
ऐन
१७०२–१७१४
जेम्स (ओल्ड प्रिटेंडर)
चार्ल्स एडवर्ड (यंग प्रिटेंडर)

स्टुअर्ट वंश

जेम्स प्रथम	१६०३–१६२५
चार्ल्स प्रथम	१६२५–१६४९
प्रजातन्त्र शासन	१६४९–१६५३ और १६५९-१६६०
क्रॉमवेल	१६५३–१६५८
रिचर्ड क्रमॉवेल	१६५८–१६५९
चार्ल्स द्वितीय	१६६०–१६८५
जेम्स द्वितीय	१६८५–१६८८
विलियम तृतीय और मेरी	१६८९–१६९४
विलियम तृतीय	१६८९–१७०२
ऐन	१७०२–१७१४

MODEL QUESTIONS

STUART PERIOD

1. Note the causes of breach between the first two Stuarts and their parliaments.

Hints:—(अ) दैवी अधिकार—राजा अपने कार्यों के लिए ईश्वर सम्मुख उत्तरदायी है।

(ब) धार्मिक मतभेद—जेम्स और चार्ल्स 1st की कैथोलिक धर्म के साथ सहानुभूति।

(स) अनुचित कर—(i) बाहर आने-जाने वाले माल पर चुंगी (ii) बलात् ऋण (iii) उपाधि-वितरण और एकाधिकार (monopaly) देना आदि जेम्स के समय में। (i) बलात् ऋण, (ii) टनेज व पाउन्डेज (iii) सैनिक न्यायालय आदि चार्ल्स Ist के समय में।

(द) प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं के राजाज्ञा पालक मन्त्री अतः पार्लियामेंट से विरोध—बकिंघम, वेंटवर्थ लॉड।

(य) परराष्ट्रनीति—जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम दोनों स्पेन से मित्र-व्यवहार रखना चाहते थे। अतः प्रोटेस्टेन्ट राजा फ्रेडरिक की ठीक सहायता न कर सके, इसलिए पार्लियामेंट से झगड़ा।

2. What were the religious and political principles of the Puritans, and in what did their difference with James 1st lie?

3. Sketch briefly the unconstitutional acts done by charles I during his arbitary rule of eleven years.

4. Estimate the work done by the Long Parliament showing clearly the circumstances under which it met.

5. Discuss the causes of the Civil War. Do you consider it was inevitable ? Give a brief account of the War.

Hints:—(अ) राजा और पार्लियामेंट के बीच झगड़े के कारणों का संक्षिप्त वर्णन:—(i) दैवी अधिकार (ii) धार्मिक मतभेद (iii) अनुचित कर (iv) बुरे मंत्री (v) परराष्ट्रनीति।

(ब) उपरोक्त कारणों से पार्लियामेंट से झगड़ा और चार्ल्स I का ग्यारह वर्ष तक (१६२६–४०) निरंकुश शासन। (i) आयवृद्धि के उपाय नाइट-पद बाँटना (ii) व्यापारियों को एकाधिकार (iii) जहाजी कर (iv) न्याय विरुद्ध अदालतें।

(स) स्काटलैंड में धार्मिक आन्दोलन और प्रथम और द्वितीय विशप युद्ध। धन की कमी अतः पार्लियामेंट का बुलाना आवश्यक।

(द) लाँग पार्लियामेंट १६४०–४९। चार्ल्स I के कार्यों की आलोचना। उसके मंत्रियों पर अभियोग। धार्मिक मामले में पार्लियामेंट में मतभेद और दो पार्टियाँ।

(य) रूट ऐंड ब्रांच बिल, ग्रैंड रिमान्सट्रेंस का पास होना।

(फ) पाँच सदस्यों को पकड़ने का प्रयत्न। पार्लियामेंट का असंतोष और राजा के विरुद्ध लड़ाई की तैयारी। चार्ल्स का १६४२ में नाटिंघम के युद्ध-पताका खड़ी करना और घरेलू युद्ध का प्रारम्भ।

(ज) घरेलू युद्ध का बहुत संक्षिप्त वर्णन और चार्ल्स पर अभियोग तथा उसकी मृत्यु १६४६ ।

6. State briefly the circumstances which led to the execution of Charles I, and the establishement of the Commonwealth in England.

7. Discuss briefly the internal administration of Cromwell. How do you account for the fact that his rule through arbitary was tolerated by the people where as for the same defects Charles I lost his life.

8. Discuss the foreign policy of Cromwell and show the difference with that of Charless II.

9. Discuss the causes of the first Dutch War.

10. Give an account of Clarendon's ministry, and discuss the causes of his downfall.

11. Account for the development of party system in the politics of England during the Stuart period.

12. Trace the expulsion of James II from the throne of England.

Hints:-(अ) मनमथ का विद्रोह और जेम्स II के हौसले का बढ़ना।

(ब) जेम्स की गृह-नीति।

(i) दैवी अधिकार में विश्वास।

(ii) कैथोलिकों की स्वतन्त्रता के उपाय—टेस्ट ऐक्ट के विरुद्ध कैथोलिकों का उच्चपद पर निर्वाचन—आंग्ल चर्च पर अत्याचार और धार्मिक न्यायालय (Court of Ecclesiastical Commission) की स्थापना—केम्ब्रिज और आक्सफ़ोड यूनिवार्सटियों के मामलों में हस्तक्षेप—

(स) जेम्स की वाह्यनीति और कैथोलिकों की स्वतन्त्रता के लिए फ्रांस से मित्रता अतः प्रजा को अप्रसन्न करना।

(द) सात बिशपों पर अभियोग और पुत्रोत्पत्ति-पुत्रोत्पत्ति की सूचना से प्रजा में असन्तोष।

(द) विलियम को निमन्त्रण और जेम्स का फ्रांस भागना।

13. What do you understand by the term 'Glorious Revolution'? What is its consitutional importance?

Hints:—1.(अ), (ब), (स), (द), (य) का संक्षिप्त वर्णन यथापूर्व।

II. महान् क्रांति का अर्थ और उसका महत्त्व।

(i) बिना रक्तपात के राजा और प्रजा के झगड़े का निपटारा और जेम्स का भागना अतः महान् क्रांति।

(ii) १६८८ के बाद राजा पार्लियामेंट के सामने अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी हो गया। अतः इंग्लैंड की स्वतंत्रता युद्ध में इसका महत्वपूर्ण स्थान।

14. "The one aim of William's foreign policy was to save Europe from the ascendancy of Louis XIV. Discuss.

15. State the causes which led William III to Intefere in the Spanish succession qu estion. Give a brief account of the gains to England by the War.

16. Sketch the career of Marlborough.

17 "If at the armada England entered the ra·ce for Colonail expansion, she won it at the Treaty of Utrecht." Explain giving an idea of the colonail gains of England in 1713.

[Students to arrange the points with the help of the book ond answer.]

18. How did the Bill of Rights and Act of Settlement affect the power and growth of the Parliament ?

19. "The Stuart Period, though an age of civil conflicts and politcal strifes, was a period of great social, economic and literary progress in England." Elucidate.

20. Write short notes on—

Millenary Petition, Hampton Court Conference, Bukingham, La Rochelle, Petition of Rights, Root and Branch Bill, Caveliers, Roundheads, Rump Ship Money, Grand Remonstrance. Barebone's Parliament, Hampden, Eliot, Cabal, Clarendon Code, Exclusion Bill, Whigs, Tories, Bolingbroke, Triennial Act, Habeas Corpus Act, Secret Treaty of Dover, Triple Allianec, Bank of England, Godolphin, Treaty of Utrecht.



हैनोवेरियन काल



२५–दलबंदी शासन और कैबिनेट प्रथा

स्टुअर्ट राजाओं कि निरंकुशता का पार्लियामेंट तथा जनता ने विरोध किया और शताब्दी के अन्त तक उनके प्रयत्न को असफल कर दिया।

सत्रहवीं शताब्दी में राजनैतिक विकास

रक्तहीन राज्य-क्रान्ति से जेम्स को अपना सिंहासन छोड़कर विदेश में भटकना पड़ा और पार्लियामेंट ने कुछ शर्तों के अन्दर इङ्गलैंड का राजसिंहान विलियम को दिया। पार्लियामेंट की प्रभुता स्थायी हो गई और उसने शासन के प्रत्येक अंग पर अपना प्रभाव डाला। इसके पूर्व ही उसने यह तै कर दिया था कि मंत्री अपने कार्यों के लिए पार्लियामेंट को उत्तरदायी हैं और यह बहाना कि इन्होंने कोई काम राजा की आज्ञा से किया है उनको दण्ड से बचा न सकेगा। केवल पार्लियामेंट ही नियम बना सकती थी उसी के द्वारा दिए हुए धन से ही शासन चलाता था और मंत्री लोग सदा ही उसका भय मानते थे। ये सब बातें विलियम के आने पर हो गई। परन्तु अभी तक इसका विधान न हुआ था कि शासन में राजा और पार्लियामेंट के बीच में कोई झगड़ा न हो और कुछ काम शान्ति पूर्वक पार्लियामेंट के मतानुसार ही होता रहे। अठारहवीं शताब्दी में इसका उद्योग हुआ और दलबंदी शासन तथा कैबिनेट प्रथा के विकास में यह कमी पूरी हो गई।

इसके पूर्व लिखा जा चुका है कि चार्ल्स द्वितीय के समय में जेम्स को सिंहासन से वहिष्कृत करने के प्रश्न पर पार्लियामेंट तथा देश में दो

दलबंदियाँ
Party System

दल बन गए थे, जिनका नामकरण कुछ काल पश्चात् ह्विग और टोरी दल हुआ। विलियम के आने पर पार्लियामेंट में दोनों दलों के सदस्य मौजूद थे परन्तु टोरी समुदाय नए राजा तथा नई

शासन-विधि का विरोधी था, और उसमें से कुछ लोग जेम्स एवं स्टुअर्ट वंश को फिर देश में लाना चाहते थे। टोरियों के विरोध के कारण तथा ह्विग दल की अपने ही समान परराष्ट्रनीति होने से विलियम ने उसी दल का पक्ष किया और ह्विगों ने भी राजा का साथ दिया। उसी के समय में यह प्रथा भी चल पड़ी कि मन्त्रिमण्डल बहुधा एक ही दल के सदस्यों से बनाया जाए। ऐन के समय में भी ये दोनों दल पार्लियामेंट तथा देश में और रानी के अन्तिम दिनों में टोरियों ने प्रधानता भी पाई थी।

इन दोनों दलों का विकास इस समय आवश्यक था। जब तक शासन की बागडोर केवल राजा के हाथ में थी और पार्लियामेंट का राज-काज पर कोई प्रभाव न था, दलबन्दी होना कठिन था। राजा मनमाने मंत्रियों को नियुक्त करता था और प्रतिनिधि सभा के विरोध करने पर भी शासन चलता रहता था स्टुअर्ट काल में पार्लियामेंट में राजा के विरोधियों की ही संख्या विशेष थी, क्यों कि उस समय में दोनों लड़ाई हो रही थीं। परन्तु प्रजातंत्र के पश्चात् जब सिद्ध हो गया कि पार्लियामेंट पुराना मनमाना शासन न करने देगी और बिना उसकी अनुमति के काम चलना असम्भव है तब दलबन्दी शासन का आरम्भ हुआ। यदि मंत्रीगण प्रतिनिधि सभा के प्रति उत्तरदायी होंगे तो यह आवश्यक है कि कुछ सदस्य उनके सहायक हों और अन्य उनके विरोधी तथा विरोधी इस बात के लिए तैयार रहें कि समय आने पर वे स्वयं शासन की बागडोर अपने हाथ में लेंगे। इस प्रकार विलियम के समय में पार्लियामेंट दो दलों में विभक्त हो गयी। इन दलों का विभाग सिद्धान्त भेद के अनुसार था। इस समय ह्विग लोग राज्यक्रान्ति द्वारा स्थापित शासन विधि, पार्लियामेंट की प्रभुता, तथा वैध शासन के समर्थक थे; और टोरी दल राजा के अधिकारों के सम्मान तथा स्टुअर्ट वंश के पुनरागमन का प्रतिपोषक था। पहले दल में नए धनवान व्यापारी लोग सम्मिलित थे और दूसरे में भूमिपति तथा ग्रामीण लोग। परन्तु स्टुअर्ट निरंकुशता के डर से देश में इस समय ह्विग दल ही मजबूत था।

ऐन के समय में टोरियों ने शक्ति पाई थी, परन्तु बोलिंगब्रुक ने जेम्स तृतीय को लाने का प्रयत्न किया, इससे यह दल बदनाम हो गया।

अठारहवीं शताब्दी में दलबन्दी का इतिहास

हैनोवेरियन राजवंश को अपनी रक्षा के लिए दूसरे दल का आश्रय लेना पड़ा। जार्ज प्रथम तथा द्वितीय के राज्यकाल में जैकोबाइट विद्रोहों के भय के कारण टोरी लोग देश द्रोही समझे जाते थे, इससे १७६० ई० तक ह्विग दल की ही प्रधानता रही और उसने अनेक उपायों से अपना आधिपत्य जमा लिया। बहुधा अमीर लोग ह्विग दल के सदस्य थे और वे लोग अपने प्रभाव से प्रतिनिधि सभा में इसी दल के सदस्य भेजते थे। ह्विग आधिपत्य के इस काल में, जैसा आगे के अध्यायों से प्रकट होगा, देश में वैध शासन, कैबिनेट प्रथा और प्रजा के अधिकार पुष्ट हो गए। जार्ज तृतीय के गद्दी पर आने में टोरी दल ने अपनी नीति बदली। स्टुअर्टों का मोह छोड़ कर उसने प्रतिष्ठित राजा का साथ दिया और पार्लियामेंट के अधिकारों की रक्षा करते हुए उसने राजा के अधिकार को बढ़ाना चाहा। इसके साथ ही उसने देश को नवीन क्रांतिकारी विचारों से अलग रखते हुए साम्राज्य, समाज-सुधार तथा आर्थिक उन्नति का पक्ष लिया। इसका प्रभाव यह पड़ा कि विलियम पिट् के नेतृत्व में टोरी दल ने लगभग ५० वर्ष तक देश का शासन किया और फ्रांस की राज्यक्रांति से इंगलैंड को बचाया। उन्नीसवीं शताब्दी में दोनों दलों में विशेष मतभेद न था, केवल एक उन्नतिशील उदार विचार रखता था जिससे वह उदार दल (Libera) कहलाया और दूसरा, टोरी दल चाहता था कि उन्नति धीरे-धीरे हो और शासन विधि तथा आर्थिक और सामाजिक संगठन में कोई प्रबल क्रांति न हो, इसलिए यह अनुदार दल (Conservative) कहलाया। अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी का इतिहास इन्हीं दोनों दलों की शक्ति ग्रहण तथा अधिकार इच्छा का इतिहास है, और इनके इस प्रयत्न से ही दलबन्दी शासन का कैबिनेट प्रथा का विकास हो सका।

पहले लिखा जा चुका है कि विलियम ने पार्लियामेंट के विरोध को कम करने के लिए लार्ड सण्डरलैंड की राय से एक ही दल से अपने सब मंत्री नियुक्त करना आरम्भ किया। उसके अन्तिम

कैबिनेट प्रथा दिनों में और ऐन के शासन काल में यह प्रथा प्रचलित हो गई कि मंत्रिमंडल के सभी सदस्य एक ही दल विशेष के होते थे और वे उस समय तक शक्ति में रहते थे जब तक प्रतिनिधि सभा में बहुमत उनके पक्ष में हो। बहुमत कम होने पर वे त्याग पत्र दे देते थे और दूसरे दल के नेताओं और सदस्यों को मंत्री बनाती थी। दलबंदी शासन प्रथा का इस समय से आरम्भ हुआ, परन्तु ऐन की मृत्यु तक कैबिनेट प्रथा का पूर्ण विकास न हो सका था उनके मंत्रिमंडल पूरी तरह से पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी न थे, वरन् उनके कार्यों में रानी हस्तक्षेप करती थी, और वे लोग स्वयं भी रानी की आज्ञा का बहाना करते थे और उसकी इच्छा पर निर्भर थे। ऐन ने केवल अपनी खुशी के अनुसार ही मंत्रियों को बहुधा नियुक्त किया था। इस कारण मंत्रिमंडल स्वतंत्र न हो सका और कैबिनेट का सच्चा रूप उसके समय में नहीं मिलता है।

राजनीति विशारदों ने कैबिनेट के कई लक्षण बताए हैं। उनका कथन है कि कैबिनेट उसी मंत्रिमंडल का नाम हो सकता है जो एक ही दल के सदस्यों में समिति हो और जो अपने काम

कैबिनेट के लक्षण के लिए पार्लियामेंट की इच्छा या अनिच्छा पर निर्भर हो; तथा जिसके काम में राजा हस्तक्षेप न करे और समिति प्रतिनिधि सभा की केवल कार्यकारिणी समिति (Executive Committee) के समान हो। अतः इसके मुख्य लक्षण हैं (१) मंत्रिमंडल के सभी सदस्य एक ही दल के हों; (२) वे उसी समय तक शक्ति में रहें जब तक प्रतिनिधि सभा में उनका बहुमत हो; (३) सभी मंत्रियों की एक ही नीति हो और यदि उनकी नीति पार्लियामेंट को पसन्द न हो तो सब एक साथ ही त्यागपत्र दे दें;

(४) उनकी मंत्रणा में राजा कोई भाग न लेता हो और (५) उनका एक प्रधान मन्त्री हो। ऐन के समय तक इन पाँचों लक्षणों का समावेश न था यद्यपि चार्ल्स द्वितीय का "कैबल" एक संयुक्त मंत्रिमंडल था परन्तु न तो वह पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी था, न राजा से स्वतंत्र। विलियम तथा ऐन के मंत्रिमंडल राजा की आज्ञा के अनुसार हुआ काम करते थे और उनका प्रधान राजा ही होता था। अतः कैबिनेट का नाम उनको देना अनुचित होगा। जार्ज प्रथम के आने से कैबिनेट का जन्म सम्भव हो सका। वह अंग्रेज़ी भाषा से अनभिज्ञ था और उसको इंगलैंड के मामलों में दिलचस्पी न थी, अतः उसने मंत्रिमंडल की बैठकों में आना छोड़ दिया और तब वालपोल उसका प्रधान मन्त्री हुआ। उत्तरदायित्व तथा सामुहिक एकता के साथ इसी स्वतन्त्रता को पा लेने से कैबिनेट का विकास हो गया। वालपोल ने इस बात पर जोर दिया कि सब मन्त्रियों की समान नीति हो और वे उसकी आज्ञा मानें। जो कोई इसके विपरीत होता था निकाल दिया जाता था। ह्विग आधिपत्य और वालपोल की चतुरता के कारण १७६० ई० तक कैबिनेट एक प्रबल संस्था बन गई। और उसके पश्चात् सभी राजाओं को उसको मानना पड़ा। जार्ज तृतीय ने अपने शासन के आरम्भ में इस प्रथा को तोड़ना चाहा, परन्तु वह इसमें सफल न हुआ तथा पिट के प्रधान मन्त्री होने से फिर यह संस्था पुष्ट हो गई।

इंगलैंड की शासन-पद्धति कैबिनेट पर निर्भर है। राजा प्रतिनिधि सभा के प्रमुख दल के प्रधान नेता को बुलाकर उसको शासन का भार सौंप देता है और वह अपने सहकारियों को स्वयं ही नियुक्त करता है। प्रत्येक मन्त्री की आधीनता में शासन का एक विभाग होता है परन्तु नीति निर्धारण पूरी कैबिनेट की बैठक में होता है और सभी मन्त्रियों को एक मत होना पड़ता है। यदि उनकी नीति पार्लियामेंट या प्रजा को रुचिकर नहीं है तो सब को एक साथ ही अलग होना पड़ता है इस प्रकार अब देश का शासन पूर्णतया प्रतिनिधि सभा के हाथ में है, उसी के

नेता शासन चलाते हैं और राजा किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। कैबिनेट के विकास ने सत्रहवीं शताब्दी की राजनैतिक समस्या को शान्तिपूर्वक हल कर दिया और फिर यह भय न रह गया कि राजा मनमानी कर सकेगा। अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी में इस प्रथा का प्रयोग होने से देश की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक उन्नति हुई और साम्राज्य बढ़ाने से इङ्गलैंड संसार का सर्व-प्रथम राष्ट्र बन गया।

२६—जार्ज प्रथम व जार्ज द्वितीय

१७१४—१७६० ई०

गृहनीति तथा आन्तरिक इतिहास

ऐन की मृत्यु के बाद ऐक्ट आफ़ सेटलमेंट (Act of Settlement) (उत्तराधिकारी नियम) के अनुसार हैनोवर का शासक जार्ज गद्दी पर बैठा। वह जेम्स प्रथम की दौहित्री सोफ़िया (Sophia) का पुत्र था और प्रोटेस्टेन्ट होने के कारण राज्य का अधिकारी हुआ था

जार्ज प्रथम

पार्लियामेंट के नियमानुसार गद्दी पर बैठने के कारण वह दैवाधिकार का आश्रय न ले सकता था और उसको तथा उसके वंशजों को नियमानुमोदित शासन (Constitutional Govt) करना पड़ा। जार्ज प्रथम ५४ वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा। वह अंग्रेज़ी भाषा तथा अंग्रेज़ी क़ानूनों से अनभिज्ञ था अतः उसको शासन का बहुत काम अपने मंत्रियों के हाथ में छोड़ देना पड़ा। इसका फल यह हुआ कि इङ्गलैंड की शासन-पद्धति में कैबिनेट (Cebinet) प्रथा जारी हो गई।

जार्ज प्रथम के गद्दी पर बैठते ही जेम्स द्वितीय के पुत्र जेम्स एडवर्ड (James Edward) ने जो "ओल्ड प्रिटेन्डर" (Old Pretender) के नाम से प्रसिद्ध था, सिंहासन पाने का प्रयत्न किया। इङ्गलैंड के बहुत टोरी उससे फ्रांस में जा मिले थे। उसको स्काटलैंड के पहाड़ी प्रदेश के रहने वालों (Highlanders) से बहुत आशा थी; क्योंकि उनको अब भी स्टुअर्ट वंश के प्रति बहुत राजभक्ति थी १७१५ ई० में स्काटलैंड में अर्ल आफ़ मार (Earl of Mar) ने

जैकोबाइट (Jacobite) विद्रोह

विद्रोह किया। ओल्ड प्रिटेंडर ने भी लुई की सहायता से आक्रमण किया परन्तु शीघ्र ही उसके सहायक उससे निराश हो गए। विद्रोह दबा दिया



जार्ज प्रथम

गया प्रिटेंडर फ्रांस भाग गया। लुई की भी मृत्यु हो गई अतः यह उद्योग असफल हुआ। १७४५ ई० में पुनः एक प्रयत्न जैकोबाइट्स ने किया था परन्तु यह भी असफल हुआ। अब हैनोवेरियन वंश की नींव इंगलैंड में पक्की हो गई।

'ह्विग आधिपत्य' १७१५–१७६० ई०

टोरी दल स्टुअर्ट राजाओं को वापस लाना चाहता था अतः उसने हैनोवेरियन वंश का विरोध किया। उसके प्रधान बोलिंगब्रुक को अपने षड्यंत्र के कारण देश छोड़कर फ्रांस में रहना पड़ा। जैकोबाइट विद्रोह में भी टोरियों ने सरकार के विपक्ष में काम किया था, अतः जार्ज प्रथम व द्वितीय को ह्विग दल का ही आश्रय लेना

पड़ा। टोरी दल देश में भी बदनाम था, इससे नए चुनाव में भी अधिकांश ह्विग दल वाले ही पार्लियामेंट के सदस्य चुने गए और दोनों राजाओं ने भी अपने मंत्री उसी दल से नियुक्त किए। ह्विग दल को यह अच्छा अवसर मिला। १७१६ ई० में अपनी शक्ति दृढ़ करने के लिए उन्होंने एक नया नियम बनाया जो 'सप्तवर्षीय नियम' (Septennial Act) के नाम से प्रसिद्ध है। इसका आशय यह था कि लोक सभा का चुनाव तीन वर्ष के बजाय प्रति सात वर्ष में हुआ करे। इस ह्विग शासन काल में कैबिनेट तथा प्रधान मंत्रित्व की प्रथा पुष्ट हो गई। इसके विकास में प्रधान मंत्री वालपोल ने बहुत सहायता दी।

वालपोल—प्रधान मंत्री

वालपोल १७०२ प्रथम बार पार्लियामेंट का सदस्य हुआ और शीघ्र ही बहुत प्रसिद्ध हो गया। वह ह्विग दल का सदस्य था। इनके समय में वह पदच्युत रहा, परन्तु जार्ज प्रथम के पहले मंत्रिमंडल में टाउनसेण्ड तथा स्टैनहोप के साथ वह सम्मिलित हुआ। १७१७ ई० में उनसे झगड़ा हो गया और वालपोल ने इस्तीफा दे दिया। १७२१ ई० में दक्षिणी सागर के बुलबुले (South Sea Bubble) के फूट जाने से देश में बहुत अशांति फैली और स्टैनहोप को इस्तीफा देना पड़ा। वालपोल अपने आर्थिक प्रबन्ध के लिए प्रसिद्ध था, अतः जार्ज ने उसको ही प्रधान मंत्री बनाया। वालपोल ने अपने सहायक मंत्री नियुक्त किए। जार्ज प्रथम ने धीरे-धीरे मंत्रिमंडल की सलाहों में भाग लेना छोड़ दिया था इससे वालपोल ने प्रधान मंत्री का पद ग्रहण कर लिया। वालपोल चाहता था कि उसके सहायक मंत्री उसकी आज्ञा के विरुद्ध कुछ काम न करें। वह अपने को राजा तथा देश के प्रति शासन कार्य के लिए उत्तरदायी मानता था। इसलिए जब कोई मंत्री उसके विपरीत काम करता था तो उनको पद से अलग होना पड़ता था। इस प्रकार वालपोल ने प्रधान मंत्रित्व की प्रथा चलाई।

शासन का सम्पूर्ण भार प्रधान मंत्री तथा कैबिनेट के हाथ में आ गया। राजा का आधिपत्य शासन पर से उठ गया और सहायक मंत्री प्रधान-मंत्री द्वारा निर्वाचित किए जाते थे। अतः ये लोग अपने कार्यों के लिए प्रधान मंत्री के सामने उत्तरदायी थे।

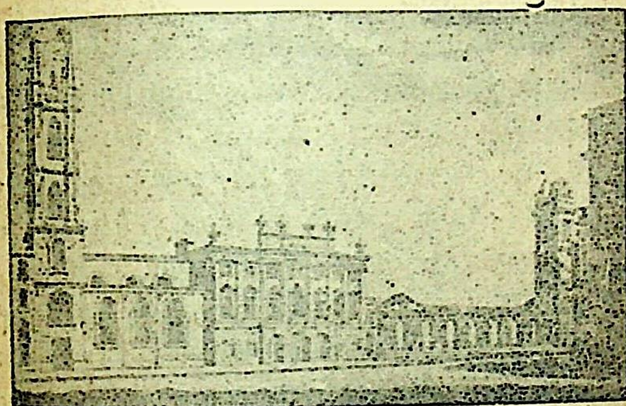


वालपोल

वालपोल आर्थिक मामलों को खूब समझता था। दक्षिण सागर के बुलबुले के फूट जाने पर देश में जो अशांति हुई उसको दूर करना

दक्षिण सागर का बुलबुला और वालपोल की आर्थिक नीति

उसी का काम था। यहाँ इस बुलबुले का इतिहास जानना आवश्यक है। यूट्रेक्ट की सन्धि के अनुसार अंग्रेजों को दक्षिणी अमेरिका से व्यापार करने के लिए प्रति वर्ष एक जहाज भेजने की आज्ञा मिली थी। व्यापार के लिए एक कम्पनी जिसका नाम "दक्षिण सागर कम्पनी" थी, बनाई गई। इसमें लाभ की आशा बहुत थी। सरकार ने भी राष्ट्रीय ऋण (National Debit) का प्रबन्ध इसी के हाथ में दे दिया था। इसके हिस्सों (Shares) की माँग इतनी बढ़ी कि उनका मूल्य ११ गुना हो गया (१०० पौंड के हिस्से का दाम ११०० पौंड हो गया)।



बैंक १७३३ ई०

इसी समय और भी छोटी-छोटी कम्पनियाँ खुल गईं। प्रजा का विश्वास शीघ्र ही शिथिल हो गया और लोग अपने हिस्से बेचने लगे। बस कम्पनी का दिवाला निकल गया। व्यापार में गड़बड़ी मच गई। बहुत से अमीर निर्धन हो गए। इस अशांति को दूर करने के लिए वालपोल मंत्री बनाया गया। उसने राष्ट्रीय ऋण को कम्पनी से अलग कर दिया और अपने अच्छे प्रबन्ध से शीघ्र ही अशांति दूर कर दी। उसका आर्थिक प्रबन्ध बहुत ही अच्छा था। उसकी आर्थिक नीति में वह स्वतंत्र व्यापार

(Free Trade) नीति का समर्थक था और उसने धीरे-धीरे बहुत सी व्यापारिक वस्तुओं पर बाहर से आने-जाने में जो महसूल लगता था उसे कम कर दिया। पर तब भी कुछ चीज़ों पर महसूल जारी रहा; जिससे बचने के लिए व्यापारी लोग चोरी करके माल देश में लाते थे। इस प्रथा को रोकने के लिए वालपोल ने १७३३ ई० में एक नया क़ानून (एक्साइज़ बिल) बनाना चाहा जिसके अनुसार महसूल बन्दरगाह पर न लेकर दूकान पर लिया जाता है। इस नियम में बहुत असुविधा थी। उसके विरोधी दल ने देश में यह कहना शुरू किया कि राज कर्मचारी आकर दूकानों की तलाशी लेंगे और इससे प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधा पड़ेगी। व्यापारी भड़क गए। एडिनबरा में विद्रोह हो गया। वालपोल अशांति तथा विरोध से डरता था। उसने शीघ्र ही इस प्रस्ताव को वापस ले लिया और देश में शान्ति हो गई। वालपोल के मंत्रित्व काल में देश की आर्थिक दशा बहुत अच्छी हो गई थी।

जार्ज प्रथम १७२७ ई० में हैनोवर जा रहा था, परन्तु मार्ग में उसकी मृत्यु हो गई। उसका पुत्र जार्ज द्वितीय गद्दी पर बैठा। अपने पिता से सदा ही उसका झगड़ा रहता था और वह वालपोल से द्वेष रखता था, परन्तु घृणा होते हुए भी वह वालपोल को अलग न कर सका। जार्ज अपनी पत्नी कैरोलीन के कहने पर चलता था और रानी में इतनी राजनैतिक समझ थी कि वह वालपोल के कार्य और देश क अवस्था से भलीभाँति परिचित थी। जार्ज के अभिषेक के बाद वालपोल अपने पद से हट गया, परन्तु दो एक सप्ताह बाद वह फिर लौट आया और प्रधान मन्त्री बना रहा। कैरोलीन सदा ही उसकी सहायता करती थी। जार्ज के लिए भी यही उचित था कि अपने मंत्री में विश्वास करे, क्योंकि पार्लियामेंट में बहुमत उसके साथ था और जार्ज पार्लियामेंट के विरुद्ध कोई काम न कर सकता था। इस प्रकार कैबिनेट में तथा पार्लियामेंट की प्रधानता में कोई अन्तर न पड़ने पाया। धीरे-

जार्ज द्वितीय
१७२७-१७६० ई०

धीरे वालपोल ने राजा पर अपना प्रभाव जमा लिया। देश इस समय शान्त था और जैकोबाइट लोग भी अकर्मण्य थे। जार्ज द्वितीय स्वयं अच्छा सैनिक था और उसे हैनोवर की रक्षा का विशेष ध्यान था। उसने अपने शासन काल में युद्ध तथा वाह्यनीति में विशेष अभिरुचि दिखलाई और आंतरिक मामलों को उसने वालपोल तथा अन्य मंत्रियों पर छोड़ दिया। यह सब होते हुए भी प्रतिनिधि सभा के टोरी और असंतुष्ट ह्विग वालपोल का विरोध करने लगे थे।

वालपोल की गृहनीति

वालपोल आंदोलन से बहुत घबड़ाता था। उसका सिद्धान्त था 'सोते हुए कुत्तों को सोने दो" जिसका आशय है कि वह ऐसा कोई कार्य न करना चाहता था, जिससे प्रजा में असन्तोष फैले। वह सुधार चाहता था, परन्तु धीरे-धीरे और बिना विरोध की आग भड़काए हुए। चर्च के विरोध के डर से उसने नान कनफ़र्मिस्टों (Non conformists) के हित के लिए कोई स्थायी नियम नहीं बनाये वरन प्रति वर्ष एक इन्डेम्निटी ऐक्ट (Indemnity Act) पास करके वह उनको सरकारी नौकरियाँ आदि देता था। वालपोल स्वयं ईमानदार था, परन्तु अपनी शक्ति दृढ़ करने के लिए रिश्वत का उपयोग किया। अपने दल के सदस्यों को धन या पद देकर वह प्रसन्न करता था और उनको अपने साथ रखता था।

परराष्ट्रनीति और पतन १७४२ ई०

वालपोल की परराष्ट्रनीति पर जैकोबाइट विद्रोह का बहुत असर पड़ा। क्योंकि जेम्स तृतीय फ्रांस में था, अतः वालपोल फ्रांस से मित्रता चाहता था जिससे उस देश में जेम्स को कोई सहायता न मिल सके। वह यूरोप के सब देशों से मित्रता रखने के पक्ष में था, जिसमें कोई युद्ध न हो और जेम्स तृतीय को कोई मौका इङ्गलैंड पर आक्रमण करने को न मिले। वह युद्ध नीति का विरोधी था। वह जानता था कि देश को उन्नत रखने के लिए शान्ति की आवश्यकता

है, इसलिए जब तक सम्भव हो सके वह इङ्गलैंड को युद्ध से अलग रख कर यूरोप में शान्ति रखना चाहता था। फ्रांस को भी शान्ति की आवश्यकता थी, क्योंकि इस समय फ्रांस तथा स्पेन में दुश्मनी थी। अतः वालपोल और फ्रांस के प्रधान मंत्री फ्ल्यूरी (Fleury) ने परस्पर मित्रता रक्खी और यूरोप में कोई भयंकर युद्ध न होने दिया। स्पेन की सरकार यूट्रैक्ट की सन्धि से असन्तुष्ट थी। उसने शान्ति भंग करने के कई प्रयत्न किए, परन्तु वालपोल ने अपनी शान्ति नीति से उनको असफल कर दिया; पर व्यापारिक कारणों से इङ्गलैंड और स्पेन बहुत दिनों तक शान्त न रह सके। दक्षिण अमेरिका में अंग्रेज व्यापारियों और स्पेन निवासियों के बीच में झगड़े हुए जिनका उल्लेख आगे होगा। दोनों देशों में लड़ाई की आग भड़क उठी और १७३९ ई० में वालपोल को अपनी इच्छा के विरुद्ध स्पेन से युद्ध छेड़ना पड़ा वह युद्ध का ठीक प्रबन्ध न कर सका। इसमें उसकी बदनामी हुई। उसके पतन के कारण पहले ही से मौजूद थे। जार्ज प्रथम के समय में उसके विरोधी दबे रहे, परन्तु जार्ज द्वितीय के समय में बोलिंगब्रुक तथा पुल्टेने (Pulteney) ने कुछ असन्तुष्ट ह्विग सदस्यों का एक दल बना कर पार्लियामेंट में और बाहर भी विरोध करना शुरू किया। वालपोल को जार्ज की स्त्री रानी कैरोलीन (Carolyno) से बहुत सहायता मिली, परन्तु १७३७ ई० में रानी की मृत्यु हो जाने से उसकी शक्ति शिथिल होने लगी। बोलिंगब्रुक ने अपने पत्र 'Craftsman' में वालपोल की नीति का खण्डन किया और पार्लियामेंट में पिट इत्यादि ह्विग दल के कुछ युवक सदस्य, जो 'लड़कों' (Boy) के नाम से प्रसिद्ध हैं, उसका विरोध करते थे। पार्लियामेंट में उसके विरोधियों की संख्या बढ़ गई थी। स्पेन के साथ युद्ध में असफल होने के कारण उसको प्रधान मंत्री के पद पर रहना कठिन हो गया। अतः १७४२ ई० में उसको मंत्रिपद से इस्तीफा देना पड़ा, क्योंकि लोकसभा में बहुपक्ष उसके विरुद्ध था और देश में भी जनता उससे सन्तुष्ट न थी। वह लार्ड

सभा का सदस्य हो गया और इस प्रकार उसके राजनैतिक जीवन का अन्त हुआ।

जार्ज द्वितीय के अन्य प्रधान मंत्री

वालपोल के पश्चात् लार्ड कार्टरेट (Carteret) प्रधान मन्त्री हुआ। वालपोल के सभी विरोधी उसके मंत्रिमंडल में थे। कार्टरेट का मुख्य ध्यान आस्ट्रियन उत्तराधिकार युद्ध में लगा रहा और वह जार्ज द्वितीय की आज्ञानुसार हैनोवर की रक्षा का प्रयत्न करता रहा। १७४४ ई० में युद्ध बढ़ गया और दूसरे वर्ष यंग प्रिटेंडर ने इङ्गलैंड पर आक्रमण किया। इससे प्रजा में सनसनी फैल गई और क्योंकि सब का विश्वास था कि इसके लिए जार्ज तथा उसके मंत्री की वाह्य नीति उत्तरदायी है, अतः कार्टरेट को अपना पद छोड़ना पड़ा। उसके स्थान पर पेल्हम (Pelham) प्रधान मंत्री हुआ। इस मन्त्रिमंडल में ह्विग दल के सभी अंग पिट तथा 'लड़के' (Boys) 'पैट्रियट' आदि तथा कुछ टोरी भी सम्मिलित थे। यह पहला संयुक्त मन्त्रिमन्डल था। इस शासन का भी मुख्य ध्यान यूरोप में युद्ध करने में लगा रहा। यह समय इङ्गलैंड के व्यापार तथा साम्राज्य के बढ़ने का था, जिसमें उसको फ्रांस का विरोध करना पड़ा। अतः दो युद्ध हुए जो भारतवर्ष तथा अमेरिका में भी लड़े गए। पेल्हम १७५४ ई० में मर गया और तब उसका भाई न्यूकैसल (Lord Newcastle) प्रधान मन्त्री हुआ, परन्तु नीति में कोई परिवर्तन न हुआ। इसी समय यूरोप में सप्त वर्षीय युद्ध का आरंभ भी हुआ। इस बार इंगलैंड को आस्ट्रिया की सम्राज्ञी मैरिया थैरेसा का विरोध करना पड़ा। पिट, जो इस मंडल में सम्मिलित था, प्रशा के राजा फ्रैडेरिक से मैत्री करके यूरोप में फ्रांस से युद्ध करना चाहता था, जिसमें अंग्रेजी सेना को अमेरिका आदि साम्राज्य के विभागों में फ्रांस का सामना करना सहज हो जाय और साम्राज्य की वृद्धि हो। न्यूकैसल ने वाह्य नीति का संचालन उसके ही ऊपर छोड़ दिया और स्वयं पार्लियामेंट में रिश्वत आदि उपायों से अपना बहुमत रखने का प्रयत्न करता

था। इससे यह संभव हो सका कि पिट अपनी प्रतिभा को काय में परिणत कर सका और इङ्गलैंड का मान तथा साम्राज्य बढ़ सका।

पिट बड़ा ओजस्वी वक्ता था और उसमें देश-प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था। यद्यपि उसने देश के आन्तरिक जीवन में कोई विशेष भाग नहीं लिया, परन्तु फिर भी उसका मंत्री होना और पार्लियामेंट तथा राजा का उसकी नीति को मानना एक नए परिवर्तन का द्योतक था। पिट के साथ प्रतिनिधि सभा में बहुपक्ष न था; वह सामयिक कुप्रथाओं और बुराइयों का विरोधी था, जिससे उसे बहुपक्ष का मिलना कठिन था। परन्तु उसका आश्रय जन-सम्मति पर था। देश की जनता को उसमें विश्वास था। और वह उसके नेतृत्व में साम्राज्य के लिए लड़ने को तैयार थी। जन-सम्मति की सहायता के कारण पार्लियामेंट तथा मन्त्रि-मंडल सभी को उसके सामने झुकना पड़ा। इङ्गलैंड के राजनैतिक जीवन के विकास में यह एक मुख्य घटना है, क्योंकि इस समय के उपरान्त पार्लियामेंट के ऊपर जनसम्मति का अंकुश भी लगने लगा। पिट उच्च कुल का न था और उसकी आय भी अधिक न थी। परन्तु जिस समय से उसने शासन में भाग लिया, उसने अपना प्रभाव जमा लिया। जार्ज द्वितीय की मृत्यु तक वह मन्त्री रहा और उसने अपनी नीति से देश का हित किया। उसकी परराष्ट्रनीति का वर्णन अगले अध्याय में किया जायगा।

पिट

२७—साम्राज्य की उन्नति

१७३९—१७६३ ई०

(जार्ज द्वितीय की परराष्ट्रनीति)

जार्ज द्वितीय के समय में इङ्गलैंड के साम्राज्य में बहुत वृद्धि हुई, परन्तु यह वृद्धि शान्तिमय न थी। यह युद्ध द्वारा प्राप्त हुई थी और इसमें अंग्रेजों को फ्रांस तथा स्पेन से युद्ध करना पड़ा था, जिसके फलस्वरूप उत्तरी अमेरिका और भारतवर्ष उनके हाथ लगे। अंग्रेजों को दूर देशों से व्यापार करने का चस्का लग गया था और वे चाहते थे कि उनको स्पेन तथा फ्रांस के उपनिवेशों से व्यापार करने की स्वतंत्रता मिले। यूट्रेक्ट की सन्धि से उनको प्रतिवर्ष एक ही जहाज दक्षिणी अमेरिका भेजने का अधिकार मिला था। इस बन्धन से वे असन्तुष्ट थे। अधिक लाभ होने के कारण वे चोरी करके व्यापार करते थे। बहुधा एक जहाज खुले तौर पर भेजा जाता था और जैसे-जैसे उसका माल बिकता जाता था, रात में अन्य जहाजों से उसमें सामान भर दिया जाता था। स्पेन सरकार के कर्मचारियों ने इस चोरी और गैर क़ानूनी व्यापार को रोकने के लिए कुछ अंग्रेज व्यापारियों को कठिन दण्ड दिया। इनमें एक व्यक्ति कप्तान जेंकिन्स (Jenkins) था जिसके कान काट लिए गए थे। उसने उनको एक बोतल में बन्द करके पार्लियामेंट में पेश किया। देश में हलचल मच गई। लोग युद्ध के लिए आन्दोलन करने लगे। वालपोल ने शान्ति रखने के लिए बहुत प्रयत्न किया, परन्तु पार्लियामेंट में नए जोशीले सदस्य विलियम पिट के व्याख्यानों से युद्ध का प्रस्ताव पास हो गया और युद्ध की घोषणा कर

स्पेन से युद्ध १७३९ ई०

दी गई। यह युद्ध 'जेंकिंस के कानों का युद्ध' (War of Jenkin's Ear) के नाम से प्रसिद्ध है। देश भर में खुशियाँ मनाई जाने लगी।



जार्ज द्वितीय

जब चारों तरफ गिरजों में घंटे बज रहे थे, वालपोल ने कहा—"वे आज घंटे बजा रहे हैं, परन्तु शीघ्र ही अपने हाथ मलेंगे।" युद्ध में पहले असफलता जरूर रही, परन्तु यह युद्ध था आवश्यक। वालपोल की यह गलती थी कि उसने देश की आकांक्षाओं का कुछ विचार न किया था। इङ्गलैंड इस समय उपनिवेश चाहता था। इंगलैंड साम्राज्य और व्यापार की वृद्धि का इच्छुक था। इसके लिए यह अनिवार्य था कि वह शीघ्र ही फ्रांस तथा स्पेन से युद्ध करे क्योंकि इन्हीं देशों के उपनिवेश बहुत बढ़ चुके थे। यह युद्ध बिल्कुल व्यापार के लिए था, परन्तु शीघ्र ही इंगलैंड को एक बड़े युद्ध में भाग लेना पड़ा, जो आस्ट्रियन उत्तराधिकार

...के नाम से प्रसिद्ध है और उसमें फ्रांस तथा स्पेन दोनों का सामना ...ना पड़ा।

सन् १७४० ई० में आस्ट्रिया के राजा चार्ल्स छठे की मृत्यु हुई। ...के कोई पुत्र न था। अतः उसने अन्य राष्ट्रों से समझौता करके अपनी पुत्री मेरिया थेरेसा (Maria Therasa) ...ट्रियन उत्तरा- को अपने समस्त राज्य की उत्तराधिकारिणी ...कार का युद्ध बनाया। परन्तु जैसे ही वह गद्दी पर बैठी, प्रशा ...-१७४८ ई० के राजा प्रसिद्ध फ्रेडेरिक (Frederick the Great) ने आस्ट्रिया के साईलेसिया प्रान्त पर ...कार जमाने की इच्छा से आक्रमण किया। फ्रांस ने फ्रेडेरिक का ...दिया। इंगलैंड में मेरिया थेरेसा के प्रति बहुत सहानुभूति थी और ...के पुराना वैरी फ्रांस फ्रेडेरिक का सहायक था, अतः मेरिया थेरेसा ...सहायता देने के लिए अंग्रेज जनता उत्सुक थी। परन्तु वालपोल के ...काल में यह असम्भव था। उसके पतन के बाद जार्ज द्वितीय ने ...से युद्ध छेड़ दिया और तब स्पेन, फ्रांस तथा प्रशा एक ओर हो ...। जार्ज द्वितीय ने जर्मन में डेटिंजन (Detingen) स्थान पर ...प्राप्त की और उसके पुत्र ड्यूक आफ कम्बरलैंड ने फ्रांस की सेना ...फोंटेनाय (Fotenoy) के युद्ध में बुरी तरह हराया। चूंकि यूरोप ...ग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध था इसलिए जहाँ भी फ्रांसीसी ...अंग्रेज थे उनमें युद्ध होने लगा। भारतवर्ष और उत्तरी अमेरिका ...में भी दोनों जाति के निवासियों के बीच युद्ध हुआ। फलस्वरूप भारत ...अंग्रेजी शहर मद्रास पर डुप्ले ने अधिकार जमाया और अंग्रेजों ने ...उत्तरी अमेरिका में लुईबर्ग (Louiberg) को फ्रांसीसियों से जीता। ...इंगलैंड पर भी यंग प्रिटेंडर (Young Pretender) को आक्र-...मण हुआ था। १७४७ ई० में ऐ-ला-शैपेल (Aix La Chapelle) ...की संधि हुई। इसके अनुसार फ्रांस, इंगलैंड ने एक दूसरे को दोनों ने ...जीते हुए स्थान लौटा दिये। मेरिया थेरेसा का आस्ट्रिया पर अधिकार

स्वीकृत हो गया। फ्रांस की सरकार ने हैनोवेरियन वंश को इंगलैंड का शासक मान लिया। साइलेशिया फ्रेडेरिक के हाथ में रहा। किन्तु इस संधि से मुख्य झगड़े का निपटारा न हो सका क्योंकि फ्रास और इंगलैंड के बीच में बढ़ते हुए औपनिवेशिक तथा व्यापारिक झगड़े का कुछ फैसला न हो सका।

वालपोल की भविष्यवाणी पूरी हुई। जैसे ही फ्रांस में युद्ध छिड़ा जेम्स तृतीय के पुत्र चार्ल्स एडवर्ड ने, जो कि यंग प्रिटेंडर (Young Pretender) के नाम से विख्यात है, फ्रांस की सरकार से इंगलैंड पर आक्रमण करने के लिए सहायता माँगी। १७४४ ई० में डंकर्क में एक बेड़ा तैयार किया गया, परन्तु इसके पूर्व कि वह चल सके तूफान ने उसको तोड़-फोड़ दिया। अब पुनः फ्रेंच सरकार कोई सहायता देने को तैयार न थी, इससे यंग प्रिटेंडर ने बिना किसी सेना के ही आक्रमण करने का निश्चय किया। उसको स्काटलैंड के हाईलैंडर्स (Highlanders) की स्टुअर्ट-भक्ति का भरोसा था। वह स्काटलैंड पहुँचा और हाईलैंडर्स ने डरते-डरते उसका साथ दिया। उस छोटी सेना से उसने अंग्रेजी सेना को प्रेस्टनपान्स (Prestonpans) के मैदान में हराकर इंगलैंड पर आक्रमण किया और सीधा लन्दन की ओर चला। रास्ते में डरबी (Derby) पर उसे मालूम हुआ कि अंग्रेजी सेना यूरोप से वापस आ रही है अतः वह शीघ्र लौट पड़ा। ड्यूक आफ़ कम्बरलैंड ने उसका पीछा किया और अन्त में उसको कुलोडन (Cullodens) के युद्ध में बुरी तरह हराया। चार्ल्स एडवर्ड तो फ्रांस भाग गया, परन्तु उसके साथियों की दुर्गति हुई और फिर कभी भी जैकोबाइट आन्दोलन देश में न हुआ। हाईलैंडर्स ने फिर कभी विद्रोह न किया और शीघ्र ही उस प्रान्त में भी शान्ति स्थापित हो गयी।

जाकोबाइट विद्रोह
१७४५ ई०

अठारवीं सदी में इंगलैंड को कई बार फ्रांस और स्पेन से लड़ना पड़ा। इसका कारण हर बार औपनिवेशिक द्वेष था। अंग्रेज और फ्रेंच

उत्तरी अमेरिका दोनों ने दूर देशों में अपने उपनिवेश कायम किए
और भारतवर्ष में थे जिनसे वे व्यापार करते थे और लाभ उठाते थे।
अंग्रेज तथा फ्रेंच बहुधा ये उपनिवेश एक ही देश या महाद्वीप में



प्रिंस चार्ल्स एडवर्ड

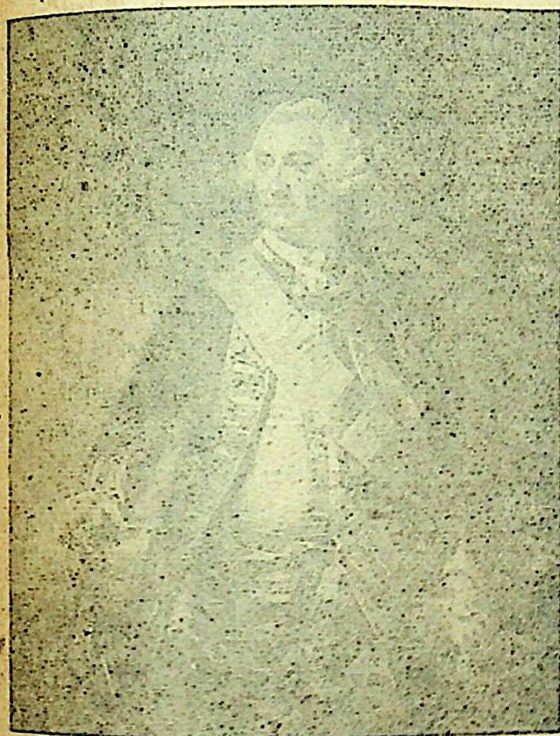
थे और उनकी सीमाएँ बहुत निकट थीं। पहले लिखा जा चुका है कि
स्टुअर्ट काल में राजा के अत्याचारों से पीड़ित होकर कुछ अंग्रेज उत्तरी
अमेरिका में जा बसे थे और वहाँ उन्होंने १६ उपनिवेश कायम किए
थे। ये लोग अटलांटिक सागर के तट पर उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भाग
में बसे थे और इनकी पश्चिमी सीमा अलीघनी पहाड़ पर थी। ठीक
इनके उत्तर में फ्रेंच उपनिवेश कनाडा था। दक्षिण में भी मिसिसिपी
के दहानों पर लुइसयाना (Louisiana) एक फ्रेंच उपनिवेश था।
जब यूरोप में इन दो देशों में युद्ध होता था तो यहाँ भी लड़ाई होती

थी। धीरे-धीरे जनसंख्य के बढ़ने और अधिक भूमि की आवश्यकता होने से दोनों ने महाद्वीप के भीतरी हिस्सों को लेने का प्रयत्न किया। फ्रेंच यह भी चाहते थे कि अपने दोनों उत्तरी तथा दक्षिणी उपनिवेशों को मिला दें। इसलिए उन्होंने अलीघनी पर्वत के पश्चिमी में ओहियो नदी के किनारे दुर्ग बनाना आरम्भ किए, जिनमें मुख्य डुकुने (Duquesne) का किला था। इसका अभिप्राय था अंग्रेजों को भीतर न बढ़ने देना। जब अंगरेजी औपनिशिकों ने यह कठिनाई देखी तो उन्होंने १६५५ ई० में इस भूमि पर अधिकार करने के लिए जनरल ब्रैडाक (Braddock) के नेतृत्व में एक सेना भेजी, परन्तु डुकूने किले के सामने यह सेना नष्ट हो गई। अमेरिका में यह झगड़ा हो रहा था परन्तु यूरोप में इंगलैंड और फ्रांस में सन्धि थी।

इसी प्रकार भारतवर्ष में भी दक्षिण तथा बंगाल में अंगरेज तथा फ्रासीसियों दोनों जातियों ने अपनी कोठियाँ बनाई थीं जहाँ वे व्यापार करते थे। दक्षिण में अंगरेजों का मुख्य स्थान मद्रास था और फ्रेंच का पांडीचरी। पहले तो दोनों में व्यापारिक प्रतिद्विंद्विता रही परन्तु शीघ्र ही देश की गिरी हुई राजनैतिक अवस्था ने इसके उद्देश्यों में परिवर्तन कर दिया। दक्षिण में राजा और नवाब आपस में लड़ते थे और बहुधा विदेशियों से सेना किराए पर लेते थे। फ्रंच गवर्नर डुपले ने उनकी निर्बलता से लाभ उठाना चाहा। उसकी इच्छा थी कि उस प्रान्त को फ्रेंच अधिकार में ले ले। इस मतलब के लिए उसने पहले अंगरेजों को इस देश से निकालना जरूरी समझा। उसने देशी रियासतों से मित्रता करके अंगरेजी व्यापार को भारी धक्का पहुँचाया। अब अंगरेजों को भी अपनी रक्षा के लिए वही उपाय करने पड़े। आस्ट्रियन उत्तराधिकार के लड़ाई के दोनों में लड़ाई हुई थी परन्तु सन्धि होने पर दोनों की कोठियाँ वापस मिल गई थी। फिर १७४६ से १७५५ ई० तक बराबर आपस में लड़ाई होती रही जिनमें देशी रियासतें भी शामिल थी।

इस तरह अमेरिका और भारतवर्ष में व्यापार और साम्राज्य के लिए

दोनों जातियों में झगड़ा हो रहा था, यद्यपि यूरोप में दोनों में शान्ति थी। दोनों जातियों में साम्राज्य की इच्छा थी और दोनों ही अपने उपनिवेशों के बढ़ाने की चिन्ता में थे। ऐसी अवस्था में दोनों देश बहुत



ऐडमिरल हाक

दिन तक शान्त न रह सकते थे और छोटे से भी कारण से दोनों में लड़ाई छिड़ सकती थी। इसका अवसर शीघ्र ही आ गया।

पहले लिख चुके हैं कि फ्रेडेरिक ने आस्ट्रिया से साइलेशिया प्रान्त छीन लिया था। [illegible] भी न

सप्त वर्षीय युद्ध- इसके कारण १७५६-१७६३ ई०

भूला था और वह बराबर उसको लौटाने का प्रयत्न कर रही थी। उसने पुराने वैरी फ्रांस से सन्धि कर ली और पहली बार फ्रांस तथा आस्ट्रिया दोनों युद्ध में एक ही तरफ थे। रूस ने भी उनका साथ दिया। यह संगठन प्रशा के राजा फ्रेडेरिक के विरुद्ध था क्योंकि उसकी उन्नति से ये सब राष्ट्र भयभीत हो गए थे। १७५३६ ई० में दोनों में युद्ध छिड़ गया। क्योंकि अमेरिका और भारत वर्ष में फ्रेंच और अंगरेजों में युद्ध हो रहा था, इसलिए जार्ज द्वितीय ने फ्रेडेरिक से सन्धि करके फ्रांस के विरोध युद्ध की घोषणा कर दी। इसका उद्देश्य था नेनौवर की रक्षा और साम्राज्य की वृद्धि। फ्रेंच जलसेना ने माइनार्का (Minorca) द्वीप पर अधिकार कर लिया। अंगरेजी सरकार युद्ध के लिए तैयार न थी, उसकी जल सेना तितर-बितर थी। उसने बिङ्ग (Admiral Byng) को माइनार्का जीतने को भेजा परन्तु वह हार कर भाग आया। मंत्रियों ने घबराहट में उसको प्राणदण्ड दिया जिससे वाल्टेयर के कथनुसार और लोगों की हिम्मत बढ़े। आरम्भ में युद्ध में कोई सफलता न मिली और देश में हलचल मच गई। इस युद्ध ने भयंकर रूप धारण किया और सात वर्ष तक चलता रहा।

पिट और उसकी नीति

इस आपत्ति से देश को बचाने वाला विलयम पिट William Pitt) था। अब तक उसके मंत्रियों की नीति का जोरदार खण्डन करके ख्याति पाई थी। वह वालपोल की शान्ति-नीति का विरोधी था परन्तु उसने' आस्ट्रियन उत्तराधिकार युद्ध, का भी विरध किया था क्योंकि वह समझता था कि वह युद्ध हैनोवर की रक्षा के लिए हुआ था और उससे इङ्गलैंड का कोई लाभ न था। इस बार मंत्रियों ने संकट में पड़ कर उसका आश्रय लिया क्योंकि उसने कहा था कि" मैं और केवल मैं ही देश की रक्षा कर सकता हूँ। १७५७ ई० में वह युद्ध मंत्री बनाया गया। वह अच्छी तरह समझता था कि यह लड़ाई फ्रांस

के विरुद्ध है इसका उद्देश्य अमेरिका तथा भारतवर्ष में अँग्रेजों के साम्राज्य और व्यापार की उन्नति है। इसकी पूर्ति के लिए वह आवश्यक समझता था कि फ्रांस को यूरोप में लड़ाई में लगा रक्खा जाए जिससे वह कनाडा और भारतवर्ष में सेना न भेज सके और वे अँग्रेजों के हाथ



विलियम पिट, अर्ल आफ़ चैथेम

लगें। उसका कथन था कि "मैं कनाडा को जर्मनी में जीतूँगा।" उसने फ्रेडेरिक को धन से सहायता दी और हैनोवर में एक सेना तैयार की जिसने जर्मनी में फ्रेंच सेनाओं को घेर रक्खा। वह फ्रेंच जल-सेना को नष्ट कर देना चाहता था ताकि अटलांटिक महासागर पर अँग्रेजी जहाजों

को बे-रोकटोक जाने का अवसर मिले। अमेरिका तथा भारत को सहायता जहाजों द्वारा ही पहुँच सकती थी और यदि फ्रांस की जल-सेना किनारे पर ही घिरी रहे तो सहायता न पहुँच सकेगी और अंग्रेज वहाँ सफल होंगे। इसलिए उसने अपनी जल-सेना को आज्ञा दी कि वह फ्रेंच जल-सेना को तट से बाहर न जाने दे। उसने योग्य सैनिक नियुक्त किये और युद्ध-सामग्री का उचित प्रबन्ध किया। उसने लार्ड ऐंसन (Lord Anson) को जल-सेनाध्यक्ष बनाया और ऐमहर्स्ट (Amherst) तथा वुल्फ (Wolf) को अमेरिका भेजा। इस प्रकार शीघ्र ही चारों तरफ अंगरेजों की जीत होने लगी। स्थल पर जर्मनी में मिंडन (Minden) के युद्ध में, और जल-युद्ध में लेगोस बे (Lagos Bay) तथा क्विबरन बे (Quiberon Bay) में फ्रेंच सेना की भारी हार हुई। माइनार्का पर पुनः अधिकार हुआ, और कनाडा तथा भारतवर्ष से फ्रेंच हट गए। १७६२ ई० में स्पेन ने भी फ्रांस का साथ दिया, परन्तु उसको भी हवाना और मनीला (Havana तथा Manila) से हाथ धोना पड़ा।

पिट कनाडा को जीतना चाहता था। इसके लिए उसने योग्य सैनिक चुने और तीन तरफ से आक्रमण करने का निश्चय किया।

कनाडा की विजय

परन्तु १७५८ ई० में सेंट लारेंस (St. Lawrence) नदी के मुहाने पर स्थित लुईबर्ग के जीतने के अतिरिक्त और कोई सफलता न मिली। परन्तु १७५९ ई० में वुल्फ और एडमिरल बोस्कावन ने कनाडा की राजधानी क्वीबक पर आक्रमण किया। वुल्फ की बहादुरी से फ्रेंच जनरल मांटकाम हार गया और नगर पर कब्जा हुआ। इस प्रकार कनाडा अंगरेजों के हाथ लगा।

इधर भारतवर्ष में भी अंगरेजों को आशा से अधिक सफलता मिली। दक्षिण भारत में डुप्ले के जाने से फ्रेंच शक्ति शिथिल हो गई थी और सप्तवर्षीय युद्ध में सर आयर कूट (Sir Eyre Coote) ने उनसे

भारतवर्ष में बंगाल पर अधिकार १७५७ ई०

उसकी सरकार छीन लिया तथा १७६२ में पांडीचेरी पर अधिकार किया। इसके अतिरिक्त बंगाल का सूबा अंगरेजों के हाथ लगा। अंगरेजों ने कलकत्ता में अपना किला बनाया था और उसके पास ही फ्रेंच ने चन्द्रनगर में अपनी कोठी बनाई थी। युद्ध के डर से अंगरेज अपने किले की दीवारों की मरम्मत कर रहे थे। इस समय बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला था उसने उनको मना किया और न मानने पर अपनी सेना से आक्रमण किया। कलकत्ता उसके आधीन हुआ। इसका समाचार मद्रास पहुँचा। वहाँ उसी समय क्लाइव (Clive) इंगलैंड से वापस आया था। मद्रास बोर्ड ने क्लाइव को बदला लेने बंगाल भेजा। उसने सिराजुद्दौला को प्लासी के युद्ध में हराकर (१७५७ ई०) अंगरेजों के मित्र मीरजाफ़र को बंगाल का नवाब बनाया और इस प्रकार बंगाल प्रान्त पर अपना प्रभुत्व जमाया। इस स्थान से उत्तरी भारत धीरे धीरे अंगरेजों के हाथ लगा।

इधर १७६० ई० में जार्ज द्वितीय की मृत्यु हो गई और जार्ज तृतीय सिंहासन पर बैठा। वह अभी कम अवस्था का था और राजकाज से अनभिज्ञ था। वह निरंकुश शासन का प्रेमी था इसलिए वह पिट से प्रसन्न न था। १७६१ ई० में स्पेन ने जब फ्रांस का पक्ष लेना चाहा तो पिट की राय थी कि उसके विरुद्ध भी युद्ध छेड़ दिया जाय, परन्तु अन्य मंत्री इस पर सहमत न थे। पिट ने इस्तीफा दे दिया, और न्यूकैसेल भी अलग हो गया। तब जार्ज ने अपने शिक्षक ब्यूट (Bute) को प्रधान मंत्री बनाया। ब्यूट शीघ्र ही सन्धि करने के पक्ष में था, फल चाहे जो हो। उसने १७६३ ई० में पेरिस की सन्धि कर ली। हवाना और मनीला स्पेन को और पांडीचेरी फ्रेंच को लौटा दिये गये। परन्तु कनाडा आदि अमेरिकन प्रदेश अंगरेजों के पास रहे। स्पेन ने भी अमेरिका में फ्लोरिडा उपनिवेश अंगरेजों को दे दिया। इस युद्ध से उत्तरी

पेरिस की सन्धि १७६३ ई०

अमेरिका पूर्णतया अंग्रेजों के हाथ लगा और भारतवर्ष में भी उनके साम्राज्य की नींव पड़ गई। समुद्र पर उनका आधिपत्य हो गया और उनके प्रतिद्वन्द्वी फ्रांस तथा स्पेन की शक्ति क्षीण हो गयी। इस युद्ध ने इङ्गलैंड को यूरोप में सबसे महान् शक्ति बना दिया और उसके साम्राज्य को संसार में चारों तरफ फैला दिया। पर इस सफलता में निर्बलता के लक्षण छिपे थे, क्योंकि शीघ्र ही अमेरिका ने इङ्गलैंड के विरुद्ध स्वतंत्रता के लिए उद्योग किया।

२८—अमेरिका की स्वतंत्रता का युद्ध
१७७३—१७८३ ई०

जार्ज तृतीय के शासन काल की एक मुख्य घटना अमेरिकन उपनिवेशों का स्वतंत्र होना था जिसके लिए जार्ज और उसके मंत्रियों की अल्प बुद्धि और जिद जिम्मेदार है। जार्ज संकीर्ण विचारों का आदमी था। वह जातीयता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वराज्य का अर्थ कुछ न समझता था। उसके विचार में उपनिवेशों का कर्तव्य था कि वे मातृदेश की आवश्यकताओं को पूरा करें, उसके व्यापार, धन और साम्राज्य को बढ़ाएँ। यही विचार उस समय इंगलैंड के मंत्रियों और अधिकांश जनता के भी थे, जिनके कारण उपनिवेशों की आर्थिक स्वतंत्रता में बहुत बन्धन थे। इस समय अमेरिका में पूर्वी तट पर १३ उपनिवेश बसे थे जो एक दूसरे से बिलकुल अलग थे। प्रत्येक शासन के लिए इंगलैंड से एक गवर्नर नियुक्त होता था, जो स्थानीय कौंसिल (जन-सभा) की सलाह से काम करता था। वे लोग अपने नियम स्वयं बनाते थे और शासन कार्य के लिए कर लगाते थे, परन्तु फिर भी उनको ब्रिटिश पार्लियामेंट के नियमों को मानना पड़ता था। क्योंकि अंग्रेजी सरकार उपनिवेशों को केवल लाभ की वस्तु समझती थी, अतः पार्लियामेंट ने कुछ ऐसे कठोर नियम बनाए थे, जो नैविगेशन लाज के नाम से विख्यात हैं, जिनसे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता बिलकुल चली गई थी। उनको आज्ञा न थी कि वे अपनी उपज इंगलैंड के बाहर कहीं और बेच सकें तथा अपनी जरूरत की चीजें किसी दूसरे देश से खरीदें। उनके देश में आने जाने वाला सब माल अंग्रेजी जहाजों ही पर जा सकता था। जो वस्तुएँ इंगलैंड में बनाई जाती थीं

उपनिवेशों पर व्यापारिक बन्धन Navigation Laws

उनको बनाने की आज्ञा उन्हें न थी चाहे वहाँ वे कितनी सस्ती क्यों न बन सके। इस प्रकार लोहे की चीजें, कपड़ा, हैट आदि आवश्यक वस्तुएँ उनको इंगलैंड से खरीदनी पड़ती थीं और अपना सब माल वहीं बेचना पड़ता था। इसका आशय यह था कि उपनिवेशों के व्यापार से इङ्गलैंड के सौदागरों को लाभ हो। उपनिवेश केवल धन कमाने के जरिए थे। इन बन्धनों ने असन्तोष फैला दिया। उनको अब किसी वैरी का भय न रह गया था, क्योंकि कनाडा के अंग्रेजों के हाथ में आने से फ्रांस के आक्रमणों का भय न था। अतः आन्दोलन सहज था, परन्तु फिर भी उनमें एकता न होने से ब्रिटिश सरकार को कोई विशेष खटका न था।

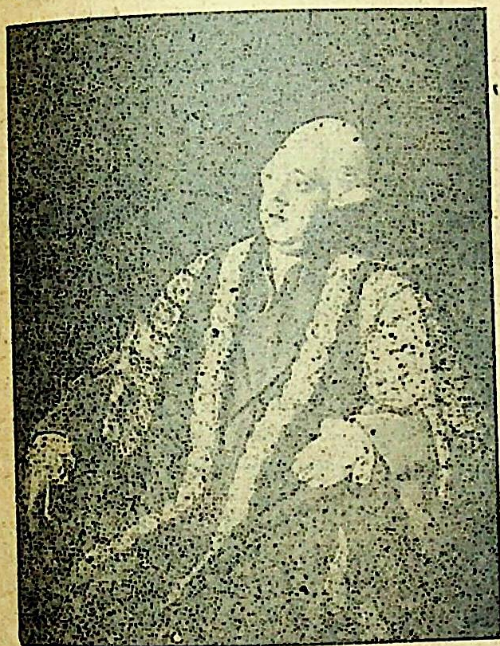
परन्तु ब्रिटिश सरकार ने उसको शान्त न रहने दिया। १७६५ ई० में पार्लियामेंट ने स्टाम्प ऐक्ट पास किया जिसके अनुसार अमेरिका वालों के लिए जरूरी हो गया कि वे हर कानूनी दस्तावेज पर स्टाम्प लगाएँ क्योंकि इसके बिना वह न्याययुक्त न समझा जाता। इसकी आय से उनकी रक्षा के लिए सेना रखने का विचार था ताकि उनकी रक्षा का भार ब्रिटिश सरकार पर न पड़े। उपनिवेशों में इसका घोर विरोध किया गया। वे कहते थे कि ब्रिटिश पार्लियामेंट को उन पर कर लगाने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि उनके प्रतिनिधि उस सभा के सदस्य नहीं हैं। चारों ओर "प्रतिनिधि नहीं तो कर नहीं" (No taxation without representation) की आवाज उठी। आन्दोलन इतना बढ़ा कि दूसरे साल पार्लियामेंट ने यह नियम रद्द कर दिया, परन्तु साथ-ही साथ एक नियम (Declaratory Act) द्वारा यह घोषणा कर दी कि पार्लियामेंट को उपनिवेशों पर कर लगाने का पूर्ण अधिकार है। आन्दोलन कुछ समय के लिए शिथिल हो गया।

स्टाम्प ऐक्ट (Stamp Act)

इसी अवसर पर पिट इंगलैंड का प्रधान मंत्री हुआ, परन्तु बीमारी और बुढ़ापे के कारण वह शासन पर दृष्टि न रख सका। उसके एक

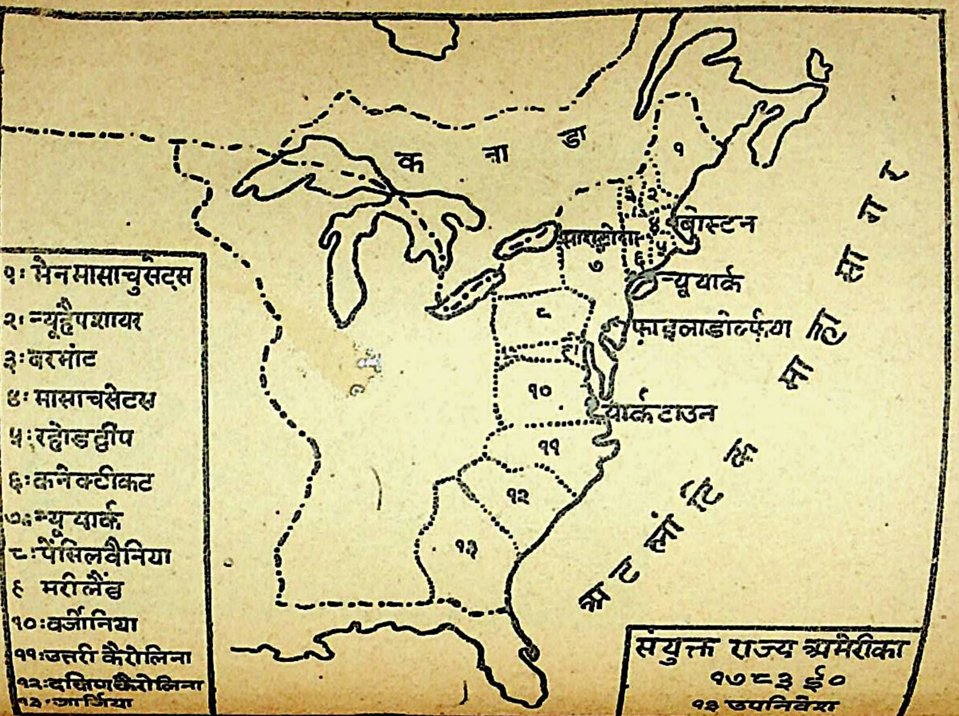
बोस्टन की चाय पार्टी (Boston Tea Party)

ने १७६७ ई० में चाय, शीशा, कागज आदि कुछ वस्तुओं पर महसूल लगाया, जिससे आन्दोलन फिर बढ़ा। जब पिट को मालूम हुआ उसने इस्तीफा दे दिया। और जार्ज ने लार्ड नार्थ को प्रधान मंत्री बनाया। नार्थ ने १७७३ ई० में और सब महसूल तो हटा दिये परन्तु चाय पर थोड़ा कर रक्खा, यह प्रकट हो कि पार्लियामेंट को कर लगाने का अधिकार है। उसी उसने यह प्रबन्ध किया कि चाय सस्ती बिके और ईस्ट इण्डिया कम्पनी



लार्ड नार्थ

को बिना इंगलैंड लाए हुए चीन से सीधे चाय ले जाने की आज्ञा दी। अमेरिकन लोग इससे सन्तुष्ट न हुए। उनके लिए तो यह उद्देश्य की लड़ाई थी। वे ब्रिटिश पार्लियामेंट को अपने ऊपर कर लगाने का अधिकार न देना

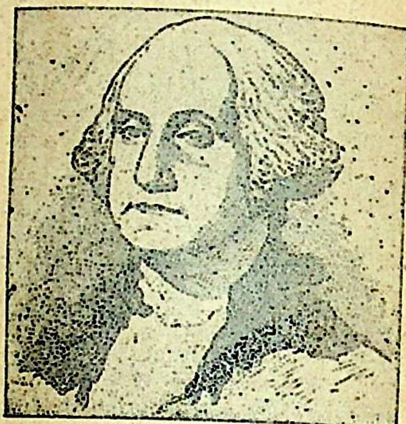

संयुक्त राज्य अमेरीका
१७८३ ई०
१३ उपनिवेश
कनाडा
अटलांटिक महासागर
बोस्टन
न्यूयार्क
फ़िलाडेल्फ़िया
यार्कटाउन
१: मैन मासाचुसेट्स
२: न्यूहैम्पशायर
३: वरमांट
४: मासाचुसेट्स
५: रहोड द्वीप
६: कनेक्टीकट
७: न्यू यार्क
८: पैंसिलवैनिया
९ मरीलैंड
१०: वर्जीनिया
११: उत्तरी कैरोलिना
१२: दक्षिण कैरोलिना
१३: जार्जिया

चाहते थे। देश में चाय का बहिष्कार हो गया। जब १७७३ ई० में बोस्टन के बन्दरगाह पर चाय से लदे हुए जहाज आये तो कुछ नागरिक वेष बदल कर उन पर चढ़ गए और उन्होंने सब चाय समुद्र में फेंक दी। इसी घटना को 'बोस्टन की चाय पार्टी' कहते हैं। ब्रिटिश सरकार ने दण्ड देने के लिए बोस्टन के बन्दरगाह को बन्द कर दिया और मासाचुसेट्स (Massachussets) उपनिवेश के अधिकार छीन लिए और आज्ञा दी कि वहाँ सेना रक्खी जाय।

स्वतंत्रता की घोषणा (Dcclaration of Indendepence) १७७६ ई०

इस दमन नीति का कोई फल नहीं हुआ। बोस्टन वाले इससे तनिक भी भयभीत न हुए वरन् दूसरे उपनिवेशों के लोगों ने सोचा कि शायद बोस्टन की ऐसी दशा उनकी भी हो, इसलिए उनको एक मत होकर ब्रिटिश सरकार का विरोध करना चाहिए। एकता के लिए सब सामान इकट्ठे हो गए। १७७४ ई० में फ़ाईलाडेल्फ़िया (philadelphia) में एक काँग्रेस हुई, जिसमें एक को छोड़ कर सब उपनिवेशों के प्रतिनिधि मौजूद थे। काँग्रेस ने ब्रिटिश पार्लियामेंट के उन पर कर लगाने के अधिकार का विरोध किया और कहा कि सब अनुचित कानून शीघ्र हटा दिए जायँ नहीं तो वे लोग इङ्गलैंड से व्यापार करना बन्द कर देंगे और सरकार से विद्रोह करेंगे। युद्ध शीघ्र ही छिड़ गया। अमेरिका वालों का नेता वीर जार्ज वाशिंगटन था जिसने सप्तवर्षीय युद्ध में बहुत ख्याति पाई थी। अंगरेजी फौजें बैंकर हिल (Bunker Hill) की लड़ाई में हार गईं। इस समय इंगलैंड में न तो कोई अच्छा सैनिक था न कोई चतुर मंत्री। उधर वाशिंगटन ने विजयी होकर सब उपनिवेशों की फिर एक काँगरेस निमंत्रित की जिसने ४ जुलाई, १७७३ ई० को अमेरिका की स्वतंत्रता की घोषणा की। इसका प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा। फ्रांस तथा स्पेन अब इन लोगों का पक्ष ले सकते थे, क्योंकि अब यह घरेलू झगड़ा न था, बल्कि दो स्वतंत्र देशों की लड़ाई थी। १७७७ ई० में अंग्रेजी

जेनरल बरगायन (Burgoyne) को साराटागा (Saratoga) के स्थान पर हार मान कर हथियार रख देने पड़े।



वाशिंग्टन

इस विजय से पता लग गया कि अमेरिकन लोग सहज न हारेंगे। अंग्रेजों को तीन हजार मील से सेना और सामान लाने में बहुत असुविधा होती थी। यह भी निश्चय था कि यदि किसी प्रकार समुद्र पर उनका आधिपत्य नष्ट हो जाय और उनको सेना न लाने दिया जाय तो युद्ध में अमेरिका की जीत होगी। इसी समय फ्रांस ने पुराना बदला लेना चाहा। लुई सोलहवें ने युद्ध छेड़ दिया। कुछ फ्रेंच सैनिक अमेरिका गए और वहाँ स्वतंत्रता युद्ध में शामिल हुए। इधर फ्रांस ने युद्ध छेड़ कर अंग्रेजों के लिए सेना और सामान ले जाना कठिन कर दिया। स्पेन और हालैंड ने भी फ्रांस का साथ दिया। १७८१ ई० में अंग्रेज सेनापति कार्नवालिस यार्क टाउन (York Town) पर परास्त हुआ। जल युद्ध में भी कोई सफलता न मिली। ब्रिटिश सरकार को जीतने की कोई आशा न रही।

युद्ध में फ्रांस और स्पेन का शामिल होना

अब अमेरिका की स्वतंत्रता मान लेने के सिवाय कोई उपाय न था, अतः १७८३ ई० में वार्साई की सन्धि द्वारा ब्रिटिश सरकार ने 'अमेरिका के संयुक्त राज्य' को स्वतंत्र देश मान लिया और स्पेन तथा फ्रांस को कुछ स्थल दिए। यह युद्ध आठ वर्ष तक चलता रहा और इससे ब्रिटिश सम्मान बहुत कम हो गया था। उसकी सामुद्रिक शक्ति को बहुत धक्का लगा और यह स्पष्ट हो गया कि अंगरेजी सेना तथा जहाजी बेड़ा अजेय नहीं है। ब्रिटिश साम्राज्य में यह पहला धक्का लगा। अमेरिका में केवल कनाडा, न्यूफाउण्डलैंड और नोवास्कोटिया ही अंगरेजों के पास रह गए। पूर्वी तट के १३ उपनिवेशों ने अपना स्वतन्त्र प्रजातन्त्र "संयुक्त राज्य" बना लिया, जिसका प्रथम प्रधान जार्ज वाशिंगटन नियुक्त हुआ। इस स्वतन्त्रता युद्ध का संसार के इतिहास पर भी बहुत प्रभाव पड़ा है। क्योंकि फ्रांस की राज्यक्रान्ति बहुत कुछ इसके कारण असम्भव हो सकी और संसार में स्वतन्त्रता तथा प्रजातन्त्र के विचार फैले।

वार्साई की सन्धि (Treaty of Versailles) १७८३ ई०

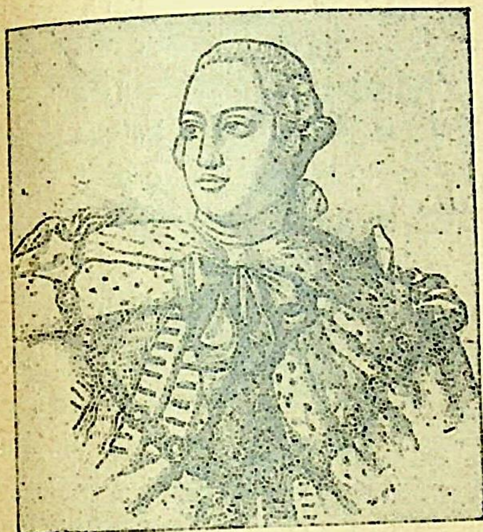
२६—जार्ज तृतीय तथा छोटा पिट

जार्ज तृतीय जार्ज द्वितीय का पोता था और सिंहासन पर बैठने के समय उसकी अवस्था केवल १२ वर्ष की थी। उसका जन्म तथा शिक्षण इंगलैंड ही में हुआ था।

जार्ज का चरित्र

वह अंग्रेजी भाषा अच्छी तरह बोल लेता था और उसको अंग्रेज होने का अभिमान था। वह हर प्रकार से इंगलैंड का राजा था परन्तु उसके विचार बहुत संकुचित थे और उसकी शिक्षा भी उत्तम न हुई थी। उसके शिक्षक सब टोरी दल के थे और उन्होंने उसको सामयिक शासन प्रथा का विरोधी बना दिया था। उसकी माता कहा करती थी "जार्ज! वास्तविक राजा होना" और इसका प्रभाव उस पर बहुत पड़ा। वह उस दलबन्दी शासन प्रथा के विरुद्ध था जिसके अनुसार प्रधान दल का नेता ही मंत्री होता था। उसकी इच्छा थी कि जिसको वह चाहे मंत्री बनाए और शासन का प्रत्येक कार्य उसकी आज्ञा से हो। दूसरे शब्दों में वह व्यक्तिगत शासन का प्रेमी था, परन्तु स्टुअर्ट राजाओं की नीति के विपरीत वह पार्लियामेंट की इच्छा से राज्य करना चाहता था। वह जानता था कि पार्लियामेंट की सलाह का विरोध इस समय असम्भव है, अतः उस सभा में वह अपने समर्थक और अपनी आज्ञा पर काम करने वालों को भरना चाहता था, ताकि उसकी इच्छानुसार सब काम हो। दस वर्ष के परिश्रम के बाद वह इसमें सफल हुआ और 'राजाओं के मित्रों' (King's Friends) का दल तैयार हो गया जो प्रत्येक काम जार्ज की आज्ञा से करता था और जिसको वह चाहता था उस मन्त्री की मदद करता था। जार्ज बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करता था, जिसके कारण लोग उसको "किसान जार्ज" भी कहते थे; परन्तु अपने समर्थकों को रिश्वत देने और उसके चुनाव में धन खर्च

ने के कारण उस पर बहुत ऋण हो गया था। वह जिद्दी और पुराने विचारों का मनुष्य था। बुढ़ापे में वह पागल हो गया और शासन कार्य से उसको अलग होना पड़ा



जार्ज तृतीय

टोरियों का प्राधान्य

इस समय पार्लियामेंट में ह्विग दल ही प्रधान दल था। रिश्वत तथा चुनाव के बुरे नियमों के कारण उसकी सामर्थ्य बहुत बढ़ गई थी। कुछ अमीर लोग अपने प्रभाव से लोक सभा में अपने समर्थकों को भर कर मनमाना शासन कर रहे थे और 'जन-सम्मति तथा राजा की इच्छा दोनों से स्वतंत्र थे। जार्ज इसको राजा की शक्ति का वैरी समझता था और टोरी दल को पुष्ट करना चाहता था। टोरियों ने भी अब अपनी जैकोबाइट सहानुभूति छोड़ दी थी अतः उनसे कोई डर न रह गया था। जार्ज ने पहले टोरी ब्यूट (Bute) को प्रधान मंत्री नियत किया, परन्तु लोक-सभा और लार्ड-सभा में ह्विग दल के बहु पक्ष में होने के कारण यह सफल न हो सका। धीरे-धीरे उसने अपने प्रभाव से टोरी दल को पुष्ट किया और

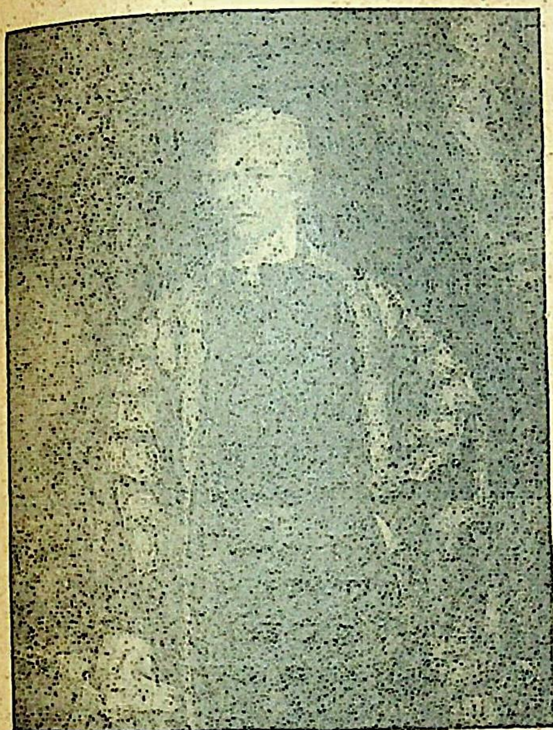
१७८३ ई० में ह्विग-प्रधानता का अन्त करके २४ वर्ष के युवक छोटे पिट को प्रधान मंत्री बनाया। फिर ५० वर्ष तक ह्विग सँभल न पाये, और टोरी ही राजा की सहायता से शासन करते रहे। राजा के पास अपना प्रभाव डालने के बहुत उपाय थे। पेंशन और सम्मान देकर, सदस्यों के मित्रों और सम्बन्धियों को फौज और जल-सेना में पद देकर, या राजदरबार में निमंत्रण आदि देकर वह लोक-सभा के सदस्यों को अपने वश में कर लेता था। लार्ड-सभा में तो यह बहुत सहज था, क्योंकि राजा को अधिकार था कि वह जिसे चाहे लार्ड बनाये। इस प्रकार लार्ड सभा तथा लोक-सभा दोनों सभायें जिनमें जार्ज द्वितीय के समय में ह्विग दल का प्राधान्य था, अब टोरी और राजा के मित्रों से भर गईं और जार्ज स्वेच्छानुसार पार्लियामेंट द्वारा शासन कर सकता था।

१७८३ ई० में वार्साई की सन्धि के बाद ह्विग फाक्स (Fox) तथा राजा के पुराने मित्र लार्ड नार्थ ने एक संयुक्त मंत्रिमंडल बनाया। जार्ज, फाक्स से घृणा करता था, अतः जब फाक्स ने भारतवर्ष में कम्पनी के शासन को सुधारने के लिए एक ईस्ट इंडिया बिल नामी प्रस्ताव लोक-सभा में पेश किया तो जार्ज ने अपने समर्थकों द्वारा उसका विरोध करा कर उसको पास न होने दिया। फाक्स तथा नार्थ ने इस्तीफा दे दिया और जार्ज ने चैथम के पुत्र पिट को प्रधान मंत्री बनाया। उसने राजा के मित्रों और अपने पिता के साथियों की सहायता से शासन का भार अपने ऊपर ले लिया। वह इतिहास में 'छोटे पिट' के नाम से प्रसिद्ध है। सब को आश्चर्य था कि वह नवयुवक कैसे काम चलायेगा, विशेष कर जबकि बहुपक्ष ह्विग दल उसके विरुद्ध था। पिट ने दूसरा इंडिया बिल पेश किया, और विरोध होने पर उसने लोक-सभा बरखास्त कर दी। नए चुनाव में उसके समर्थक सदस्यों की संख्या बढ़ गई और वह सत्रह वर्ष तक प्रधान मंत्री रहा।

पिट—प्रधानमंत्री

जार्ज तृतीय पिट पर विश्वास करता था। उसके विचार भी एक थे,

अतः जब जार्ज को पता लगा कि युवक प्रधान मन्त्री में उच्चकोटि की



पिट

शासन चातुर्य है तो उसने सब कार्य पिट के हाथ में छोड़ दिया। पिट प्रजा का भी विश्वासपात्र था, अतः उसके कामों से प्रजा बहुत प्रसन्न रही, देश में उन्नति हुई और जो बदनामी जार्ज की पहले २३ वर्ष में हुई थी वह सब शीघ्र ही मिट गई, क्योंकि जनता समझती थी कि पिट के अच्छे कामों में जार्ज का हाथ है। इस प्रकार राजा और प्रधान मन्त्री में मेल रहा और देश ने फ्रांस से सफलतापूर्वक युद्ध किया।

पिट और राजा

टोरी होते हुए भी पिट सुधार का प्रेमी था। उसकी शासन नीति

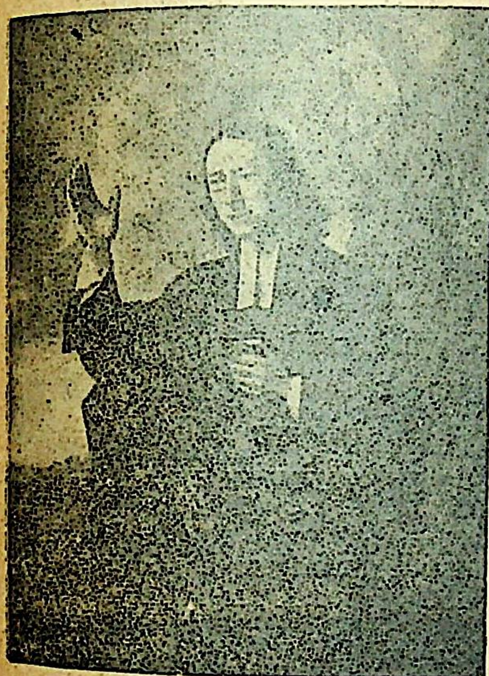
उदार थी और उसने कुछ आर्थिक सुधार भी किए। उसकी नीति पर ऐडम स्मिथ (Adam Smith) की प्रसिद्ध पुस्तक वेल्थ आफ नेशन्स का बहुत प्रभाव पड़ा। वह स्वतंत्र व्यापार (Free Trade) के सिद्धान्तों का मानने वाला था। उसने फ्रांस के साथ एक व्यापारिक सन्धि की जिसके अनुसार दोनों की वस्तुएँ कम कर देकर एक दूसरे के देश में जा सकती थीं। इसके अनुसार इंगलैंड फ्रांस से शराब मंगाता था और अपना कोयला और लोहे की चीजें वहाँ भेजता था। इससे व्यापार में वृद्धि हुई और देश में धन बढ़ा। पिट ने जातीय ऋण (National Det) के अदा करने का उपाय किया, जिससे वह १० लाख पौंड सालाना कम होता गया। वह लोक सभा के चुनाव के नियमों में भी सुधार करना चाहता था और ५० जनहीन नगरों (Rotten Boroughs) से प्रतिनिधि भेजने का अधिकार छीनना चाहता था, परन्तु जार्ज इसका विरोधी था, अतः यह आवश्यक सुधार सम्भव हो सका। उसने दास व्यापार को हटाने का भी प्रयत्न किया और उसके सम्बन्ध में जाँच करने के लिए एक समिति नियुक्त की, परन्तु अमीरों के विरोध के कारण सफलता न मिली। पिट ने रोमन कैथोलिकों को स्वतंत्रता देने का प्रस्ताव किया, परन्तु राजा इसके विरुद्ध था। यह प्रस्ताव कार्य में परिणित न हो सका और इसीलिए आयरलैंड का झगड़ा भी न मिटा। सन् १८०१ ई० में पिट ने इस प्रश्न पर इस्तीफा दे दिया। सुधारों के लिए देश अभी तैयार न था इसलिए पिट अपने प्रयत्न में बहुत सफल न हुआ। पुनः फ्रांस की राज्यक्रान्ति के युद्ध के कारण पिट को सुधारो के लिए अवकाश भी न था।

पिट के सुधार प्रस्ताव

पूर्व इतिहास से पता लग गया होगा कि ट्यूडर तथा स्टुअर्ट काल में किस प्रकार बराबर धार्मिक झगड़े होते रहे थे। अठारहवीं शताब्दी में धार्मिक सहिष्णुता का आरम्भ हुआ। वालपोल ने डिसेंटरो के विरुद्ध नियमों को हटाना चाहा था,

जान वेस्ले

परन्तु यद्यपि जनता के भय से वह यह काम स्पष्टतः न कर सका, उसने ...ने होने दी। परन्तु अब चर्च-शासन में बहुत बुराइयाँ फैल गईं। ...पदाधिकारी अपने कर्तव्य की कुछ परवाह न करते थे। बिशप आदि ...या चार पद ले लेते थे। और उनका वेतन लेते थे, परन्तु अपना ...अधिकतर शिकार आदि व्यसनों में बिताते थे। छोटे पादरियों की



वेस्ली

...बुरी थी, क्योंकि उनका वेतन कम था जो उनके निर्वाह को पूरा ...होता था। वे लोग भी खेती, व्यापार आदि कामों में लगे रहते थे ...और अध्ययन तथा धर्म-चर्चा उनके लिए गौण विषय हो गए थे। इन सब ...कारणों से जनता में धर्म के प्रति अरुचि हो गई थी और लोगों ने

चर्च जाना कम कर दिया था। यही नहीं, बल्कि मनुष्य चरित्रहीन होने लगे और देश में दुर्व्यसनों की वृद्धि हुई। जब यह अवस्था थी तब १७५१ ई० से जान वेस्ली (John Wesley) और जार्ज ह्विटफील्ड (George Whitfield) ने अपने प्रभावशाली मधुर व्याख्यानों से पुनः मनुष्यों के हृदय में धर्म-स्रोत का संचार किया और उनको सच्चरित्रता की ओर लगाया। वेस्ली के व्याख्यानों में यह आकर्षण था कि अंग्रेज लोग जाग्रत हो गए और उनके लिए धर्म सजीव हो गया। उसकी धार्मिकता में वह स्फूर्ति थी कि अकर्मण्य, श्रद्धाहीन व्यक्ति भी ईश्वर के सच्चे भक्त हो गए और अपने भाइयों के दुख में दुःखी तथा उनके सुखों में सुखी होने लगे। वेस्ली के उपदेशों का सबसे बड़ा प्रभाव यही पड़ा कि इङ्गलैंड की जनता में मनुष्य के प्रति सहानुभूति पैदा हो गई जिससे अब वह सर्व हितकारी कामों में व्यस्त हो सकी। वेस्ली तथा उसके अनुयायिओं के उपदेशों में सहस्रों मनुष्य एकत्रित होते थे और वे लोग मैदानों में सभाएँ करते थे। वेस्ली के इस कार्य से पहले चर्च अप्रसन्न हुआ, परन्तु जब पादरियों का जीवन अच्छा होने लगा तो उसका विरोध न किया गया। वेस्ली ने स्वयं कोई पृथक् चर्च या संस्था न बनाई थी, परन्तु उसके अनुयायियों ने अपना चर्च अलग कर लिया जो मेथोडिस्ट चर्च (Methodist Church) कहलाता है। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में इङ्गलैंड में नए प्रभाव के कारण बहुत सामाजिक सर्व हितकारी काम हुआ। नए अस्पताल खोले गए, मजदूरों आदि के लिऐ रविवार पाठशालाएँ (Sunday Schools) स्थापित की गईं, और जेलों में कैदियों की दशा सुधारने का प्रयत्न हुआ। इस अंतिम कार्य में जान होवर्ड (John Howard) ने बहुत प्रयत्न किया। विल्बरफोर्स (Wilberforce) ने दास व्यापार के विरुद्ध आन्दोलन किया। इन सब सुधारों में वेस्ली के उपदेश तथा विचार का प्रभाव था। देश की उन्नति और अंग्रेजों के जातीय चरित्र के बनाने में वेस्ली का उतना ही भाग है जितना पिट या अन्य नेताओं का।

३०—फ्रांस से युद्ध

१७८६—१८१५ ई०

इंगलैंड में सत्रहवीं शताब्दी में राजनैतिक अधिकारों के लिए राजा और पार्लियामेंट के बीच में झगड़ा हुआ, जिसमें पार्लियामेंट की जीत हुई और देश में नियमानुमोदित शासन आरम्भ हो गया और प्रजा को राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई। परंतु उस समय फ्रांस में लुई चौदहवें का स्वेच्छाचारी शासन था, प्रतिनिधि सभा (Stats General) का कोई अधिवेशन न होता था और राजा और उसके मंत्री मनमाना राज करते थे। अठारहवीं शताब्दी में भी यही दशा रही, परन्तु लुई चौदहवें का उत्तराधिकारी निर्बल था। वह किसी युद्ध में सफल न हुआ, कोष में धन की कमी हो गई और जातीय ऋण बढ़ गया। इन कारणों से प्रजा में असन्तोष के लक्षण दिखाई पड़ने लगे।

फ्रांस की राज्य-क्रान्ति के कारण

इधर फ्रांस में सामाजिक प्रश्न भी बड़ा जटिल था। वहाँ अभी तक फ्यूडल अवस्था प्रचलित थी। अमीर लोग राजकरों से मुक्त थे और किसानों पर मनमाना अत्याचार करते थे। शासन के खर्च का कुल भार किसानों पर ही था। उनको नमक, भूमि आदि पर भारी महसूल देने पड़ते थे, जिसके कारण वे बहुत गरीब हो गए थे, और अपनी अवस्था से बहुत असन्तुष्ट थे। शहरों में मध्यम श्रेणी के पढ़े-लिखे लोग भी इस जातीय भेदाभेद के विरुद्ध थे और उनमें विद्रोह की आग धीरे धीरे सुलग रही थी।

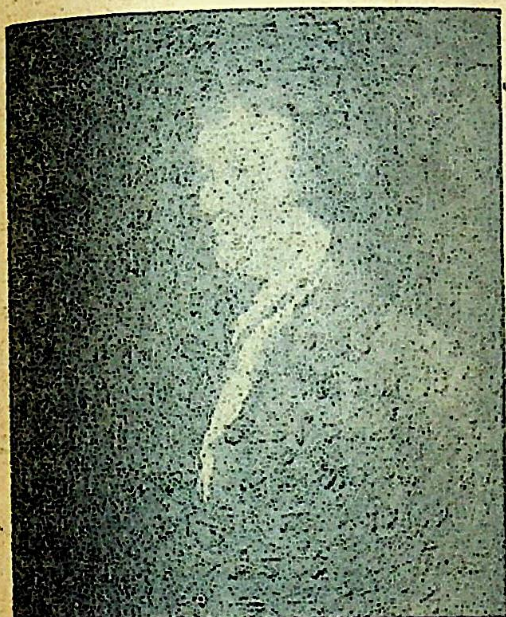
इसी समय फ्रांस में रूसो (Rousseau), वाल्टेयर (Voltaire) तथा अन्य लेखकों ने स्वतंत्रता के नवीन विचारों का प्रचार किया जिसका प्रभाव शहरों में पड़ा। जिस समय अमेरिका में स्वतंत्रता का युद्ध हो

रहा था, लुई सोलहवें ने इङ्गलैंड से बदला लेने के मतलब से अमेरिकनों की सहायता के लिए सेना भेजी। जो लोग वहाँ गए वे स्वतंत्रता के विचारों से भर गए और उनमें बहुतों ने अपने देश में भी प्रजातन्त्र स्थापित करने का निश्चय कर लिया। उन्होंने अपने देश में मनुष्य के अधिकार "स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व" का डंका बजाया। इस युद्ध में धन भी बहुत खर्च हुआ, जिससे ऋण बढ़ गया और शासन में असुविधाएँ हुईं। १७८६ ई० में लुई ने प्राचीन प्रतिनिधि-सभा को बुलाया। राजा केवल इससे धन चाहता था, परन्तु देश में उत्तेजना के कारण इस सभा ने शासन-प्रणाली में सुधार करना चाहा। शीघ्र ही एक शासन पद्धति बन गई जिसके अनुसार फ्रांस में भी नियमानुमोदित शासन का प्रबन्ध हो गया। परन्तु कुछ अमीर लोग, राजा के सम्बन्धी और रानी ने इसका विरोध किया। बस जनता ने भीषण रक्तपात द्वारा विरोधियों से बदला चुकाया और देश में तिरंगा स्वतन्त्रता का झंडा फहराने लगा। उधर आस्ट्रिया और प्रशा ने राजा की सहायता के लिए फ्रांस पर आक्रमण किया। देश में हलचल मच गई। शासन की बागडोर क्रान्तिकारियों के हाथ आ गई। राजा, रानी तथा अन्य विरोधियों को प्राणदण्ड दिया गया और क्रान्ति ने एक भयंकर रूप धारण कर लिया।

इङ्गलैंड में राज्य-क्रान्ति पर विचार

पहले तो इङ्गलैंड में लोग प्रसन्न हुए कि फ्रांस में भी उन्हीं की-सी शासन पद्धति स्थापित होने वाली है। महाकवि वर्डस्वर्थ फाक्स आदि विचारकों और राजनीतिज्ञों ने राज्यक्रान्ति के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट की और अपने देश में भी पार्लियामेंट के सुधार की आशा करने लगे। परन्तु धीरे-धीरे यह प्रसन्नता क्रोध में बदल गई। जब उन्होंने स्वतंत्रता के नाम पर रक्तपात होते देखा, जब राजा को प्राणदण्ड मिला और क्रान्तिकारियों ने दूसरे देश वालों को स्वतंत्रता तथा प्रजातन्त्र के लिए उत्तेजित करना शुरू किया, तो इङ्गलैंड में राज्यक्रान्ति का घोर विरोध होने लगा। बर्क (Burke) ने

अपनी पुस्तक Reflections on the French Revolution में राज्यक्रान्ति के दोष दिखलाये। प्रधान मन्त्री पिट को भी अपनी



एडमंड बर्क

उदार नीति छोड़नी पड़ी। उसके सुधार प्रस्तावों का सदा के लिए अन्त हो गया और देश में जनता की स्वतन्त्रता में बाधा पड़ने लगी। स्वतन्त्रता नियम (Habeas Corpus Act) स्थगित कर दिया गया, क्रान्तिकारी विदेशियों को देश बाहर निकाल देने का अधिकार सरकार को मिल गया, और क्रान्ति के सिद्धान्तों को फैलाने वालों को कारागार में डाल दिया गया। राजद्रोह नियम बनाए गए, सभाओं को रोका गया और कुछ राजनैतिक क्लबें तोड़ दी गईं। इस प्रकार शीघ्र ही इङ्गलैंड में क्रान्ति के डर से जनता की स्वतन्त्रता छिन गई। एक लेखक ने इसी सम्बन्ध में लिखा है—"क्योंकि फ्रांस स्वतन्त्रता का अच्छा उपयोग न

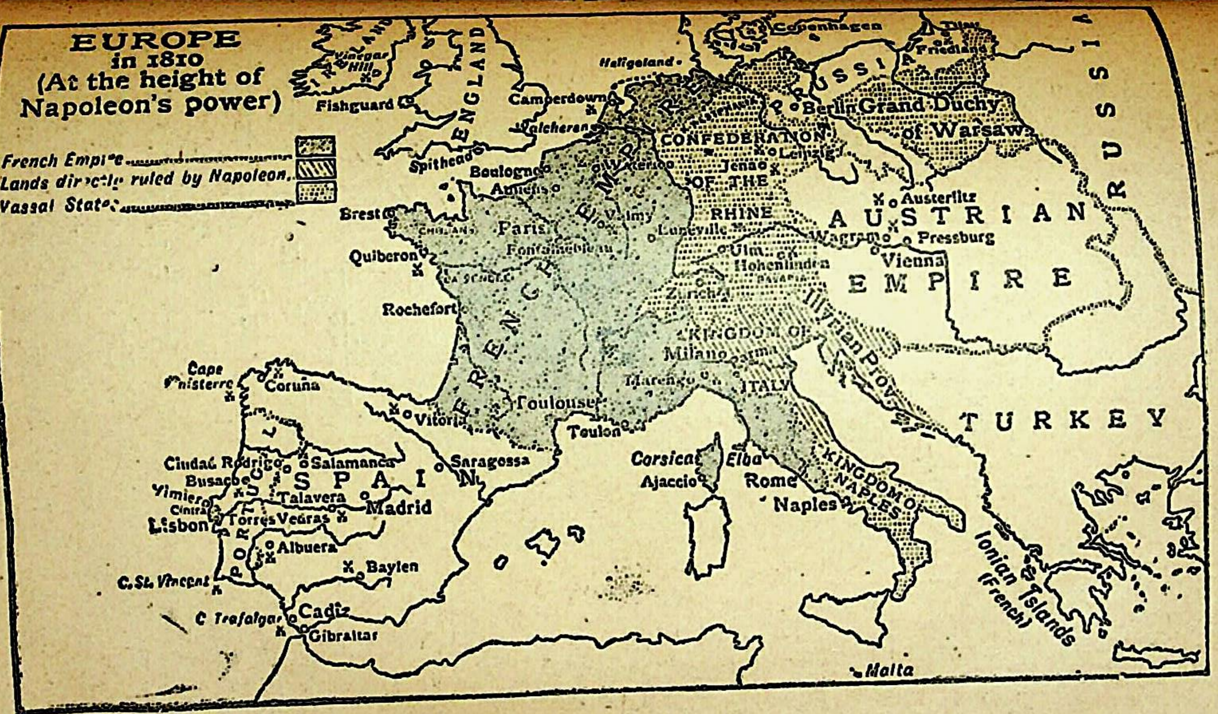
कर सका, इसलिए इङ्गलैंड की स्वतंत्रता कम कर दी गई।" इसके बाद शीघ्र ही इङ्गलैंड को फ्रांस से युद्ध भी करना पड़ा और बाइस वर्ष तक बराबर लड़ाई होती रही।

यह विचार-परिवर्तन क्यों हुआ? युद्ध क्यों छिड़ गया इसलिए नहीं कि राजा को हटा कर प्रजातंत्र स्थापित हुआ, परन्तु इस कारण कि प्रजातंत्र ने पुराने राज्य की सब अभिलाषाओं को अपना लिया था। फ्रेंच सेना ने १७९२ ई० में बेलजियम पर, जो अब तक आस्ट्रिया के अधिकार में था, कब्जा कर लिया और शेल्ट नदी(The Scheldt) में सब देशों को अपने जहाज भेजने की स्वतंत्रता दे दी। अब तक इस नदी पर केवल हालैंड को ही यह अधिकार था। ब्रिटिश सरकार को डर लगा कि हालैंड भी शीघ्र ही प्रजातंत्र में शामिल हो जायगा और इस प्रकार यूरोप के उत्तरी पश्चिमी तट के एक वैरी शक्ति के हाथ में हो जाने पर इङ्गलैंड के व्यापार को भारी धक्का लगेगा और कदाचित उसकी स्वतंत्रता पर भी आक्रमण हो। इसके अतिरिक्त इङ्गलैंड में क्रान्ति के सिद्धान्तों का उपदेश करने के लिए और जनता को राजा के विरुद्ध उत्तेजित करने के लिऐ कुछ चर भेजे गए थे। इस प्रकार युद्ध के कारण उपस्थित थे और जन-सम्मति शीघ्र ही युद्ध चाहती थी। जैसे ही राजा लुई के प्राण दण्ड पाने की खबर आई, पिट ने फ्रांस के राजदूतों को अपने देश वापस भेज दिया। इस पर फ्रांस के प्रजातंत्र ने युद्ध की घोषणा कर दी और युद्ध छिड़ गया।

युद्ध के कारण

इंगलैंड अकेला न था। आस्ट्रिया, प्रशा, हालैंड, स्पेन और रूस से मिल कर उसने एक संघ (First Coaliton) कायम किया, परन्तु आशा के विपरीत सब मिल कर भी फ्रांस को हरा न सके। उस देश में जातीय भाव भरे थे। अपनी रक्षा के लिए और अपने उद्देश्यों तथा तिरंगे झंडे की शान के लिए फ्रेंच जाति ने प्राण-प्रण से युद्ध किया

प्रथम संघ का युद्ध


EUROPE
in 1810
(At the height of
Napoleon's power)
French Empire
Lands directly ruled by Napoleon
Vassal States
IRELAND
Vinegar Hill
Fishguard
ENGLAND
Spithead
Camperdown
Walcheren
Heligoland
Copenhagen
Friedland
PRUSSIA
Berlin
Grand Duchy of Warsaw
RUSSIA
CONFEDERATION OF THE RHINE
Leipzig
Jena
Austerlitz
AUSTRIAN EMPIRE
Wagram
Pressburg
Vienna
Ulm
Hohenlinden
Luneville
Valmy
Boulogne
Amiens
Brest
Paris
Fontainebleau
Quiberon
Rochefort
FRENCH EMPIRE
Zurich
KINGDOM OF ITALY
Milano
Parma
Marengo
Illyrian Prov.
TURKEY
Toulouse
Toulon
Vittoria
Cape Finisterre
Coruna
Ciudad Rodrigo
Salamanca
Busaco
Vimiero
Cintra
Lisbon
Torres Vedras
Talavera
Madrid
Saragossa
SPAIN
PORTUGAL
Albuera
Baylen
C. St. Vincent
C. Trafalgar
Cadiz
Gibraltar
Corsica
Ajaccio
Elba
Rome
Naples
KINGDOM OF NAPLES
Ionian Islands
(French)
Malta

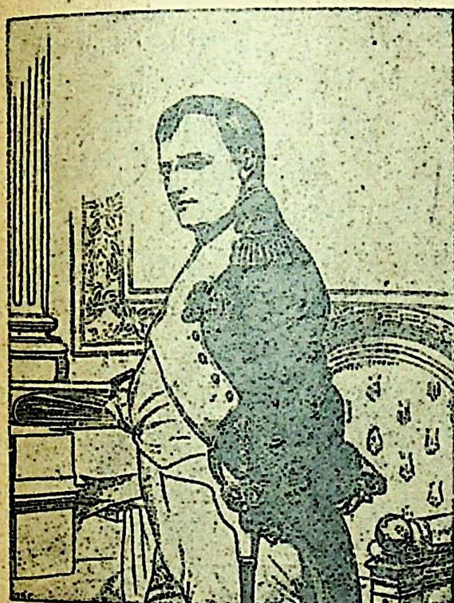
इधर 'संघ' भी (यह 'प्रथम संघ' कहलाता है) बहुत दिन न ठहर सका। रूस और प्रशा अलग हो गए, स्पेन और हालैण्ड भी हार बैठ गए। १७९५ ई० के बाद केवल आस्ट्रिया और इंगलैंड ही लड़ते रहे। फ्रांस के चतुर सैनिक नैपोलियन बोनापार्ट ने उत्तरी इटली में आस्ट्रिया की सेनाओं पर आक्रमण किया और कई बार उनको परास्त किया। इंगलैंड ने भी फ्रांस पर उत्तर-पश्चिम से आक्रमण करने के कई प्रयत्न किए, परन्तु हारकर लौटना पड़ा। १७९७ ई० में मित्रों की



लार्ड नेल्सन

दशा बहुत खराब थी। आस्ट्रिया और इंगलैंड० दोनों ही युद्ध से तंग आ गये थे। उसी समय नैपोलियन बोनापार्ट ने भारत पर आक्रमण करने की इच्छा से मिश्र (Egypt) पर हमला किया। वहाँ उसने स्थानीय राज्य को परास्त करके फ्रांस साम्राज्य स्थापित किया। इंगलैंड की सरकार यह भलीभाँति जानती थी कि यदि मिश्र नैपोलियन के हाथ में आ गया तो शीघ्र ही भारत पर आक्रमण होगा, इसलिए उसने नेल्सन (Nelson) को नैपोलियन का पीछा करने की आज्ञा दी। नेल्सन ने नाइल नदी के

मुहाने पर फ्रेंच जहाजों को पाया और शीघ्र ही उनको नष्ट कर दिया (१७६८ ई०)। नैपोलियन को यह आशा न रही कि फ्रांस से अधिक सेना आ सकेगी, इसलिए मिश्र को छोड़ कर वह अकेला फ्रांस भाग आया। वहाँ वह प्रजातंत्र का संरक्षक बन गया। इङ्गलैण्ड की इस विजय से उत्तेजित होकर आस्ट्रिया और रूस ने दूसरा संघ बनाया, परन्तु शीघ्र ही १८०० ई० में हाहेनलिंडन (Hohenlinen) में



नैपोलियन बोनापार्ट

आस्ट्रिया की हार हुई और दूसरा संघ भी टूट गया। इङ्गलैंड ने भी युद्ध से थक कर १८०२ ई० में आमीन्स (Amiens) की सन्धि कर ली। यह सन्धि स्थायी न थी। दोनों ही देश कुछ समय का अवकाश चाहते थे और थोड़े दिन के बाद फिर युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध-काल में अंग्रेजी बेड़ा कई जगह विजयी हुआ था, जैसे केप सेंट विंसेंट (Cape

St. Vincent) और केम्पर-डाउन (Camperdown) के जल युद्ध में नाइल नदी के युद्ध ने तो भारत की रक्षा की और नैपोलियन की सब आशाओं पर पानी फेर दिया।

नैपोलियन बोनपार्ट

नैपोलियन बोनापार्ट उन महान् पुरुषों में था, जो अपनी बुद्धि और बाहु के बल से संसार में भारी परिवर्तन कर डालते हैं और सब पर अपना प्रभाव डालते हैं। बोनापार्ट कार्सिका (Corsica) द्वीप का रहने वाला था। उसका पिता अमीर न था। बोनापार्ट को सैनिक शिक्षा दी गई और वह अपनी तीव्र बुद्धि और अनोखी चतुरता से बहुत छोटी अवस्था में ही एक रण कुशल सैनिक हो गया। बचपन से ही वह बड़प्पन के स्वप्न देखता था। जब फ्रांस में प्रजातंत्र स्थापित हो गया तब उसको सेना में एक पद मिला। उसने शासकों से इटली में आस्ट्रिया से युद्ध करने की आज्ञा लेकर, इटली पर फ्रांस का अधिकार जमाया और अपनी योग्यता का परिचय दिया। पुनः उसने इंगलैंड के साम्राज्य पर चोट करने के विचार से मिश्र पर आक्रमण किया, परन्तु जल सेना की निर्बलता के कारण असफल लौट आया। देश में आने पर वह प्रजातंत्र का संरक्षक बन गया (१७९९) और फिर पाँच वर्ष के बाद फ्रांस का सम्राट बना। उसकी इच्छा थी कि यूरोप का सम्राट हो और इस कार्य में उसको सफलता भी बहुत मिली, परंतु इंगलैंड के विरोध, फ्रांस की जनता के असन्तोष और रूस तथा अन्य यूरोपीय राष्ट्रों से निरन्तर युद्ध के कारण अंत में उसका पतन हुआ।

ट्राफालगर का युद्ध

आमीस की सन्धि के बाद नैपोलियन ने इंगलैंड पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया, क्योंकि वह जानता था कि यदि इंगलैंड पर उसका अधिकार हो जाए या इंगलैंड सदा के लिए मित्र हो जाय तो वह यूरोप पर सहज ही शासन कर सकता है और एशिया में अपना साम्राज्य फैला सकता है। आक्रमण के लिए उसने बोलोन (Boulogne) पर सेना

एकत्रित की ओर चैनेल पार करने के लिए जहाज और नाव भी जमा किए। परन्तु इंगलैंड पर आक्रमण करना सहज न था। जब तक इंगलैंड की जल-सेना मजबूत है, इंगलैंड पर आक्रमण होना असम्भव है। नैपोलियन कहता था कि "यदि मुझको एक रात के लिए समुद्र पर अधिकार मिल जाय तो मैं विश्वविजयी हो जाऊँ।" परन्तु इंगलैंड का बेड़ा सजग होकर चैनेल की रक्षा कर रहा था। नैपोलियन ने अपने जल सेनाध्यक्ष विलेनूव (Villeneuve) को आज्ञा दी कि वह इंगलैंड के बेड़े को धोखा देकर दूर समुद्र में ले जाय और वहाँ से शीघ्र लौट कर उसकी सेना को इंगलैंड पहुंचाए। विलेनूव अमेरिका की ओर भागा; नेल्सन ने उसका पीछा किया, परन्तु विलेनूव फिर यूरोप की ओर लौटा। नेल्सन ने उसको घेर लिया और स्पेन के तट पर रास ट्राफलगर (Caye of Trafalgar) के निकट फ्रेंच जल-सेना को उसने नष्ट कर दिया (१८०५)। इस युद्ध में नेल्सन की मृत्यु हुई, परन्तु इंगलैंड की स्वतंत्रता सदा के लिए बच गई।

नैपोलियन की सब आशाओं पर पानी पड़ गया। इंगलैंड पर आक्रमण सदा के लिए असम्भव हो गया। इधर पिट ने आस्ट्रिया, प्रशा और रूस से मिलकर तृतीय संघ बनाया और तृतीय संघ' और मध्य यूरोप में सेनाएं एकत्रित हुईं। नैपोलियन इंगलैंड के व्यापार ने बोलोन से डेरा उठाया और आस्ट्रिया को दण्ड पर आघात देने के लिए वह पूर्व की ओर बढ़ा। उसने आस्ट्रिया और रूस की सेनाओं को आस्टरलिज (Austerliz) के युद्ध में परास्त किया (१८०६) जिसके बाद आस्ट्रिया ने सन्धि कर ली। इस समाचार से पिट को बहुत शोक हुआ और वह शीघ्र ही मर गया। पुनः प्रशा को जेन (Jane) में हरा कर नैपोलियन ने आधा राज्य छीन लिया और फिर रूस को हराकर १८०७ ई० में उस देश से सन्धि कर ली (टिल्सट की सन्धि Tareaty of Tilsit)। इस प्रकार सम्पूर्ण यूरोप उसके अधिकार में आ गया था। बचा था तो

केवल इंगलैंड। उसको दबाने के लिए नैपोलियन ने इंगलैंड के व्यापार पर कुठार चलाना चाहा। इस समय यूरोप के सभी देशों में इङ्गलैंड के बने हुए माल और उसके उपनिवेशों की उपज, अन्न, शकर, चाय आदि की बहुत माँग थी। नैपोलियन ने सोचा यदि किसी प्रकार इंगलैंड की वस्तुओं का यूरोप से बहिष्कार हो जाय तो उसके व्यापार का अन्त हो जायगा और शीघ्र ही इंगलैंड सन्धि करने पर मजबूर होगा। इस हेतु उसने बर्लिन डिक्री (Berlin Decree १८०६), मिलान डिक्री (Milan Decree) आदि आज्ञाओं द्वारा यूरोप के सब देशों को इंगलैंड से व्यापार करने के लिए मना कर दिया और सम्पूर्ण समुद्र तट पर पहरा कर दिया कि कोई वस्तु इंगलैंड से न आ सके। इसको कांटीनेंटल सिस्टम कहते हैं। यह प्रयत्न असफल हुआ, क्योंकि फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया या रूस में वस्तुओं का मूल्य बहुत बढ़ गया और प्रजा को बहुत कष्ट होने लगा। चोरी करके इंगलैंड से सामान आता ही रहा। उधर आस्ट्रिया और रूस में युद्ध की तैयारियां होने लगीं। फ्रांस में असन्तोष फैल गया और कष्ट से बने हुए साम्राज्य के पतन के लक्षण दिखाई पड़ने लगे। नैपोलियन ने इंगलैंड का नाश सोचा था, परन्तु इसके द्वारा स्वयं उसका नाश हो गया।

कांटीनेंटल सिस्टम (Contnental-System)

नैपोलियन ने एक और भारी भूल की। उसने पुर्तगाल के राजा को उस देश से निकाल दिया और स्पेन में सेना ले जाकर वहाँ के राजा से सिंहासन छुड़ाया और उसे फ्रांस में रखा। फिर उसने अपने भाई जोजेफ़ (Joseph) को स्पेन का राजा बनाया (१८०८)। परन्तु वहाँ की प्रजा इससे बिगड़ गई और जोजेफ़ के विरुद्ध उठ खड़ी हुई। नैपोलियन ने तुरन्त ही अपने चतुर सैनिकों को भेजा कि वे विद्रोह को शान्त करें। परंतु पहाड़ी स्थानों में किसानों को दबाना सहज न था।

प्रायद्वीपीय युद्ध (Peninsular War)

...इंगलैंड के मंत्रियों ने अच्छा अवसर पाया। उन्होंने आर्थर वेले-
...ड्यूक आफ वेलिंगटन (Arthur Wellesley, Duke of
Wellington) की अध्यक्षता में स्पेन निवासियों की सहायता के लिए
...भेजी। युद्ध बराबर पाँच वर्ष तक होता रहा। नैपोलियन के योग्य
...मेसीना (Messina) आदि पराजित हुए और फ्रेंच सेना को देश
...जाना पड़ा। इस युद्ध में नैपोलियन की बहुत हानि हुई, उसकी
...सेना नष्ट हो गई, प्रजा में असन्तोष फैला और उसकी शान मिट
...। अब लोगों को मालूम हुआ कि नैपोलियन अजेय नहीं है। अंग्रेजो
...ने १८१३ में स्पेन से फ्रांस पर भी आक्रमण किया, इस प्रकार
...लियन के पतन में यह स्पेन का युद्ध बहुत सहायक हुआ।

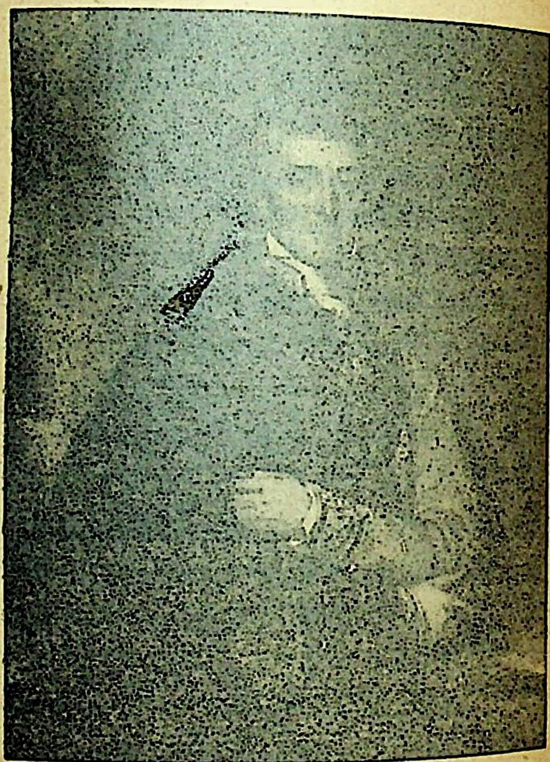
...स्पेन में युद्ध हो ही रहा था, उधर १८१२ ई० में रूस में नैपोलियन
...व्यापार नीति (Continental System) से अप्रसन्न होकर
इंगलैंड से व्यापार आरम्भ किया। नैपोलियन
इस विरोध को न सह सका और उसने रूस पर
आक्रमण किया। रूसियों की वीरता और जाड़े
की कठोरता के कारण नैपोलियन की सेना सब

...नैपोलियन का पतन
...८१२-१३ ई०

...हो गई और उसको भागना पड़ा। इस पराजय के बाद रूस,
...ट्रिया और प्रशा ने अपनी सेना एकत्रित करके नैपोलियन को जर्मनी
...लेपजिग (Leipzig) के युद्ध में परास्त किया और उसको फ्रांस में
...लेनी पड़ी। फ्रांस पर आक्रमण हुआ, पेरिस वैरियों के हाथ में
...गया, और तब नैपोलियन को सिंहासन छोड़ना पड़ा। उसको एल्बा
(Elba) का द्वीप मिला। फिर आस्ट्रिया की राजधानी वियना
(Vienna) में यूरोप के राज्यों की कॉंग्रेस एकत्रित हुई कि फ्रांस तथा
...का प्रबन्ध करे। लुई सोलहवें के भाई लुई अठारहवें को फ्रांस का
...मिला और तिरंगा झण्डा हटाकर फिर पुरानी शासन प्रथा लौटी।
...इस प्रकार सब की दृष्टि वियना पर लगी हुई थी, अवसर पाकर
...लियन चुपके से एल्बा से भाग कर फ्रांस आया। जनता ने उसका

नैपोलियन का अन्तिम युद्ध वाटर लू

स्वागत किया और उसकी सेना तथा सैनिक उससे पास फिर आ गए। बिना युद्ध के ही पेरिस पर उसका अधिकार हो गया। लुई भाग गया और फ्रांस में तिरंगा झंडा पुनः फहराने लगा। इस समाचार से वियना में हलचल मच गई और नैपोलियन से युद्ध करने के लिए सेना जमा हुई। वेलिंगटन की अध्यक्षता में अंग्रेजी सेना और ब्लूचर (Blucher) के नेतृत्व में प्रशा की सेना उस



ड्यूक आफ वेलिंगटन

समय बेल्जियम में थी। नैपोलियन ने चाहा कि उनको अलग-अलग

परास्त करे और उन्हें मिलने न दे। परन्तु भाग्य उससे विपरीत था। वाटरलू के स्थान पर (१८ जून १८१५ ई०) वेलिंग्टन की सेना ने उसका सामना किया। घमासान युद्ध हुआ; नैपोलियन ने वेलिंग्टन की सेना को दबाया और विजय निकट ही थी कि ब्लूचर सेना सहित आ गया। नैपोलियन देर तक ठहर न सका ; उसकी सेना नष्ट हो गई और उसको हार कर भागना पड़ा। रक्षा का उपाय न देख कर उसने अंग्रेजी जहाज पर शरण ली। ब्रिटिश सरकार ने उसके पद का विचार न करके उसको सेंट हेलेना (St. Helena) के निर्जन द्वीप में क़ैद कर दिया। वहीं वह १८२० में मर गया। इस प्रकार उस वीर सैनिक और महान् पुरुष के जीवन का अन्त हुआ।

फ्रांस में राज्यक्रान्ति का अन्त हुआ, फ्रेंच साम्राज्य नष्ट हो गया, और पुनः बोरबन वंशीय लुई फ्रांस का राजा बनाया गया। फ्रांस के सुख-स्वप्न के दिनों का अन्त हो गया, परन्तु वे उद्देश्य जिनके लिये इतना तुमुल द्वंद्व मचा था, सदा के लिए संसार में जीवित रहा और सब देशों में स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व का प्रचार हो गया।

इङ्गलैंड ने सफलतापूर्वक नैपोलियन का मुक़ाबिला किया और अन्त में उसको परास्त किया, परन्तु इस युद्ध के बाद इङ्गलैंड की आर्थिक

इंगलैंड पर युद्ध का प्रभाव

दशा अच्छी न रही। व्यय बहुत होने से जातीय ऋण बढ़ गया और प्रजा पर अधिक कर लगाए गए। युद्ध के समय में तो इङ्गलैंड के व्यापार में कमी न हुई थी, परन्तु युद्ध के बाद अन्य देशों में भी चीजें बनने लगीं और इंगलैंड के व्यापार को धक्का पहुँचा। पुनः खेती की भी दशा ठीक न रही। कई वर्षों तक अच्छी वृष्टि न होने से पैदावार कम हो गई। सरकार ने खेती को फ़ायदा पहुँचाने के मतलब से एक नियम बनाया कि बाहर से अन्न न आने पाए (Corn Law) इससे अन्न का मूल्य बहुत बढ़ गया और मजदूरों को पेट भर खाने को न मिलता था। देश में असन्तोष फैला। युद्ध के बाद सेना भी कम कर

दी गई, इससे बहुत आदमी बेकार हो गए, और देश में चोरियाँ होने लगीं। उद्यम-हीनों की संख्या बहुत बढ़ गई। इन कष्टों से पीड़ित होकर प्रजा ने उपद्रव करना शुरू किया। परन्तु सभाओं को रोका गया। मैनचेस्टर (Manchester) में एक सभा हो रही थी, पुलिस ने उसको बन्द करने के लिए गोली चलाई जिसमें ६ आदमी घायल हुए। देश में आग बढ़ी और सब लोग पार्लियामेंट के चुनाव में सुधार का प्रयत्न करने लगे। इसी समय १८२० ई० में जार्ज तृतीय की मृत्यु हो गई और जार्ज चतुर्थ गद्दी पर बैठा। यह दुर्दशा बहुत दिनों तक न रही क्योंकि व्यावसायिक क्रान्ति (Industrial Revalution) ने आर्थिक दशा ठीक कर दी और पार्लियामेंट के सुधारों द्वारा राजनैतिक अवस्था सुधर गई।

इङ्गलैंड की जलशक्ति Navo और फ्रांस का युद्ध

नैपोलियन के साथ सफलता पूर्वक युद्ध करने में इङ्गलैंड की जलशक्ति ने बहुत सहायता पहुंचाई। अठारहवीं शताब्दी में उपनिवेशों तथा व्यापार के कारण उसकी जलशक्ति और सेना बहुत प्रबल हो गई थी। इधर फ्रांस तथा हालैंड की जल सेना नष्टप्राय हो गई थी, इससे संसार के सभी समुद्रों पर इंगलैंड का ही झंडा फहरा रहा था। इंगलैंड अपने जहाजों में ही उपनिवेशों की उपज लाता था और यूरोप के देशों में बेचता था। इस कारण व्यापार बढ़ रहा था और इंगलैंड के पास धन बहुत हो गया था। नैपोलियन के विरोधी संघ का संगठन इसी धन के कारण हो सका। नैपोलियन अच्छी तरह जानता था कि इंगलैंड को परास्त करने के लिए उसके व्यापार तथा जलशक्ति को नष्ट करना आवश्यक है। इसके लिए फ्रांस के पास प्रबल सेना की जरूरत थी। परन्तु नैपोलियन इसमें असफल हुआ। नाइल के युद्ध ने उसकी पूर्वीय आशाओं को सदा के लिए हनन किया। ट्राफाल्गर के युद्ध ने इंगलैंड की रक्षा की और नैपोलियन को अपनी कमी का ज्ञान हो गया। कांटिनेंटल सिस्टम भी इसी जल सेना की निर्ब-

रता के कारण सफल न हो सका। इंगलैंड में युद्ध के समय में, खाद्य पदार्थों की कमी न पड़ने पाई और क्योंकि इसका व्यापार बराबर होता रहा इसलिए उसके पास धन भी था और युद्ध सफलतापूर्वक हो सका। इसका श्रेय इंगलैंड की जलशक्ति को ही है। १८१५ ई० के बाद इंगलैंड की जलसेना सर्व प्रबल हो गई और फिर लगभग सौ वर्ष तक उसको कोई खटका न रहा।

३१—व्यावसायिक क्रान्ति

अठारहवीं सदी के अन्त से वाटरलू के बाद तक इंगलैंड की अवस्था में बहुत परिवर्तन हो गया था। पहले उस देश में लन्दन के सिवाय दूसरा बड़ा नगर न था; देश का सब से घना बसा हुआ प्रान्त कृषि-प्रधान दक्षिणी पूर्वी भाग था, खेती पुराने ढंग से होती थी, कोई कारखाने न थे, और जुलाहे अपनी झोपड़ियों में कपड़े बिनते थे। रेल, नहर, गैस की रोशनी, अच्छी सड़कें या भाप से चलने वाले एंजिन, देश में यह कुछ भी न थे। व्यापार केवल ऊनी कपड़े में होता था और वह भी बहुत थोड़ा। परन्तु अठारहवीं शताब्दी में बहुत थोड़े समय में इतना परिवर्तन हो गया कि इङ्गलैंड संसार भर का कारखाना बन गया, जहाँ की बनी हुई चीजें सब देशों में जाती थीं जिससे उसका व्यापार बहुत बढ़ गया और वह एक धनवान देश हो गया। कलों के आविष्कार से वह कृषि-प्रधान देश से व्यवसाय-प्रधान देश हो गया। यह सब कार्य थोड़े दिन में हुआ। इससे देश के जीवन का ढंग बदल गया। इसी परिवर्तन को 'व्यावसायिक क्रांति' कहते हैं।

इस परिवर्तन में लोहे और कोयले से बहुत सहायता मिली। पहले भी लोहा देश में बनता था, परन्तु बनाने का ढंग अच्छा न था और बनता भी कम था। लकड़ी के कोयले की आग से लोहा साफ किया जाता था जिससे यह अच्छा न बनता था और यह काम केवल जंगलों के पास ही होता था। धीरे-धीरे जंगल नष्ट हो गए और लोहा भी कम बनने लगा। अठारहवीं सदी में पता लगा कि लोहा साफ करने के लिए लकड़ी के कोयले से अधिक लाभदायक भूगर्भ से निकला हुआ कोयला होता है। उत्तर में कोयले और लोहे की बहुत सी खानें पास

लोहे के व्यवसाय में परिवर्तन

था। शीघ्र ही लोहे की उपज बढ़ गई और अच्छा लोहा बनने लगा जिससे कलें आदि आवश्यक चीजें सुविधा से बन सकीं।

कोयले का प्रयोग बहुत बढ़ गया। पुतलीघरों में कोयला ही जलता था इससे कोयले की खानों में काम बढ़ गया और कोयले की उपज भी बढ़ी। इसका प्रभाव यह पड़ा कि उत्तर में आबादी बढ़ गई, और जहाँ पहले छोटे-छोटे गाँव थे वहाँ बड़े-बड़े नगर बन गए। इस प्रकार बर्मिंघम, न्यूकैसेल, आदि बड़े नगर स्थापित हुए जहाँ बहुत कारखाने खुल गए थे।

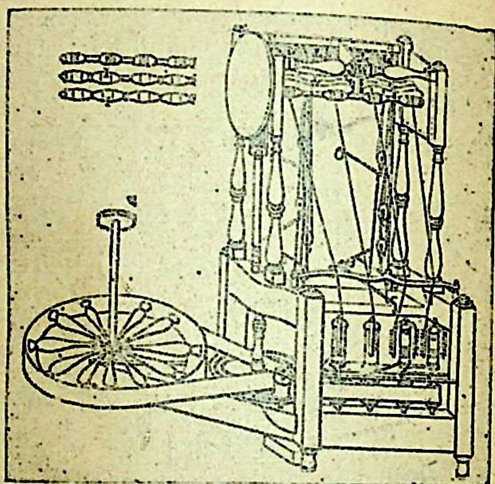
लोहा और कोयला की उपज बढ़ने से कलों के बनने में सुविधा हुई। अब वाट (Watt) और बोल्टन (Boulton) आदि इंजीनियरों ने अपने बरमिंघम के कारखानों में नई कलें बनाईं जिनके द्वारा व्यवसाय में उन्नति हुई। परन्तु इस काल का सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कार भाप के एंजिन का बनना था। पहले मनुष्य-शक्ति काम में आती थी, फिर पानी की शक्ति का प्रयोग हुआ, परन्तु वाट ने भाप की शक्ति की खोज करके संसार का भारी उपकार किया। उसने पहला भाप का एंजिन १७६५ ई० में बनाया। अब कपड़े बिनने की मशीनें और अन्य कलें भाप द्वारा चलने लगीं जिससे माल जल्दी और अधिक परिमाण में तैयार होने लगा।

भाप के एंजिन का आविष्कार

लोहे के कारबार से अधिक उन्नति कपड़े के व्यवसाय में हुई। इसके पूर्व ऊन या सनई का सूत चरखा या तकली पर हाथ से काता जाता था और जुलाहा हाथ के करघे पर उससे अपनी झोपड़ी में कपड़ा बिनता था। रुई कातने का काम न हो सकता था। बड़े-बड़े कारखाने न थे। परन्तु शीघ्र ही भारी परिवर्तन हुआ। १७३३ ई० में जान के (John Kay) नामी एक घड़ीसाज ने फ्लाइंग-शटल का आविष्कार किया, जिसके द्वारा कपड़ा ज्यादा चौड़ाई का

सूत कातने और कपड़ा बिनने में उन्नति

और जल्दी बिन सकता था। परन्तु सूत जल्दी न कतने से इससे बहुत लाभ न हुआ। शीघ्र ही कातने के काम में उन्नति हुई। १७६७ ई० में हारग्रीव्ज़ (Hargreaves) ने एक मशीन, स्पिनिंग जेनी (Spinning Janny) बनाई जिसके द्वारा चरखे से आठ गुना सूत उसी समय में कत सकता था। फिर शीघ्र आर्कराइट (Arkwright) ने अपनी मशीन (Water Frame) और १७७५ ई० में क्राम्पटन (Crompton) ने उससे बढ़कर दूसरी मशीन (The Mule) बनाई, जो दोनों हाथ के बजाय पानी की शक्ति से चलती थी और चरखे से जल्दी कई गुना ज्यादा सूत कातती थी। फिर ये मशीनें भाप द्वारा चलाई गईं। अब सूत अधिक बनता था, परन्तु बिनाई का प्रबन्ध ठीक न था। १७८४ ई० में एक पादरी कार्टराइट (Cartwright) ने इस कमी को पूरा करना चाहा। बढ़ई और लुहार की सहायता से उसने पानी से चलने वाला करघा बनाया। पहले यह भद्दा बना था, परन्तु जल्दी ही उसमें उन्नति हुई और भाप आदि से चलने वाले करघे बन गए। जिन



स्पिनिंग जेनी

पर कपड़ा जल्दी बिन सका। इसी समय कपड़ों के धोने (Bleaching) और छपाई के काम में भी बहुत उन्नति हुई। इस प्रकार कपड़े का व्यवसाय बढ़ा और मैनचेस्टर में सूती (रुई) कपड़ों के कारखाने खुल गए। अन्य स्थानों में भी जहाँ कोयला मिल सकता था कपड़े का काम होने लगा। इससे व्यापार बढ़ा क्योंकि और देशों में अभी हाथ से ही काम होता था, इससे इनके सस्ते कपड़े की माँग बहुत बढ़ गई। पुनः भारतवर्ष और साम्राज्य के अन्य भागों को माल जाने लगा जिससे इंगलैंड के धन की वृद्धि हुई।

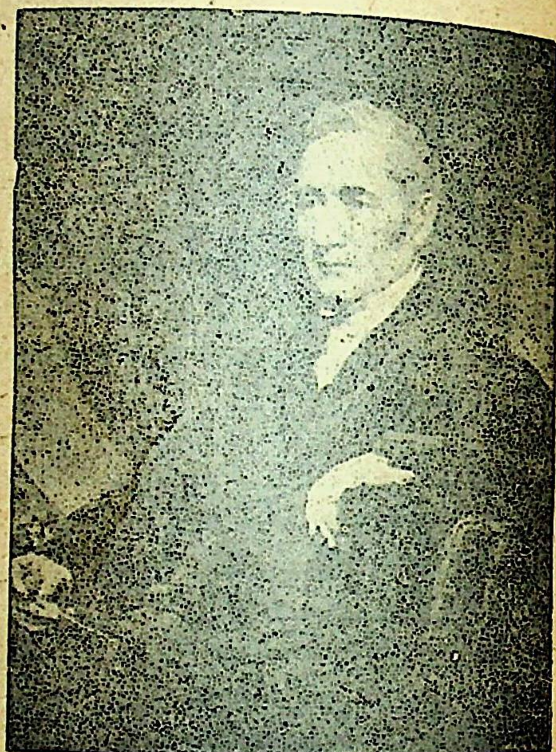
व्यवसाय की उन्नति के साथ आवश्यक था कि देश में अच्छी सड़कें हों अन्यथा व्यापार में उन्नति नहीं हो सकती थी। इंगलैंड में पहले सड़कें बहुत खराब थीं, कीचड़ में गाड़ी के पहिये धँस जाते थे, इससे एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल ले जाने में कठिनाई होती थी। अब देश में पुरानी सड़कों को ठीक किया गया और नई पक्की सड़कें बनाई गईं, जिन पर हर ऋतु में गाड़ियाँ सहज ही चल सकें। इस काम में स्काटलैंड के इंजीनियर मैकडम (Macadem) ने बहुत सहायता दी। सड़कें अच्छी होने से व्यापार में बहुत उन्नति हुई।

सड़कें और नहर

लन्दन में सड़कों पर रोशनी का ठीक प्रबन्ध न था, दूर-दूर पर तेल की लालटेनें लटकती थीं जो बरसात मे बेकार रहती थीं। १८०७ ई० में लन्दन की मुख्य सड़क पालमाल पर गैस की रोशनी का प्रबन्ध हुआ और १८०४ ई० तक सम्पूर्ण नगर में गैस की रोशनी हो गई। दूसरे नगरों में भी शीघ्र इसका प्रचार हुआ।

इसके साथ ही १७६१ ई० में ड्यूक आफ ब्रिजवाटर (Duke of Bridgewater) ने जेम्स ब्रिंडले (James Brindley) इंजीनियर से मैनचेस्टर और लिवरपूल के बीच में नहर बनवाई। इस नहर पर नावों द्वारा माल ले जाना सहज और सस्ता था। जब लोगों को पता लगा कि नाव द्वारा माल ले जाने में घोड़े से कम खर्च और कम कठिनाई है,

तो देश के अन्य भागों में भी व्यवसाय-केन्द्रों के बीच में नहरें बनवाई गईं जिससे माल ले जाने में बहुत सुविधा हुई।

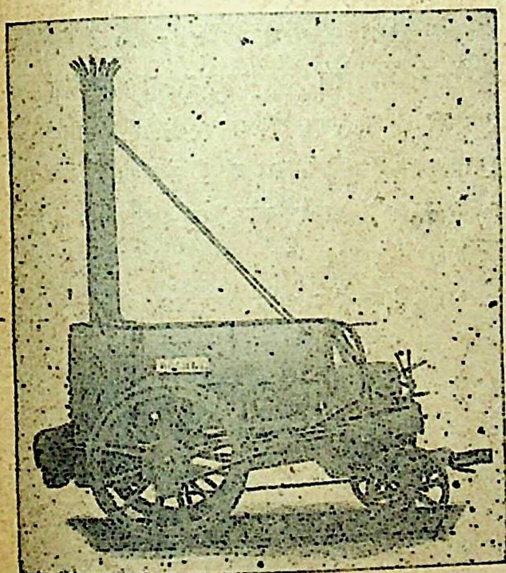


जाज स्टीफेंसन

परन्तु बहुत दिनों तक माल ढोने के उपायों में कोई विशेष उन्नति न हुई। सड़कों के अच्छे होने से बड़ी गाड़ी (Stage Coach) दस मील प्रति घंटा अवश्य चल सकती थी, परन्तु अभी पुराने ढङ्ग की नाव या गाड़ी ही का प्रयोग था। शीघ्र १८०३ ई० में, भाप से चलने वाली नाव फोर्थ (Forth) तथा क्लाइड नहर (Clyde Canal) पर चली और

रेल गाड़ी

१८१२ ई० में हेनरी बेल का बनाया हुआ स्टीमर कोमेट (Comet) ग्लासगो और ग्रीनाक के बीच में भाप से क्लाइड नदी पर चलने लगा। परन्तु स्थल मार्ग में भाप की शक्ति का कैसे प्रयोग हो, इसका अभी कोई उपाय न था। १८१४ ई० में जार्ज स्टीफेंसन (George Stephenson) नामी तीव्र बुद्धि इंजीनियर ने एक एंजिन बनाया जो बहुत सी कोयला ढोने वाली छोटी गाड़ियों को खींच सकता था। १८३० ई० में स्टीफेंसन ने लिवरपूल और मैनचेस्टर के बीच में रेल की लाइन बनवाई और उस पर २५ मील प्रति घंटा चलने वाला उसका बनाया एंजिन 'राकेट' (Rocket) चला। फिर तो देश में सर्वत्र रेलगाड़ी का प्रयोग हुआ और दूर-दूर के नगरों के बीच में रेल द्वारा सभी लोगों ने



राकेट

इससे लाभ उठाया। पुनः समुद्र पर भी भाप से चलने वाले जहाजों का प्रयोग हुआ और महीनों की यात्रा दिवसों में होने लगी। भारतवर्ष,

अमेरिका और आस्ट्रेलिया का मार्ग सहज हो गया। १८३८ ई० में पहला जहाज ग्रेटवेस्टर्न (Great Western) अटलांटिक महासागर पर चला और उसने अमेरिका की यात्रा १४ दिन में पूरी की। उन्नीसवीं शताब्दी में और भी उन्नति हुई और बीसवीं शताब्दी में तो यह यात्रा ४ दिन में पूरी होने लगी है। इन आविष्कारों से व्यापार में बहुत उन्नति हुई और इंगलैंड का माल सभी देशों के बाजारों में सस्ता और बहुत बिकने लगा।

रेल तथा भाप के जहाज के आविष्कार के कारण डाक का भी उचित प्रबन्ध हो गया। पहले, यद्यपि सरकार डाक भेजने का प्रबन्ध करती थी, चिट्ठी भेजने में समय भी बहुत लगता था और महसूल भी बहुत था। साधारण आय के लोग बहुत कम पत्र भेज सकते थे। महसूल दूरी के हिसाब से लिया जाता था। १८४० ई० में रोलैंड हिल (Rowland Hill) के अनुरोध से महसूल कम और देश के सब भागों के लिए समान कर दिया गया। एक पेनी में मामूली पत्र इंगलैंड के किसी भी स्थान को भेजा जा सकता था। अब सब लोग पत्र लिखने लगे और डाक विभाग की आय बढ़ी। दूसरे देशों में भी डाक का प्रबन्ध हुआ। इधर हाल में वायुयान द्वारा डाक जाने लगी है, जिससे समय की बचत हो गई है। इससे व्यापार में सुविधा और उन्नति हुई।

डाक का प्रबन्ध

उन्नीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिक उन्नति बराबर होती रही। फैरेडे (Faraday) के परिश्रम से बिजली की शक्ति का आविष्कार हुआ जिसके कारण तार (Telegraph), केबिल (Cable) और टेलीफोन (Telephone) आदि का आविष्कार हो सका। १८४४ ई० में इंगलैंड में पहली तार की लाइन बनी और फिर धीरे-धीरे देश में सब नगर तार द्वारा सम्बद्ध हो गए। समाचार, संवाद और व्यापार की बातचीत क्षण में इसके द्वारा हो सकी। १८५१ ई० में समुद्र पार तार भेजने के लिए अटलांटिक में पहला केबिल डाला गया। फिर भारत आदि देशों से भी

तार और टेलीफोन



प्रथम रेलगाड़ियाँ

सम्बन्ध हो गया। १८७६ ई० में टेलीफोन का आविष्कार हुआ जिससे दूर बैठे हुए आदमी एक दूसरे से बातचीत कर सकते हैं। बीसवीं सदी में बेतार के टेलीग्राफ़ और टेलीफ़ोन का आविष्कार हुआ है, और अब दूर देशों के समाचार इनके द्वारा बहुत शीघ्र भेजे जाते हैं। इन आविष्कारों से व्यापार में बहुत उन्नति हुई और संसार के सभी देशों में एक दूसरे के समाचार बहुत जल्दी पहुँच जाने लगे।

समाचार पत्र

इन सुविधाओं के कारण समाचार पत्रों की खूब उन्नति हुई। इंगलैंड में राजनैतिक समाचार पत्र तो अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में ही प्रकाशित होने लगे थे, परन्तु उनमें राजनैतिक वादविवाद के अतिरिक्त देश और संसार के समाचार बहुत कम होते थे। अब डाक और तार द्वारा दूर से समाचार शीघ्र और सहज मिल जाने लगे, इससे समाचार पत्र रोचक हो गए। भाप तथा बिजली की शक्ति से चलने वाले छापेखाने भी खुल गए, अतः समाचार पत्रों का मूल्य कम हो गया और अधिक संख्या में छपने लगे।

व्यावसायिक क्रांति का प्रभाव

इस नये परिवर्तन का प्रभाव अच्छा न पड़ा। देश का व्यापार अवश्य बढ़ गया था, व्यवसाय में उन्नति हुई थी, जन-संख्या भी बढ़ी थी और देश का धन भी बढ़ गया था, जिसके कारण फ्रांस से सफलतापूर्वक युद्ध हो सका था। बड़े-बड़े नगर बन गए थे, और नित्यप्रति नए कारखाने खुलते जाते थे। परन्तु इससे क्या मनुष्य सुखी थे? नहीं। इस धन वृद्धि से कुछ थोड़े मनुष्यों का लाभ हुआ था। अधिक लोग तो मजदूरी ही करते थे और मजदूरों की दशा नगरों में बड़ी शोचनीय थी। इसके पहले वे लोग अपने घरों पर काम करते थे उनकी स्त्रियाँ सूत कातती थीं और वे कपड़े बिनते थे, जिससे स्वतंत्रता पूर्वक वे अपनी जीविका कमाते थे। परन्तु अब कलों के आविष्कार से इन छोटे कारीगरों का युग समाप्त हो गया था। अब उनको बड़े कार-

खानों में जाकर काम करना पड़ता था, और पूंजीपति कारखानों का स्वामी, जो वेतन चाहता था, देता था। इस आय से उनके लिए पेट पालना कठिन था। वे लोग काम छोड़ने की धमकी न दे सकते थे, क्योंकि उद्यमहीन सैकड़ों मनुष्य उस वेतन पर काम करने को घूमते थे। वे आपस में संगठन न कर सकते थे, क्योंकि यह १७६६ ई० के संगठन नियम (Combination Act) के अनुसार गैरक़ानूनी था। एलीज़-बेथ के समय का वेतन नियम भी १८१४ ई० में रद कर दिया गया था, इससे उनको अधिक वेतन मिलने का भी कोई उपाय न था। इस पर भी जुरमाना आदि कारणों से उनकी आय बहुत कम रह जाती थी। कम वेतन ही अकेला कष्ट न था। काम करने का समय निश्चित न था। दिन में १६ या १८ घंटे तक उनको काम करना पड़ता था। कार-खानों से रोशनी और हवा के जाने का प्रबन्ध न था। वे बहुत मैले थे। उन्हीं में मजदूरों को भोजन करना पड़ता था, जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ रहा था और उनकी शक्ति कम होती जाती थी, और वे लोग हैजा आदि भयानक रोगों के शिकार हो रहे थे। परन्तु सबसे अधिक क्रूरता का व्यवहार तो बच्चों और औरतों के साथ था। मजदूर अपनी आय बढ़ाने के कारण अपने छोटे बच्चों और स्त्रियों से भी उन्हीं कार-खानों में काम कराते थे। उनको भी १४ या १६ घंटे काम करना पड़ता था। बच्चे नींद से गिर पड़ते थे और मशीन में दब कर मर जाते थे या अधिक कार्य और कम भोजन तथा बन्द जगह में रहने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ता जाता था। स्त्रियों को इतना अवकाश न मिलता था कि अपने बच्चों का उचित पालन कर सकें, और स्वयं निर्बल होने से उनकी सन्तान दुर्बल, क्षीण शक्ति की हो रही थी। बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था, मजदूरों के विनोद का कोई समान न था। इन सब कारणों से देश में दुख और दारिद्र्य फैला हुआ था, परन्तु पार्लियामेंट में कोई भी उनकी रक्षा करने को तैयार न था।

पुनः गाँव उजड़ रहे थे और नगरों की आबादी बढ़ रही थी। यहाँ

तक कि वहाँ रहने तक का ठिकाना न रह गया था। एक बार में कई परिवारों के साथ रहने से दुराचार फैला, और शुद्ध हवा न मिलने से मनुष्यों का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। कारखाने अधिकतर लोहा और कोयले की खानों के पास थे; जो देश के उत्तरी भाग में थीं, इससे वहाँ की जन-संख्या बढ़ गई और कृषि-प्रधान दक्षिण-पूर्व निर्जन होने लगा। इस परिवर्तन से राजनैतिक कठिनाइयाँ बढ़ीं, जिसका उल्लेख आगे होगा।

ये सब कष्ट इसलिए बढ़े कि कुछ पूंजीपति लाभ उठाएँ और सुख से जीवन व्यतीत करें। देश में धन की कमी न थी, कठिनाई थी, धन के असमान वितरण के कारण। घरेलू व्यवसाय (Cottage Industry) के टूट जाने और बड़े कारखानों के खुल जाने से पहले अधिक मनुष्यों की हानि और पूंजीपतियों का लाभ हुआ। परन्तु शीघ्र ही सुधारकों का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने कानून द्वारा बहुत सी असुविधाओं को दूर कर दिया, जिससे उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक मजदूरों की दशा सुधरने लगी। इसका उल्लेख अगले परिच्छेद में होगा। परन्तु देश में इस 'व्यवसायिक क्रान्ति' के कारण मजदूर और पूंजीपतियों में झगड़ा शुरू हो गया था जो अभी तक बिलकुल बन्द नहीं हुआ है।

३२—जार्ज चतुर्थ और विलियम चतुर्थ

१८२०—१८३७ ई०

१८२० ई० में जार्ज तृतीय की मृत्यु हुई और उसका पुत्र जार्ज चतुर्थ गद्दी पर आया। जिस समय वह युवराज था तभी वह अपने दुश्चरित्र के लिए बदनाम था। सिंहासन पर आकर उसका व्यभिचार और भी बढ़ गया। उसके कारण समाज में अनेकों बुराइयाँ आ गईं और अंग्रेजी उच्च समाज व्यभिचारी और दुश्चरित्र हो गया। जार्ज को राजकाज के लिए अवकाश न मिलता था, इसलिए शासन का पूरा भार मंत्रियों पर पड़ा। मंत्री पहले भी शासन के लिए जिम्मेदार थे, परन्तु जार्ज तृतीय की बीमारी और जार्ज चतुर्थ के दुराचार के कारण राजा का मान भी घट गया तथा शासन की बागडोर बहुत कुछ उसके हाथ से निकल गई।

जार्ज चतुर्थ

पूर्व के अध्याय में लिखा गया है कि व्यावसायिक क्रांति तथा नेपोलियन के युद्ध के कारण देश में अशान्ति फैल गई थी और गरीब मजदूर तथा साधारण प्रजा दोनों दुखित थे। जार्ज चतुर्थ के समय में कई स्थानों पर विद्रोह हुए और षड्यंत्र भी रचे गए। परन्तु प्रजा के कष्टों का निवटारा न हो सका, इसके लिए कठिन प्रयत्न की तथा देश के आर्थिक तथा सामाजिक संघठन को बदलने की जरूरत थी। वह काम पीछे को शुरू हुआ और जैसा अगले अध्याय में बताया गया है, बहुत कुछ सफल हुआ।

जार्ज चतुर्थ के समय में कैनिंग परराष्ट्र मंत्री था। उसने यह कोशिश की कि यूरोप के पराधीन राष्ट्र स्वतंत्र हो जायँ। उसने ग्रीस को सहायता दी जिससे वह देश १८२९ ई० में तुर्क साम्राज्य से अलग हो सका। इसी

शासन काल में एक और भलाई का काम हुआ। अब तक कैथोलिक लोगों को राजनैतिक अधिकार मिले हुए थे। वे लोग न तो पार्लियामेंट के सदस्य हो सकते थे न सदस्यों को चुन ही सकते थे। आयरिश



जार्ज चतुर्थ

प्रजा के लिए यह बहुत कष्ट की बात थी। कैथोलिक उद्धार के लिए आयरलैंड तथा इंगलैंड में आन्दोलन हुए। इसका यह असर हुआ कि वेलिंग्टन के मन्त्रित्व में पार्लियामेंट ने 'कैथोलिक उद्धार नियम' (Catholic Emanciqation Act) सन् १८२६ ई० पास किया और उनको सरकारी नौकरियाँ तथा अन्य राजनैतिक अधिकार मिल गए। अब वे चुनाव में भाग ले सकते थे और सदस्य भी हो सकते थे।

इन सुधारों का श्रेय मंत्रियों और जन सम्मति को है न कि राजा को। यह समय ही आन्दोलन और सुधारों का था। अनेक छोटे-छोटे शासन-सुधार भी हुए। फौजदारी कानून में सुधार किया गया जिससे बहुत से छोटे अपराधों में प्राणदण्ड हटाकर थोड़ा दण्ड रखा गया। कैदियों के साथ मनुष्यता का व्यवहार होने लगा और गरीब आदमी के

दुख कुछ कम हुए। पुलिस में भी सुधार हुआ और निकम्मे दुराचारी चौकीदारों को हटाकर अच्छे सिपाही रखे गए। इस समय से देश में व्यवस्थित पुलिस का प्रबन्ध हुआ।

जार्ज चतुर्थ १८३० ई० में मरा और उसका भाई विलियम चतुर्थ सिंहासन पर बैठा। इसका चरित्र अपने भाई के विपरीत था। वह सुयोग शासक था और उसको शासन से भली भाँति परिचय था। विलियम के समय में ह्विग दल प्रधान दल हुआ और देश में सुधारों का सिलसिला शुरू हुआ जिनका उल्लेख अगले अध्याय में किया गया है। विलियम ने स्वयं इस कार्य में मंत्रियों को बहुत सहायता दी। पहले पार्लियामेंट के सुधार का प्रश्न छिड़ा और १८३१ ई० में लार्ड रसेल के उद्योग तथा राजा की सहानुभूति से यह प्रस्ताव पास हुआ। फिर फैक्टरी सुधार हुए और दास प्रथा का अन्त हुआ। पार्लियामेंट ने १८३३ ई० में इस आशय का एक नियम (Adolition Slavery Act) बनाया। इस काम में विल्बरफोर्स (Wilderforce) तथा क्लार्कसन (Clarkson) ने बहुत उद्योग किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी व्यापारी अफ्रीका के हबशियों को पकड़ कर अमेरिका में बेच न सकते थे। इङ्गलैंड की सरकार के उद्योग से थोड़े काल में यह प्रथा बिल्कुल बन्द हो गई और संसार से यह घृणित काम उठ गया।

विलियम चतुर्थ
१८३०—१८३७

विलियम चतुर्थ की मृत्यु १८३७ ई० में हुई और उसकी भतीजी विक्टोरिया महारानी बनी।

३३—सुधारों की शताब्दी

१८२०—१९२० ई०

राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक सुधार

१—राजनैतिक सुधार

'व्यावसायिक क्रान्ति' से सुख के बदले प्रजा को दुःख मिला; गरीबी, कष्ट और बीमारी ही साधारण जनता के भाग में पड़े, परन्तु फिर भी उनकी दशा सुधारने की उस समय कोई कोशिश न हुई। न तो राजा ने न पार्लियामेंट ने ही उनकी दुर्दशा दूर की। इसके कई कारण हैं। उन्नीसवीं सदी में राजा का प्रभाव बहुत कम हो गया था। सब कार्य मंत्री करते थे और वे लोग पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी थे। राजा केवल देश का प्रधान था और एक राजा के मरने से और दूसरे के सिंहासन पर आने से कोई विशेष अन्तर न पड़ता था। इससे राजा स्वयं कुछ न कर सकता था, और पार्लियामेंट इस समय जन-सम्मति का तनिक भी ध्यान न रखती थी। फ्रांस की राज्यक्रांति से शासक भयभीत हो गए थे अतः वे सुधार के विरोधी थे। दूसरे युद्ध के कारण उनको इस कार्य के लिए समय भी न मिला था। परन्तु युद्ध के बाद भी इस काम की ओर किसी का ध्यान न गया, क्योंकि राजनीतिज्ञों का विचार था कि इसमें पार्लियामेंट को दखल देने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह तो मजदूरों और मालिकों के समझौते की बात है, वे स्वयं इसका निबटारा कर लेंगे। इसलिए जनता के दुखों का अन्त शीघ्र न हो सका, यद्यपि सुधार की बहुत जरूरत थी।

पार्लियामेंट में मजदूरों का पक्ष लेने वाला कोई न था। १७१० ई०



विलियम चतुर्थ

पार्लियामेंट के चुनाव की विधि में बुराइयां

के नियम के कारण ३०० पौंड वार्षिक आय से कम का कोई मनुष्य सदस्य न हो सकता था, इसलिए उस सभा में केवल अमीर लोग ही थे जिनको मजदूरों से कोई सहानुभूति न थी। दूसरे, चुनाव के नियम भी खराब और पुराने थे जिसके कारण प्रतिनिधियों पर जनता का कोई दबाव न पड़ सकता था। आजकल चुनाव से डर के प्रतिनिधि जनता की इच्छा से काम करते हैं। और क्योंकि प्रत्येक पुरुष को वोट देने का अधिकार है, इसलिए गरीबों की आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रक्खा जाता है परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू में बहुत थोड़े आदमियों को यह अधिकार मिला था। नगरों (Boroughs) और काउंटियों (Counties) से दो-दो प्रतिनिधि

लोक सभा में जाते थे। एलीजबेथ के समय से अंत तक नगरों के प्रतिनिधित्व में कोई तबदीली न हुई थी, बहुत से नगर नष्ट हो गए थे (Rotten Boroughs) कुछ में कोई भी रहने वाला न था, परन्तु उनसे प्रतिनिधि भेजे जाते थे जिसका अधिकार उस भूमि के स्वामी जमींदार को था (Pocket Boroughs)। इधर 'व्यवसायिक क्रांति' के कारण कई छोटे गाँव बड़े नगर हो गए थे, जैसे बरमिंघम; लीड्स और मैनचेस्टर, पर उनको प्रतिनिधि भेजने का कोई अधिकार न था। इसके विपरीत ओल्ड सारम (Old Sarum) था, जिसमें न कोई घर था न कोई मनुष्य, पर उससे दो प्रतिनिधि लोकसभा में आते थे। एक स्थान था (Ludgershall)जिस में एक मनुष्य रहता था, वह स्वयं अपने आप को चुन लेता था। इन नगरों पर जमींदारों का अधिकार था, जो जिसे चाहते थे लोकसभा का सदस्य बना देते थे। ड्यूक आफ नार्थंबरलैंड इस प्रकार ११ सदस्यों को भेजता था, और कुल मिला कर ६५८ में से ३५७ प्रतिनिधि १५४ भूमिपतियों द्वारा भेजे जाते थे। ये प्रतिनिधि उनकी आज्ञा पर काम करते थे और जनता की आवश्यकताओं का तनिक भी ध्यान न रखते थे। बड़े नगरों में भी दशा कुछ अच्छी न थी। सब निवासियों को तो वोट देने का अधिकार था नहीं; कुछ थोड़े लोगों के पास वोट था और ये लोग धन लेकर वोट देते थे। शेरिडन को अपने चुनाव में २५० नागरिकों को ३ पौंड प्रति के हिसाब से खर्च करना पड़ता था। इनसे प्रकट होता है कि लोकसभा जनता की प्रतिनिधि न थी।

नए नगरोंमें चुनाव के अधिकार के लिए आन्दोलन होने लगा। सब का विचार था कि मजदूरों का कष्ट तभी दूर होगा जब उनको वोट देने का अधिकार मिल जाएगा, और उनके प्रतिनिधि लोकसभा में जाएंगे। कुछ राजनीतिज्ञ भी सोचने लगे कि सुधारों में देर करने से क्रान्ति का डर है, अतः जार्ज तृतीय की मृत्यु के बाद सुधार के लिए विशेष

प्रथम सुधार नियम १८३२ ई०

प्रारम्भ हुआ। ह्विग दल ने इसमें खूब कोशिश की। १८३० ई० में पचास वर्ष के बाद ह्विग दल लोकसभा में बहुपक्ष में था। लार्ड ग्रे प्रधान मंत्री हुआ और लार्ड रसेल (Russell) ने प्रथम सुधार बिल (First Reform Bill) पेश किया। यह लोक सभा में पास न हो सका, तब विलियम चतुर्थ ने मन्त्रियों की सलाह से लोक सभा विसर्जित कर दी और दूसरा चुनाव हुआ। इसमें ह्विग दल बहुपक्ष में था। दूसरा सुधार प्रस्ताव



लार्ड रसेल

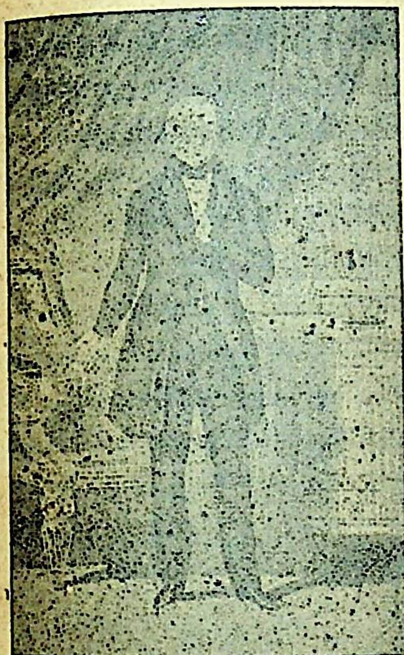
पेश हुआ जिसको लोकसभा ने तो पास कर दिया परन्तु लार्ड सभा ने गिरा दिया। देश में चारों ओर आन्दोलन होने लगा। स्थान-स्थान पर विद्रोह हुए। उन अमीरों के घर जिन्होंने विरोध में बहुत भाग लिया था, जला दिए गए। राजा का भी अपमान हुआ। इस दशा को देख कर विलियम ने धमकी दी कि वह लार्ड सभा में नए अमीर बना कर इस प्रस्ताव को पास कराएगा। तब लार्ड सभा के सदस्य दब गये और पहला सुधार नियम पास हो गया।

इसके अनुसार जिन नगरों की जनसंख्या २००० से कम थी, उनको प्रतिनिधि भेजने का अधिकार छीन लिया गया और जिनकी जन-संख्या ३००० से ४००० के बीच में थी उनको एक और ४००० के ऊपर दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला। इस प्रकार ५६ छोटे नगरों के प्रतिनिधि भेजने का अधिकार बिलकुल छीन लिया गया और ३० को एक ही प्रतिनिधि भेजने का अधिकार रह गया। पुनः उन नगरों में से जिनसे अब तक प्रतिनिधि न आते थे, २० को एक भेजने का और २० को दो भेजने का अधिकार मिला। काउन्टियों से ६५ सदस्य और बढ़ गए। इसके सिवाय वोट देने के नियमों में भी परिवर्तन हुआ। सब नगरों में उन गृहस्थों को जो १० पौंड वार्षिक किराए के घर में रहते थे और गाँवों में जो ५० पौंड लगान देने वाले कृषक थे, उनको वोट देने का अधिकार मिला। इस प्रकार अब पार्लियामेंट में मध्यम श्रेणी के लोग भी पहुंच सकते थे और जनता की मांगों की सुनवाई हो सकती थी।

इस सुधार नियम से दशा बहुत बदली, परन्तु फिर भी बहुत लोग सन्तुष्ट न थे। अब भी ३०० पौंड वार्षिक से कम आय का मनुष्य लोकसभा का सदस्य न हो सकता था, क्योंकि यह नियम १८५८ तक लागू रहा। दूसरे, गाँव और नगरों में मजदूरों को वोट देने का अधिकार न मिला था। इसी समय देश में कार्न ला (Corn Laws) के कारण अन्न बहुत महंगा विकता था और सहस्रों आदमी पेट भर भोजन न पाते थे। इसलिए यह विचार दृढ़ होता जाता था कि बिना सब को वोट का अधिकार मिले कष्ट दूर न होंगे। देश में आन्दोलन मचा। ये लोग चाहते थे कि प्रत्येक पुरुष को जो २१ वर्ष या अधिक अवस्था का हो, वोट देने का अधिकार मिल जाए, लोकसभा के सदस्य होने के लिए आय का कोई बन्धन न रहे, सदस्यों को वार्षिक वेतन मिला करे जिससे गरीब आदमी भी सदस्य हो सकें और वोट छिपा कर (Ballot) डाले जाएं। १८३८ में फ़ीयरगस ओकानर (Fear

चार्टिस्ट आन्दोलन
१८३७–१८४८

...s O'Connor) ने एक बहुत बड़ा प्रार्थना पत्र बनाया जिसमें ये ...मांगें लिखी गईं और सहस्रों देशवासियों के हस्ताक्षर कराये गये। ...सका नाम 'जनता का अधिकार पत्र' (People Charter) रक्खा



ओकानर

...गया और यह पार्लियामेंट के सामने पेश किया गया, परन्तु पार्लियामेंट ...इसको स्वीकार न किया। इसके समर्थक चार्टिस्ट (Chartist) कहलाए। ...देश में फिर आन्दोलन हुआ, विराट सभाएं हुईं और भय था कि ...शान्ति में विघ्न पड़ेगा, परन्तु नेताओं के पकड़े जाने से और राजनीतिज्ञों ...से कोई सहायता न मिलने के कारण यह आन्दोलन धीरे-धीरे १८४८ तक ...शान्त हो गया। चार्टिस्ट जो सुधार चाहते थे वे अनुचित न थे, क्योंकि ...पार्लियामेंट ने एक शताब्दी के भीतर ही वे सब प्रस्ताव मान लिए।

प्रथम सुधार नियम में १८६७ ई० तक कोई परिवर्तन न हुआ। उस साल कंजर्वेटिव (टोरी) दल का नेता डिस्रायली (Disraeli) प्रधान मन्त्री हुआ। उसने देखा कि उसके दल की रक्षा के लिए आवश्यक है कि वह सुधारों में भाग ले अतः १८६७ ई० में उसने एक सुधार प्रस्ताव पेश किया जिससे नगरों में सब गृहस्थों (मकानदारों) को वोट देने का अधिकार मिल गया। यह पास होकर 'द्वितीय सुधार नियम' (Second Reform Act) बना।

द्वितीय और तृतीय सुधार नियम १८६७ व १८८४ ई०

इसके अनुसार नगरों के छोटे कारीगर भी वोट देने के अधिकारी हुए परन्तु अब भी गाँवों के मजदूर आदि इस अधिकार से वंचित थे। १८८० ई० में जब लिबरल नेता ग्लैड्स्टन प्रधान मन्त्री हुआ तो उसने प्रजा को प्रसन्न करने के लिए १८८४ ई० में 'तृतीय सुधार नियम' बनवाया, जिसके अनुसार गाँवों और नगरों के प्रत्येक गृहस्थ (मकानदार) वोट देने का अधिकारी हो गया। इस प्रकार देश की अधिकांश जनता राजनैतिक कामों में भाग ले सकी और सब श्रेणियों के प्रतिनिधि पहुँचाने से लोक सभा सच्ची प्रतिनिधि सभा हो गई।

१९१८ ई० का नियम

परन्तु अभी स्त्रियों और कुछ बालिग पुरुषों को यह अधिकार प्राप्त न था। स्त्रियों ने इस समय से सङ्गठन करके राजनैतिक अधिकारों के लिए आन्दोलन किया, जो सफ्राजिस्ट (Suffragist) आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध है। १९१४ ई० के महायुद्ध में देश की रक्षा के लिए स्त्रियों ने बहुत कार्य किया था, अतः युद्ध के बाद आवश्यक हो गया कि स्त्रियों को चुनाव में वोट देने का अधिकार दिया जाय। लायड जार्ज के प्रधान मंत्रित्व से १९१८ ई० में एक नियम बना जिसके अनुसार प्रत्येक पुरुष को जो २१ वर्ष से अधिक आयु का हो और प्रत्येक स्त्री को जो ३० वर्ष से अधिक आयु की हो और जिसका अपना घर हो या जिसके पति का निज का घर हो, पार्लियामेंट के चुनाव में वोट देने का अधिकार मिला।

स्त्रियाँ लोक सभा की सदस्य होने की अधिकारिणी हो गईं और इस समय कुछ स्त्रियाँ सदस्य हैं भी। परन्तु स्त्रियाँ इससे सन्तुष्ट न हुईं। वे चाहती थीं कि २१ वर्ष की आयु से अधिक प्रत्येक स्त्री को यह अधिकार मिल जाए। १९२८ ई० के नियम से यह हक़ भी मिल गया है और अब इङ्गलैंड के सभी पुरुष और स्त्री जो २१ वर्ष से अधिक आयु के हैं और जो पागल नहीं है, चुनाव में भाग लेते हैं। लोक सभा सच्ची प्रतिनिधि सभा हो गई है और अब इसके हाथ में शासन की बागडोर होने से देश में वास्तविक प्रजातंत्र स्थापित होगया है।

चार्टिस्ट आन्दोलन में एक मांग थी कि चुनाव में जो वोट दिए जाएं वे छिपा कर डाले जाएं। अभी तक खुली सभा में वोट देने वाले हाथ उठाकर अपनी सम्मति देते थे। इससे यह पता लग जाता था कि किस आदमी ने किसके लिए वोट दिया है, अतः वोटर स्वतन्त्रता-पूर्वक अपनी राय देने में डरते थे। १८७२ ई० में

बैलट ऐक्ट १८७२ ई०

इंग्लैंड ने एक नियम बनाया जो बैलट ऐक्ट (Ballot Act) कहाता है, जिसके अनुसार छिपाकर वोट देने का प्रबन्ध हो गया है। वोटर एक कागज़ पर जिसके लिए राय देता है, उसके नाम के सामने चिन्ह करके एक सन्दूक में डाल देता है। अब पता नहीं लगता कि किसने किसके लिए वोट दिया है, अतः स्वतंत्रता-पूर्वक वोट पड़ते हैं और दुराचार तथा दबाव का कम अवसर है। यह सुधार भी राजनैतिक उन्नति के लिए आवश्यक था।

सुधारों का विरोध अधिकतर लार्ड सभा करती थी। अब अमीर (लार्ड) इसके सदस्य होते हैं और चुनाव आदि न होने से वे जन-सम्मति का विरोध सहज ही कर सकते हैं। इसके अधिकांश सदस्य कंसर्वेटिव (टोरी) दल के होते हैं इससे वे स्वतंत्र विचार वाले लिबरल दल के विरोधी होते हैं। लार्ड सभा और लोक सभा के अधिकारों में उन्नीसवीं

पार्लियामेंट ऐक्ट १९११ ई०

शताब्दी में कोई अन्तर न था। सभी प्रस्ताव दोनों सभाओं में जाते थे और किसी एक के भी विरोध करने से नियम नहीं हो सकते थे। व्यवहार द्वारा यह परिपाटी हो गई थी कि लार्ड सभा धन सम्बन्धी प्रस्तावों में हस्तक्षेप न करती थी इसके लिए कोई नियम न था। बहुधा दोनों में झगड़ा रहता था। १९०६ ई० में लोकसभा में लिबरल दल बहुपक्ष में था और उसने कई आवश्यक सामाजिक तथा आर्थिक, सुधारों का प्रस्ताव किया, परन्तु लार्ड सभा ने शिक्षा नियम, (Education Act) आदि का विरोध करके उनको रद्द कर दिया। १९०६ ई० में अर्थ मन्त्री लायड जार्ज ने बजट पेश किया, जिसको लार्ड सभा ने अस्वीकार किया। अब समस्या कठिन हो गई, क्यों कि बिना बजट पास हुए कर वसूल न हो सकते थे और शासन कार्य न चल सकता था। प्रधान मन्त्री एस्क्विथ ने लोकसभा विसर्जित कर दी और एक वर्ष में दो चुनावों के बाद उसने दोनों सभाओं के सम्बन्ध को निश्चित करने के लिए एक प्रस्ताव रखा जो पास होकर '१९११ का पार्लियामेंट ऐक्ट' कहाया। इसकी मुख्य धाराएं ये थीं—(१) लार्ड सभा को धन सम्बन्धी प्रस्तावों पर हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार न होगा (२) यदि कोई साधारण प्रस्ताव दो बार लोकसभा में पास हो जाए और दोनों वार लार्ड सभा उसको अस्वीकार करे तो दो वर्ष के उपरान्त लोकसभा में तीसरी बार पास होने से बिना लार्ड सभा की अनुमति के ही राजा के हस्ताक्षरों से वह नियम हो जायगा। (३) लोकसभा का चुनाव सात वर्ष के बजाय प्रति पाँच वर्ष में हुआ करेगा, और (४) लोकसभा के सदस्य ४०० पौंड वार्षिक वेतन पाया करेंगे। लार्ड सभा में इसका विरोध हुआ परन्तु सम्राट जार्ज पंचम ने, जो उसी समय सिंहासन पर बैठे थे, यह कहकर कि आवश्यकता पड़ने पर नए लार्ड बनाए जाएंगे, विरोध को शान्त कर दिया। यह प्रस्ताव पास होकर नियम बन गया। अब शासन का पूरा भार लोकसभा के हाथ में आ गया है। लार्ड सभा केवल दो वर्ष तक किसी प्रस्ताव को स्थगित कर सकती है, ताकि जन-सम्मति मालूम हो

गए। प्रति पाँच वर्ष में चुनाव होने से प्रतिनिधि जन सम्मति से स्वतन्त्र नहीं हो सकते हैं और सदस्यों को वेतन मिलने से ग़रीब आदमी हो, जो पहले अपनी जीविका कमाने के कारण राजनैतिक कार्यों के लिए समय न दे सकता था, अब लोक सभा का सदस्य हो सकता है। अब प्रजातन्त्र की पूर्ण स्थापना हो गई।

ऊपर लिखे हुए इन सुधारों से राजनैतिक दलों के संगठन तथा उद्देश्यों में भी परिवर्तन हुआ, क्योंकि अब जनता के अधिक लोग चुनाव में भाग लेते थे। अब टोरी दल केवल राजनैतिक अमीरों की स्वार्थसिद्धि और राजा के अधिकारों दलबंदी की रक्षा में व्यस्त न रह सकता था। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में उसके लिए आवश्यक हो गया कि सुधारों द्वारा जनता की सहानुभूति प्राप्त करे। डिसरायली ने इस दल का पुनः संगठन करके इसका नाम कंजर्वेटिव (Conservative) दल रक्खा और सुधार सम्बन्धी बहुत से नियम बनवाए। लिबरल दल पहले से ही सुधारों का समर्थक था परन्तु मजदूरों का पक्ष न लेने से धीरे-धीरे उसकी अवनति होती गई। इसदल ने पार्लियामेंट एक्ट (१९११) और चुनाव सम्बन्धी नियम बनाकर देश का भारी उपकार किया। मजदूरों और स्त्रियों के अधिक संख्या में वोटर होने से एक नए दल, मजदूर दल (Labour Party) का संगठन हुआ, जिसने धीरे-धीरे उन्नति करके १९२४ ई० में शासन का भार लिया और १९३० ई० में दुबारा इंगलैण्ड का शासन किया। इसके नेता रैमजे मैकडानाल्ड प्रधान मन्त्री हुए। अब दो मुख्य दल हैं, कंजर्वेटिव तथा मजदूर। इस प्रकार धीरे-धीरे शासन की बागडोर साधारण जनता के हाथ में आती जाती है और शासन विशेष प्रकार से जनता के हित के लिए होता है।

२—सामाजिक सुधार

राजनैतिक सुधार के साथ साथ आवश्यक था कि देश की वे

सामाजिक और आर्थिक कुरीतियाँ भी दूर हों, जिनके कारण बहुत लोगों को कष्ट मिल रहा था।

पुतलीघरोंके सुधार के नियम Factory Legislation

'व्यवसायिक क्रांति' ने पुतलीघर बनाकर देश की कारीगरी और व्यापार में बहुत उन्नति की थी, परन्तु उसका बुरा फल यह भी हुआ था कि धन कुछ पूंजीपतियों के हाथ में इकट्ठा हो गया था और मजदूरों को गुलामों की तरह दिन रात में १४ या १६ घण्टा काम करना पड़ता था। उनके स्वास्थ्य और आराम का कोई ध्यान न था। पुतलीघरों में सफ़ाई, हवा और रोशनी का कोई प्रबन्ध न था। बच्चों और औरतों को शक्ति के बाहर काम करना पड़ता था। कलों में दबकर बहुतों के प्राण गए या हाथ पैर कट गए, परन्तु उन दुखियों को कुछ भी हरजा न मिला। ऐसी बुरी अवस्था में जातीय शक्ति का नाश हो रहा था, इससे कुछ दयाशील हृदयों में इन बुराइयों को दूर करने की इच्छा पैदा हुई। जिस जाति ने बाहर देशों में गुलामी की प्रथा को हटाया था, भला वह कब इस अत्याचार को सह सकती थी। १८३३ ई० में लार्ड शेफ्ट्सबरी (Earl of Shaftesbury) के प्रस्ताव पर पार्लियामेंट ने एक नियम बनाया, जिसके अनुसार नौ वर्ष से कम आयु के बच्चे पुतलीघरों में काम न कर सकते थे और नौ से तेरह वर्ष तक के बच्चे नौ घण्टे से अधिक, तथा तेरह से अठारह तक लड़के और लड़कियाँ बारह घण्टे से अधिक काम न कर सकते थे। पुन: १८४२ ई० में उसने दूसरे नियम द्वारा स्त्रियों तथा लड़कियों और दस वर्ष से कम आयु के लड़कों का ज़मीन के नीचे खानों में काम करना बन्द कराया। १८४४ ई० में औरतें केवल बारह घण्टे और तेरह वर्ष तक के लड़के साढ़े छः घण्टे काम करें ऐसा नियम बना। फिर १८४७ ई० में उसने मज़दूरों के लिए केवल दस घण्टे रोज़ काम करने का नियम बनाया। आगे चलकर केवल आठ घण्टे की ही अवधि रह गई। इसके सिवाय पुतलीघरों में सफ़ाई आदि के लिए उचित नियम बने और निरीक्षक (Factory

Inspectors) नियुक्त हुए कि इन नियमों की पाबन्दी कराएं। इन सुधारों से बहुत लाभ हुआ, मजदूरों का स्वास्थ्य संभला और वे लोग ज्यादा और अच्छा काम कर सके जिससे उनके स्वामियों की भी कोई हानि न हो सकी।

एलीज़बेथ के समय में गरीबों तथा अपाहिजों को उचित सहायता देने का प्रबन्ध हुआ था, परन्तु वे नियम बहुत पुराने हो गए थे। फ्रांस की राज्यक्रांति के युद्ध के बाद बहुत लोग बेरोज़गार हो गए थे, इसलिए एक नया नियम बना था कि दरिद्रों को उसके घर पर ही सहायता पहुँचाई जाए। इसका फल यह हुआ था कि बहुत हृष्ट-पुष्ट मनुष्य भी काम से मुंह चुराकर इस तरह जनता की ख़ैरात पर पड़े हुए थे, और ईमानदार मजदूर थोड़े वेतन में ही गुजर कर रहे थे। इसको दूर करने के लिए १८३४ ई० में एक 'दरिद्र संरक्षण नियम, बनाया गया जिसके अनुसार सहायता पाने के लिए यह आवश्यक हो गया कि प्रत्येक व्यक्ति दरिद्रालय (Poor House) में जाकर परिश्रम करे और वहीं पेट भर अन्न पाए। इससे यह लाभ हुआ कि आलसी निकम्मे मनुष्यों को सहायता न मिल सकती थी। इसका भार नगर (Borough) अथवा प्रान्तीय (County) समितियों पर था। इङ्गलैंड में आज कल भी सरकार बेरोज़गार आदमियों को उचित सहायता (Doles) देती रहती है, जिसके कारण भिखारियों और भूख से मरने वालों की संख्या वहाँ नहीं के बराबर है।

दरिद्र संरक्षण नियम (Poor Law)

मजदूरों की दशा सुधारने का प्रयत्न बराबर जारी रहा। उन लोगों में भी सुधार की इच्छा पैदा हो गई थी। वे जानते थे कि बिना संगठन (Union) के वे पुतली घर के स्वामियों पर कोई जोर नहीं डाल सकते हैं। इसलिए हर रोजगार के मजदूरों ने अपना संगठन शुरू किया और वे हड़ताल (Strike) करके अपने स्वामियों को मजदूरी बढ़ाने पर मज

मजदूरों का हित

दूर करने लगे। इस प्रथा को पार्लियामेंट ने १८७० ई० में नियमानुकूल माना, तब से देश में व्यवसायिक संघ (Trade Unions) अधिक संख्या में बन गए, और बराबर प्रयत्न करने से मजदूरों की दशा बहुत सुधर गई। पार्लियामेंट में उनके प्रतिनिधि 'मजदूर-दल' (Labour Party) के नाम से १८९२ ई० से जाने लगे। इन्होंने धीरे-धीरे अपनी संख्या इतनी बढ़ाई कि १९३० ई० में पार्लियामेंट में अधिक संख्या में हुए और मन्त्रिमंडल बनाकर शासन किया। १९०८ ई० में बुढ़ापे में पेन्शन का नियम, और १९११ ई० में (Nationl Insurance Bill) पास हुए, जिससे बीमार पड़ने पर दवा और तनख्वाह मिलने तथा ७० वर्ष की आयु के ऊपर पेन्शन मिलने का नियम हो गया। इस प्रकार मजदूरों की दशा सुधारने का सरकार ने प्रयत्न किया। परन्तु अब भी उनकी दशा सन्तोषजनक नहीं है। वे लोग अब भी टूटे गंदे मकानों में रहते हैं, और दारिद्र्य, बीमारी और अशिक्षा के चंगुल में पड़े हैं।

शिक्षा सम्बन्धी सुधार

राजनैतिक सुधारों की सफलाता जनता के शिक्षित होने पर निर्भर है। इङ्गलैंड में १८६७ ई० में वोट देने का अधिकार अधिकांश जनता को मिल गया था, परन्तु इसकी कोई आशा न थी कि अशिक्षित अथवा अर्धशिक्षित मनुष्य अपने इस अधिकार का उचित प्रयोग कर सकेंगे। इसलिए लिबरल नेता ग्लैड्स्टन ने १८७० ई० में एक नियम बनाया जिसके द्वारा प्रत्येक जिला में एक स्कूल क़ायम किया गया। और उसके खर्च के लिए वहाँ के निवासियों से कर लिया गया। फिर १८८० ई० में प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य हो गया कि वह स्कूल में शिक्षा पाए और १८९१ ई० में निःशुल्क (Free) शिक्षा का प्रबन्ध हो गया। प्रारम्भिक शिक्षा इङ्गलैंड में प्रत्येक स्त्री-पुरुष को प्राप्त है और उसको अपने राजनैतिक अधिकारों का पूरा ज्ञान है।

शिक्षा का उचित प्रबन्ध हो जाने से आवश्यक हो गया कि सरकारी नौकरियों के मामले में कोई पक्षपात न रहे। पहले सिफ़ारि सिविल सर्विस (Civil Service) में पद मिलता था परन्तु अब परीक्षा में सफलता पाने से ही नौकरी मिल सकती है। सब सरकारी दफ्तरों में यही प्रथा है, जिससे योग्य पुरुष को नौकरी मिलने में कोई कठिनाई नहीं होती। पहले कैथोलिकों को न तो सरकारी नौकरी मिलती थी, न वे पार्लियामेंट में बैठ सकते थे और न यूनिवर्सिटी आदि में शिक्षा पा सकते थे। धीरे-धीरे नियमों द्वारा ये बाधाएं दूर कर दी गईं और शिक्षा तथा अन्य मामलों में कैथोलिकों को अब वही अधिकार प्राप्त हैं जो आंग्ल चर्च वालों को। इन सब विधानों से इङ्गलैंड की सामाजिक अवस्था बहुत सुधर गई, वहाँ समता और स्वतन्त्रता का आधिपत्य हो सका और इस समय इङ्गलैंड पूर्ण प्रजातन्त्र हो गया है।

३—आर्थिक सुधार

उन्नीसवीं शताब्दी के पहले लोगों का यह विचार था कि ब्रिटेन को अपनी व्यवसाय की रक्षा करनी चाहिए। इसके लिए वे बाहर से आने वाले माल को रोकना उचित समझते थे और चाहते थे कि उनका माल बाहर बिके और देश में सोना-चाँदी आए दूसरा विचार यह था कि देश में इतना नाज पैदा हो कि सब के लिए काफ़ी हो जाए। इसलिए बाहर से आने वाले नाज पर बहुत कर लगाया जाता था। ऐडम स्मिथ (Adam Smith) ने १७७६ ई० में अपनी पुस्तक 'वेल्थ आफ नेशंस' में इन विचारों का विरोध किया और 'स्वतन्त्र व्यापार' करने की शिक्षा दी। उसके विचारों का अच्छा प्रचार हुआ। पिट तथा हसकिसन (Huskison) ने बहुत सी वस्तुओं पर से चुंगी हटा दी, जिससे बाहर से माल आने में सुविधा हुई। इसका फल यह भी हुआ कि इङ्गलैंड का माल दूसरे देशों में बिकने लगा। क्योंकि जब फ्रांस आदि का माल इङ्गलैंड में बिका तो उसके बदले में

स्वतन्त्र व्यापार
Free Trade

उन्होंने इङ्गलैंड का माल खरीदा । इस प्रकार 'स्वतन्त्र व्यापार' आरम्भ हुआ, परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक अन्न पर भारी कर लगा रहने से उन्नति न हो सकी ।

अन्न पर चुंगी इसलिए लगी थी कि इङ्गलैंड के कृषक खेती में चित्त



सर राबर्ट पील

लगाएं और उनको तथा भूमिपतियों को लाभ हो । परन्तु अनाज मंहगा हो जाने से साधारण जनता को बहुत कष्ट होता था

कार्न ला का विरोध क्योंकि नियमानुसार बाहर से अन्न न आ सकता था । इससे मजदूर लोग भूखों मरने लगे । अमीरों के लाभ के कारण ग़रीबों को भूखा रहना पड़ता था । रिचर्ड, कावडन

(Richard Cobden) ने इसके विरुद्ध आन्दोलन किया और देश में स्थान-स्थान पर जाकर व्याख्यानों-द्वारा अपना विचार प्रकट किया। उसका सहायक जान ब्राइट (John Bright) था। उन्हों ने एक समिति "कार्न लॉ विरोधिनी समिति" (Anti Corn Law League) बनाई और पार्लियामेंट के चुनाव में ऐसे ही सदस्यों के चुने जाने का प्रयत्न किया जो उनके विचारों से सहमत थे। जब यह प्रयत्न हो रहा था तभी १८४५ ई० आयरलैंड में भारी अकाल पड़ा और आलू की फ़सल, जो जनता की सहारा थी, बिल्कुल न हुई। हज़ारों आदमी भूखों मरने लगे। उस समय पील (Peel) प्रधान मन्त्री था। 'कार्न लॉ' के पक्षपाती होते हुए भी उसको मालूम हुआ कि बिना बाहर से अन्न मंगाए जनता को मृत्यु से बचाना कठिन है, और बाहर से अन्न मगाने पर चुंगी सदा के लिए हटानी पड़ती थी। पील के इस प्रस्ताव को उसके अनुयाइयों ने स्वीकार न किया, तब उसने इस्तीफ़ा दे दिया। परन्तु जब रसेल (Russell) ने भी मंत्री पद स्वीकार न किया, तब पील पुनः प्रधान मन्त्री हुआ और उसने 'कार्न लॉ' रद्द कर दिया। काबड़न आदि की विजय हुई। तब से इङ्गलैंड 'स्वतन्त्र व्यापार' का पक्का पक्षपाती है और अपने बढ़े हुए व्यवसाय के कारण वह इसमें दृढ़ रह सका है।

३४—महारानी विक्टोरिया

१८३७—१९०१ ई०

विलियम चतुर्थ के कोई संतान न थी इसीलिए उसके मरने पर उसकी भतीजी राजकुमारी विक्टोरिया सिंहासन पर बैठो। उसकी अवस्था केवल १८ वर्ष की थी। जिस समय वह सिंहासन पर आई, इङ्गलैंड में राजा का मान बहुत कम हो गया था और कुछ लोग तो सोचने लगे थे कि राजा की आवश्यकता ही क्या है। परन्तु विक्टोरिया ने अपने व्यापार से शीघ्र ही सिंहासन का मान बढ़ाया और प्रजा फिर राजपद को आदर की दृष्टि से देखने लगी।

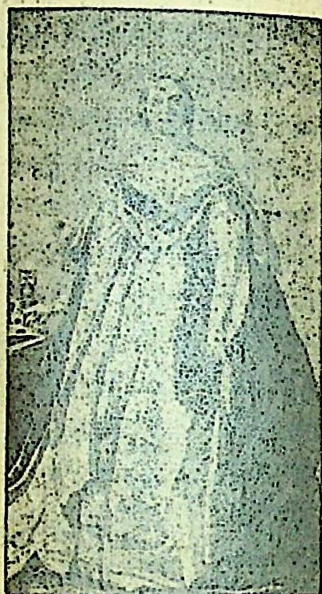
अब तक विक्टोरिया का जीवन बहुत सादगी से बीता था। उसकी माता ने उसको वे सब गुण सिखाए थे जिसके कारण वह प्रजा को प्रिय हो सकी। उसमें आत्मत्याग था, वह शान्ति प्रकृति की थी, और प्राणि मात्र से स्नेह करती थी। वह दयावती और सत्यप्रिय थी। वह दूसरों का लिहाज़ रखती थी परन्तु अपने विचारों में स्वतन्त्र थी। रानी को शासन कार्य से रुचि थी और रोज़ प्रातः काल यह राज-काज में व्यस्त रहती थी। बिना पूरी तरह पढ़े और समझे हुए वह किसी भी पत्र पर हस्ताक्षर न करती थी। उसको देश के भीतर तथा बाहर की घटनाओं की पूरी सूचना रहती थी यद्यपि इस समय शासन का भार मन्त्रियों के ऊपर था, तथापि महारानी विक्टोरिया का व्यक्तिगत प्रभाव कम न था। विशेषतः परराष्ट्रनीति संबन्ध मामलों में वह अपनी सम्मति देती थी और मंत्री लोग बहुधा उसकी राय पर काम करते थे। अनेक बार उसने अपने प्रभाव से कई जटिल समस्यायों को हल किया था और दूसरे शासकों को पत्र लिखकर देश का हित किया था।

आरम्भ में विक्टोरिया का मुख्य सलाहकार प्रधान मंत्री मेलबोर्न (Melbourne) था, जिससे महारानी ने शासन कार्य की शिक्षा पाई। १८४० ई० में विक्टोरिया का विवाह सैक्सु कोबर्ग गोथा (Saxe Coburg Gotha) के राजकुमार अल्बर्ट (Albert) के साथ हुआ। उस समय अलबर्ट ने रानी को राजकाल सम्हालने में बहुत सहायता दी। प्रिंस अल्बर्ट दूरदर्शी नीतिज्ञ था और परराष्ट्रनीति की जटिल समस्याओं को अच्छी तरह समझता था। उसकी १८६१ ई० में मृत्यु हुई जिससे महारानी को बहुत शोक हुआ।

विक्टोरिया का शासनकाल

महारानी विक्टोरिया का शासनकाल इंगलैंड में शान्ति और सुख का समय था। इस काल में वह बुराइयाँ जो व्यावसायिक क्रान्ति के कारण आ गई थीं, दूर की गई और पार्लियामेंट ने ऐसे नियम बनाए जिनसे मजदूरों को लाभ पहुँचा। इनका उल्लेख इसके पूर्व अध्याय में हो चुका है। पार्लियामेंट का भी, जैसे पहले बता चुके हैं, सुधार हुआ और वह सभा सत्य ही प्रतिनिधि सभा बन गई। देश का व्यापार बढ़ा, व्यवसाय में उन्नति हुई और धन की वृद्धि हुई। इसका फल यह हुआ कि ग़रीब आदमी का भी रहन-सहन अच्छा हो गया, नगरों में अनेक प्रकार की सुविधाएं की गई और शिक्षा आदि का काम उन्नति कर सका। इसी राज्यकाल में इंगलैंड में रेल का अच्छा प्रचार हुआ, डाक का प्रबन्ध हुआ, तार-टेलीफ़ोन आदि जारी हो सके। दूसरे देशों तक जाने के लिए भी अच्छा उपाय किए गए, जहाजों में उन्नति हुई और भाप से चलने वाले शीघ्रगामी जहाज बने जिनसे संसार के अनेक दूर स्थिति भागों तक पहुंचना आसान हो गया। इसका फल यह हुआ कि ब्रिटेन का साम्राज्य बढ़ा और अफ्रीका, दक्षिण एशिया, और आस्ट्रेलिया में ब्रिटिश साम्राज्य दृढ़ हो गया। विक्टोरिया के शासन काल में भारतवर्ष में अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हो गया और १८५७ ई० तक संपूर्ण देश उनके हाथ में आ गया। दूसरे वर्ष भारतवर्ष का शासन ईस्ट

इंडिया कम्पनी से छीन लिया गया और अंग्रेजी सरकार के आधीन हुआ। १८७६ ई० में विक्टोरिया ने भारतवर्ष की सम्राज्ञी (Empress of India) की पदवी धारण की। विक्टोरिया के शासन काल में इङ्ग-



रानी विक्टोरिया

लैंड की परराष्ट्रनीति भी महत्त्वपूर्ण थी जिससे इस देश का मान बहुत बढ़ गया। महारानी विक्टोरिया ने ६३ वर्ष तक शासन किया और सदा प्रजा की प्रिय रही तथा सदा ही उसने अपनी प्रजा का उपकार किया। महारानी १९०१ ई० में मृत्यु को प्राप्त हुई।

विक्टोरिया के तीन मुख्य प्रधान मंत्री

महारानी विक्टोरिया के राज्य-काल में सम्राट् की शक्ति कम हो गई गई थी और शासन का सब काम प्रधान मंत्री के ही हाथ में था। देश को आन्तरिक और वाह्य नीति प्रधान मंत्री तथा उसके दल की नीति से बहुधा प्रभावित होती थी। शासन के पहले भाग में सबसे प्रसिद्ध प्रधान मंत्री

सर राबर्ट पील (Sir Robert Peel) था। वह ह्विग दल का नेता था और उसने देश की आर्थिक दशा को सुधारने में बहुत भाग लिया। परन्तु १८८६ में उसको कार्न लॉ (Corn Law) विरोध के कारण अपना पद छोड़ना पड़ा। उसके पश्चात् इंगलैंड में तीन मुख्य प्रधान मंत्री हुए जिनके विचारों और कार्यों की छाप देश के इतिहास पर पूरी तरह पड़ी। इनमें प्रथम दो, पामर्स्टन और ग्लैडस्टन लिबरल दल के नेता थे, और तीसरा डिस्रायली कंज़र्वेटिव था।

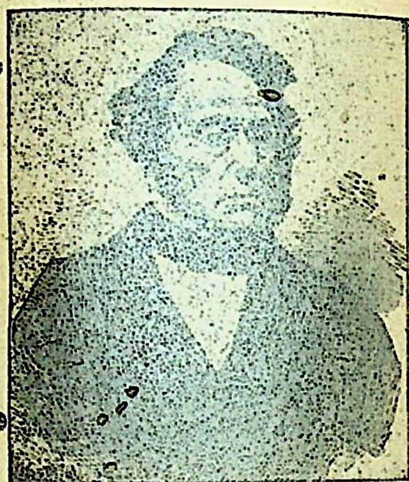
पील की मृत्यु (१८५० ई०) के बाद देश के शासन का भार पामर्स्टन पर पड़ा। वह ह्विग था, लिबरल दल का नेता था, परन्तु फिर भी वह सामान्य लिबरलों की तरह के पक्ष में न था। वह न चाहता था कि चुनाव के नियमों में कोई परिवर्तन हो। उसने नियमों द्वारा देश की सामाजिक, आर्थिक या राजनैतिक दशा को सुधारने का कोई प्रयत्न न किया। उसने घरेलू मामलों को छोड़ कर इङ्गलैंड का परराष्ट्रनीति पर ध्यान दिया। उसके समर्थक भी यही चाहते थे, क्योंकि इससे देश का मान बढ़ता था।

पामर्स्टन
Palmerston

परराष्ट्र सचिव की हैसियत से वह मनमानी करना चाहता था और कभी कभी महारानी विक्टोरिया से भी आज्ञा न लेता था। उसकी परराष्ट्रनीति की दो मुख्य विशेषताएं थीं; प्रथम, वह बाल्कन देश की राजनीति में भाग लेना चाहता था और टर्की को रूस के विरुद्ध सहायता देने के पक्ष में था, क्योंकि वह समझता था कि पश्चिमी एशिया पर रूस का अधिकार हो जाने से भारतवर्ष में इङ्गलैंड के साम्राज्य पर धक्का पहुंचेगा। दूसरे वह योरोप के देशों में जगती हुई जातीयता को पूर्ण रूप से सफल देखना चाहता था। इसलिए वह इटली की एकता और बेल्जियम की स्वतन्त्रता के पक्ष में था। वह देश के बाहर स्वतन्त्रता का पक्षपाती था परन्तु देश में वह सुधार का विरोधी था। उसने क्रीमियन युद्ध में सफलता

उसकी परराष्ट्र-नीति

प्राप्त की, भारत में ग़दर को दबाया और चीन से युद्ध किया। दस वर्ष तक वह बराबर प्रधानमन्त्री रहा, क्योंकि देश उसके साथ था। उसको अपने देश के बड़प्पन और शक्ति में विश्वास था, इसलिए जनता उसका विश्वास करती थी। १८६५ ई० में उसकी मृत्यु हुई और ग्लैड्स्टन लिबरल दल का नेता हुआ।

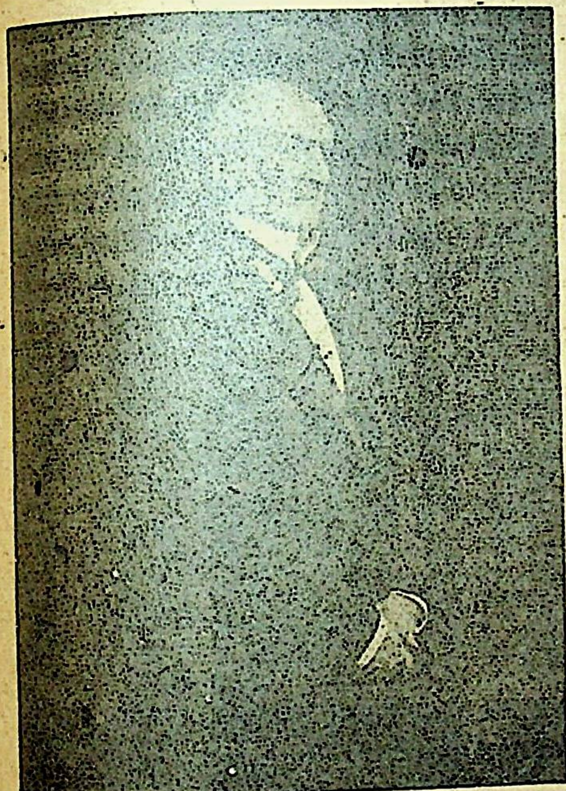


पामर्स्टन

ग्लैड्स्टन उसके बिल्कुल विपरीत था। वह सुधारों का पक्षपाती था और जनता की दशा को नियमों द्वारा सुधारना चाहता था। वह स्काट वंश का था। उसकी शिक्षा एटन (Eton) और आक्सफ़र्ड में हुई थी। उसने अपना राजनीतिक जीवन २३ वर्ष की ही अवस्था में प्रारम्भ किया। वह लार्ड एबरडीन और पामर्स्टन के मन्त्रित्व काल में चांसलर ऑव एक्सचेकर (Chancellor of Exchequer) था। प्रधान मंत्री होते ही उसने इङ्गलैंड में आन्तरिक शान्ति तथा सुख बढ़ाने की चेष्टा की; इसलिए उसने इङ्गलैंड को युद्धों तथा बाहरी झगड़ों

ग्लैड्स्टन
Gladstone

से अलग रखने का निश्चय किया । उसका शासन काल बहुत बड़ा था। उसने चार बार मंत्री पद को सुशोभित किया। प्रथम मंत्रित्व १८६८-१८७४ द्वितीय १८८०-१८८५; तृतीय १८८६ और चतुर्थ और



ग्लैड्स्टन

अन्तिम १८९२ में रहा। उसके शासन काल में नित्य नये नये सुधार नियम बनते थे, जिनके द्वारा देश की बुराइयों को दूर करने की कोशिश होती थी (१) उसने शिक्षा सम्बन्धी सुधार किया और सन् १७७० ई० में शिक्षा की उन्नति के लिए प्रत्येक जिले में एक स्कूल खुलवाया और

प्राइमरी शिक्षा अनिवार्य कर दी। (२) कैथोलिकों को अधिकार दिए। (३) सन् १८७२ ई० में बैलट एक्ट पास कराया, जिससे वोटर बिना दबाव स्वतंत्रतापूर्वक वोट दे सकते थे। सन् १८८४ ई० के 'तृतीय सुधार' के अनुसार उसने चुनाव में साधारण पुरुष को राजनैतिक अधिकार दिए। परन्तु उसने सबसे अधिक मेहनत आयरलैंड को स्वराज्य (Irish Hcme Rule) दिलाने के लिए की। अपने अन्तिम दो शासनों में उसने उस इसके लिए आखिरी प्रयत्न किया, परन्तु इङ्गलैंड अभी इसके लिए तैयार न था, इससे वह असफल हुआ।

ग्लैड्स्टन की परराष्ट्रनीति

परराष्ट्रनीति में वह शांति का पक्षपाती था। उसने १८७० ई० में फ्रांस और जर्मनी के युद्ध में भाग न लिया, इससे दोनों ही देश अप्रसन्न हुए; और 'अलबामा' (Alabama) जहाज के झगड़े पर शीघ्र ही उसने संयुक्त राज्य अमेरिका से समझौता कर लिया। इस समझौते की नीति से अन्य देशों में यह विचार पैदा हो गया था कि इंगलैंड कमज़ोर है और वह युद्ध के योग्य नहीं है। लेकिन फिर भी ग्लैड्स्टन अपनी नीति पर चल न सका। उसको युद्ध करना ही पड़ा क्योंकि उसने दक्षिणी अफ्रीका में बोअर (Boer) युद्ध में भाग लिया और मिश्र के दक्षिण में सूडान (Sudan) के युद्ध में वह असफल हुआ। तथापि ग्लैड्स्टन बराबर इसी प्रयत्न में रहता था कि शांति रख कर, इंगलैंड में वह सुख; सुधार और वैभव बढ़ाए। उसकी मृत्यु १८६८ में हुई।

ग्लैड्स्टन के बिलकुल विपरीत उसका प्रतिद्वन्द्वी डिस्रायली था (Disraeli) महारानी विक्टोरिया उससे मित्रवत् व्यवहार करती थी। उसके शासनकाल में वह दो बार प्रधान

डिस्रायली (Disraeli)

मंत्री हुआ। उसका पहिला मंत्रित्व केवल एक साल (१८६८ ई०) रहा। दूसरा मंत्रित्व काल छः साल तक (१८७४-१८८०) रहा। उसको अर्ल आव बेकंसफ़ील्ड

(Earl of Beaconsfieed) की उपाधि मिली थी, इससे वह बेकंसफील्ड नाम से भी प्रसिद्ध है। डिसूरायली का दादा एक इटैलियन ज्यू था। उसकी नियमित शिक्षा किसी स्कूल अथवा युनिवर्सिटी में नहीं हुई थी। १८३७ ई० में प्रथम बार वह पार्लियामेंट का मेम्बर हुआ। सन् १८४६ ई० में कार्न लॉ को रद्द (Repeal) करने के समय उसकी ख्याति राजनैतिक जीवन में बहुत बढ़ रहे थे। वह कंजर्वेटिव दल का नेता था। परन्तु पुराने टोरियों की तरह अपने विचारों में वह कट्टर न था। वह सुधारों का समर्थक था। वह भली भांति समझता था कि उसका दल बिना मजदूरों की सहायता पाये शक्तिशाली न हो सकेगा। इस दल के चार मुख्य उद्देश्य थे—(१) शासन पद्धति की रक्षा, (२) संसार की दृष्टि में इंगलैंड के गौरव की स्थापना, (३) साम्राज्य की एकता को दृढ़करना, (४) और सामाजिक सुधार जिससे मजदूरों का उपकार हो। अतः डिसूरायली ने १८६७ ई० में दूसरा सुधार नियम पास कराया। इसके द्वारा नगरों के सब गृहस्थों को वोट देने का अधिकार मिला। अपने दूसरे मंत्रीत्व काल में उसने अनेकों आन्तरिक सुधार किये। आम जनता तथा फैक्टरी में काम करने वाली के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दिया गया। व्यापारी जहाजों में मल्लाहों की रक्षा का भी उपाय किया गया। परन्तु डिसूरायली सुधारों में अपना समय नष्ट न करना चाहता था। यह व्यय कम करने और शान्ति रखने के पक्ष में न था। वह समझता था कि इंगलैंड को अपनी मर्यादा बनाये रखने के लिए युद्ध करना पड़ेगा और युद्ध होने पर व्यय में कमी करने से हानि होगी। प्रथम उसको इङ्गलैंड का शक्ति में पूर्ण विश्वास था और वह चाहता था कि संसार इस शक्ति का अनुभव कर ले दूसरे वह इङ्गलैंड को जगत विस्तृत साम्राज्य का स्वामी बनाना चाहता था। उसकी पर्राष्ट्रनीति का यही मतलब था। भातरवर्ष, अफ्रीका, मिश्र और कनाडा तथा अन्य उपनिवेशों में वह अंग्रेजी राज्य को दृढ़ करना और साम्राज्य के अंगों को एक दूसरे से मजबूती से बाँधना चाहता था।

इसलिए उसने १८७४ ई० में स्वेज नहर (Suez Caral) के हिस्से खरीदे और मिश्र में इंगलैंड के आधिपत्य की नींव डाली। उसको रूस से बहुत भय था क्योंकि इस समय रूस का साम्राज्य मध्य



डिस्रायली

एशिया में फैल रहा था जिससे भारत में अंग्रेजी राज्य को विशेष हानि पहुँचने का डर था। अतः उसने १८७८ ई० में रूस-टर्की युद्ध में टर्की का साथ दिया और रूस को बर्लिन की सन्धि स्वीकार करने के लिये वाध्य किया। इस प्रकार उसने थोड़े काल में ही यूरोप में ब्रिटेन का गौरव बढ़ा दिया और इंगलैंड की जनता में साम्राज्य की

इच्छा प्रबल कर दी है । उसकी साम्राज्यवादी नीति का प्रभाव इंगलैंड की राजनीति में अब भी मौजूद है ।

इङ्गलैंड की राजनीति में १८६८-१८८१ का काल (१८८१ में डिसूरायली की मृत्यु हो गई) ग्लैड्स्टन और डिसूरायली की प्रतिद्वन्दिता के कारण बड़ा महत्त्वपूर्ण है । कभी एक प्रधान मंत्री होता था, कभी दूसरा । डिसूरायली कंज़रवेटिव पार्टी का नेता था और ग्लैड्स्टन लिबरल दल का नेता था । दोनों का अपनी पार्टी में मान था । दोनों ही राजनीतिज्ञ होने के अतिरिक्त योग्य लेखक भी थे । ग्लैड्स्टन की वक्तृता बड़ी ओजस्विनी होती थी । डिसूरायली बड़ा दूरदर्शी था । ग्लैड्स्टन शान्ति नीति का पक्षपाती था; डिसूरायली साम्राज्यवादी था । वह युद्ध और व्यय दोनों का समर्थक था ।

३५—इंगलैंड और यूरोप

१८१५ से २० वीं शताब्दी के आरम्भ तक

स्वतंत्रता प्रेमी इङ्गलैंड

फ्रांस की राज्यक्रांति ने यूरोपीय राजनीति में एक भारी आन्दोलन कर दिया था जिससे वहाँ राष्ट्रीयता और स्वतांत्रता ने जोर पकड़ा। नैपोलियन के शासन में भी ये नए विचार दब न सके, बल्कि उसके युद्धों का कारण राष्ट्रीयता सम्बन्धी जागृति बहुत अधिक हो गई। प्रत्येक जाति अपना स्वतंत्र शासन क़ायम करना चाहती थी और वियना कांग्रेस (१८१५) के समझौता (Settlement of Congress of Vienna) का विरोध कर रही थी। परन्तु यूरोप के चार मुख्य देशों ने (आस्ट्रिया, प्रशा, रूस तथा इङ्गलैंड) होली अलायंस (Holy Aliance) नामी एक नया गुट्ट बनाया था जिसके द्वारा वे चाहते थे कि यूरोप का राजनैतिक प्रबन्ध क़ायम रहे और नए स्वतंत्र विचार रोके जाएं तथा सब देशों में राजाओं का मनमाना शासन बना रहे। इस समय (१८१२-१८२२ ई०) इङ्गलैंड का परराष्ट्र मंत्री कैसलरिया (Castlereagh) था। वह कंजर्वेटिव दल का सदस्य था, पर फिर भी जब कभी किसी जाति की स्वतांत्रता पर आघात होता था तब उसको रोकने का प्रयत्न करता था। परन्तु अकेले वह कुछ न कर सका। इङ्गलैंड के निवासी इस समय स्वतांत्रता के लिए होने वाले आन्दोलनों को सहायता देना चाहते थे, और इस समय उनको अपनी सहानुभूति दिलाने का अवसर भी मिला।

१८२१ ई० में ग्रीस देश के निवासियों ने अपने तुर्क शासकों के अत्याचार से पीड़ित होकर विद्रोह किया। ग्रीक सभ्यता का प्रभाव यूरोप

के सभी देशों पर पड़ा था और इंगलैंड में इस समय ग्रीक साहित्य और ग्रीक दर्शन की बहुत चर्चा थी। अंग्रेज जनता कभी

(१) ग्रीक की स्वतन्त्रता

यह सहन न कर सकती थी कि ग्रीक लोगों पर मुसलमान तुर्क अत्याचार करें। कैसलरिया को भी इस आन्दोलन से सहानुभूति थी; परन्तु उसके मरने



कैनिंग

के बाद, कैनिंग (Canning) ने फ्रांस और रूस की सहायता से टर्की के सुल्तान को मजबूर किया कि वह ग्रीस को स्वतन्त्र कर दे सुल्तान के अस्वीकार करने पर १८२९ ई० में युद्ध हुआ, जिसमें नवारिनो (Navarino) के संग्राम में टर्की की हार हुई और ग्रीक स्वतन्त्र राष्ट्र हो गया।

इसके पश्चात् अंग्रेजों ने यूरोप की अन्य दो जातियों को स्वतंत्र राष्ट्र स्थापित करने में सहायता दी। १८३२ ई० में बेल्जियम में डच शासकों के विरुद्ध आन्दोलन शुरू हुआ और वह प्रयत्न

(२) बेल्जियम और इटली

हुआ कि उनका देश अलग हो जाए क्योंकि उनका धर्म और उनकी भाषा तथा उनका आर्थिक

हित सब प्रकार से हालैंड वासियों से भिन्न था। अंग्रेज सरकार की सहायता से बेल्जियम स्वतन्त्र हो गया और उस देश में एक नया राजवंश स्थापित हुआ। बेल्जियम की स्वतन्त्रता की रक्षा का भार सब यूरोपीय शक्तियों ने अपने ऊपर ले लिया। इसके बाद इटली में स्वाधीनता और एकता का प्रयत्न हुआ। यह आन्दोलन कई वर्ष तक चलता रहा, और दो युद्धों के पश्चात् १८५९ ई० में इटली स्वाधीन हो सका। उसको अंग्रेजों को पूरी सहानुभूति प्राप्त थी, यद्यपि अंग्रेजी सरकार ने युद्ध में उनको विशेष सहायता न दी थी। इस काल में अधिकतर लार्ड पामर्स्टन ही इङ्गलैंड का परराष्ट्रमंत्री था और उसने अपनी नीति यह बना रक्खी थी कि हर जगह वह स्वाधीनता संग्राम में सहायता देगा। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम भाग में इंगलैंड ने यूरोप में राष्ट्रीयता की उन्नति में बड़ा भाग लिया।

२—पूर्वीय समस्या

इसका अर्थ

यूरोप के दक्षिण-पूर्व भाग में तुर्कों ने पन्द्रहवीं सदी में अपना साम्राज्य क़ायम किया था और इस समय तक वे इस भूमि (बाल्कन देश के) शासक थे। तुर्क लोग मुसलमान थे, परन्तु बाल्कन प्रान्तों की प्रजा अधिक संख्या में ईसाई धर्म को मानती थी। तुर्कों का शासन मनमाना होता था और ईसाई प्रजा को कोई राजनैतिक अधिकार प्राप्त न थे। बहुधा ईसाई लोग शासकों के अत्याचार से पीड़ित रहते थे, जिस कारण कभी कभी प्रजा विद्रोह करती थी। इन विद्रोहों का उद्देश्य स्वतन्त्र राष्ट्र क़ायम करना होता था। इसके सिवाय धीरे-धीरे तुर्क सुल्तानों की शक्ति भी कम हो गई और प्रांतीय शासक स्वतन्त्र हो गये। यद्यपि इस समय भी तुर्कों का साम्राज्य एशिया माइनर और बाल्कन प्रान्त में फैला हुआ था, पर शासन की निर्बलता के कारण विच्छेद के सब चिन्ह दिखाई पड़ते थे। इसी अवस्था में पड़ोसी यूरोपीय शक्तियों ने तुर्कों को यूरोप से निकाल कर उस भाग में अपना राज्य

फैलाने का प्रयत्न किया। इनमें आस्ट्रिया और रूस सबसे आगे थे। आस्ट्रिया के लिए यह प्रश्न आत्मरक्षा का भी था। अठारहवीं सदी के आरम्भ से आस्ट्रिया ने, अन्य कारणों से, पूर्वी प्रश्नों में विशेष भाग न लिया था, परन्तु १८७० ई० के बाद आस्ट्रिया ने पुनः बाल्कन प्रान्त पर अधिकार करके समुद्र तक पहुंचने का प्रयत्न किया। जिस कारण यह समस्या और भी जटिल हो गई। इसके विपरीत रूस में पीटर महान के समय (अठारहवीं सदी) से ब्लैक तथा मेडीटरेनियन सागर तक राज्य फैलाने की इच्छा प्रबल हुई क्योंकि रूस के व्यापार तथा आर्थिक उन्नति के लिए आवश्यक था कि उसका अधिकार दक्षिण में समुद्र तट पर हो जाए। १८१५ ई० तक रूस ने 'ब्लैक-सी' तट पर तुर्क साम्राज्य का बहुत भाग दबा लिया था और अब तुर्कों की राजधानी कास्टैंटीनोपुल को जीतने का प्रयत्न हो रहा था। ये ईसाई साम्राज्य बहुधा तुर्कों के आधीन ईसाइयों की रक्षा करने के बहाने बाल्कन राजनीति में भाग लेते थे और अपना स्वार्थ सिद्ध करते थे। परन्तु इस काम में यूरोपीय शक्तियों में सहयोग न था और आपस में एक दूसरे का विरोध था। यूरोपीय शक्तियों के इस संघर्षण का नाम ही "पूर्वी समस्या" (Eastern Question) है।

रूस और इङ्गलैंड

इंगलैंड के लिए भी यह प्रश्न बहुत महत्व का था। जब से भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य हुआ तब से यह आवश्यक हो गया कि वे एशियाई तथा अन्य पूर्वीय राजनैतिक प्रश्नों में भाग लें। उत्तरी तथा मध्य एशिया में रूस भी अपना साम्राज्य क़ायम कर रहा था और लक्षणों से मालूम पड़ता था कि उसका ध्येय भारतवर्ष में राज्य करना है। रूस को टर्की पर अधिकार हो जाने से इस काम में बहुत सहायता मिल सकती थी। इसलिए अंग्रेजों के लिए आवश्यक हो गया कि वे टर्की में रूस के प्रभाव को रोकें और उस देश को रूस के हमलों से बचाएं। दूसरे, टर्की में अंग्रेजों का व्यापार भी बहुत फैला हुआ था और उनको डर था कि रूस के कारण वहाँ उनके

व्यापार को भी धक्का लगेगा। १८६६ के बाद स्वेज़ नहर (Suez Canal) को रक्षा का भी प्रश्न विशेष हो गया। इन सब कारणों से उन्नीसवीं सदी में इङ्गलैंड की परराष्ट्रनीति पर "पूर्वीय समस्या" का बहुत असर पड़ा।

इस समस्या के कारण रूस और इङ्गलैंड मित्र न रह सके। जब कभी रूस सरकार टर्की का विरोध करती थी, या मध्य एशिया में एक के बाद दूसरा देश जीतती थी, तभी इङ्गलैंड में हलचल मच जाती थी। इङ्गलैंड को बराबर यह नीति रही कि टर्की को स्वतन्त्र रक्खे और पूर्वी समुद्रों पर रूस का अधिकार न होने दे। रूस सरकार ने कई बार प्रस्ताव किया कि वे दोनों उसको आपस में बाँट लें, परन्तु अंग्रेज़ी सरकार इसमें कभी सहमत न थी। उन्नीसवीं सदी के अन्त तक इसी प्रकार इङ्गलैंड ने रूस का विरोध किया, परन्तु जब टर्की में रूस के स्थान पर जर्मनी का प्रभाव बढ़ा तब अंग्रेज़ी सरकार ने रूस से सन्धि कर ली और जर्मनी का विरोध किया। रूस के वैर के कारण टर्की में मुसलमान शासन की रक्षा का भार इङ्गलैंड पर पड़ा, और अंग्रेज़ी सरकार ने पददलित वालकन देश की ईसाई जातियों के स्वत्वों का ध्यान न करके, सुल्तानों के अवैध शासन को क़ायम रक्खा। इस प्रकार साम्राज्य के हित के कारण, अंग्रेज़ी जनता ने रूस से लड़ाई मोल ली और जातीयता तथा स्वतन्त्रता के उद्देश्यों का विरोध किया।

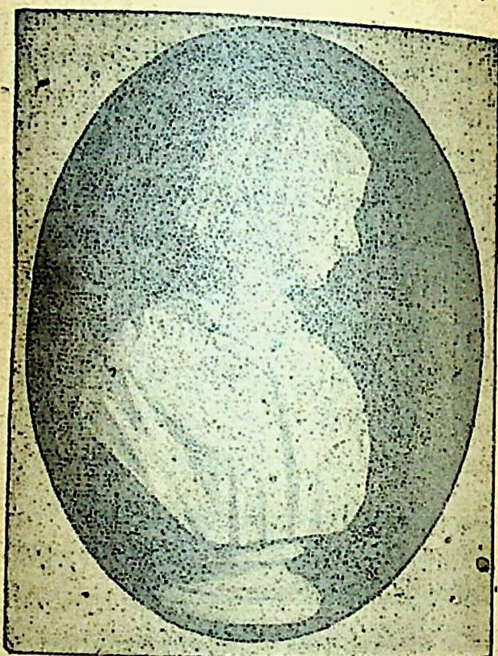
पैलेस्टाइन के धर्म स्थानों की रक्षा का अधिकार अठारहवीं सदी तक फ्रांस को मिला हुआ था, परन्तु १८५० ई० में रूस के ज़ार निकोलस प्रथम (Nicholas) ने सुल्तान से यह अधिकार मांगा। इसका अर्थ यह था कि ईसाइयों का पक्ष लेकर ज़ार टर्की के भीतर मामलों में हस्तक्षेप कर सकेगा। सुल्तान स्वयं ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी न मार सकता था। उसने इसको अस्वीकार किया और अंग्रेज़ी सरकार ने भी यही सलाह दी। ज़ार चाहता था कि टर्की पर अधिकार करके

क्रीमिया का युद्ध १८५४-५६ ई०

मेडिटेरेनियन सागर में अपना बेड़ा रक्खे। यह बात इंगलैंड और फ्रांस दोनों को ही माननीय न थी। अतः जब रूस ने टर्की को धमकाने के लिए मोल्डेविया (Moldavia) और वैलेशिया (Wallachia) प्रान्तों पर आक्रमण किया तो १८५४ ई० में अंग्रेजों तथा फ्रेंच ने रूस के दक्षिण में क्रीमिया (Crimea) प्रान्त में अपनी सेना भेजी। सम्भव था कि समझौता हो जाता, परन्तु फ्रांस का सम्राट नैपोलियन तृतीय युद्ध पर तुला हुआ था। इंगलैण्ड युद्ध के लिए बिलकुल भी तैयार न था, परन्तु फिर भी, दोनों मित्रों ने रूस से युद्ध किया। क्रीमिया में युद्ध होने के कारण यह क्रीमियन युद्ध कहलाता है।

मित्र सेना ने यह निश्चित किया कि सेबेस्टोपल (Sebastopal) के दुर्ग पर अधिकार कर ले, परन्तु विलम्ब होने से रूसी सेना ने दुर्ग को मजबूत कर लिया। मित्र सेना को जाड़े के ऋतु में घेरा डालना पड़ा। इन लोगों के पास कपड़ा और खाने का सामान काफ़ी न था। कुछ जहाज जिनमें खाने का सामान था आँधी के कारण डूब गए। सैकड़ों सैनिक जाड़ा और भूख के कारण बीमार पड़ गए, परन्तु अस्पतालों का कोई ठीक प्रबन्ध न था। जब इस दुर्दशा का हाल इंगलैंड पहुँचा तो वहाँ बहुत हलचल मचा; और पामर्स्टन नया प्रधान मन्त्री बनाया गया। इसी समय अस्पतालों का प्रबन्ध करने के लिए मिस फ्लोरेन्स नाइटिंगेल (Miss Florence Nightingale) क्रीमिया पहुँची और उसने फौजी अस्पतालों का ठीक प्रबन्धक किया। देश से सैनिकों के लिए कपड़ा और भोजन आया। इसके बाद अंग्रेजी सेना ने रूसियों को बलाक्लावा (Balaclava) और इंकरमैन (Inkerman) के युद्धों में बुरी तरह हराया। पुनः सेबेस्टोपल गढ़ पर भी उनका अधिकार हो गया। यह देख कर जार ने सन्धि का प्रस्ताव किया और १८५६ ई० में पेरिस की सन्धि (Treaty of Paris) हुई जिसके अनुसार यह तै हुआ कि जार बाल्कन देश के मामलों में कोई हस्तक्षेप न करेगा। और कालेज समुद्र में अपना जहाजी बेड़ा न रख सकेगा। इन

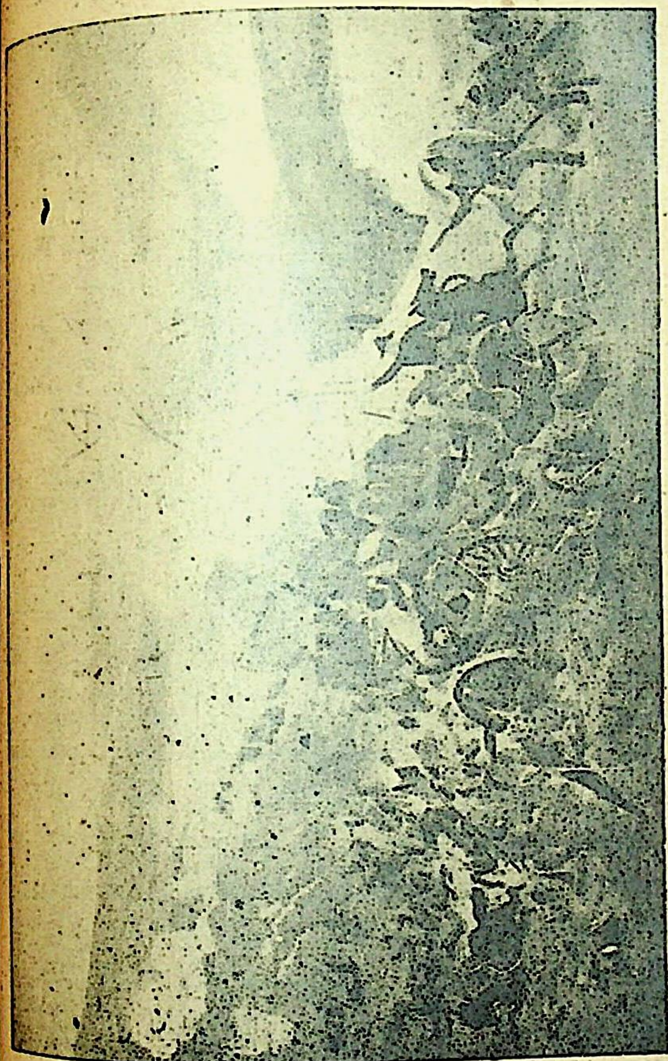
शर्तों से कुछ समय के लिए टर्की का साम्राज्य बच गया परन्तु १८७० ई० में जब फ्रांस और जर्मनी में युद्ध हुआ, तब जर्मनी के वज़ीर प्रिंस बिस्मार्क (Prince Bismarck) की राय से रूस ने दूसरी शर्त को तोड़ दिया और लन्दन कान्फ्रेन्स ने इसको स्वीकार भी कर लिया।



फ्लोरेन्स नायटिंगेल

रूसो-टर्किस युद्ध १८७८ ई०

पेरिस की सन्धि ने रूस की अभिलाषाओं का कुछ दिन के लिए अन्त कर दिया था, परन्तु १८७० ई० के बाद अन्तर-राष्ट्रीय स्थित के कारण वे पुनः हरी हो गई। इधर टर्की में भी राष्ट्रीयता की लहर जोर मार रही थी और पद दलित ईसाई जातियाँ अपनी स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह करने को तैयार थीं। दूसरी ओर सुल्तानों की शक्ति दिन प्रति दिन कमजोर होती जाती थी और उनका शासन अत्याचारपूर्ण



बलाक्लावा का युद्ध

था। १८७५ ई० में हर्जीगोविना (Herzegovina) प्रांत के एक गांव से किसानों ने अपने मुसलमान ज़मींदारों और स्थानीय कर्मचारियों के विरुद्ध विद्रोह खड़ा किया। पड़ोसियों ने उनको सहायता दी और जब सुल्तान ने उसको दबाना चाहा तो सर्विया (Servia) के राजा ने युद्ध छेड़ दिया। सर्विया को रूस की सहायता की पूरी आशा थी। फिर बलगेरिया (Bulgaria)प्रान्त में भी विद्रोह हुआ और वहाँ तुर्क सैनिकों ने सहस्रों ईसाइयों का खून किया। रूस सरकार ने इस झगड़े से लाभ उठाया और १८७७ ० में टर्की पर आक्रमण किया। रूसी सेना विजयी हुई और कांस्टैंटीनोपुल छोड़ कर अन्य भाग उसके आधीन हुए। अब उसका दाँत राजधानी पर भी था क्योंकि उस नगर पर अधिकार हो जाने से डार्डेनेलेज (Dardenelles) का जलमार्ग रूसियों के हाथ लगता और वे मेडीटरेनियन सागर में निर्भय अपना जहाजी बेड़ा रख सकते थे। इस समय इंगलैंड का प्रधानमन्त्री डिसरायली था और वह समझता था कि रूस की विजय का क्या परिणाम होगा। उसने १८७५ ई० में स्वेजनहर कम्पनी के हिस्से खरीदे और चाहता था कि भारतवर्ष के लिए सहज मार्ग स्वेज नहर अंग्रेजों के ही आधीन रहे। यदि टर्की पर रूस का अधिकार हो जाता तो भय था कि वह मार्ग रूस के हाथ में आ जाता और तब सम्भव था कि भारतवर्ष में अंग्रेज साम्राज्य को हानि पहुँचती। अतः उसने रूस का विरोध करने के लिए अपनी जलसेना भेजी और भारत से सेना मंगाई। युद्ध की सब तैयारियां थीं परन्तु अन्तिम समय रूस ने अंग्रेजी शर्तों को मान लिया। बाल्कन देश की समस्या को हल करने के लिए बर्लिन में प्रिंस बिस्मार्क की प्रधानता में एक कांग्रेस हुई, जिसमें सन्धि की बातें तै हुईं। डिसरायली ने इसी समय सुल्तान से, धोखा देकर, साइप्रस (Cyprus) द्वीप लिया और भविष्य में टर्की की रक्षा का वचन दिया। इसके बाद भी इङ्गलैंड और रूस का झगड़ा न घटा। १८७८ ई० में रूस के भय से अंग्रेजी सरकार ने अफ़ग़ानिस्तान से युद्ध किया और १८८५ ई० में जब रूस ने अफ़ग़ानिस्तान की सरहद

पर पंजदेह (PanJdeh) गाँव पर क़ब्ज़ा कर लिया तो दोनों देशों में युद्ध की सम्भावना थी। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक दोनों ही एक दूसरे से सतर्क रहते थे। परन्तु इस काल में ईसाई प्रजा के प्रति तुर्कों के अत्याचार में कमी न हुई और टर्की में जर्मनी का प्रभाव बढ़ने लगा जिससे टर्की के प्रति इंगलैंड की नीति में परिवर्तन हुआ; यहाँ तक कि इस सदी में महायुद्ध के पूर्व ही अंग्रेज़ी सरकार ने टर्की का विरोध शुरू कर दिया था और महायुद्ध में उसको नष्ट करने में प्रधान भाग लिया।

३—इङ्गलैंड और फ्रांस

फ्रांस के साथ भी कोई मित्रता का सम्बन्ध न था। क्रीमियन युद्ध के बाद घनिष्ठता का अन्त हो गया और १८७० ई० में फ्रांस-जर्मनी युद्ध में भी अंग्रेज़ी सरकार ने कोई भाग न लिया।

मिश्र में ब्रिटिश और फ्रेंच

यद्यपि नैपोलियन से सभी सशंकित रहते थे परन्तु इस समय तक झगड़े का कोई कारण न था। इस युद्ध के बाद फ्रांस को कोई आशा न रह गई कि वह जर्मनी के किसी भाग पर अधिकार कर सकेगा। अतः अब फ्रेंच लोग उपनिवेश बढ़ाने और यूरोप के बाहर साम्राज्य स्थापित करने की फ़िक्र में थे। इसमें सफलता पाने के लिए इङ्गलैंड में झगड़ा होना आवश्यक था। अतएव इस समय के बाद पिछली सदी के अन्त तक ये दोनों देश मित्र न हो सके।

सबसे पहले मिश्र के सम्बन्ध में विरोध हुआ। फ्रांस में मिश्र विजय की इच्छा नैपोलियन प्रथम के समय से थी, परन्तु १८७० ई० के बाद अवस्था बदल जाने के कारण यह और भी बढ़ गई। मिश्र, तुर्क साम्राज्य का एक प्रांत था, परन्तु १८३१ ई० में वहाँ के वाइसराय मुहम्मदअली पाशा ने सीरिया (Syria) पर अधिकार कर लिया और पुनः १८३८ ई० में उसने सुल्तान के विरुद्ध आक्रमण किया। वह चाहता था कि स्वयं मिश्र का स्वतंत्र शासक बने। फ्रांस का राजा लुई फ़िलिप (Louis Philipe) तो चाहता था कि मुहम्मदअली की सहायता करे परन्तु

इंगलैंड तथा अन्य देशों ने पाशा को हरा दिया जिससे उसको सीरिया तथा मिश्र से ही सन्तुष्ट रहना पड़ा। मुहम्मदअली बहुत समझदार शासक था परन्तु उसके पुत्र इस्माइल पाशा ने पश्चिमी सभ्यता और नए यूरोपीय आविष्कारों को अपने देश में लाने के लिए पेरिस तथा लन्दन में बहुत ऋण लिया। उसने ही एक फ्रेंच कम्पनी को स्वेज नहर बनाने का अधिकार दिया और स्वयं उसने कम्पनी के बहुत हिस्से खरीदे। १८६६ ई० में नहर खुल गई। परन्तु इस्माइल अपना ऋण चुकाने में असमर्थ था। उसने १८७५ ई० में अंग्रेजी सरकार के हाथ अपने स्वेज नहर के हिस्से भी बेच दिए, परन्तु फिर भी कोई लाभ न हुआ। १८७६ ई० में उसने ऋण का सूद न देने की घोषणा की, इस पर फ्रेंच तथा अंग्रेज सरकार ने मिश्र के आय-व्यय पर संयुक्ताधिकार (Joint Control) किया और १८७६ में इस्माइल को गद्दी से उतार कर उसके पुत्र तौफ़ीक़ को खदीव (राजा) बनाया।

इस समय मिश्र में राष्ट्रीयता की लहर फैली, और विदेशियों को देश से निकालने का प्रयत्न होने लगा। १८८२ ई० में अरबी पाशा नामी एक सैनिक अफ़सर ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया। इंगलैंड की सरकार ने चाहा कि दोनों देशों की संयुक्त सेना इस विद्रोह को दबाए परन्तु फ्रेंच सरकार ने कोई भाग न लिया। अंग्रेज तो यह चाहते ही थे। कि स्वेज नहर के खुल जाने से उनके लिए मिश्र को अपने क़ाबू में करना आवश्यक हो गया था, क्योंकि अब स्वेज होकर भारतवर्ष के लिए रास्ता था और उसकी रक्षा करना जरूरी था। अतः इंगलैंड ने अकेले ही मिश्र में शांति रखने का प्रयत्न किया। तललकबीर Telel-Kabir) के युद्ध में अरबी पाशा हार गया और विद्रोह का अन्त हुआ। मिश्र देश को ब्रिटिश सरकार का आधिपत्य (British Protectorate) मानना पड़ा। खदीव तौफ़ीक़ नाम मात्र का राजा था, परन्तु शासन का पूरा अधिकार ब्रिटिश कांसल जेनरल Consul General) लार्डक्रोमर (Lord Cromer) के हाथ में आ गया।

यह देख कर फ्रांस में द्वेष की आग फैल गई और वे लोग इंगलैंड से बैर मानने लगे। बस यहाँ से झगड़े का श्रीगणेश हुआ।

ब्रिटिश सरकार ने यह वचन दिया था कि जिस समय मिश्र में पूर्ण शान्ति हो जाएगी, और उनके आर्थिक तथा अन्य हितों की रक्षा का पूरा प्रबन्ध हो जाएगा, तब वे मिश्र से अलग हो जाएंगे। फ्रैंच सरकार बराबर उस समय की प्रतीक्षा कर रही थी परन्तु परिस्थितियों ने ब्रिटिश सरकार को वहाँ से हटने न दिया और उसका आधिपत्य जम गया मिश्री के खेदीव ने कुछ वर्ष पूर्व सूडान पर भी

मिश्र पर अधिकार

सूडान



जनरल गार्डन

अपना प्रभुत्व क़ायम किया था। १८८३ ई० में सूडान वालों ने एक झूठे मेहदी (Mehdi) के नेतृत्व में विद्रोह किया और मिश्र से जो सेना उनके विरुद्ध भेजी गई उसको उन्होंने नष्ट कर दिया। जनरल गार्डन (General Gordon) खार्तम (Khartoum) के गढ़ में

घिर गया और रक्षा का कोई उपाय न होने से मारा गया। जब सब प्रयत्न निष्फल हुए तो लिबरल गवर्नमेंट ने सूडान से सेना वापस बुला ली और उसको स्वतन्त्र छोड़ दिया। परन्तु मिश्र से अधिकार न हटाया गया क्योंकि भय था कि यदि ब्रिटिश सेना चली जायगी तो मेहदी मिश्र को भी नष्ट कर देगा। अंग्रेजी अफ़सरों ने मिश्री सेना का पुनः संगठन किया और शासन के प्रत्येक अंग का ठीक प्रबन्ध किया।

१८९८ ई० में जनरल किचनर (Kitchener) ने कई वर्षों की तैयारी के बाद फिर सूडान पर आक्रमण किया और मेहदी को अमादुरमान (Omdurman) के युद्ध में परास्त किया।

फ़शोदा की घटना (Fashoda) १८९९ ई०

तब सूडान में इंगलैंड तथा मिश्र का संयुक्त राज्य स्थापित हो गया। परन्तु इस विजय से अंग्रेजों के कष्ट का अन्त न हुआ। फ्रेंच सरकार यह सहन न कर सकती थी कि सूडान पर भी अंग्रेजों का अधिकार हो। वह स्वयं दक्षिणी सूडान को जीत कर उत्तरी अफ्रीका में फैले हुए अपने सामान्य में मिलना चाहती थी, ताकि वह मेडीटरेनियन सागर से लाल सागर (Red Sea) तक फैल जाए। इस अभिप्राय से उसने मेजर मारचंड (Major Marchant) को एक छोटी सेना के साथ वहाँ भेजा। वह बहुत कठिनता से फ़शोदा पहुंचा, परन्तु इसके पूर्व ही किचनर ने ४०० मील दक्षिण आकर उस स्थान पर अपना झण्डा गाड़ दिया था। किचनर ने मारचंड को आज्ञा दी कि वह सूडान भूमि को छोड़ दे। सम्भव था कि दोनों देशों में युद्ध छिड़ जाता परन्तु अपनी निर्बलता का विचार करके मारचंड हट गया और युद्ध बच गया। इस घटना से फ्रांस में बहुत हलचल मची, परन्तु मन्त्री डेलकासे (Delcasse) के प्रयत्न से शान्ति भंग न हुई।

डेलकासे समझता था कि फ्रांस का प्रधान वैरी जर्मनी है और उससे वह १८७० ई० का बदला लेना चाहता था। वह भी अच्छी तरह जानता था कि बिना इङ्गलैंड और रूस की सहायता के जर्मनी को

परास्त करना असम्भव है। उसने यह भी समझ लिया था कि व्यापारिक
मित्रता १९०४ ई० कारणों से जर्मनी और इङ्गलैंड में वैमनस्य बढ़ रहा है। इसलिए उसने औपनिवेशिक स्वार्थ का बलिदान करके इङ्गलैंड की मित्रता पाने का उद्योग किया। इधर इंगलैंड में भी एडवर्ड सप्तम का मंत्रिमंडल की परराष्ट्रनीति पर बहुत प्रभाव था। एडवर्ड को अच्छी तरह विदित था कि साम्राज्य तथा व्यापार की रक्षा के लिए इङ्गलैंड को एक दिन जर्मनी से युद्ध करना पड़ेगा। इसलिए फ्रांस से सन्धि करने का निश्चय हुआ। एडवर्ड को फ्रांस बहुत प्रिय था, अतः मित्रता के लिए यह कारण भी बहुत प्रबल था। एडवर्ड के उद्योग से १९०४ ई० में दोनों के बीच में समझौता हो गया (Anglo-French Entente) जिसके अनुसार फ्रांस ने मोरक्को (Morocco) के बदले में मिश्र पर अंग्रेजों का पूरा अधिकार मान लिया। यद्यपि दोनों के बीच में कोई निश्चित सन्धि न हुई थी, तब भी इसमें संशय न था कि जर्मनी के विरुद्ध अवसर पड़ने पर इङ्गलैंड फ्रांस का पक्ष लेगा। इस समय के बाद महायुद्ध तक दोनों में घनिष्ठता बढ़ती गई और महायुद्ध में दोनों ने मिलकर जर्मनी को परास्त किया।

४—इङ्गलैंड और जर्मनी

जब १८७० ई० में नया जर्मन साम्राज्य क़ायम हुआ तो इंगलैंड में कोई अप्रसन्न न था। लोगों को आशा थी कि दो ट्यूटन देश परस्पर मिलकर फ्रांस तथा रूस के षड्यंत्रों को निष्फल कर देंगे। दोनों राजवंशों में भी परस्पर सम्बन्ध था। यह अवस्था कई वर्ष तक रही और अंग्रेजी सरकार तथा जर्मनी के प्रधान मंत्री बिस्मार्क ने प्रयत्न भी किए कि उनके बीच में सन्धि हो जाए। परन्तु जब १८८४ ई० में जर्मनी को भी उपनिवेश स्थापित करने की इच्छा हुई तो दोनों में वैमनस्य बढ़ने लगा। इसके पूर्व फ्रांस तथा ब्रिटेन ने संसार के अच्छे भागों में अपना साम्राज्य फैला लिया था और वे जर्मनी की इस अभिलाषा को रोकने को तैयार थे।

जर्मनी की जन-संख्या बढ़ती जाती थी और उनके लिए अच्छे उपजाऊ तथा लाभदायक उपनिवेशों की आवश्यकता थी। दूसरे, इसी समय जर्मनी का व्यवसाय भी बढ़ा और उसको आवश्यकता हुई कि अन्य देशों में अपनी चीज़ों को बेचे। इस व्यापार के कारण इंगलैंड से द्वेष होना अनिवार्य था, क्योंकि अंग्रेज़ों का व्यापार सभी देशों में फैला हुआ था। इन दोनों कारणों से १६०० ई० के पहले ही दोनों के बीच में विरोध के लक्षण जान पड़ने लगे। परन्तु जब १६०० ई० के लगभग जर्मनी ने अपने व्यापार तथा उपनिवेशों की रक्षा के लिए जहाज़ी बेड़ा को बढ़ाना शुरू किया तो इंगलैंड में हलचल मच गई और मालूम होता था कि शीघ्र ही युद्ध का अवसर आएगा। इसके अतिरिक्त जर्मनी का प्रभाव तुर्क साम्राज्य में बढ़ा, और जर्मन कम्पनी ने कांस्टैंटीनोपुल से बग़दाद, बसरा और फ़ारस की खाड़ी (Persian Gulf) तक रेलवे लाइन बनाने का ठेका लिया। अंग्रेज़ी सरकार को शंका हुई कि जर्मनी भारतवर्ष पर दाँत लगाए है और इस कारण उसने टर्की में जर्मनी के प्रभाव को कम करने का प्रयत्न किया। इन कारणों से धीरे धीरे दोनों में वैमनस्य बढ़ता गया, जिसके परिणाम स्वरूप महायुद्ध के पूर्व इंगलैंड के अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध में बहुत परिवर्तन हो गया।

जिस प्रकार इंगलैंड में जर्मनी के प्रति अविश्वास और द्वेष था, उसी प्रकार रूस तथा फ्रांस भी उसकी बढ़ती हुई शक्ति से भयभीत थे।

Diplomatic Revolution १८६२—१६११

फ्रांस ने तो १८७० ई० का बदला लेने का विचार कभी छोड़ा ही न था और उसी आधार पर उसकी पूरी परराष्ट्रनीति निर्भर थी। रूस को जर्मनी की आस्ट्रिया से मित्रता अप्रिय थी और उसको भय था कि इनके संयुक्त प्रयत्न से टर्की उसके हाथ से बिलकुल ही निकल जायगा और था भी ऐसा ही। अतः समान हिताहित के कारण फ्रांस तथा रूस ने १८६५ ई० में एक सन्धि (Dual Alliance) की, जिसमें यह तै पाया कि जर्मनी और आस्ट्रिया के विरुद्ध

वे दोनों परस्पर एक दूसरे को सहायता देंगे। इस सम्बन्ध में फ्रांस की स्थित कुछ दृढ़ हुई, परन्तु इगलैंड के विना उसके विजय की कोई आशा न थी। इधर इगलैंड में भी जर्मनी के भय से फ्रांस तथा रूस के विरुद्ध पुराना द्वेष न रह गया था। १९०४ ई० में फ्रांस तथा इङ्गलैंड में मित्रता हो गई। रूस-जापान युद्ध (१९०४-१९०५ ई०) में इङ्गलैंड ने जापान का पक्ष लिया था, परन्तु जब इस युद्ध में पराजित होकर रूस की शक्ति कम हो गई तो अंग्रेजी सरकार को एशिया में रूस से विशेष भय न रहा। फ्रांस के प्रयत्न से झगड़े के कारण दूर हो गए; और दोनों में समझौता हो गया। १९०७ ई० में एक सन्धि हुई लेकिन उनमें कोई विशेष शर्तें न थीं। परन्तु १९०७ ई० में यह निश्चय हो गया कि फ्रांस, इङ्गलैंड तथा रूस अपने पारस्परिक स्वार्थ के लिए, किसी विशेष सन्धि के विना ही, संयुक्त होकर जर्मनी से लड़ेंगे। इटली ने इसी मित्रदल का साथ दिया और दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया तथा टर्की रह गए। इङ्गलैंड की परराष्ट्रनीति में इस परिवर्तन का नाम डिप्लोमैटिक क्रान्ति (Diplomatic Revolution) है। इसी समय से महायुद्ध की तैयारियाँ होने लगीं।

३६—एडवर्ड सप्तम और जार्ज पंचम
१९०१—१९३६ ई०

महारानी विक्टोरिया की मृत्यु १९०१ ई० में हुई और तब उसका पुत्र एडवर्ड गद्दी पर बैठा। नए राजा की अवस्था लगभग ६० वर्ष की थी और उसको शासन तथा राजनीति का अच्छा अनुभव हो गया था। विक्टोरिया ने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध किया था और छोटी उम्र में उसको बहुत दाव में रखा गया था। एडवर्ड को खेल का बहुत शौक़ था और उसने भ्रमण भी किया था। इन गुणों के कारण यह प्रजा का प्रिय हो गया था उसने साम्राज्य का भी दौरा किया था कनाडा तथा भारतवर्ष में आया था। एडवर्ड को अपनी माता के समय में ही शासन सम्बन्धी बहुत काम करने पड़ते थे इसलिए वह इन मामलों में दक्ष हो गया था।

एडवर्ड-सप्तम
१९०१-१९१० ई०

एडवर्ड शान्त प्रकृति का था और उसकी इच्छा थी कि यूरोप में शान्ति बनी रहे। इसके लिए उसने कुछ प्रयत्न भी किया। जिसके कारण उसको "शांतिकारक" (Peace-maker) की उपाधि मिली है। एडवर्ड को परराष्ट्रनीति का अच्छा ज्ञान था और योरोप के अन्य देशों के शासकों, मन्त्रियों तथा प्रमुख नेताओं से उसकी जान पहचान भी बहुत थी। विशेषतः उसको फ्रांस से बहुत प्रेम था इसलिए वह फ्रांस से मित्रता के पक्ष में था। इसकी सहायता से ब्रिटिश सरकार बहुत अन्तरराष्ट्रीय गुत्थियों को सहज ही सुलझा लेती थी। एडवर्ड का विवाह डेनमार्क की राज-पुत्री अलेक्जेंड्रा के साथ हुआ था जिससे उसका सम्बन्ध यूरोप के अनेक राजवंशों से हो गया।

एडवर्ड के साथ में देश की आर्थिक और राजनैतिक उन्नति हुई जिसका श्रेय लिवरल दल को है। आरम्भ में तो कंजर्वेटिव (Unionist) पार्टी शक्ति में थी। इस दल का मुख्य उद्देश्य आयरलैंड का संयोग बनाए रखना था। लार्ड सैलिसबरी और तत्पश्चात् बालफोर इसके नेता थे। १६०३ ई० में इस दल के सदस्य मिस्टर जोजेफ़ चैम्बरलेन (Mr. Joseph Chamberlain) ने यह प्रस्ताव किया कि देश में आने वाले सामान पर अधिक कर लगाया जाए और उपनिवेशों तथा साम्राज्य के अन्य भागों के साथ विशेष रियायत (Preferential Tariff) रखी जाए। इससे उसका आशय था अपने देश के व्यवसाय की रक्षा करना (Protection) क्योंकि इस समय जर्मनी का व्यापार बढ़ गया था और उसके मुक़ाबले के कारण इंगलैण्ड के व्यवसाय को धक्का लग रहा था। यह नीति लिवरल दल को पसन्द न थी और क्योंकि चैम्बरलेन बाहर से आने वाली खाने की वस्तुओं पर भी महसूल बढ़ाना चाहता था इससे यह प्रस्ताव पास न हो सका। शीघ्र ही यह दल चुनाव में हार गया और कई वर्षों के बाद फिर लिवरल दल शक्ति में आया। सर कैम्पबेल बैनरमैन (Sir Campbell-Bannerman) प्रधान मन्त्री हुआ, परन्तु उसने शीघ्र ही इस्तीफ़ा दे दिया और मि० ऐस्क्विथ (Mr. Asquith) दस वर्ष तक प्रधान मन्त्री रहा। इस काल में देश की आर्थिक दशा सुधरी परन्तु सबसे मुख्य बात पार्लियामेंट में लार्ड सभा तथा कामन्स सभा के परस्पर सम्बन्ध का निश्चित होना था। १६०६ ई० में लार्ड सभा ने जिसमें अधिक संख्या में कंजर्वेटिव लोग थे, लिवरल सरकार के बजट को स्वीकार न किया और अन्यथा भी उसके द्वारा किए गए सुधारों को रोका। ऐस्क्विथ ने यह नियम बनाना चाहा कि लार्ड सभा आर्थिक नियमों में हस्तक्षेप न कर सके और अन्य बिलों को दो वर्ष से अधिक न रोक सके। यह नियम १६११ ई० में बना और जार्ज पञ्चम ने इसको स्वीकार किया।

लिवरल दल की उन्नति

यह काल विज्ञान की उन्नति का था। बिजली की शक्ति का प्रयोग हो रहा था। देश के प्रत्येक नगर में बिजली की रोशनी का प्रवन्ध हुआ और लन्दन में पहले पहल इस राजकाल में जमीन के नीचे बिजली की गाड़ी (Underground Electric Train) चलने का प्रवन्ध किया गया जिससे शहर में आने जाने की सुविधा हो गई। इसी काल में मोटरकार का भी बहुत प्रचार बढ़ा और हवाई जहाज भी बनने लगे। युद्ध की चीजों में भी तरक्की हुई, हवाई जहाज, ड्रेडनाट (Dreadnouht), पनडुब्बी किश्ती (Submarine) आदि बने और प्रत्येक देश ने अपनी सेना, तोपें आदि बढ़ाई। इसी काल में इङ्गलैंड में राजनैतिक अधिकार बढ़ाने का प्रयत्न हुआ। स्त्रियों ने इसके लिए आन्दोलन किया और सफ़राजिस्ट आन्दोलन (Suffragist movement) का आरम्भ हुआ मजदूरों में भी विशेष जागृति हुई। ट्रेड यूनियन (Trade Unions) ने जोर पकड़ा और मजदूर दल जो कुछ वर्ष पूर्व संगठित हो गया था अब उन्नति पर था परन्तु अभी भी वह शक्तिमान न हो सका।

एडवर्ड के शासन काल में देश की उन्नति

१९०४ ई० में एडवर्ड के प्रयत्न से फ्रांस के साथ समझौता हो गया और १९०७ ई० में रूस से भी झगड़े का कोई कारण न रह गया--इन दो समझौतों का यह प्रभाव पड़ा कि अब इङ्गलैंड के दो वैरी उसके मित्र हो गए और जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए एक मित्र समुदाय बन सा गया। लिबरल दल का सर एडवर्ड ग्रे (Sir Edward Grey) परराष्ट्र मन्त्री था। उसने धीरे-धीरे इङ्गलैंड को अवश्य होने वाले युद्ध के लिए तैयार कर लिया।

परराष्ट्रनीति

१९१० ई० में एडवर्ड सप्तम की मृत्यु हुई और उसके पुत्र जार्ज पञ्चम गद्दी पर आए। जार्ज सिंहासन पाने के समय ४५ वर्ष के थे। उसका राज्याभिषेक भारतवर्ष में भी दिल्ली में हुआ था जिसका इस

देश पर बहुत प्रभाव पड़ा। जार्ज ने सिंहासन पर आते ही अपनी उदार नीति का परिचय दिया और लार्ड सभा को यह कहकर कि आवश्यकता पड़ने पर नए लार्ड बहु-संख्या में बनाए जाएंगे, मजबूर किया कि पार्लियामेंट एक्ट (१९११) पास करे। जार्ज ने

जार्ज पंचम
१९१०-१९३६

अपने जीवन में सदा ही प्रजा के हित का ध्यान रखा और सत्य ही वह साधारण मनुष्य के राजा थे। उनको गरीब आदमी से सहानुभूति थी, उसके लिए उनको दया थी और उन्होंने अपने जीवन में उसके लिए कुछ करने का भी प्रयत्न किया। १९३५ ई० में जब इंगलैंड में शासन के २५ वर्ष पूरे होने पर सिल्वर जुबली (Silver Jubilee) मनाई गई थी तब प्रजा ने भी अपने प्रेम और सत्कार का बहुत उत्साह के साथ प्रदर्शन किया था। राजा और रानी की सवारी लंदन की गरीब बस्तियों में होकर जाती थी और सहस्रों स्त्री पुरुष, बूढ़े बच्चे, उनका आदर करने के लिए सड़कों पर जमा होते थे और राजा को बधाई देते थे। जार्ज ने प्रजातन्त्र शासन का बराबर ध्यान रखा और कभी ऐसा कोई काम न किया जिससे इसको हानि पहुँचती।

इस शासन काल की मुख्य घटना यूरोप का महायुद्ध है जो १९१४ ई० से १९१८ तक चलता रहा और जिससे संसार में बहुत नुकसान हुआ। जार्ज ने उसमें पूरा सहयोग दिया और स्वयं युद्ध में जाकर सिपाहियों का उत्साह बढ़ाया। उस काल में राजपरिवार ने भी वे सब कष्ट उठाए जो प्रजा पर पड़ रहे थे। युद्ध के पश्चात् इंगलैंड में अनेक परिवर्तन हुए और कई वर्ष तक देश युद्ध के बुरे परिणामों से निकल न सका। इसी काम में दो बार मज़दूर दल शक्ति में आया परन्तु यह काल बहुत थोड़ा था। अधिकतर कंजर्वेटिव दल ही शक्ति में रहा है।

जार्ज की मृत्यु १९३६ ई० के जनवरी मास में हुई और उनके ज्येष्ठ पुत्र एडवर्ड अष्टम सिंहासन पर बैठे परन्तु उन्होंने कुछ ही महीनों

बाद सिंहासन का परित्याग कर दिया और अब उनके कनिष्ठ भ्राता जार्ज षष्टम सिंहासन पर हैं।

महायुद्ध (१९१४–१९१८ ई०)

पूर्व के उक्त परिच्छेद (इंगलैंड और यूरोप) में बतला चुके हैं कि किस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में दलबंदियाँ हो रही थीं। जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली ने अपनी त्रिविध संघ (Triple Alliance) बनाया था और उसके मुकाबले में फ्रांस तथा रूस में भी घनिष्ट सम्बन्ध हो गया था और १८९२ ई० में वे मित्र (Dual Alliance) हो गए थे। पुनः इंगलैंड भी फ्रांस का का मित्र हुआ और १९०७ ई० में रूस से झगड़े के कारण मिट गए और मित्रता (Triple Entente) सम्भव हो सकी। इस कारण जब जार्ज पंचम सिंहासन पर आए तो यूरोप में दो विशेष दल मौजूद थे--एक ओर जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली, दूसरी तरफ रूस, फ्रांस तथा इंगलैंड। इटली की अवस्था विचित्र थी। वह जर्मनी का मित्र था परन्तु आस्ट्रिया पर उसको सन्देह था। इधर यह इंगलैंड से डरता था क्योंकि अंग्रेज़ी जलसेना बहुत प्रबल थी, और फ्रांस से भी अब मित्रता हो गई थी। अतः यह आशा की जाती थी कि इटली त्रिविध संघ के पक्ष में न रह कर भावी युद्ध में इंग्लैंड का साथ देगा।

युद्ध के कारण

रूस और आस्ट्रिया में वैर होना आवश्यक था, क्योंकि दोनों ही बाल्कन प्रान्तों को हड़प करके और टर्की के साम्राज्य को नष्ट करके पूर्वी मेडीटरेनियन सागर में बन्दरगाह की खोज में थे। आस्ट्रिया के पास अच्छा समुद्र-तट न था और उसको अपने बढ़ते हुए व्यापार के लिए एक अच्छे बन्दरगाह की आवश्यकता थी और उसकी दृष्टि सैलोनिका पर लगी थी। रूस का उत्तरी तट सर्दी के कारण जम जाता था और ब्लैक सी (Black Sea) का निकास तुर्की के आधीन था अतः वह भी चाहता था कि किसी प्रकार बाल्कन प्रान्त को अपने आधीन करके अपना अपने

लिए सर्विया का राज्य समुद्र तट तक बढ़ा कर एक अच्छा बन्दरगाह पाए। रूस स्लाव (Slav) देश है और रूस के शासक सदा ही बाल्कन प्रान्त की स्लाव जातियों का पक्षपात करते थे। सर्विया भी स्लाव देश है और उसका राजा एक वृद्ध स्लाव साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। आस्ट्रिया के आधीन भी कुछ स्लाव प्रान्त थे, जिनमें विशेष बास्निया (Bosnia) और हर्जगोविना (Herzegovina) थे। ये प्रान्त स्वतंत्र होकर सर्विया के साथ रहना चाहते थे और इस कारण उन प्रान्तों में सदा ही आस्ट्रिया के विरुद्ध आन्दोलन होता रहा था। आस्ट्रिया की सरकार समझती थी कि ये आन्दोलन सर्विया के कारण होते हैं और यही देश क्रान्तिकारियों को धन देता है अतः आस्ट्रिया में सर्विया और रूस के प्रति द्वेष था। इस हालत में सम्भव था कि १६०८ ई० में युद्ध छिड़ जाता परन्तु फ्रांस तैयार न था इसलिए किसी प्रकार समझौता हो गया। १६१२ व १६१३ ई० में एक भयंकर बाल्कन युद्ध हुआ जिसमें सब बाल्कन देशों ने मिल कर टर्की का राज्य कम कर दिया। पुनः वे आपस में लड़ने लगे तब इङ्गलैंड ने समझौता करा दिया (लन्दन की सन्धि १६१३ ई०) इस युद्ध में सर्विया और रूस की मित्रता अधिक बढ़ गई और आस्ट्रिया उससे असन्तुष्ट हुआ। आस्ट्रियन सरकार किसी प्रकार सर्विया की शक्ति कम करने के प्रयत्न में थी।

इसी काल में जर्मनी की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। क़ैसर विलियम द्वितीय (William II) जब से सिंहासन पर आया था उसने जर्मनी के व्यवसाय, व्यापार तथा सेना की उन्नति का विशेष प्रयत्न किया था। व्यवसाय और व्यापार बढ़ने से उपनिवेशों की आवश्यकता हुई ताकि देश का माल वहाँ बिक सके, बढ़ी हुई जन-संख्या के लिए निवास-स्थान मिल सके और वहाँ से जर्मनी के कारखानों के लिए कच्चा माल आ सके। जर्मन राष्ट्र देर में बना था और इसके पूर्व ही दूसरे राष्ट्रों के संसार के अच्छे अच्छे देश आपस में बांट लिए थे अतः जर्मनी को उपनिवेशों के लिए इङ्गलैंड अथवा फ्रांस से लड़ना पड़ता। इसके

अतिरिक्त जर्मनी का व्यापार बहुत बढ़ गया था और संसार के प्रत्येक देश में जर्मनी का बना हुआ माल बिकता था। जर्मनी माल सस्ता और मजबूत होता था इससे बाजार में अन्य देशों (इंगलैंड और फ्रांस आदि) का माल कम बिकता था। इङ्गलैंड भी व्यापार पर निर्भर था अतः उसके लिए यह विकट समस्या थी और १८६७ ई० के उपरान्त इङ्गलैंड में जर्मन व्यापार के विरुद्ध आन्दोलन शुरू हो गया था। व्यापार की रक्षा के लिए जर्मनी को एक सुसंगठित जलसेना रखना आवश्यक हो गया, अतः कैसर विलियम ने जलसेना का समुचित प्रबन्ध किया। १६०० ई० के बाद यह जलसेना बढ़ने लगी और धीरे-धीरे यह प्रकट होने लगा कि थोड़े समय में यह जलसेना अंग्रेजी जलसेना से बढ़ जाएगी। अंग्रेजी सरकार इस बात को सहन न कर सकती थी और उसी समय से दोनों देशों में वैमनस्य का भाव उत्पन्न हो गया और दिन प्रति दिन बढ़ने लगा।

इस शताब्दी के आरम्भ में क़ैसर ने टर्की से मित्रता कर ली और सुल्तान ने कांस्टैंटीनोपुल से बगदाद तक रेल बनाने की आज्ञा ले ली। इस काम में फ्रांस तथा इङ्गलैंड ने बहुत बाधा डाला परन्तु जर्मन धनिकों और इञ्जीनियरों ने रेल का बहुत भाग बना लिया। इंगलैंड की सरकार इस बात से बहुत भयभीत थी, क्योंकि प्रथम तो इससे जर्मनी का व्यापार एशिया माइनर में बढ़ता, दूसरे जर्मनी को मेसेपोटैमिया के मिट्टी के तेल के कुओं पर अधिकार मिल जाता और तीसरे भारतवर्ष तथा फ़ारस पर जर्मन प्रभाव डालने का यह सहज उपाय था। इस बगदाद रेलवे के कारण विरोध-भाव बहुत पुष्ट हो गया और इंगलैंड में जर्मनी के प्रति द्वेष हो गया। जर्मनी भी अपना साम्राज्य बढ़ाना चाहता था इस कारण उस देश में भी इंगलैंड के विरुद्ध बहुत लेख लिखे जाते थे और द्वेष भाव बढ़ रहा था। क़ैसर ने बोअर युद्ध में बोअरों के प्रति स्पष्ट सहानुभूति दिखाई थी इससे इंगलंड निवासी बहुत रुष्ट हुए। परन्तु जब तक विक्टोरिया ज़ीती रही तब तक क़ैसर बराबर

इंग्लैंड आता था और अपनी मित्रता का प्रमाण देता था। एडवर्ड के समय से यह अवस्था न रह सकी क्योंकि दोनों में परस्पर द्वेष था। इस प्रकार १९१४ ई० के पूर्व इंगलैंड तथा जर्मनी के बीच द्वेष की मात्रा बढ़ रही थी और स्पष्ट ज्ञात होता था कि यदि किसी कारण से यूरोपीय युद्ध हुआ तो ये दोनों देश एक दूसरे के विरुद्ध होंगे।

जर्मनी और फ्रांस के बीच में तो १८७० से बराबर वैमनस्य था। फ्रांस उस हार का बदला लेना चाहता था और उसकी सारी परराष्ट्र नीति इसी उद्देश्य से थी। जर्मनी भी यह जानता था और फ्रांस की प्रतिहिंसा से बचने के लिए उसने त्रिविधि संधि (Triple Alliance) बनाया था और बहुधा युद्ध से बचने के फ़िक्र में रहता था। परन्तु विलियम ने तैयारी कर ली थी और चाहता था कि यदि युद्ध होता है तो शीघ्र ही निपटारा हो जाए। इस प्रकार महायुद्ध के लिए सब सामान हो रहे थे और विरुद्ध पक्ष के राष्ट्रयुद्ध छोड़ने के लिए एक बहाने की खोज में थे।

इस स्थिति में २८ जून १९१४ को वासनिया के मुख्य नगर सेराजेवो में आस्ट्रियन युवराज का वध हुआ। इस घटना ने बारूद में चिनगारी का काम किया और सारे यूरोप में शीघ्र ही भारी आग फैल गई। आस्ट्रियन सरकार को पता लगा कि हत्या में एक सर्वियन संख्या सम्मिलित है और कुछ सर्वियन सरकारी अफ़सर भी उस काम में मिले हुए हैं। बस क्या था, आस्ट्रिया को बदला लेने और सर्विया का नाश करने का अच्छा अवसर मिला। उसने २३ जुलाई को सर्वियन सरकार के पास बहुत कड़ी शर्तें लिख कर भेजीं, जिनको यदि सर्विया स्वीकार कर लेता तो वह केवल आस्ट्रिया का आधीन हो जाता। सर्वियन सरकार ने दो के अतिरिक्त सभी शर्तों को स्वीकार कर लिया और उनको भी यूरोपीय कान्फ्रेंस के निश्चय पर छोड़ दिया। आस्ट्रिया इससे सन्तुष्ट न हुआ और जर्मनी की सलाह से पूर्ण

Serajavo
युद्ध का आरम्भ

स्वीकृति के लिए अड़ गया। उसने अपनी सेना सर्विया के विरुद्ध भेजी और इसका जवाब रूस ने आस्ट्रिया के विरुद्ध सेना भेज कर दिया। जर्मनी ने यह देखकर आस्ट्रिया की सहायता के लिए अपनी सेना सीमा तक भेजी और फ्रांस ने रूस की सहायता के लिए ऐसा ही किया. शान्ति के लिए प्रयत्न हुए परन्तु आस्ट्रिया की जिद्द के कारण युद्ध छिड़ ही गया। जर्मनी ने फ्रांस पर अधिकार करने की इच्छा से वेल्जियम पर आक्रमण किया। वह कार्य पूर्व समझौता (१८३९ ई०) के विरुद्ध था। इङ्गलैंड की सरकार वेल्जियम की रक्षा का वादा कर चुकी थी अतः वह यह अत्याचार न देख सकती थी। जब कैसर ने पुरानी सन्धि की तनिक परवाह न की तो इंगलैंड ने भी ४ अगस्त को युद्ध की घोषणा कर दी और महायुद्ध का आरम्भ हो गया।

इस महायुद्ध में संसार के लगभग सभी मुख्य देशों ने भाग लिया। और इसी कारण इस युद्ध की इतनी महत्ता हो गई। जर्मनी, फ्रांस, आस्ट्रिया, रूस, सर्विया, वेल्जियम और इङ्गलैंड तो पहले ही आ गए थे। इनके अतिरिक्त १९१५ ई० में इटली ने अपने मित्रों का पक्ष न लेकर फ्रांस तथा इङ्गलैंड का साथ दिया और दक्षिणी आस्ट्रिया को जीतने का प्रयत्न किया और टर्की ने इसके विपरीत जर्मनी का साथ दिया क्योंकि उसको अपने पुराने वैरी रूस का विरोध करना था। टर्की के सम्मिलित होने से इङ्गलैंड आदि 'मित्र दल' (Allies) को बहुत हानि हुई क्योंकि अब डार्डनेलेज़ का पतला रास्ता रूस के जहाजों के लिए बन्द हो गया और रूस से गेहूं न आ सका, जिससे इंगलैंड में भोजन सामग्री की कमी हो गई और इङ्गलैंड से रूस के लिए युद्ध का सामान न जा सका। टर्की के कारण एशिया में भी युद्ध होने लगा और मेसोपोटैमिया में भारतीय सिपाहियों को लड़ने के लिए भी जाना पड़ा पुनः बलगेरिया ने आस्ट्रिया का साथ दिया क्योंकि वह सर्विया से द्वेष रखता था और रूमानिया ने रूस का पक्ष लिया। यूरोप के बाहर,

युद्ध में भाग लेने वाले देश

जापान ने इङ्गलैंड के पक्ष में युद्ध किया और प्रशान्त महासागर के तट पर जर्मनी के उपनिवेश कियो-चो (Kiao-Chow) को अपने आधीन किया। ये सब देश तो पहले ही आ गए थे परन्तु संयुक्त देश अमेरिका ने जर्मनी के अत्याचार से रुष्ट होकर १६१७ ई० में युद्ध में भाग लिया और शीघ्र ही फैसला भी कर दिया।

यह महायुद्ध चार वर्ष तक चला और इससे लाखों मनुष्यों की हत्या हुई और अरबों रुपया नष्ट हुआ। इतने बड़े युद्ध के लिए आवश्यक था कि इङ्गलैंड में पूरी तैयारी की जाए। जर्मनी की सेना पूर्ण सुसज्जित थी और युद्ध की सामग्री भी वहाँ काफी इकट्ठा कर ली गई थी। इङ्गलैंड ने अपने साम्राज्य के प्रत्येक

इङ्गलैंड में युद्ध के लिए तैयारी

अंग से सहायता पाई। कनाडा आदि स्वतंत्र प्रदेशों ने देश के कष्ट के समय में अपनी सेना भेज कर और धन की सहायता देकर अपनी उपयोगिता प्रमाणित की। भारतवर्ष से भी करोड़ों रुपया दिया गया और लाखों सिपाही यूरोप तथा अन्य-क्षेत्रों में भाग लेने के लिए गए। सेना के अतिरिक्त युद्ध-सामग्री की आवश्यकता थी और इसके लिए इङ्गलैंड के सब कारखानों में गोला, बारूद तथा अन्य सामान ही बनने लगा। यह काम मंत्री लायड जार्ज की संरक्षता में बहुत अच्छी तरह हुआ। जनता को भी बहुत कष्ट उठाना पड़ा। बाहर से सामान न आ सकने के कारण भोजन-सामग्री की कमी पड़ी और सरकार ने हर एक आदमी के लिए तौल निश्चय कर दी जिससे अधिक किसी को न मिल सकता था। पुनः १८ वर्ष से ४० वर्ष तक के पुरषों को अनिवार्य सैनिक सेवा करनी पड़ी। स्त्रियों ने कारखानों में काम किया और देश के अन्य कामों को चलाया और पुरुष सब युद्ध-क्षेत्र में गए। इस प्रकार इंगलैंड तथा उनके साम्राज्य ने इस आपत्ति के समय कष्ट-सह कर सफलता पाने के लिए प्रयत्न किया।

जिस समय युद्ध का आरम्भ हुआ कैसर ने चाहा कि बेल्जियम

होकर फ्रांस पहुँचे और इसके पूर्व कि फ्रेंच सेना या उसके सहायक जमा हो सकें फ्रांस पर अधिकार करके युद्ध का अन्त कर दे। परन्तु बेल्जियम ने मुक़ाबिला किया और अंग्रेजी सेना भी पहुंच गई। ब्रिटिश सेनापति सर जान फ्रेंच (Sir John French) ने जर्मन सेना को रोका परन्तु मांस (Mons) के युद्ध में उसको पीछे हटना पड़ा। इतने में फ्रेंच सेना भी तैयार हो गई और मित्र-दल ने मर्न (Marne) के संग्राम के बाद जर्मन सेना को पीछे एन (Aisne) नदी तक हटा दिया। इसके बाद जर्मन सेना ने कैले तथा अन्य

मुख्य युद्ध क्षेत्र— पश्चिमी क्षेत्र



हेग

समुद्र तट के भागों पर अधिकार करना चाहा ताकि इंगलैंड से सहायता न आ सके। परन्तु ईपर्स (Ypres) में दस दिन तक घमासान युद्ध हुआ और जर्मन लोग आगे न बढ़ सके (१९१४)। इसके बाद तीन वर्ष तक दोनों सेनाएं एक दूसरे के सम्मुख खंदकों (Trenches) में पड़ी रहीं और दूर से गोलावारी होती रही। जब अवसर मिलता था सेनाएं बाहर निकल कर लड़ती भी थीं इस काल में इंगलैंड का प्रधान सेनापति सर डगलस हेग (Sir Douglas Haig) था और उसने

१९१६ ई० की जुलाई में सेना साम (Somme) के किनारे रोका और नवम्बर तक युद्ध होता रहा। इसके पहले जर्मन सेना ने फ्रैंच सेना को वर्डून (Verdun) से हटाना चाहा था परन्तु फ्रैंच सेना ने बहुत बहादुरी दिखाई और स्थिर रही। १९१७ ई० में अमेरिका से भी फ़ौजें आई और जिस समय मित्र दल की अवस्था बहुत अच्छी न थी, उन्होंने जर्मनों को पीछे हटाया। जर्मन सेना थक गई थी और जर्मन प्रजा शान्ति चाहती थी। इसके पूर्व ही जर्मनी के मित्रों ने सन्धि के लिए प्रार्थना की थी, अतः १९१८ ई० में क़ैसर को भागना पड़ा और पश्चिमी क्षेत्र में मित्र दल की विजय हुई।

युद्ध आरम्भ होते ही रूस ने पूर्व में जर्मनी पर आक्रमण किया, परन्तु रूसी सेना परास्त हुई और उसको पीछे लौटना पड़ा। उसी समय सर्विया ने भी आस्ट्रियन सेना को पीछे हटा दिया था। इसके बाद १९१५ ई० में अंग्रेज़ी सेना ने यह प्रयत्न किया था कि डार्डनेलेज़ को जीतकर बाल्कन प्रान्त की ओर से वैरी का मुक़ाबिला करे, परन्तु सब प्रयत्न निष्फल हुए। १९१६ ई० में रूसी सेना आगे बढ़ी, पर जर्मन सेना ने फिर उसको परास्त किया। सर्विया भी इसी समय नष्ट हो गया था, १९१७ ई० रूस में राज्यक्रांति हुई, ज़ार निकोलस द्वितीय मारा गया और बोल्शेविक-दल ने शासन पर अधिकार किया। यह दल युद्ध का विरोधी था अतः उसने जर्मनी और आस्ट्रिया से मार्च १९१८ ई० में ब्रेस्ट लिटोव्स्क (Brest Litovsk) की सन्धि कर ली और पूर्वी भाग में युद्ध का अन्त हो गया।

पूर्वी क्षेत्र

तीसरा युद्ध-क्षेत्र एशिया में था। क्योंकि टर्की जर्मनी के पक्ष में था अतः अंग्रेज़ी सरकार ने उसके एशियाई साम्राज्य को छीनना चाहा। १९१६ ई० में अंग्रेज़ी सेना ने जिसमें मुख्यतया भारतवासी शामिल थे मेसोपोटेमिया पर आक्रमण किया और बग़दाद को लेना चाहा, परन्तु प्रथम

टर्की से युद्ध मेसोपोटेमिया और सीरिया

प्रयत्न असफल हुआ। तब १९१७ ई० में जेनरल माड (General Maude) की अध्यक्षता में दूसरी सेना भेजी गई और उसने बगदाद पर अधिकार किया और शीघ्र ही पूरा प्रान्त अंग्रेज़ों के आधीन हुआ। इसी समय ब्रिटिश सेना ने पैलेस्टाइन (Palestine) पर भी अधिकार करना चाहा। पहले वह गजा (Gazua) पर रोकी गई, परन्तु दूसरी बार जेनरल अलेनबी (Allenby) ने दिसम्बर १९१७ में जेरुसलेम पर अधिकार किया और १९१८ के सितम्बर तक पूरे सीरिया (Syria) प्रान्त को जीत लिया। इस पराजय से टर्की और बलगेरिया दोनों ही हतोत्साह हो गए और सन्धि के प्रार्थी हुए।

स्थल युद्ध के सिवाय इंगलैंड और जर्मनी समुद्र पर भी लड़े। जर्मन लोग आशा करते थे कि वे अपने जहाजों द्वारा इंगलैंड के व्यापारी जहाजों को पकड़ सकेंगे और इस प्रकार उस देश में बाहर से भोजन-सामग्री का आना रोक सकेंगे। और अंग्रेज़ों को सन्धि करने के लिए बाध्य करेंगे।

जल-युद्ध

परन्तु जर्मन जहाज़ भगा दिए जाते थे इससे बहुत हानि सम्भव न हो सकी। १९१४ ई० में जर्मन बेड़ा ने एक अंग्रेज़ी बेड़ा को दक्षिणी अमेरिका में डुबा दिया परन्तु शीघ्र ही वह जर्मन बेड़ा भी फ़ाकलैंड (Falkland Isles) के पास डुबा दिया गया जर्मन बेड़ा हेलिगोलैंड (Bight of Heligoland) में रहता था और वहाँ से उत्तरी सागर में अंग्रेज़ी जहाजों पर आक्रमण करता था। अंग्रेज़ी बेड़ा उत्तर में स्केपा फ़्लो (Scapa Flow) में रहता था। जून १९१६ ई० में जटलैंड (Jutland) के पास एक युद्ध हुआ जिसमें बहुत अच्छे अंग्रेज़ी जहाज डुबा दिए गए, परन्तु जर्मन बेड़े को भी बहुत हानि हुई और उसके बाद फिर कभी उसने खुले समुद्र में आने का साहस न किया। जर्मनी ने पनडुब्बी (Submarine) जहाजों द्वारा अंग्रेज़ी व्यापारी जहाजों को नष्ट करना शुरू किया ताकि इंगलैंड का व्यापार नष्ट हो जाए। परन्तु इस उपाय से अन्य देशों को भी कष्ट हुआ और १९१७ ई० में अमेरिका

के प्रेसीडेएट विल्सन (Wilsan) ने इसका प्रतिरोध किया और जर्मनी के न मानने पर युद्ध में भाग लिया। जर्मनी ने इस युद्ध में हवाई जहाजों, जेपलिन (Zeppelin), से भी काम लिया और बहुधा रात को इंगलैंड के नगरों पर गोले गिराए।

इस प्रकार चार वर्ष तक घमासान युद्ध होता रहा जिसमें लाखों मनुष्यों की हत्या हुई और अमूल्य सामान नष्ट हुआ अमेरिका के आ जाने से मित्रदल की अवस्था सुधर गई और सब सेनाओं का संचालन फ्रेंच सेनापति मार्शल फ़ोश (Marshal Foch) के हाथ में दे दिया गया।

युद्ध का अन्त

इससे यह लाभ हुआ कि सेना के कार्य में एकता सम्भव हो सकी। परन्तु जर्मनी की दशा पहले की सी न रह गई थी। वहाँ भोजन सामग्री की कमी पड़ी जिससे देश में युद्ध का विरोध होने लगा और साम्यवादी दल (Socialist Party) का ज़ोर बढ़ा। जब सफलता की कोई आशा न रही तो स्थान-स्थान पर विद्रोह हुए और जनता ने क़ैसर को गद्दी से उतारने और सन्धि करने की आवाज़ उठाई। जर्मन सेनापति हिंडेनवर्ग (Hindenburg) ने क़ैसर को सलाह दी कि वह स्वयं इस्तीफ़ा दे दे परन्तु अब बहुत देर हो गई थी, अतः क्रान्तिकारियों ने वर्लिन पर अधिकार कर लिया। क़ैसर हालैंड भाग गया और नई सरकार ने सन्धि के लिए अपने दूत भेजे। ११ नवम्बर १९१८ ई० को क्षणिक सन्धि या आर्मिस्टिस (Armistice) हो गई और तब वार्साई (Versailles) में सन्धि कानफ्रेंस हुई। इसने एक वर्ष में सन्धि की शर्तें बनाईं और १० जनवरी १९२० ई० को वे मंजूर हो गईं।

इस सन्धि ने यूरोप के नक़शे को बिल्कुल बदल दिया है। इस कारण यह बहुत ही महत्वपूर्ण सन्धि हुई है। इस सन्धि के निश्चित करने में इङ्गलैंड के प्रधान मन्त्री लायड जार्ज, फ्रांस के प्रधान मन्त्री क्लेमेंशो (Clemenceau) और अमेरिका के प्रेसीडेन्ट विल्सन ने मुख्य भाग लिया।

वार्साई की सन्धि

विलसन की इच्छा थी कि संसार में सब राष्ट्रों में प्रजातन्त्र फैल जाए और कोई भी जाति दूसरे के आधीन न रहे। इन सिद्धान्तों के अनुसार काम अवश्य हुआ परन्तु अन्य दो लोग जर्मनी की शक्ति को सदा के लिए नष्ट करना चाहते थे, और क्लेमेंशो तो बदले की फ़िक्र में था। अतः इन लोगों की भावनाओं का समझौते पर विशेष प्रभाव पड़ा और सन्धि ने जर्मनी को पूर्णतया निर्बल करने का विधान किया। अवश्य, यूरोप में नए जातीय राष्ट्रों का विकास हुआ और शताब्दियों के अत्याचार का अन्त हुआ। इस सन्धि की निम्नलिखित विशेष शर्तें थीं—

(१) एल्सास (Alsace) और लोरेन (Lorraine) प्रान्त फ्रांस को वापस मिले।

(२) जर्मनी ने मित्र राष्ट्रों की सब भूमि और सम्पत्ति लौटा दी और लड़ाई के हरजाने में बहुत धन देना स्वीकार किया।

(३) जमानत के लिए उसको राइन (Rhine) नदी के किनारे के प्रान्त मित्र राष्ट्रों को देने पड़े, जिनमें मुख्य सार की घाट (Saar Valley) थी इस प्रांत में लोहे और कोयले की खानें हैं।

(४) उसके सब उपनिवेश इंगलैंड, फ्रांस तथा बेल्जियम ने बाँट लिए।

(५) उसको अपने जङ्गी जहाज़ इङ्गलैंड के आधीन करने पड़े और सेना का अधिक भाग बरखास्त किया गया। जहाज़ी बेड़ा अंग्रेज़ों ने डुबा दिया।

(६) उसने पूर्वी प्रांतों को जिनके पोल आदि जातियाँ बसती थीं, प्रजा की अनुमति के बाद स्वतन्त्र कर देने का वादा किया।

ये शर्तें तो जर्मनी के लिए थीं, पर इसके अतिरिक्त अन्य शर्तों से यूरोप में नए राष्ट्र बने। इनमें पोलैंड, यूगोस्लाविया (Yugo-Slavia) जो सर्विया, बास्निया तथा मांटेनीग्रो के संयोग से बना था और चैकोस्लो-

वेकिया (Czecho-Slovakia) अथवा पुराना बोहेमिया प्रान्त मुख्य है। आस्ट्रिया के कई स्वतन्त्र टुकड़े हो गए और क़ैसर आस्ट्रिया के सम्राट तथा ज़ार को अपने पद से हाथ धोना पड़ा। कई देशों में प्रजा-तन्त्र स्थापित हो गया और अवैध शासन का सब जगह अन्त हो गया। टर्की के यूरोपियन साम्राज्य का अन्त हो गया और इराक़ (मैसोपोटैमिया) सीरिया, अरब और पैलेस्टाइन स्वतन्त्र कर दिए गए। परन्तु वास्तव में ये प्रांत इङ्गलैंड और फ्रांस के आधिपत्य (Mandate) में हो गए। इसके अतिरिक्त यह निश्चित हुआ कि अन्तर-राष्ट्रीय कार्यों और संसार में शांति रखने के लिए एक राष्ट्र संघ (League of Nations) की स्थापना हो, जिसमें जर्मनी के अतिरिक्त सब देश भाग ले सकें। इस राष्ट्रसंघ से वहुत लाभ की आशा है और यह संस्था संसार से युद्ध को वर्जित करने तथा फ़ौजों को कम करने का प्रयत्न कर रही है।

इस महासंग्राम में इंगलैंड को अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगानी पड़ी और प्रत्येक नागरिक को देश के प्रति अपना कर्त्तव्य-पालन करना पड़ा।

महायुद्ध का इङ्गलैंड पर प्रभाव

ब्रिटिश साम्राज्य ने भी पूरा साथ दिया और साम्राज्य की एकता प्रमाणित कर दी। साम्राज्य ने लगभग ८५ लाख आदमी लड़ने के लिए तैयार किए जिनमें से ब्रिटिश (British Isles) से ही २५ लाख आदमी मरे या घायल हुए। इसके अतिरिक्त साम्राज्य पर ८ अरब पौंड क़र्ज हो गया। इंगलैंड ने विजय तो प्राप्त की, परन्तु कष्ट भी वहुत सहना पड़ा और व्यय भी वहुत हुआ। युद्ध के कारण सामान न वन सका और वस्तुओं का मूल्य दूना तथा तिगुना वढ़ गया जिससे लोगों को वहुत कष्ट हुआ। दूसरे निरुद्यमों की संख्या भी वढ़ गई और युद्ध के वाद प्रत्येक मन्त्रिमंडल को इसका उपाय करना पड़ा है। फिर कारखानों और खानों में मजदूरों का वेतन भी कम हुआ, जिससे हड़तालें होने लगीं और एक नई व्यावसायिक समस्या उठ खड़ी हुई। युद्ध के कारण कुछ धनवान लोगों की सम्पत्ति अधिक वढ़

गई और ये पूंजीपति शासन तथा व्यवसाय पर स्वार्थवश अपना वैध प्रभाव डालने लगे जिससे देश में साम्यवाद (Socialism) के विचारों की वृद्धि तथा मजदूर दल की उन्नति हुई और सम्भवः था कि शासन उन्हीं विचारों के अनुसार होता, परन्तु रूस की वोल्शेविक क्रान्ति से भयभीत हो कर इङ्गलैंड की जनता अपनी पुरानी संस्थाओं से प्रेम करने लगी। युद्ध की सफलता का विशेष श्रेय लायड जार्ज को है।

३७—स्काटलैंड तथा आयरलैंड
१७१५—१९२२ ई०

जब १७०७ ई० में स्काटलैंड का इङ्गलैंड से संयोग (Union) हुआ तो स्काट लोग इससे प्रसन्न न थे। उसकी अलग पार्लियामेंट तोड़ दी गई थी और उनको इंगलैंड की पार्लियामेंट में कुछ सदस्य भेजने का अधिकार मिल गया था। व्यापार सम्बन्धी सब अधिकार उनको अंग्रेजों के समान प्राप्त थे। परन्तु पहले उनको इसमें कोई लाभ न जान पड़ा, क्योंकि उनके देश में व्यवसाय की कमी थी। कुछ दिन बाद 'व्यवसायिक क्रान्ति' ने स्काटलैंड में भी अपना प्रभाव किया और वहाँ कृषि नये ढङ्ग से होने लगी और व्यवसाय में भी उन्नति हुई। कोयला और लोहा की खानें काम में आईं और जगह-जगह पर बड़े कारखानें खुल गए। वहाँ पहली भाप की नाव (Steam Boat) बनी और अटलांटिक को पार करने वाला भाप का जहाज (Steamship) भी स्काटलैंड के बन्दरगाह से ही पहले पहल चला था। ग्लासगो (Glassgow) शहर अमेरिका से व्यापार के कारण बहुत बड़ा व्यवसाय तथा व्यापार का केन्द्र हो गया। व्यापार की इस उन्नति से उनको संयोग के लाभ का पता लगा। धीरे-धीरे हाईलैंड्स (Highlands) की जनता ने भी अपना विरोध छोड़ दिया और १७४५ ई० के विद्रोह के बाद फ़िर कोई विद्रोह न हुआ और वे लोग सेना की नौकरी तथा अन्य उद्यमों में लग गए।

स्काटलैंड
१७०७-१९१८ ई०

स्काटलैंड की पार्लियामेंट तो टूट गई थी परन्तु उसका न्यायशासन-विभाग और धार्मिक संगठन (चर्च) दोनों ही इङ्गलैंड से पृथक् रहे हैं। उसके न्यायालय तथा नियम बिलकुल भिन्न हैं। उनका चर्च भी अलग

है और उसमें ब्रिटिश सरकार कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकती है। पार्लियामेंट में भी यह पद्धति चली गई है कि यदि किसी प्रस्ताव का अधिकांश स्काटिश सदस्य विरोध करें तो वह नियम नहीं हो सकता। परन्तु फिर भी स्काटलैंड में एक दल अपना स्वतन्त्र शासन और अलग पार्लियामेंट चाहता है और इस दल की संख्या दिन-दिन बढ़ती जाती है।

आयरलैंड और इङ्गलैण्ड के सम्बन्ध

इंगलैंड में आयरलैंड के प्रति कोई सहानुभूति न थी। पूर्व के एक अध्याय से मालूम हो गया होगा कि सत्रहवीं शताब्दी में वहाँ के निवासियों पर बराबर अत्याचार होते रहे और उनके साथ अंग्रेजी सरकार विजेता का सा व्यवहार करती थी। अतः समय के प्रवाह के साथ दोनों देशों में झगड़ा भी बढ़ता गया। अठारहवीं

अठारहवीं शताब्दी में आयरलैंड

शताब्दी के आरम्भ में आयरिश पार्लियामेंट की बैठक डबलिन (Dublin) में होती थी, परन्तु कोई रोमन कैथोलिक उसका सदस्य न हो सकता था और न चुनाव में भाग ले सकता था। आयरिश प्रजा बहुसंख्या में रोमन कैथोलिक मत को मानती थी, अत प्रजा का अपने देश के शासन में कोई हाथ न था। पुनः पन्द्रहवीं शताब्दी का पायनिंग ऐक्ट (Poynning's Act) अब भी लागू था, जिसके अनुसार आयरिश पार्लियामेंट केवल अंग्रेजी सरकार की आज्ञा से ही नियम बना सकती थी। अंग्रेजी सरकार आयरलैंड के व्यवसाय तथा व्यापार को दबाने का बराबर प्रयत्न करती थी, जिससे प्रजा की अवस्था बहुत शोचनीय होती जाती थी। इसके अतिरिक्त उनके धर्म पर भी कुठाराघात होता था और इससे उनको बहुत दुःख था। रोमन कैथोलिकों के विरुद्ध पुराने नियम अब भी लागू थे, यद्यपि उनको अब जुरमाना न देना पड़ता था; उनके पादरी न्याय-बहिष्कृत समझे जाते थे, पर उनको आंग्ल चर्च के निर्वाह के लिए धर्मकर (Tithes) देना पड़ता था। इस चर्च में केवल थोड़े

...रिश लोग जाते थे, परन्तु सब को कर देना पड़ता था। पुनः उनके ...के जमींदारों अंग्रेज थे जो सदैव लगान बढ़ाते थे और जब ...ते थे किसानों को बेदखल कर देते थे। इन सब कारणों से आयरिश ...ग़रीब और पीड़ित थी और उसको पेट भर खाने और बदन ढकने ...कपड़ा भी न मिलता था। उसकी प्रधान उपज आलू थी और इसी ...आश्रय वह जीवित थी।

आयरिश प्रजा को अपने शासकों पर विश्वास न था और वह ...मझती थी कि विना स्वतन्त्र पार्लियामेंट हुए उसके दुःखों का अन्त न होगा। अमेरिका के स्वतन्त्रता युद्ध के समय उसको इसका अवसर मिला। ग्रैटन (Grattan) के नेतृत्व में आन्दोलन आरम्भ हुआ। ब्रिटिश सरकार को भय हुआ कि कहीं आयरलैंड में भी विद्रोह न उठा खड़ा हो, इससे उसने १७८२ ई० में पायनिंग ऐक्ट को रद्द कर दिया, जिससे आयरिश पार्लियामेंट ब्रिटिश सरकार से स्वतंत्र हो गई और ब्रिटिश पार्लियामेंट ...आयरलैंड के लिए कोई नियम बनाने का अधिकार न रहा। परन्तु ...कैथोलिक प्रजा को लाभ न हुआ क्योंकि न तो उनको चुनाव में ...ट देने का अधिकार था और न उनके प्रतिनिधि पार्लियामेंट में जा ...सकते थे। अतः १७६२ ई० में वूल्फ़ टोन (Wolf Tone) के ...तृत्व में आन्दोलन हुआ और यूनाइटेड आयरिशमैन (United Irishman) नामी एक संस्था बनी जिसका उद्देश्य देश को स्वन्त्रता दिलाना था। इसमें दोनों धर्मं के लोग शामिल थे। १७६४ ई० में ब्रिटिश सरकार ने कैथोलिक को वोट देने का अधिकार दिया। इसी ...समय आयरिश पालियामेंट के सुधार का भी प्रयत्न हुआ परन्तु ...दलबन्दी के कारण वह असफल हुआ।

स्वतंत्र आयरिश पार्लियामेंट और विद्रोह १७८२ १७६८ ई०

इसी समय आयरलैंड में फ्रांस की राज्यक्रान्ति के विचार का जोर ...हुआ और जनता में स्वतन्त्रता की अभिलाषा जाग उठी। ... ...

अब भी बाकी था और उनके दुःखों का अभी अन्त न हुआ था। फ्रांस से भी सहायता की आशा थी। अतः १७६८ ई० में विद्रोह हुआ, परन्तु फ्रांस से कोई सहायता न पहुँच सकी और विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया। इसके बाद प्रधान मन्त्री पिट चाहता था कि किसी प्रकार आयरलैंड में शान्ति हो, परन्तु उसने देखा था कि स्वतन्त्र पार्लियामेंट घरेलू युद्ध और विद्रोह को बचा न सकी। इसीलिए उसने निश्चित किया कि स्काटलैंड के समान आयरलैंड की भी अलग पार्लियामेंट तोड़ दी जाए और उस देश के प्रतिनिधि भी ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्य हो जाएं। क्योंकि आयरिश जनता इसको स्वीकार न करती, अतः उसने वचन दिया कि संयोग (Union) के साथ ही कैथोलिकों के विरुद्ध सब नियम हटा दिए जाएंगे और उनको प्रोटेस्टेंट जनता के समान अधिकार प्राप्त होंगे। इस शर्त पर अयरिश पार्लियामेंट ने अपना नाश स्वीकार किया और १८०० ई० में भंग हो गई। इसके बदले में आयरलैंड से २८ सदस्य लार्ड सभा में और १०१ सदस्य प्रतिनिधि सभा में आने लगे। १८०० ई० के संयोग नियम (Union Act) के अनुसार आयरलैंड अब "संयुक्त राज्य" (United Kingdom) का एक भाग हो गया। परन्तु पिट कैथोलिक को अधिकार न दे सका, क्योंकि जार्ज तृतीय इसके लिए तैयार न था और उसने पिट से वचन ले लिया था कि इसके जीवन काल में यह शर्त पूरी न की जायगी। अतः इस एकांगी समझौता से आयरलैंड में कोई भी सन्तुष्ट न हुआ।

१७०८ का विद्रोह और संयोग (Union)

परन्तु संयोग के बाद कुछ समय के लिए आयरलैंड में एकदम सन्नाटा छा गया। जनता में उत्साह की कमी हो गई और देश में जीवन के कोई चिन्ह न थे। आन्दोलन भी बिलकुल बन्द हो गया था। ऐसी अवस्था में डेनियल ओकानेल (Daniel

कैथोलिकों का उद्धार १८२६ (Catholic Emancipation)

Connell) नामी एक कैथोलिक वकील ने देश में पुनः जागृति पैदा
इस समय मुख्य प्रश्न कैथोलिकों को राजनैतिक अधिकार
था जिससे वे पार्लियामेंट के सदस्य हो सकें और सरकारी
पा सकें। इसके साथ ही कृषक की आर्थिक दशा भी सुधारने
थी। १८१७ ई० में अकाल पड़ा और कृषकों तथा जमीं-
झगड़े होने लगे। १८२३ ई० में ओकानेल ने प्रस्ताव किया
कैथोलिक संस्था (Catholic Association) बनाई जाए
अधिकारों की रक्षा करे और इसके लिए आन्दोलन करे।
चन्दा बहुत थोड़ा था, जिससे बहुत लोग इसके सदस्य हो गए।
का यश देश में फैल गया। १८२८ में प्रधान मन्त्री
ने आयरिश प्रोटेस्टेंट सदस्य फ़िज़जेरेल्ड (Fitzegerald
) को एक सरकारी पद दिया। उस समय फ़िज़जेरेल्ड के लिए
हो गया, कि वह फिर अपना चुनाव कराए। कैथोलिक होते
उसके विरुद्ध खड़ा हुआ और चुना गया। परन्तु वह
में न बैठ सकता था। देश में बहुत हलचल मची, तब पांच
ई० में प्रतिनिधि सभा के सम्मुख 'कैथोलिक उद्धार नियम,
holic Relief Bill) पेश किया; जिसके अनुसार कैथोलिकों
सब नियम रद्द हो जाते थे। यह नियम पास हो गया और
पार्लियामेंट का सदस्य हुआ। इस प्रकार बहुत दिनों के बाद
प्रजा को यह आवश्यक प्रथम अधिकार मिला, परन्तु उसको
विशेष सन्तोष न हुआ।'

जनता को आशा थी कि 'कैथोलिक उद्धार नियम' के बाद
में शान्ति हो जाएगी परन्तु ओकानेल का यह विचार न था।

विच्छेद (...peal) आन्दोलन — वह आयरिश प्रजा के दुःखों को दूर करना चाहता था और यदि संयोग (Union) ही उनके दुःखों का मूल था तो वह उसको तोड़ना चाहता था।
इस समय आयरलैंड की प्रजा दो विशेष कष्ट

थे; प्रथम, उससे प्रोटेस्टेंट चर्च के निर्वाह के लिए धर्म-कर का लिया जाना और द्वितीय, भूमिपतियों के अत्याचार। प्रजा ने धर्म-कर न देने का निश्चय कर लिया, इस पर सरकार ने उस पर अत्याचार किया। ओकानेल ने उस समय 'संयोग' तोड़ने का आन्दोलन आरम्भ किया। पार्लियामेंट में उसको कोई सहायता न मिली। देश में अशान्ति फैली और 'नौजवान आयरलैंड दल (Young Ireland Party) का संगठन हुआ, जो अपने उद्देश्यों में क्रान्तिकारी था। पील ने ओकानेल को १८४० ई० में बन्दीगृह भेज दिया और उस समय से इस वीर नेता के राजनैतिक प्रभाव का अन्त हो गया। १८४७ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

फेनियन दल (Fenin Society)

इसी समय आयरलैंड में घोर अकाल पड़ा, क्योंकि आलू की फ़सल ख़राब हो गई थी। पुनः स्वतन्त्र व्यापार और पील के ऐंटी कार्न लॉ (Anti Corn Law) के कारण कृषकों की दुर्दशा हो गई और जमींदारों का भी हाल अच्छा न था। सरकारी प्रयत्न से अवस्था और भी बुरी हो गई और सहस्रों मनुष्य भूखों मर गए। जो बचे उनमें सहस्रों ने देश छोड़कर अमेरिका में घर बनाया। दस वर्षों में आयरलैंड की जन-संख्या २० लाख कम हो गई। इङ्गलैंड में कुछ लोगों का विचार था कि इस प्रकार सहज ही आयरलैंड की समस्या हल हो जायगी, परन्तु वहाँ प्रत्येक कृषक के हृदय में निज देश-प्रेम और इंगलैंड के प्रति घृणा के भाव जागृत हो उठे। इसी दशा में पुराने जमींदारों ने अपनी भूमि बेच डाली और नए भूमिपतियों ने किसानों की मार-पीट कर उनके पास जो कुछ था लगान के रूप में ले लिया। इन सब अत्याचारों का यह प्रभाव पड़ा कि देश में विद्रोह की तैयारियाँ होने लगीं। १८४८ ई० में ओब्रायन (O' Brien) आदि नेताओं ने विद्रोह किया, परन्तु वे लोग पकड़े गए और विप्लव दबा दिया गया। पर आग सुलगती रही। विद्रोहियों में से एक व्यक्ति जेम्स स्टीफ़ेंस (James Stephens)

फ़ेनियन भ्रातृसंघ' (Fenian Brotherhood) स्थापित करने का प्रयोग किया। इस संघ का उद्देश्य युद्ध, षड्यंत्र या अन्य उपायों से आयरलैंड को स्वतन्त्र करना था और इसके सदस्य आयरिश प्रजातन्त्र की सौगन्ध लेते थे, इन्होंने सेना का संगठन शुरू किया और अमेरिका से शस्त्र मंगाए। स्टीफ़ेंस समझता था कि श्लेज़विग होल्स्टीन (Schleswig-Holstein) युद्ध में इंगलैंड भाग लेगा और उस समय वह आयरलैंड में विद्रोह करेगा, परन्तु १८६५ ई० में वह पकड़ा गया। बन्दीगृह के रक्षक की कृपा से वह निकल भागा और अमेरिका चला गया। आयरलैंड में विद्रोह सफल न हो सका; परन्तु इङ्गलैंड में इनके षड्यंत्रों का फल हुआ। १८६७ ई० में उन्होंने लन्दन के क्लर्कनवेल (Clerkenwell) जेल-घर को उड़ाने का प्रयत्न किया जिसमें १२ आदमी मरे और १०० के लगभल घायल हुए। फ़ेनियन लोगों के षड्यन्त्र बराबर होते रहे।

ग्लैड्स्टन के ऊपर इस हत्याकाण्ड का बहुत प्रभाव पड़ा। उसका विचार था कि आयरलैंड असन्तुष्ट है और यह असन्तोष तीन कारणों से है-(१) विदेशी चर्च, (२) अनुचित भूमि सम्बन्धी नियम और (३) शिक्षा का बुरा प्रबन्ध

ग्लैड्स्टन के प्रथम सुधार

उसने इन बुराइयों को दूर करने का निश्चय किया और जब १८६८ ई० के चुनाव में पार्लियामेंट में उसके सहायकों की संख्या बहुत बढ़ गई तब १८६६ ई० में उसने एक बिल उपस्थित किया जिसके अनुसार आयरलैंड के आंग्ल चर्च को सरकारी सहायता न मिल सकती थी (Disestablishment and Disendowment of Church Bill) और प्रजा से उसके लिए धर्मकर न लिया जाए। पार्लियामेंट ने इसे पास कर दिया और यह क़ानून (Act) बन गया। इससे आयरिश प्रजा का भार कुछ हलका हुआ। इसके बाद ग्लैड्स्टन ने भूमि सम्बन्धी नियमों में परिवर्तन करना चाहा और १८७० ई० में आयरिश लैंड ऐक्ट (Irish Land Act) पास हुआ। इसके

किसानों को उस समय तक लगाना बन्द कर देने की आज्ञा दी जब तक थे नेता छोड़े न जाएं। कृषकों का विद्रोह बराबर हो रहा था, जिसमें लोगों की हत्या और लूट जारी थी। ग्लैड्स्टन ने अन्य उपाय न देख कर पार्नेल से किलमैनहम की सन्धि की जिसमें यह निश्चित हुआ कि पार्नेल छोड़ दिया जायगा और वह आन्दोलन की भयंकरता को कम करने का प्रयत्न करेगा। इस समझौते के बाद लार्ड कैवेंडिश (Lord Cavendish) नया आयरिश मंत्री (Irish Secretary) होकर डबलिन पहुंचा, परन्तु उसी दिन कुछ क्रान्तकारियों ने फोनिक्स पार्क (Phoenix Park) में उसकी हत्या कर डाली। पार्नेल ने इस हत्याकांड का विरोध किया। ब्रिटिश सरकार ने भी सख्ती की और कुछ दिन के लिए क्रांतिकारियों को आयरलैंड में सफलता न मिली। परन्तु होमरूल आन्दोलन में कमी न हुई। पार्नेल ने पालियामेंट में आयरिश कामों के अतिरिक्त अन्य कार्यों में बाधा डालना आरम्भ किया। इस समय उसके दल की स्थिति भी विशेष थी; क्योंकि इङ्गलैंड के दोनों दलों की संख्या लगभग बराबर थी और पार्नेल दल की सहायता के विना कोई भी दल शासन कार्य चलाने में अशक्त था। अतः दोनों ही ने उसकी सहायता चाही, पर वह होमरूल चाहता था। कंजर्वेटिव दल के प्रधान मन्त्री सैलिसबरी (Salisbury) के लिए यह असम्भव था, अतः १८८६ ई० में ग्लैड्स्टन पार्नेल की सहायता से प्रधान मन्त्री हुआ और उसने होमरूल बिल (Home Rule Bill) पेश करने का निश्चय किया।

ग्लैड्स्टन ने १८८६ ई० में अपना पहला होमरूल बिल पेश किया। इसमें आयरलैंड के आन्तरिक प्रश्नों के लिए पुनः स्वतन्त्र पालियामेंट स्थापित करने का प्रस्ताव था। प्रतिनिधि सभा (House of Commons) में किसी प्रकार यह बिल पास हो गया, परन्तु लार्ड सभा ने इसको अस्वीकार किया। इस प्रस्ताव के कारण लिबरल दल

होमरूल बिल

विच्छेद हो गया था। और ग्लैड्स्टन के विरोधियों ने अपना अलग दल बनाया जो यूनियनिस्ट (Unionist Liberals) नाम से विख्यात हुआ। इस पर ग्लैड्स्टन ने पार्लियामेंट भंग कर दी और चुनाव में अपने भाग्य की परीक्षा की। परन्तु जनता अभी इस प्रस्ताव के लिए तैयार न थी। ग्लैड्स्टन के समर्थक हार गए और उसने इस्तीफा दे दिया। दूसरी बार १८९३ ई० में पुनः ग्लैड्स्टन ने दूसरा होमरूल बिल पेश किया परन्तु इस बार भी उसकी वही दशा हुई क्योंकि लार्ड सभा ने फिर उसको अस्वीकार किया। ग्लैड्स्टन वृद्ध हो गया था अतः उसने निराश होकर राजनीति से सम्बन्ध तोड़ लिया। इन आशाओं का अन्त होने से आयरलैंड में आन्दोलन तो बन्द न हुआ, परन्तु बीस वर्ष तक उस देश के बाहर कोई विशेष घटना सुनने में न आई। जब लिबरलदल शक्ति में आता था तब आयरिश प्रजा की आशा हरी हो जाती थी परन्तु १९१० ई० के पूर्व सफलता की कोई आशा न थी। उस वर्ष के चुनाव में आयरिश दल की स्थिति फिर सुधरी और प्रधान मन्त्री ऐस्क्विथ (Asquith) ने उसकी सहायता पाने के अभिप्राय से १९१२ ई० में पुनः होमरूल बिल पेश किया। लार्ड सभा ने फिर इसको अस्वीकार किया, परन्तु १९११ ई० के पार्लियामेंट ऐक्ट के अनुसार लार्ड सभा का निश्चय इसको केवल दो वर्ष के लिए स्थापित कर सकता था। १९१४ ई० में जब प्रतिनिधि सभा ने पुनः इसका समर्थन किया तो यह नियम हो गया और केवल राजा की अनुमति ही शेष थी कि महायुद्ध छिड़ गया और इसका पालन युद्ध की अवधि के लिए टल गया। परन्तु इस नियम का विरोध आयरलैंड के अल्स्टर (Ulster) प्रान्त के प्रोटेस्टेन्ट निवासी कर रहे थे। क्योंकि वे ब्रिटिश शासन से अलग न रहना चाहते थे, और वे लोग विद्रोह के लिए भी तैयार थे। गर्म दल वाले भी पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते थे और इस क़ानून से सन्तुष्ट न थे। इस नियम के स्थगित हो जाने से ब्रिटिश सम्बन्ध के समर्थक निराश हो गए और गर्म दल को बहुत सहायता मिली।

सिनफ़ीन दल (Sinn Fein Party)

१९०६ ई० में होमरूल से निराश होकर कुछ लोगों ने पूर्ण स्वतन्त्रता का आन्दोलन शुरू किया और अपने पैरों पर खड़े होने का निश्चय किया। उनकी धारणा थी कि ब्रिटिश पार्लियामेंट से कोई सम्बन्ध न रक्खा जाए और उनके प्रतिनिधि उसके सदस्य न हों। यह दल सिनफ़ीन (Sinn Fein) कहलाया जिसके अर्थ "हम स्वयं" (We Ourselves) हैं, क्योंकि उनका आदर्श आत्म-विश्वास था। उन्होंने तीन वर्ष बाद अपनी राष्ट्रीय सभा (Dail Eireann) भी क़ायम कर ली थी। अब १९१४ ई० के पश्चात् इस दल ने ज़ोर पकड़ा। १९१६ ई० में जर्मनी की सहायता से केसमेंट (Sir Roger Casement) के नेतृत्व में एक विद्रोह हुआ। पुलिस को सब पता लग गया था, अतः विद्रोह बहुत शीघ्र दबा दिया गया और केसमेंट को प्राण-दण्ड मिला। इस विद्रोह के बाद सिनफ़ीन दल की संख्या बहुत बढ़ गई और अब वह आयरलैंड का मुख्य राजनैतिक दल हो गया। विद्रोह के बाद १९१७ ई० में लायड जार्ज ने प्रयत्न किया कि समझौता हो जाए और उसने तुरन्त ही होमरूल देने का वचन दिया। परन्तु अल्स्टर निवासी इसके लिए राज़ी न थे। अतः उसने एक कनवेंशन (Convention) बुलाया, जो स्वयं आयरलैंड की शासन-प्रणाली निश्चित करे। सिनफ़ीन दल ने इसमें कोई भाग न लिया। जब युद्ध का अन्त हुआ तो १९१९ ई० में सिनफ़ीन दल ने अपनी एक सभा में आयरलैंड में स्वतन्त्र शासन स्थापित करने के निश्चय की घोषणा की, और डी वैलेरा (De Valera) की प्रधानता में एक मंत्रिमंडल बनाया गया, जिसको इस प्रस्ताव के अनुसार काम करने की आज्ञा हुई। ब्रिटिश सरकार ने उनके इस प्रयत्न को विद्रोहात्मक माना और उनका दमन करना आरम्भ किया। इस लड़ाई के कारण आयरलैंड में बहुत अशान्ति हुई। इधर १९२० ई० में पार्लियामेंट ने एक नया होमरूल बिल पास किया, जिसके अनुसार आयरलैंड में दो पार्लिया-

स्थापित करने का विधान था, एक अलस्टर के लिए और दूसरी देश के लिए। इस बिल में साम्राज्य के अधिकारों की रक्षा का ध्यान रक्खा गया था। सिनफ़ीन दल को यह पसन्द न था और न चाहता था कि आयरलैंड के दो भाग हों। उसने ब्रिटिश सरकार नए शासन का काम आयरलैंड में असम्भव कर दिया। तब प्रधान मंत्री ने सन्धि का प्रस्ताव किया। लन्दन में कान्फ्रेंस हुई और दिसम्बर १९२१ ई० में निपटारा हो गया। इसके अनुसार आयरलैंड में भी कनाडा आदि स्वतन्त्र उपनिवेशों के समान शासन क़ायम हुआ और "आयरिश स्वतन्त्र राज्य" (Irish Free State) स्थापित हो गया। उसकी एक अलग पार्लियामेंट हुई और त्रिमंडल उस सभा के प्रति उत्तरदायी है। आयरलैंड ब्रिटिश राष्ट्रसंघ (British Commonwealth of Nations) का सदस्य है और ब्रिटिश सरकार ने अपनी जलसेना द्वारा उसकी रक्षा का भार लिया है। सम्पूर्ण आन्तरिक तथा परराष्ट्रनीति सम्बन्धी प्रश्नों में आयरलैंड स्वतन्त्र है। परन्तु अलस्टर को अलग मान लिया गया है और वहाँ का शासन अब भी ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा होता है, जिसमें उसके प्रतिनिधि स्काटलैंड के समान सम्मिलित होते हैं। डी वेलेरा के दल ने इसे उस समय स्वीकार न किया था, और वह इससे अलग रहा। परन्तु धीरे-धीरे विरोध कम हो गया है। इस प्रकार आयरलैंड ने एक शताब्दी के अविरल प्रयत्न और बहुत बलिदान के बाद अपनी स्वतन्त्रता ली।

आयरलैंड की स्वतन्त्रता १९२१ ई०

३८—ब्रिटिश राष्ट्रसंघ

अमेरिका की स्वतन्त्रता के युद्ध के समय ऐसा जान पड़ता था मानों ब्रिटिश साम्राज्य का शीघ्र ही अन्त हो जाएगा। परन्तु नैपोलियनिक युद्ध के अन्त तक इंगलैंड के समुद्र पार साम्राज्य में बहुत वृद्धि हो गई। उन्नीसवीं शताब्दी में यह उन्नति होती गई और इस समय पृथ्वी का तिहाई भाग ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल है। यह साम्राज्य तीन विशेष अंगों में बाँटा जा सकता है; (१) स्वतन्त्रशासित प्रदेश (Dominions) जिनका शासन पिछली सदी में धीरे-धीरे स्वतन्त्र हो गया है और जिनमें उत्तरदायी शासन (Responsible Government) स्थापित हो गया है। (२) उपनिवेश (Colonies) जिनका शासन अभी इंगलैंड से होता है, जिसके लिए कैबिनेट (Cabinet) में एक उपनिवेश मंत्री (Colonial Secretary) नियत है। (३) भारतवर्ष तथा १९२२ ई० के पुर्व मिश्र जो 'आधीन देश' (Dependencies) कहते हैं और जिनका शासन ब्रिटिश-पार्लियामेंट के आधीन वाइसराय द्वारा होता है।

ब्रिटिश साम्राज्य का संगठन

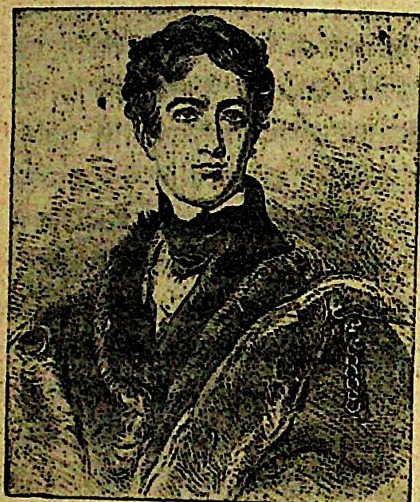
परन्तु उन्नीसवीं सदी में विशेषत: स्वतन्त्र प्रदेशों (Dcminions) का विकास हुआ है। इस श्रेणी में कनाडा, न्यूफ़ाउन्डलेंड, आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड तथा दक्षिणी अफ्रीका सम्मिलित है। पिछली सदी में केवल उपनिवेशों से, जिनका शासन ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त अफ़सर करते थे, ये राष्ट्र बस गए हैं जिनको इङ्गलैंड के समान ही स्वतन्त्र शासन अधिकार प्राप्त हैं और जो इंगलैंड के राजा को अपना राजा मानते हैं। ये प्रदेश ही ब्रिटिश राष्ट्रसंघ (British Commonwealth of Nations) के मुख्य अंग हैं। इस अध्याय में इनके विकास का

इतिहास लिखा जाएगा, और तत्पश्चात् ब्रिटिश सरकार के साथ इनके सम्बन्ध बतलाए जाएंगे, पुनः भारतवर्ष और मिश्र के इतिहास पर भी एक दृष्टि डाली जाएगी।

कनाडा में स्वराज्य

सप्तवर्षीय युद्ध के बाद १७६३ ई० में उत्तरी अमेरिका में कनाडा प्रान्त अंग्रेजों के अधिकार में आया। परन्तु वहाँ अधिक संख्या में फ्रेंच निवासी बसते थे। इसके पश्चात् पूर्वी कनाडा ब्रंसविक आदि भागों में अंग्रेज निवासी भी बस गए। उस समय अलग उपनिवेशों के अतिरिक्त कनाडा में दो प्रान्त थे, जिनका शासन ब्रिटिश सरकार के अफ़सर करते थे; जिनकी सहायता के लिए एक प्रतिनिधि सभा भी थी इङ्गलैंड में किसी को भी उससे विशेष सहानुभूति न थी, क्योंकि वे समझते थे कि ये उपनिवेश भी किसी समय संयुक्त देश अमेरिका के समान स्वतन्त्र हो जायंगे। परन्तु कनाडा निवासी राजभक्त रहे और नैपोलियानिक युद्ध में उन्होंने ब्रिटिश सरकार का साथ दिया था। १८३७ ई० एकाएक ब्रिटिश जनता का ध्यान कनाडा की ओर गया, क्योंकि समाचार मिला कि पूर्वी तथा पश्चिमी कनाडा में विद्रोह हो गया है। यद्यपि विद्रोह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया, तथापि उसका कारण जानने के लिए लार्ड डरहम (Lord Durham) वहाँ भेजा गया। उसने १८१६ ई० में अपनी रिपोर्ट पेश की, जिसमें कनाडा के भावी शासन के बारे में शिफ़ारस थी। उसने देखा कि यद्यपि कनाडा के दोनों प्रान्तों में प्रतिनिधि सभाएं हैं, परन्तु शासन के ऊपर उनका कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि शासन कार्य गवर्नर-जनरल द्वारा नियुक्त एक छोटी कौंसिल करती है। उसकी धारणा थी कि असन्तोष का कारण यही उत्तरदायित्वहीन शासन है। अतः उसने प्रस्ताव किया कि शासन कार्य वही लोग करें जिनके पक्ष में प्रतिनिधि सभा के अधिकांश सदस्य हों। यह कनाडा में भी इंगलैंड की प्रथा चलाना चाहता था। १८४० ई० में उसका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और पार्लिया-

मेंट में कनाडा शासनविधान नियम बनाया। दोनों प्रान्तों की एक सभा या पार्लियामेंट बनी जिसके आधीन शासन होने लगा, और जिसके अधिकार ब्रिटिश पार्लियामेंट के समान थे।



लार्ड डरहम

परन्तु अभी सब कठिनाई दूर न हुई। पूर्वी और पश्चिमी (Lower and Upper) कनाडा के अतिरिक्त अन्य उपनिवेश भी थे जिनका शासन स्वतन्त्र था। इनमें मुख्य ब्रिटिश कोलम्बिया (British Columbia), नोवा स्कोटिया (Nova Scotia), न्यू ब्रंसविक (New Brunswic), प्रिंस एडवर्ड द्वीप (Prince Edward Island) और हडसन बे कम्पनी (Hudson Bay Company) के प्रान्त थे। छोटे-छोटे इतने अधिक अलग शासनों के होने से उस देश की उन्नति न हो सकती थी। रेल बनाने, डाक का प्रबन्ध करने और देश की रक्षा आदि के लिए आवश्यक था कि वे सब मिलकर एक संयुक्त शासन बनावें, जो सर्व हितकारी सार्वदेशिक कामों को अपने

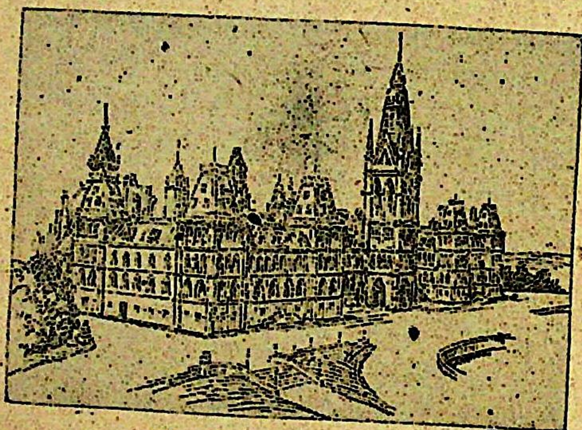
कनाडा में संघ-निर्माण १८६७ ई०

हाथ में ले। कनाडा के कुछ नेताओं ने इसके लिए उद्योग किया और १८६७ ई० में ब्रिटिश सरकार ने उन उपनिवेशों के संघ के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। पहले इसमें नोवा स्कोटिया और न्यू ब्रंसविक सम्मिलित हुए, फिर १८०० और १८७३ ई० के बीच में अन्य उपनिवेश भी मिल गए। पूर्वी तथा पश्चिमी कनाडा का नाम क्यूबिक (Quebec) और ओंटैरियो (Outario) हो गया और सम्पूर्ण संघ 'कनाडा का स्वतन्त्र प्रदेश' (Dominion of Canada) कहाया। प्रत्येक प्रान्त का शासन उसकी प्रतिनिधि सभा करती है, परन्तु सार्वदेशिक संघ के मामलों के लिए एक पार्लियामेंट (Dominion Parliament) है, जिसकी बैठक ओटावा (Ottava) में होती है। इस पार्लियामेंट के दो भाग हैं, प्रथम, प्रतिनिधि सभा (House of Commons) जिसमें जनता के प्रतिनिधि बैठते हैं, और द्वितीय सिनेट (Senate) जिसके सदस्य गवर्नर जनरल नामज़द करता है। गवर्नर जनरल को ब्रिटिश सरकार नियुक्त करती है और वह कनाडा में इङ्गलैंड के राजा का प्रतिनिधि है।

१८६७ ई० के बाद कनाडा

इस समय के बाद कनाडा धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार की आधीनता से बिलकुल स्वतन्त्र हो गया है। ब्रिटिश पार्लियामेंट कनाडा निवासियों पर कोई कर नहीं लगा सकती है, और न उनके लिए कोई क़ानून ही बना सकती है। उनके न्यायालयों के फैसले को लार्ड सभा भी रद्द नहीं कर सकती है, परन्तु उनकी अपील प्रिवी कौंसिल (Privi Council) में आती है, क्योंकि यह अदालत स्वयं राजा की है और राजा उनका भी राजा है। जर्मन महायुद्ध के पहले देश की रक्षा और परराष्ट्रनीति के बारे में ब्रिटिश सरकार हस्तक्षेप करती थी और यह था भी उचित, क्योंकि कनाडा अपनी रक्षा के लिए ब्रिटिश जलसेना पर निर्भर था। परन्तु युद्ध के पूर्व ही इसके विरुद्ध आन्दोलन होने लगा था और कनाडा ने अपनी जलसेना बनाने का साहस भी किया था। युद्ध में उसने इङ्गलैंड का साथ दिया और उसके बाद

कनाडा की परराष्ट्रनीति स्वतन्त्र हो गई है। कनाडा स्वयं लोग आफ़ नेशंस (League of Nations) का सदस्य है, और उसके राजदूत यूरोप तथा अमेरिका के देशों में रहते हैं। १९२६ ई० की इम्पीरियल कानफ्रेंस (Imperial Conference) ने यह तै कर दिया कि



पार्लियामेंट भवन, ओटावा

कनाडा तथा अन्य स्वतन्त्र प्रदेशों (Dominions) को अधिकार है कि अपनी परराष्ट्रनीति स्वयं निश्चित करें और अपनी इच्छानुसार युद्धों में इंगलैंड का साथ दें या नहीं। केवल वे इंगलैंड और अन्य प्रदेशों के विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकते हैं और ब्रिटिश राष्ट्रसंघ की स्थिति के लिए यह है भी आवश्यक। इस प्रकार कनाडा अब पूर्णतया ब्रिटिश सरकार के अधिकार से स्वतन्त्र हो गया है और अपनी आन्तरिक तथा परराष्ट्रनीति स्वयं ही निश्चित करता है। इस आयोजना से कनाडा ने इन वर्षों में बहुत उन्नति की है।

कनाडा के पास ही न्यूफ़ाउन्डलैंड (Newfound-land) है, परन्तु उसका शासन स्वतन्त्र है और उसको कनाडा के समान स्वराज्य के सभी अधिकार प्राप्त हैं। वह भी एक स्वतन्त्र शासन प्रदेश (Dominion) है।

आस्ट्रेलिया का इतिहास भी कनाडा के समान है। ये उपनिवेश भी पहले ब्रिटिश शासन में थे, परन्तु धीरे-धीरे इनमें स्वतन्त्र शासन स्थापित हुआ, फिर सब उपनिवेशों ने मिलकर एक संघ बना लिया, जिसको इस समय वे सब अधिकार प्राप्त हैं जो कनाडा को मिले हैं। आस्ट्रेलिया का पता १७७३ ई० में कप्तान कुक (Captain Cook) को लगा और उसने वहाँ पर अंग्रेज़ी उपनिवेश बसाने का विचार किया। अमेरिका की स्वतंत्रता के युद्ध के कारण ब्रिटिश सरकार को भी नई भूमि की आवश्यकता थी, क्योंकि अब आजन्म या निर्वासित क़ैदियों के लिये अमेरिका में स्थान न था। अतः आस्ट्रेलिया का पहला प्रयोग निर्वासित क़ैदियों के निवास-स्थान की तरह हुआ। १७८६ ई० में ब्रिटिश सरकार ने पहले पूर्वी भाग में अपना अधिकार किया, और इस प्रदेश का नाम न्यू साउथ वेल्स (New South Wales) रक्खा गया। दो वर्ष बाद क़ैदियों का पहला झुण्ड वहाँ भेजा गया और पहली बस्ती सिडनी (Sydney) में बनी। इस उपनिवेश के शासक पर कोई रोकटोक न थी और वह ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त होता था। प्रतिनिधि या व्यवस्थापिका (Legislative Council) सभा के लिये कोई स्थान न था, क्योंकि जनता, क़ैदियों या उनके परिवार से बनी हुई थी; और ऐसी जनता को कोई स्वतन्त्र राजनैतिक अधिकार मिलना असम्भव था। धीरे-धीरे स्वतन्त्र निवासी भी वहाँ पहुंचे और १८२४ ई० में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने न्यू साउथ वेल्स में पहली व्यवस्थापिक सभा स्थापित की, परन्तु इसके सभी सदस्य गवर्नर नियुक्त करता था। १८४० ई० में इस सभा में जनता के प्रतिनिधि चुनाव द्वारा जाने लगे। परन्तु अब भी शासन का अधिकार इस सभा को न था।

आस्ट्रेलिया—ब्रिटिश शासन में

इसी बीच में आस्ट्रेलिया के दूसरे भागों में भी उपनिवेश बने। १८२५ ई० में तस्मानिया (Tasmania) का शासन एक अलग गवर्नर आधीन हुआ। तीन वर्ष बाद पश्चिमी आस्ट्रेलिया (Western

रहा। परन्तु इस अवधि में कुछ माओरी लोगों की यह धारणा हुई कि औपनिवेशिकों के साथ मित्रतापूर्वक रहा जा सकता है। अतः विद्रोह का अन्त हो गया और औपनिवेशिक सरकार ने उनके साथ सहृदयता का व्यवहार भी किया। १८३५ ई० में यह घोषणा की गई कि उनको भी वही अधिकार प्राप्त हैं जो अन्य निवासियों को। १८६७ ई० में उनके प्रतिनिधि प्रथम बार असेम्बली के सदस्य हुए। इसके बाद १८७५ ई० में प्रान्तीय स्वतंत्रता का विरोध हुआ। क्योंकि युद्ध तथा रेल आदि के बनने के कारण केन्द्रीय शासन प्रबल हो गया था और अब देश की उन्नति में प्रान्तीय स्वतंत्रता बाधक थी। अतः १८७६ ई० में प्रान्तीय संगठन तोड़ दिया गया और तब से न्यूज़ीलैंड की भी उन्नति आस्ट्रेलिया तथा अन्य स्वतन्त्र प्रदेशों (Dominions) के समान हुई है और अब उसको वे सब अधिकार प्राप्त हैं जो कनाडा आदि को।

दक्षिणी अफ्रीका South Africa

सत्रहवीं शताब्दी में डच जाति के लोगों ने अफ्रीका के दक्षिण में केप आफ़ गुड होप (Cape of Good Hope) पर अधिकार किया और अपना उपनिवेश क़ायम किया। दो शताब्दी तक वहाँ उनका शासन रहा और डच लोग अधिक संख्या में बस गये। ये लोग बोअर (Boer) कहलाते हैं। परन्तु नैपोलियन के युद्धों के बाद यह उपनिवेश अंग्रेजों के हाथ लगा। जब अंग्रेजों ने इस पर अधिकार किया तो उनके लिए बोअरों की एक विशेष समस्या थी। इसके अतिरिक्त अफ्रीका के पुराने निवासी भी कठिनाई का कारण थे। डच लोग इन निवासियों के साथ अत्याचार करते थे और उनको गुलाम बनाकर बेचते थे। ब्रिटिश सरकार इस प्रथा को बन्द करना चाहती थी, और पादरियों के प्रभाव से वह इन निवासियों के साथ अच्छा व्यवहार करती थी। डच लोग इससे अप्रसन्न हुए और अपने व्यापार में लाभ होते न देख कर उन्होंने केप कालोनी (Cape Colony) छोड़ कर दूसरी

जगह रहने का विचार किया। १८३८ ई० में कुछ लोग उत्तर की तरफ़ गए और नेटाल (Natal) में अपना स्वतन्त्र राज्य बनाया। ब्रिटिश सरकार यह सहन न कर सकती थी, अतः उसने १८४३ ई० में नेटाल पर भी अधिकार कर लिया और उसको केप कालोनी के साथ मिला दिया। उसके बाद बोअर लोग पुनः अन्दर की तरफ़ बढ़े और उन्होंने ट्रांसवाल (Transvaal) और आरेंज स्वतन्त्र देश (Orange Free State) में अपने उपनिवेश बनाए। ब्रिटिश सरकार ने उसको अलग छोड़ देने के अभिप्राय से १८५२ ई० में ट्रांसवाल की स्वतन्त्रता को स्वीकार कर लिया फिर १८५४ ई० में केप कालोनी के मुख्य स्थान केप टाउन (Cape Town) में एक निर्वाचित पार्लियामेंट क़ायम की गई। नैटाल का शासन केप कालोनी से अलग कर दिया गया और उन लोगों को अपना शासन करने का अधिकार दे दिया गया। १८७२ ई० में केप कालोनी को भी स्वराज्य का अधिकार मिला और उसका शासन वहाँ की पार्लियामेंट की सहायता से मन्त्री करने लगे। इस समय तक तो दक्षिणी अफ़्रीका में भी शान्तिमय उन्नति हो रही थी।

बोअर युद्ध (Boer Wars)

परन्तु अब कठिनाइयों का आरम्भ हुआ। नैटाल के उत्तर में ज़ूलू (Zulu) सरदार कटेवायो (Catewayo) ने अपनी जाति से मनुष्य की एक सेना तैयार की थी और चाहता था कि विदेशियों को उस देश से निकाल दे। उसका दाँत ट्रांसवाल पर लगा था। बोअर लोग स्वयं अपनी रक्षा करने में असमर्थ थे, अतः भय था कि यदि उनको स्वतन्त्र छोड़ दिया जाय तो वे काले आदमियों द्वारा नष्ट कर दिए जायंगे। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सरकार भी ट्रांसवाल को लेना चाहती थी और विशेषतः सेसिल र्‌होड्स (Cecil Rhodes) इस समय अपने केप से कैरो रेलवे (Cape Town to Cairo Line) के विचारों के लिए प्रयत्न कर रहा था। अतः १८७० ई० में ब्रिटिश सरकार ने ट्रांसवाल पर भी अधिकार कर लिया। बोअर लोग बहुत

अप्रसन्न हुए परन्तु जूलू सरदार के डर से वे कुछ न कर सके। इस



र्होड्स

घटना से कटेवायो (Catewayo) बहुत क्रुद्ध हुआ। अंग्रेज गवर्नर सर बारटल फ्रेरे (Sir Bartle Frere) ने इस भय को मिटाने के लिए उसको सन्देशा भेजा कि वह अपनी सेना तितर-बितर कर दे, नहीं तो युद्ध होगा। तब उसने इस पर कुछ ध्यान न दिया तो १८७६ ई० जूलू देश पर आक्रमण हुआ, और १८८० ई० तक सम्पूर्ण देश जीत लिया गया और ब्रिटिश सरकार के आधीन हुआ।

जब उनका बैरी मिट गया तब बोअर लोगों को कोई भय न रह गया और उनको ब्रिटिश रक्षा की आवश्यकता न रही। उन्होंने स्वराज्य के लिए आन्दोलन किया। उसी समय ग्लैडस्टन इंगलैण्ड का प्रधामन्त्री हुआ और क्योंकि उसने चुनाव के समय कहा था कि ट्रांसवाल को स्वतन्त्र कर देगा अतः बोअर लोग कुछ दिन शान्तिपूर्वक उसके प्रण पालन की प्रतीक्षा करते रहे। इधर दक्षिण अफ्रीका में संघ निर्माण का प्रयत्न हो रहा था सरकारी अफ़सरों ने ग्लैडस्टन को यह सलाह दी कि वह ट्रांसवाल को उस समय तक स्वराज्य न दे जब तक कि संघ न बन जाए। बोअर लोग समझते थे कि इस प्रस्ताव से उनको स्वराज्य को आशा न रह जायगी, अतः १८८० ई० में उन्होंने विद्रोह कर दिया। सरकार ने उनको दबाने के लिए एक छोटी सेना भेजी परन्तु वह मजूबा हिल (Mjuba Hill) पर १८८१ ई० में हार गई। अब ब्रिटिश सरकार ने पुनः ट्रांसवाल को स्वतन्त्र कर देने का विचार किया और एक सन्धि द्वारा यह निश्चित हो गया कि परराष्ट्रनीति के अतिरिक्त ट्रांसवाल तथा आरेंज स्वतन्त्र देश में ब्रिटिश सरकार को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार न होगा। इंगलैंड में ग्लैडस्टन के इस कार्य की बहुत कड़ी आलोचना हुई।

Australia) का उपनिनेश बना और १८३६ ई० में दक्षिण आस्ट्रेलिया (South Aus tralia) उपनिवेश का भी आरम्भ हुआ। परन्तु इन सभी स्थानों में क़ैदियों की ही संख्या अधिक थी और इङ्गलैंड के अच्छे लोग वहाँ बसना नहीं चाहते थे। परन्तु १८५१ ई० में विक्टोरिया (Victoria) के नये उपनिवेश में सोने की खान का पता लगा। अब तो सभी का ध्यान उस ओर गया और कुछ वर्षों में सहस्रों नये निवासी आस्ट्रेलिया में आकर बसे। सभी उपनिवेशों की जन-संख्या बढ़ गई और अब स्वराज्य की इच्छा जागृत हुई। १८१० ई० तक वहाँ ६ * उपनिवेश या प्रान्त बन गये थे जिनका शासन एक दूसरे से स्वतंत्र था और उसके गवर्नर ब्रिटिश सरकार के प्रति उत्तरदायी थे।

जब स्वतन्त्र जनता वहाँ बस गई तब स्वराज्य का आवश्यकता पड़ी, क्योंकि इन अंग्रेज निवासियों को अपने देश में राजनैतिक अधिकार प्राप्त थे। अतः बिना किसी झगड़ा के, १८५० और १८६५ ई० के बीच में चार उपनिवेशों में (पश्चिम आस्ट्रेलिया के अतिरिक्त) स्थानी पार्लियामेंट स्थापित हुई, जिनमें दो सभायें थी, प्रथम असेम्बली (Assembyl) और दूसरी कौंसिल (Council)। दोनों सभाओं के सदस्यों को जनता चुनती थी और प्रत्येक पुरुष को वोट देने का अधिकार था। शासन कार्य पार्लियामेंट की आधीनता में होता था। १८५६ ई० मे क्वींसलैंड (Queensland) में भी उसी प्रकार की शासनपद्धति स्थापित हुई। पर अभी क़ैदियों का आना बन्द न था और इन उपनिवेशों के शासन में ब्रिटिश सरकार अब भी हस्तक्षेप करती थी। जब इसका विरोध हुआ तो १८६८ ई० में ब्रिटिश सरकार ने वहाँ क़ैदी भेजना बन्द कर दिया और तब सब प्रान्तों में स्वतंत्र प्रतिनिधि शासन क़ायम हो गया। अब एक प्रश्न बाक़ी रह गया कि ये सब उपनिवेश पृथक रहें या इनका संघ बन जाये। उन्नीसवीं सदी के अन्त में इसका महत्व बढ़ गया, क्योंकि जापान

*New South Wales (1786), Tasmania (1825). Western Australia (1825), South Australia (1826), Victoria (1851) Queensland (1859)

तथा यूरोप राष्ट्रों का ध्यान भी आस्ट्रेलिया के धन और उपजाऊ भूमि की ओर आकर्षित हुआ था। तब उनको अपनी रक्षा के लिए आवश्यक हो गया कि वे अपना संघ बनायें और जल-सेना आदि का प्रबन्ध करें। अतः १९०० ई० में उन्होंने अपना संघ बनाया और ब्रिटिश पार्लियामेंट ने एक नियम बना कर उसको स्वीकृत कर लिया। संघ का मुख्य स्थान मेलबोर्न (Melbourne) है और संघ पार्लियामेंट में दो सभायें हैं, जिनके नाम असेम्बली (Assembly) और कौंसिल आफ़ स्टेट (Council of State) हैं। संघ शासन कनाडा के समान सार्वदेशिक कार्यों को करता है और आन्तरिक मामलों के लिए प्रत्येक प्रान्त स्वतन्त्र है। आस्ट्रेलियन संघ (Australian Commonwealth) भी कनाडा के समान ब्रिटिश सरकार से स्वतत्र है और अपनी रक्षा तथा परराष्ट्रनीति का स्वयं प्रबन्ध करता है। परन्तु वह ब्रिटिश राष्ट्रसंघ का सदस्य है और साम्राज्य के बाहर जाना नहीं चाहता है।

आस्ट्रेलिया के समान ही न्यूज़ीलेंड (New Zealand) की भी उन्नति हुई यद्यपि वहाँ पर अंग्रेज़ निवासी पहले ही बसते थे, परन्तु १८४० ई० में वह उपनिवेश माना गया। १८५१ ई० में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने वहाँ संघ शासन का विधान किया। उपनिवेश ६ प्रान्तों में विभक्त हुआ और प्रत्येक प्रांत की एक प्रतिनिधि सभा हुई जिसके आधीन आन्तरिक शासन कर दिया गया। १८५४ ई० में संघ पार्लियामेंट की बैठक हुई, परन्तु १८५६ ई० के पूर्व स्वतंत्र उत्तरदायी शासन हो सका। उस समय से मंत्री संघ पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी होते हैं। परन्तु न्यूज़ीलेंड के लिए देशी जातियों की कठिन समस्या थी। वहाँ के मुख्य निवासी माओरी (Maori) जाति के लोग थे, उनकी सभ्यता आस्ट्रेलिया की जातियों से बहुत ऊंची थी। वे लोग अंग्रेज़ों द्वारा अपनी भूमि और स्वतंत्रता का अपहरण सहन न कर सकते थे। असन्तोष की आग सुलग रही थी। १८६० ई० में वह आग भड़क उठी और बारह वर्ष तक युद्ध होता

न्यूज़ीलैंड

रहोड्स आदि कभी यह अस्वीकार न कर सकते थे कि ट्रांसवाल ब्रिटिश साम्राज्य से अलग हो जाए और वे लोग इस सन्धि को निष्फल करने का प्रयत्न भी कर रहे थे। शीघ्र ही इसके लिए अवसर भी मिला। १८८६ ई० में ट्रांसवाल में सोने की खानों का पता लगा और तब सहस्रों अंग्रेज तथा अन्य देशों के लोग वहाँ पहुंचे और धन कमाने लगे। बोअर लोग बहुधा कृषक थे, उनको इन नए आने वालों की रीति-व्यवहार पसन्द न थे। उन्होंने इन विदेशियों के साथ बहुत कठोर व्यवहार किया और इनको सम्पूर्ण राजनैतिक अधिकारों से वंचित रक्खा। इनके ऊपर कर भी अधिक लगाया गया। इस भेद भाव से सभी विदेशी अप्रसन्न थे और विशेषतः अंग्रेज प्रवासी (Utilanders) अपनी सरकार से सदैव प्रार्थना करते थे कि वह उनको अधिकार दिलाए। जब उनकी प्रार्थना का कोई फल न हुआ तो उन्होंने विद्रोह करने का विचार किया और सेसिल रहोड्स ने उनको सैनिक सहायता देने का वचन दिया। अन्त में झण्डे के प्रश्न पर फूट हो जाने से यह स्थगित हो गया। परन्तु रहोडेसिया के गवर्नर डाक्टर जेमसन (Dr. Jomeson) ने पूर्व निश्चय के अनुसार १८६५ ई० में जोहांसवर्ग (Johannesburg) पर आक्रमण किया। बोअर लोगों ने उनको मार्ग में रोका और जेमसन आदि को पकड़ कर ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया। सरकार ने उनको कारावास में डाल दिया। रहोड्स ने केप कालोनी के प्रधान मन्त्री पद से इस्तीफा दे दिया और इंगलैंड में उसके आचरण की बुरी आलोचना हुई।

इस घटना के बाद दोनों में वैमनस्य बढ़ता गया। बोअर लोग इससे अप्रसन्न थे कि ब्रिटिश सरकार उनके आन्तरिक मामलों में दखल देती है। १८६६ ई० में पुनः अंग्रेज प्रवासियों ने रानी विक्टोरिया से प्रार्थना की कि वह उनको अधिकार दिला दे। मन्त्री चेम्बरलेन (Chamberlain) ने चाहा कि ट्रांसवाल के प्रधान क्रूजर (Kruger) से कह कर वोट देने के अधिकार सम्बन्धी नियमों में कुछ परिवर्तन

कराए। क्रूजर इस बात से बहुत बिगड़ा और उसने इङ्गलैंड से युद्ध छेड़ दिया। आरेंज स्वतन्त्र देश ने उसका साथ दिया। क्रूजर को आशा थी कि जर्मन आदि देशों से उसको सहायता मिलेगी, और इसलिए उसने यूरोप का दौरा भी किया। परन्तु उसको कहीं भी सहायता न मिली और अकेले ही बोअरों को ब्रिटिश साम्राज्य से युद्ध करना पड़ा। इंगलैंड में सबका विचार था कि युद्ध शीघ्र ही खत्म हो जायगा, अतः कोई विशेष प्रबन्ध न किया गया था। परन्तु बोअरों ने अपने साहस और बहादुरी से ब्रिटिश सेना को बहुत तंग किया। उन्होंने उसको लैमिंग्टन (Lamington) में घेर लिया और एक सप्ताह के भीतर उसको बुरी तरह परास्त किया। इसके बाद लार्ड राबर्टस और लार्ड किचनर सेनापति होकर गए, तब ट्रांसवाल की राजधानी प्रीटोरिया (Praetoria) पर अधिकार हुआ और दोनों बैरी देश साम्राज्य में मिला लिए गए (१६०० ई०)। परन्तु दो वर्ष तक जहाँ तहाँ युद्ध होता रहा और अन्त में १६०२ ई० में बोअर नेताओं ने ब्रिटिश आधीनता स्वीकार की।

दक्षिणी अफ्रीका की एकता

बोअर जाति पराजित हो गई थी परन्तु उसके साथ पराजितों का सा व्यवहार करने में दक्षिणी अफ्रीका में शान्ति की आशा न थी। वे लोग ब्रिटिश साम्राज्य में रहने के विरुद्ध न थे, वे केवल अपना स्वतन्त्र आन्तरिक शासन चाहते थे। अतः ब्रिटिश सरकार ने १६०६ ई० में ट्रांसवाल को और एक वर्ष बाद आरेंज स्वतन्त्र देश को पूर्ण स्वराज्य दे दिया और उनको शासन सम्बन्धी वही सब अधिकार प्राप्त हुए जो नैटाल तथा केप कालोनी को थे। इस व्यवहार से बोअर लोग बहुत संतुष्ट हुए। इसके बाद वहाँ भी कनाडा आदि के समान एकता का प्रयत्न हुआ। १६०६ ई० में ब्रिटिश पार्लियामेंट के नियम द्वारा संयुक्त दक्षिणी अफ्रीका (Union of South Africa) स्थापित हुआ। इसके अनुसार भिन्न-भिन्न उपनिवेशों का स्थानीय प्रति-

निधि सभायें टूट गईं और सम्पूर्ण देश का शासन केपटाउन से होता है। संयुक्त पार्लियामेंट में दो सभाएं हैं जिनका चुनाव सारी जनता करती है। मंत्रिमंडल इसी पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी है। बोअर लोग इसमें सम्मिलित हैं और उनकी सहानुभूति का प्रमाण यह है कि विद्रोह नेता जनरल बोथा (General Botha) अभी हाल में प्रधान मंत्री हुआ था। दक्षिण अफ्रीका को भी कनाडा के समान पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त है और वह ब्रिटिश राष्ट्रसंघ का सदस्य है।

ऊपर के वर्णन से पता लग गया होगा कि प्रत्येक स्वतन्त्रत प्रदेश का शासन इङ्गलैंड के समान पार्लियामेंट शैली का है, जिसमें मंत्रिसभा (Cebinet) अपने कार्य के लिए पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी है। इस प्रकार उनका आन्तरिक शासन जनता की इच्छानुसार होता है। प्रत्येक स्वतन्त्र प्रदेश में ब्रिटिश सम्राट का प्रतिनिधि एक गवर्नर जनरल है, जो शासन सम्बन्धी सब बातों में सम्राट के अधिकारों की रक्षा करता है। परन्तु वस्तुतः वह मंत्रिमंडल की इच्छानुसार चलता है और पार्लियामेंट के बनाये हुये नियमों को बिना किसी संकोच के स्वीकृत कर लेता है। प्रदेशों की पार्लियामेंट को नियम बनाने की स्वतन्त्रता है और ब्रिटिश पार्लियामेंट उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करती है। केवल शासन-पद्धति सम्बन्धी नियमों में कोई परिवर्तन ब्रिटिश पार्लियामेंट के अनुमति के बिना नहीं हो सकता है। वे प्रदेश स्वयं अपनी आर्थिक व्यापारिक तथा व्यवसायिक नीति निर्धारित करते हैं और उनको स्वतन्त्रता है कि यदि चाहें तो इगलैंड से आये हुये माल पर मनमाना कर वसूल करें। वे स्वयं अपनी सेना तथा देश की रक्षा का प्रबन्ध करते हैं और १६२६ ई० के बाद अपनी परराष्ट्रनीति में भी पूर्णतया स्वतन्त्र हैं। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार का उन पर कोई अधिकार शेष नहीं रह गया है। ६ ब्रिटिश सम्राट को अपना राजा मानते हैं और उसी के नाम से शासन

ब्रिटेन और स्वतन्त्र प्रदेश (Dominions) के सम्बन्ध

का काम होता है। सम्राट ही इस समय ब्रिटिश राष्ट्रसंघ का मुख्य सूत्र है। वे ब्रिटिश झंडे को किसी रूप में अपने झंडों में सम्मिलित किए हुए हैं। आजकल साम्राज्य सम्बन्धी प्रश्नों के लिए हर तीसरे वर्ष इम्पीरियल कानफ्रेंस (Imperial conference) की बैठक होती है, जिसमें प्रत्येक प्रदेश और भारतवर्ष के प्रतिनिधि आते हैं और साम्राज्य सम्बन्धी आर्थिक तथा राजनैतिक प्रश्नों पर विचार करते हैं। यह कानफ्रेंस ही साम्राज्य की एकता का द्योतक है और इसके द्वारा अनेक जटिल प्रश्न सहज ही तै हो जाते हैं। इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य अब केवल ब्रिटिश-राष्ट्रसंघ रह गया है।

भारतवर्ष

भारतवर्ष यद्यपि ब्रिटिश-राष्ट्रसंघ का भाग है तथापि इसकी शासन-शैली उपरोक्त अन्य प्रदेशों से भिन्न है और अभी तक पार्लियामेंट तथा ब्रिटिश सरकार के आधीन है। इस देश की गणना आधीन देशों (Dependencies) में होती है पहले लिख चुके हैं कि किस प्रकार क्लाइव (Clive) ने बंगाल पर अधिकार किया था और वह प्रान्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन में आ गया था। १७६५ ई० में क्लाइव ने मुग़ल सम्राट शाहआलम से बंगाल की दीवानी का अधिकार पाया जिससे कम्पनी को कर लेने और शासन प्रबन्ध करने का हक़ मिल गया। इस घटना के बाद बंगाल में पूर्णतया कम्पनी का राज्य हो गया। उधर दक्षिण-भारत में भी फ्रेंच लोग पराजित हो गए थे और मद्रास प्रान्त बन गया था। १७७४ ई० में लार्ड नार्थ ने रेगुलेटिंग एक्ट द्वारा अंग्रेजी प्रान्तों के शासन का प्रबन्ध किया, वारेन हेस्टिंग्स को पहला गवर्नर-जनरल नियुक्त किया। वारेन हेस्टिंग्स चाहता था कि ब्रिटिश साम्राज्य को बढ़ाये और उसने मराठों तथा मैसूर के शासक हैदरअली से युद्ध किया, परन्तु उसको बहुत सफलता न मिली। हेस्टिंग्स के बाद वेलेज़ली, लार्ड हेस्टिंग्स, हार्डिंज तथा डलहौज़ी के शासनकाल में कम्पनी में राज्य की बराबर उन्नति हुई, जिससे १८५७ ई० तक

भारतवर्ष का अधिक भाग अंग्रेजी शासन के अन्दर आ गया था और शेष यद्यपि देशी राजाओं के अधिकार में था परन्तु कम्पनी को आधीनता (Protectorate) मानना था। इस क्रम में कम्पनी को मुख्यत मराठों (१८०३ तथा १८१८ ई०), मैसूर (१७६८ ई०), सिंध (१८४८ ई०) सिक्खों (१८४८ तथा १८५६ ई०) अफ़गानिस्तान तथा वर्मा के राजा से युद्ध करना पड़ा था।

डलहौजी की नीति यह थी कि जब सम्भव हो देशी राज्यों को हड़प कर लिया जाए। अतः पुत्र न होने के कारण उसने झांसी, नागपुर आदि राज्यों को बुरा शासन होने के कारण अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। इस नीति से प्रजा बहुत बिगड़ी और विद्रोह के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे। इसी समय अंग्रेजी शिक्षा और सभ्यता के फैलने से भी असन्तोष था। लोगों में आग फैली ही थी, उसी समय यह समाचार फैला कि नए कारतूसों में गाय तथा सुअर की चर्बी लगी हुई है हिन्दुस्तानी सेना इस बात से बिगड़ गई और १८५७ ई० में ग़दर (Mutiny) हुआ बहुत कठिनाई और व्यय के बाद पुनः सन्धि हुई १८५८ ई० में कम्पनी का अन्त हो गया तथा शासन ब्रिटिश सरकार के आधीन हो गया। इङ्गलैंड में रानी विक्टोरिया इस देश की भी रानी हुई और ब्रिटिश कैबिनेट में एक भारत सचिव (Secretary of State for India) नियुक्त हुआ, जो इस देश के शासन के लिए पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी था। इस समय के बाद ब्रिटिश सरकार की बराबर यह कोशिश रही है कि भारतवर्ष में प्रतिनिधि संस्थाओं का चलन हो और यहाँ भी अन्य स्वतंत्र प्रदेशों के समान उत्तरदायी शासन हो जाए। १८६१ ई० में व्यवस्थापिका सभा (Legislative Council) बनाई गई और १८९२ ई० में कुछ प्रजा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों को सदस्य होने की आयोजना हुई। पुनः १९०९ ई० में प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ी और चुनाव के नियम भी बने और १९१९ ई० के प्रान्तों से शासन का कुछ भाग कौंसिल

की सहायता से मन्त्री करने लगे। इस काल में जनता होमरूल अथवा स्वराज्य के लिए बराबर आन्दोलन करती रही और अभी तक वह जारी है। आशा है कि शीघ्र ही औपनिवेशिक स्वराज्य (Dominion Self Government) की स्थापना हो जायगी। ब्रिटिश शासन काल में रेल, तार, डाक आदि का प्रबन्ध तथा शिक्षा की उचित व्यवस्था हो जाने से देश की उन्नति हुई है। आज कल भारतवर्ष राष्ट्रसंघ (League of Nations) का सदस्य है और इसके प्रतिनिधि इम्पीरियल कानफ्रेंस में जाते हैं।

उपनिवेश Crown Colonies तथा साम्राज्य के अन्य भाग

भारतवर्ष की रक्षा के लिए आवश्यक था कि जलमार्ग को सुरक्षित रखा जाय। अतः ब्रिटिश सरकार ने मेडीटरेनियन सागर में जिब्राल्टर, माल्टा, साइप्रस और अरेबियन सागर में अदन तथा सैलोनिका को अपने आधीन रक्खा है। इसके अतिरिक्त जैसा पहले लिख चुके हैं, मिश्र (Egypt) को भी अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य में मिला लिया था। परन्तु उस देश में स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न हुआ और महायुद्ध के पूर्व जगलूल पाशा के नेतृत्व में आन्दोलन ने बहुत जोर पकड़ा। ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्रता का वचन दिया परन्तु महायुद्ध समाप्त होने के पूर्व यह सम्भव न था। अन्त में १९२२ ई० में मिश्र स्वतन्त्र हो गया, परन्तु ब्रिटिश सरकार ने स्वेज नहर की रक्षा तथा मार्ग के दुर्गों आदि के सम्बन्ध में अपने लिए विशेष अधिकार ले लिए हैं।

अफ्रीका तथा दूसरे प्रदेशों में अंग्रेजों के बहुत उपनिवेश (Colonies) हैं, जिनका शासन इङ्गलैंड से होता है और कैबिनेट में एक उपनिवेश मन्त्री (Secretary of State for Colonies) है। ये राजा के उपनिवेश (Crown Colonies) कहलाते हैं। इनमें मुख्य केनिया और उगांडा अफ्रीका में हैं, लंका (Ceylon) भारतवर्ष के पास है और ब्रिटिश गायना (British Guiana),

वेस्ट इंडीज में है। पूर्वी सागर में भी स्ट्रेट सेट्ल्मेंट (Strait Settlement) सिंगापुर, हौंगकांग आदि हैं। इन उपनिवेशों में अंग्रेजों की बस्तियाँ हैं और वे लोग कृषि, खनिज तथा व्यवसाय से इंगलैंड के व्यापार को उन्नति करते हैं।

हैनोवेरियन वंश के राजा

जार्ज प्रथम	१७१४–१७२७
जार्ज द्वितीय	१७२७–१७६०
जार्ज तृतीय	१७६०–१८२०
जार्ज चतुर्थ	१८२०–१८३०
विलियम चतुर्थ	१८३०–१८३७
विक्टोरिया	१८३७–१९०१
एडवर्ड सप्तम	१९०१–१९१०
जार्ज पंचम	१९१०–१९३६
एडवर्ड अष्टम	१९३६
जार्ज षष्ठम	१९३६

हैनोवेरियन वंश वृक्ष

जार्ज प्रथम
१७१४–१७२७

|

जाज द्वितीय
१७२७–१७६७

|

राजकुमार फ्रेडेरिक

|

जार्ज तृतीय
१७६०–१७८०

|

जार्ज चतुर्थ १८२०–१८३०	विलियम चतुर्थ १८३०–१८३७	एडवर्ड ड्यूक आफ़ केंट

एडवर्ड ड्यूक आफ़ केंट

|

विक्टोरिया
१८३६ १९०१

|

एडवर्ड सप्तम
१९०१–१९१०

|

जाज पञ्चम
१९१०–१९३६

|

एडवर्ड अष्टम १९३६	जाज षष्ठम १९३६

परिशिष्ट (स)

हैनोवेरियन काल के मुख्य प्रधान-मन्त्री

वालपोल (ह्विग) १७२१—१७४२ ई०
पेल्हम (ह्विग) १७४४—१७५४ ई०
पिट-न्यूकैसेल (ह्विग) १७५७—१७६१ ई०
लार्ड नार्थ (टोरी) १७७०—१७८२ ई०
फ़ाक्स और नार्थ १७८३ ई०
छोटा पिट (टोरी) { १७८३—१८०१ ई०, १८०३—१८०६ ई० }
केनिंग (टोरी) १८२७ ई०
वेलिंग्टन (टोरी) १८२७—१८३० ई०
ग्रे (ह्विग) १८३०—१८३४
मेलबोर्न (ह्विग) १८३४—१८४१ ई०
पील (कंजर्वेटिव) १८४१—१८४६ ई०
लार्ड जान रसेल (लिबरल) १८४६—१८५२ ई०
लार्ड डरबी (कंजर्वेटिव) १८५२ ई०
लार्ड अबरडीन (लिबरल) १८५२—१८५५ ई०
पामर्स्टन (लिबरल) १८५५—१८५८ तथा १८५९—१८६५ ई०
लार्ड डरबी (कंजर्वेटिव) १८६६—१८६८ ई०
ग्लैड्स्टन (लिबरल) १८६८—१८७४ ई०
डिसरायली (कंजर्वेटिव) १८७४—१८८० ई०
ग्लैड्स्टन (द्वितीय वार) १८८०—१८८५ ई०
सैलिसबरी (कंजर्वेटिव) १८८५—१८८६ ई०

ग्लैड्स्टन (तृतीय बार) १८८६ ई०
सैलिसबरी (कंजर्वेटिव) १८८६—१८९२ ई०
ग्लैड्स्टन तथा रोजबरी (लिबरल) १८९२—१८९५ ई०
सैलिसबरी (कंजर्वेटिव) १८९५—१९०१ ई०
बालफ़ोर (,,) १९०२—१९०५ ई०
हेनरी कैम्पबेल-बैनरमैन (लिबरल) १९०५—१९०८ ई०
ऐस्क्विथ (,,) १९०८—१९१७ ई०
लायड जार्ज (,,) १९१७—१९२२ ई०
बोनर ला (कंजर्वेटिव) १९२२—१९२३ ई०
बाल्ड्विन (,,) १९२३—१९२४ ई०
रैम्जे मकडानल्ड (मजदूर दल) १९२४, १९२९—१९३१ ई०
(राष्ट्रीय दल) १९३१—१९३५ ई०

———

परिशिष्ट (ह)

मुख्य घटनाओं की संवत्वार सूची

५३-५४ ई० पू० ब्रिटेन पर जूलियस सीज़र के आक्रमण

४३ ई० रोमन जाति का दूसरा आक्रमण और दक्षिणी ब्रिटेन पर अधिकार।

४३-४०७ ब्रिटेन में रोमन साम्राज्य का आधिपत्य।

१२० हैड्रियन की दीवार बनी।

४४६-६१३ दक्षिणी ब्रिटेन पर आंग्ल जाति का अधिकार।

५९७ आगस्टाइन का इंगलैंड में आना और ईसाई मत का प्रचार करना।

६६४ ह्विटवी में धर्म-सभा (Synod of Whitby) और उससे इङ्गलैंड में रोमन कैथोलिक मत का स्वीकार होना।

१०६६ विलियम विजेता का आक्रमण, हैस्टिंग्स का युद्ध और नार्मन-वंश का अधिपत्य।

१०८६ सैलिसबरी मैदान की शपथ।

१२१३-१५ जान और बैरनों का युद्ध।

१२१५ स्वतन्त्रता पत्र (Magna Charta)।

१२६५ साइमन माटफ़ोर्ड की पार्लियामेंट।

१२९५ आदर्श पार्लियामेंट।

१३४८-४९ महारानी (Black Death)।

१३५२ मजदूरी नियम (Statute of Labourers)।

१३७६-८४ विकलिफ़ का धर्म-सुधार।

१३८१ कृषक-विद्रोह।

१४५३ फ्रांस में अंग्रेज़ी साम्राज्य का अन्त; तुर्कों का कांस्टैंटीनोपुल पर अधिकार।

१४५५ वार आफ़ रोज़ेज़ का आरम्भ।

१४८५ बास्वर्थ का संग्राम और हैनरी ट्यूडर की विजय।

१४९२ कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज।

१४९४ आयरिश पार्लियामेंट ने पायनिंग्स नियम बनाया।

१४९७ जानकैबट की अमेरिका यात्रा।

१४९८ वास्को डी गामा का भारतवर्ष पहुँचना।

१५१३ फ्लाडनफ़ील्ड का युद्ध।

१५१७ लूथर का धर्म-विरोध।

१५२७ कैथरीन के परित्याग का प्रश्न।

१५३० वूल्ज़े का पतन और मृत्यु।

१५३६ छोटे धर्म मठों का विनाश।

१५३९ बड़े धर्म मठों का विनाश।

१५४७ सोमरसेट का संरक्षक होना।

१५४९ एडवर्ड की प्रथम प्रार्थना-पुस्तक; प्रजा का विद्रोह।

१५५३ बयालीस धारा का नियम।

१५५८ कैले पर फ्रांस का आधिपत्य।

१५५९ मुख्यता तथा एकरूपता के राजनियम (Acts of Supremacy and Uniformity)।

१५६१ मेरी का स्काटलैंड में वापस आना।

१५७७-८० ड्रेक द्वारा संसार की यात्रा।

१५८७ मेरी को प्राणदण्ड।

१५८८ आरमाडा का युद्ध।

१५९८-१६०३ आयरलैंड में टीरोन का विद्रोह।

१६०० ईस्ट इण्डिया कम्पनी का जन्म।

१६०१ दरिद्र संरक्षण नियम (Poor Law Act)।

१६०३ एलीज़बेथ की मृत्यु।
१६०४ हैंप्टन कोर्ट कांफ्रेंस।
१६१८ तीस वर्षीय युद्ध का आरम्भ।
१६२० पिलग्रिम फ़ादर्स का अमेरिका को जाना और उपनिवेश स्थापित करना।
१६२८ अधिकारों का आवेदन पत्र (Petition of Right)
१६३७ हैंपडन पर अभियोग।
१६३९-४० प्रथम व द्वितीय बिशप युद्ध।
१६४० लांग पार्लियामेंट का अधिवेशन।
१६४२-४८ घरेलू युद्ध।
१६४५ नई आदर्श सेना और नेस्बी का युद्ध।
१६४९ चार्ल्स प्रथम को फांसी दी गई, प्रजातन्त्र का आरम्भ।
१६५१ नैवीगेशन एक्ट (Navigation Act)
१६५२-५४ प्रथम डच युद्ध।
१६५३-५८ क्रामवेल का संरक्षकत्व।
१६६० चार्ल्स द्वितीय का वापस आना और राजतन्त्र का पुनरारम्भ।
१६६५-६७ दूसरा डच युद्ध।
१६६५ प्लेग महामारी।
१६७० डोवर की गुप्त सन्धि।
१६७९ स्वतन्त्रता नियम (Habeas Corpus Act)।
१६७९-८१ वहिस्कार नियम का आन्दोलन।
१६८८ सात बिशपों का अभियोग और जेम्स का देश से भागना।
१६८९ अधिकार घोषणा (Declaration of Right)
१६९४ तीन वर्षीय (Triennial Act)
१६९७ रिज़विक की संधि।
१७०१ उत्तराधिकार नियम (Act of Settlement)
१७०४ ब्लेनहीम का संग्राम।

१७०७ इंगलैंड और स्काटलैंड की एकता।
१७१३ यूट्रेक्ट की सन्धि।
१७१५ प्रथम जैकोबाइट विद्रोह।
१७३९ स्पेन से युद्ध।
१७४०–४८ आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध।
१७४५ द्वितीय जैकोबाइट विद्रोह।
१७५६–६३ सप्तवर्षीय युद्ध।
१७५९ क्वीबेक पर अधिकार।
१७६३ पैरिस की सन्धि।
१७६५ स्टाम्प ऐक्ट; वाट ने भाप का इंजिन बनाया।
१७७३ 'बोस्टन की चाय पार्टी'।
१७७६ अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा।
१७८३ वार्साई की सन्धि।
१७८६ आस्ट्रेलिया में न्यू साउथ वेल्स की स्थापना।
१७८९ फ्रांस की राज्य-क्रांति का आरम्भ।
१७९८ आयरलैंड का विद्रोह; नाइल का युद्ध।
१८०० आयरलैंड का संयोग (Union of Ireland)।
१८०३ आमींस की सन्धि।
१८०५ ट्राफ़ाल्गर का युद्ध।
१८१५ वाटरलू संग्राम।
१८३२ प्रथम सुधार नियम।
१८३३ दास प्रथा का अन्त; प्रथम फ़ैक्टरी नियम।
१८४० कनाडा नियम।
१८४५ आयरलैंड में आलुओं का अकाल।
१८४७ कार्न लॉ रद किए गए।
१८५४-५६ क्रिमियन युद्ध।
१८५७ भारतवर्ष में ग़दर।

१८६७ दूसरा नियम ।

१८७० प्रारम्भिक शिक्षा नियम; आयरलैंड ऐक्ट ।

१८७२ बैलट ऐक्ट ।

१८८२ मिस्र पर ब्रिटिश अधिकार ।

१८९५-९६ जेमसन रेड ।

१८९८ सूडान विजय; फ़शोडा की घटना ।

१८९९-१९०२ बोअर युद्ध ।

१९०० आस्ट्रेलियन संघ की स्थापना ।

१९०४ इंगलैंड और फ्रांस की मित्रता ।

१९०७ इंगलैंड और रूस की मित्रता ।

१९१० दक्षिणी अफ्रीका की एकता (Union South of Africa)

१९११ पार्लियामेंट नियम ।

१९१४-१८ महायुद्ध ।

१९१६ आयरलैंड में विद्रोह ।

१९१७ संयुक्तदेश अमरीका का युद्ध में भाग लेना; रूस की राज्य-क्रान्ति ।

१९१८ सुधार नियम ।

१९१९ वार्साई की सन्धि ।

१९२१ आयरलैंड में होमरूल ।

MODEL QUESTIONS

Hanoverian Period

1. What were the bases of Hanoverian Claim on the throne of England? How did this fact affect the future growth of English Constitution?

2. Narrate briefly the main features of Walpole's ministry with special reference to his foreign policy.

Hints:—I. 1721 के पहले वालपोल का राजनैतिक जीवन ।

(*a*) 1702 में पार्लियामेंट का सदस्य ।

(*b*) टाउन्सेन्ड और स्टैनहोप का समर्थक ।

II. 1721 में वालपोल प्रधान-मन्त्री और उसकी गृहनीति ।

(*a*) दक्षिणी सागर का बुलबुला 1721—और वाल-पोल प्रधान-मन्त्री—उसकी अर्थनीति ।

(*b*) राजा, प्रधान-मन्त्री और सहायक मंत्रियों का संबंध ।

(*c*) वालपोल स्वतन्त्र व्यापार (Free trade) का समर्थक, व्यापारिक वस्तुओं पर टैक्स कम किया ।

(*d*) वालपोल का जार्ज द्वितीय के समय में प्रधान-मंत्रित्व—रानी कैरोलीन उसकी बड़ी सहायक—अतः प्रधान-मंत्री और भी शक्तिमान ।

(*e*) वालपोल शनैः शनैः सुधार के पक्ष में—'सोते कुत्तों को मत जगाओ'—Noconformist Idemnity Act.

III. वालपोल की वाह्यनीति।

(a) वालपोल युद्ध का विरोधी।

(b) उसकी वाह्यनीति पर जेकोबाइट विद्रोह का प्रभाव अतः

(i) फ्रांस के साथ मित्रता; फ्रेंच मंत्री फ्लियुरी (Fleury) और वालपोल दोनों युद्ध के विरोधी और परस्पर मित्र।

(ii) इंगलैंड और स्पेन में व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता (rivalry) अत: 1739 में झगड़ा।

(iii) वालपोल का इच्छा विरुद्ध लड़ाई में भाग लेना, उसकी असफलता और पदत्याग।

IV. वालपोल का पतन।

(i) बोलिंगब्रुक और पुल्टने का विरोध (ii) रानी कैरोलीन की मृत्यु (iii) स्पैनिश युद्ध में असफलता (iv) पार्लियामेंट और जनता दोनों द्वारा मेम्बर होना।

3. Account for the prolonged war in Europe and the colonies, between England and France. What did the former gain as a result of it?

4. Discuss the causes of the Seven Years' War and show how Pitt Elder led his country to success in the struggle.

5. "The selfish policy of England coupled with its successes in the Seven Years' War

led to the loss of Hanoverian colonies." Elucidate.

Hints:—I. उपनिवेशों का निर्माण—एलीजवेथ और जेम्स I के शासन-काल में।

II. इंगलैंड और उपनिवेशों का संबंध—नेविगेशन लॉ और व्यापारिक असुविधायें।

III. स्टाम्प ऐक्ट—अमेरिका में इसका विरोध।

IV. बोस्टन टी पार्टी।

V. बोस्टन टी पार्टी का प्रभाव (reaction) और फिलाडेलफिया कांग्रेस।

VI. अमेरिका का इंगलैंड के विरुद्ध युद्ध और स्वतन्त्रता की घोषणा 1776—जेनरल वाशिंगटन।

VII. फ्रांस और स्पेन द्वारा उपनिवेशों को सहायता—वारसाई की संधि और 1783 में अमेरिका की स्वतन्त्रता।

6. Trace the methods by which George III established a personal despotism in England. What were its distinguishing features?

7. Give a brief sketch of the ministry of Pitt the Younger with an estimate of his greatness as a war minister.

8. What was the attitude of England towards the French Revolution, and what was its effect on the domestic and foreign policy of the English Governments During the Period?

9. Give a brief account of Nepoleon Bonapart and analyse the cause of his failure in crushing England.

10. Discuss the importance of English victories on the sea during Nepoleonic wars.

11. What do you understand by the term "Industrial Revolution"? What effect it had on the social and economic life of England?

12. "From being an oligarchy the Parliament by the three Reform Acts of 19th century, became virtually an assembly of the people." Discuss.

13. What were the demands of the Chartists and how for have they been met within the subsequent period ?

14. What social reforms were carried out by the Parliament in the 9th century ?

15. What do you understand by the term "Eastern Question"? What interest had England in it?

16. Discuss the part played by England in Crimean and the Russo-Turkish wars.

17. Account for the conflict between England and France in the 19th century and show

the reasons which led to friendship between them again in 1904.

18. "Lord Palmerston was a conservative at home and a Revolutionist abroad." Explain with special reference to his foreign policy.

19. Discuss the import of Disraeli's "Imperialism." What steps did he take to establish England's empire in the east?

20. Sketch briefly the history of the connection of Britain with Egypt.

21. Discuss briefly the international situation in Europe between 1892 and 1911, and show the cause of close English concern in it.

22. Trace the history of Anglo-Irish relason in 19th century.

23. By what steps have colonies became self-governing Dominions of the British comonwealth of Nations?

24. Discuss the causes of the Great War, and describe briefly the main provisions of the Peace of Versailles.

25. What is the constitutional importance of the Septennial Act, Ballot Act and the Parliament Act 1911

26. Trace the development of the Cabinet system in England, and show how the

English constitution has been affected by its peculiar party system.

27. Write short notes on:—
Burke, Jacobites, Young Pretender, Fall of Quebec, Stam Act, Boston. Tea Party, Declaration of Independence 1776. Jankin's Ears, South Sea Bubble, Weslay, Washington, Lord North, Continental System, Irish homo Rule Bill, The Ballot Act, Wellington, Haig, Fashoda, Triple Alliance, Congress of Berlin, Rhodes, Jameson's Raid Baghdad Railway, Diplomatic Revolution, Fenian Society, Parnell, Feargus O'Conner Trafalgar.
